सुन्नते नबवी और जदीद साइंस

सुन्नत और साइंस के मौज़ूअ पर
तहक़ीक़ी शाहकार

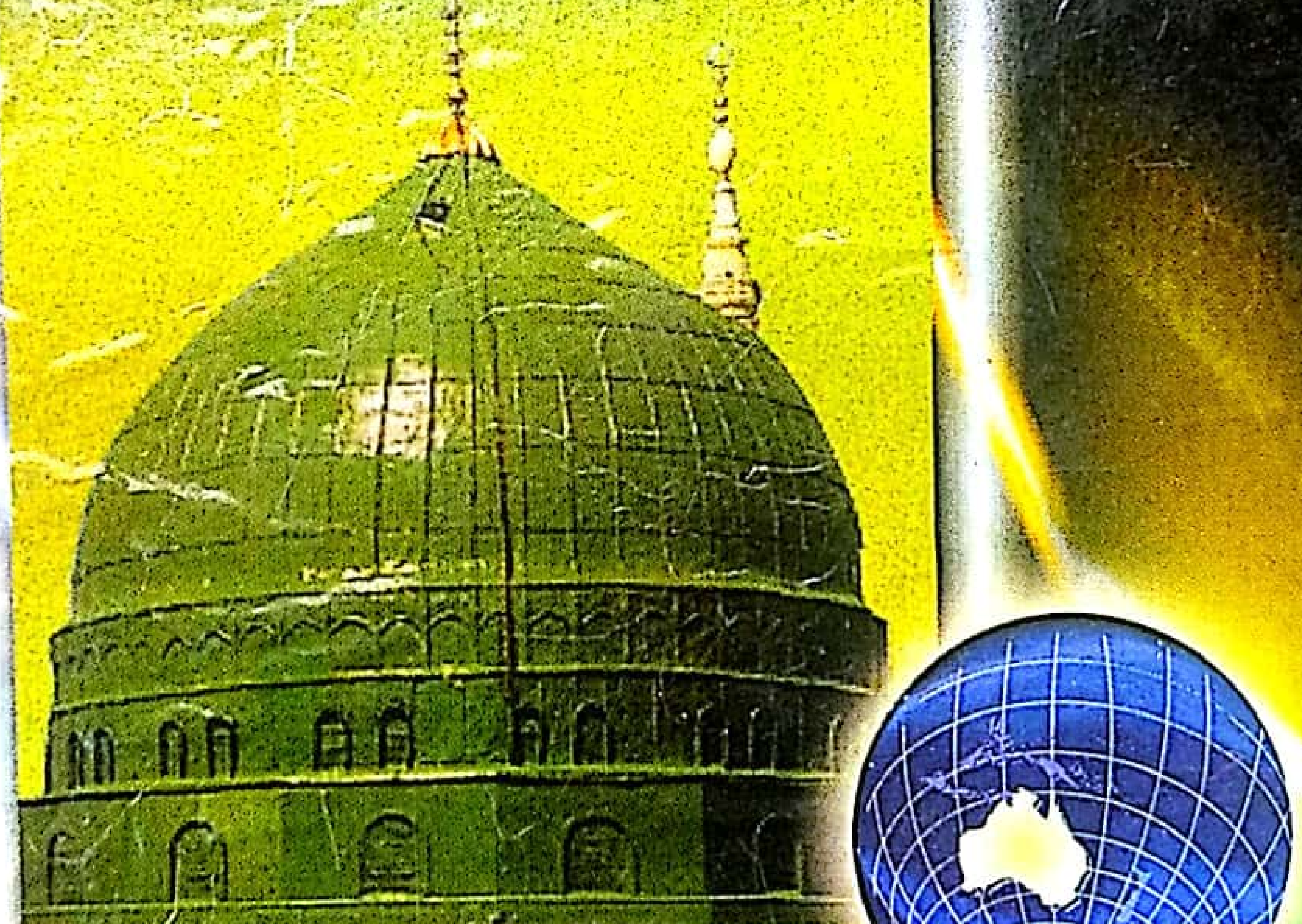

तहक़ीक़ व तसनीफ़

हकीम मुहम्मद तारिक़ महमूद चुग़ताई

हिन्दी तर्जुमा : ज़मीर अहमद ''मुज़मिर''

Bilal

एजाज़ पब्लिशिंग हाऊस

2861, कुचा चीलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-२

AADHAR DESIGNS

Scanned by CamScanner

सुन्नते नबवी (स०)

और

जदीद साइंस

सुन्नत और साइंस के मौज़ूअ पर तहक़ीक़ी शाहकार

तहक़ीक़ व तसनीफ़

संग्रहकर्ता & प्रकाशक

एजाज़ पब्लिशिंग हाऊस

2861 कुचा चीलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-2

Scanned by CamScanner

© Copyright, by Aijaz Publishing House
All rights reserved, including the right to reproduce any photograph or part of the book in any form.
388 / 2000- COL

जुमला हुकूक़ बहक़्क़े पब्लिशर महफूज़ है

नाम किताब —— सुन्नते नबवी और जदीद साइंस

संग्रहकर्ता & प्रकाशक
एजाज़ पब्लिशिंग हाऊस

तादाद —— 600

मतबा —— भारत ऑफसेट प्रेस, दिल्ली

क़ीमत - 120/= रु

2009
I.S.B.N : 81 - 85949 - 80 - 8

नाशिर

एजाज़ पब्लिशिंग हाऊस 2861 कूचा चीलान,
दरिया गंज, नई दिल्ली-2

फ़ोन :- 3253268

Scanned by CamScanner

तवज्जुह

किताब पढ़ने से पहले इसे ज़रुर पढ़ें !!!

❖ दिल की गहराईयों में यह बात हो कि

❖ मेरा मतलूब और मक़सूद इत्तेबा-ए-सुन्नत (स0) है न कि इत्तेबा-ए-साइंस

❖ आख़िरत का कामिल सवाब और अज्र इत्तेबा-ए-सुन्नत (स0) में है इत्तेबा-ए-साइंस में नहीं

❖ दीन ता क़यामत मुकम्मल और साइंस की हर तहक़ीक़ हर्फ़े आख़िर नहीं

❖ इत्तेबा-ए-सुन्नत (स0) (लक़द कान......अलख) के तहत होनी चाहिये। किसी दुनयवी नफ़ा के पेशे नज़र नहीं । क्योंकि फ़ैज़याने सुन्नत (स0) किसी साइंसी तहक़ीक़ व तौजीह के मुहताज नहीं

❖ सुन्नत (स0) साइंस की मुहताज नहीं । अक़्ले इन्सानी फ़ानी । हुक्मे इलाही अबदी

❖ ज़िहन में यह बात पुख़्ता हो कि सुन्नत (स0) पर इसलिये अमल नहीं कर रहा कि इसका साइंसी या दुनयवी फ़ायदा है बल्कि सिर्फ़ और सिर्फ़ यह मेरे आक़ा की सुन्नत (स0) है और बस !

❖ चूंकि इंसान तबअन हरीस है इस्लाम ने उसे हर अमल पर नफ़ा पर दिया है इसलिये सुन्नतों की साइंसी तहक़ीक़ हुई वर्ना हुज़ूरे अक़दस (स0) की मुबारक सुन्नतें साइंस की क़तई मुहताज नहीं ।

Scanned by CamScanner

इन्तेसाब

मुआलिजे शाफ़ी, नब्बाज़ेदौराँ

सुलतानुल अम्बिया हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा (स0)

के मुबारक नाम के नाम

वा उम्मीदे शफ़ाअत रोज़े जज़ा

एक गदाये बेनवा शहन्शाहे कौनैन के दरबार में

इख़लास व अक़ीदत की नज़्र ले कर आया है

गरक़ुबूल उफ़तद ज़हे इज़्ज़ो शरफ़

और

प्यारी अम्मी जान के हुज़ूर जिन की शफ़्क़त और

इहसानात अहात-ए-ज़बान व क़लम में नहीं

Scanned by CamScanner

पब्लिशर की ज़ुबानी

एजाज़ पब्लिशींग हाऊस को यह फ़ख़्र हासिल है कि उसमें तिब व हिकमत के मौज़ूआत पर मुख़्तलिफ़ मशहूर तबीबों और हकीमों की मूफ़ीद और कारआमद किताबों को ज़ेवरे तबाअत से मुज़य्यन करके मुल्क और बैरुने मुल्क अच्छी ख़ासी तादाद में लोगों तक पहुंचाया है।

ज़ेरे नज़र किताब "सुन्नते नबवी और जदीद साइंस" हकीमुल अम्र तारिक़ महमूद चुग़ताई की एक मुफ़ीद और मालूमात से भरपूर तहक़ीक़ी तसनीफ़ है जिसे पढ़कर बेशुमार लोगों ने अपनी सेहत व तन्दुरुस्ती को बरक़रार रखा है। चूंकि यह किताब उर्दू ज़बान में थी और हिन्दी पढ़ने वालों का इसरार था कि इसे हिन्दी में शाया की जाये।

लिहाज़ा हिन्दी पढ़ने वालों के जज़्बात व इहससात और इसरार ने हमें हिन्दी में शाया करने की हिम्मत और हौसला दिया।

मुसन्निफ़ ने इस किताब में सरवरे काइनात (स0) की बाज़ सुन्नतों पर साइंसी तहक़ीक़ात का जो ज़खीरा जमा किया है उसकी जितनी भी तारीफ़ की जाये कम है अल्लाहतआला उन्हें जज़ा दे और पढ़ने वाले को इस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये आमीन !

चूंकि हमने इस किताब को कारोबारी नुक़्त-ए-नज़र से नहीं छापा बल्कि आम लोगों के फ़ायदे के पेशे नज़र शाया की है इसलिये इसकी क़ीमत में मुनाफ़ा का ख़्याल नही रखा गया है।

इस किताब में जो उर्दू के मुश्किल अल्फ़ाज़ आये हैं उसकी एक (Dictionary) किताब के आख़िर में शाये की गई है ताकि किसी अल्फ़ाज़ के समझने में दिक्क़त न हो।

हमें उम्मीद है जिस तरह उर्दू ज़बान ने शोहरत हासिल की है और लोगों को फ़ैज़ पहुंचाया है उसी तरह हिन्दी पढ़ने वालें भी इससे फ़ायदा हासिल कर सकेंगे।

आपके क़ीमती मशवरे का इंतेज़ार रहेगा।

एजाज़ पब्लिशिंग हाऊस

2861-कूचा चीलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

फ़िहरिस्ते मज़ामीन

न0.	मज़मून	स.	न0.	मज़मून	स.
क.	तवज्जुह	3	30.	नमाज़ का वर्जिशी चार्ट	49
ख.	इनतेसाब	4	31.	एक फीज़ीशीयन का रद्देअमल	50
1.	पब्लिशर की ज़बानी	5	32.	नमाज़ और योगा	53
2.	सबबे तहकीक़ व तसनीफ़	12	33.	डा.राबर्ट स्मिथ का तजरिबा	56
3.	एतराफ़े हकीक़त	14	34.	मआशरती असरात	56
4.	कुछ मेरी ज़बान में	16	35.	तरतीब से नमाज़ पढ़ना	57
5.	मिस्वाक और जदीद साइंस	20	36.	हाथों का कानों तक उठाना	58
6.	रात और मिस्वाक	20	37.	डिप्रेशन का इलाज	60
7.	नमाज़ से क़ब्ल मिस्वाक	22	38.	तरीक़-ए-इलाज	61
8.	मिस्वाक डा. और स्विट्ज़रलैन्ड	22	39.	नताइज	62
9.	मुंह का ज़ाइक़ा और मिस्वाक	25	40.	औकाते नमाज़ और जदीद साइंस	65
10.	मिस्वाक और जरासीम	26	41.	नमाज़े फ़जर	65
11.	मिस्वाक और दिमाग़	27	42.	नमाज़े जोहर	66
12.	कनेर- कीकर- नीम	27	43.	नमाज़े अस्र	66
13.	दाँत और मआशिरा	29	44.	औलिया का मामूल	68
14.	पीलू का मिस्वाक	31	45.	नमाज़े इशा	69
15.	दाइमी नज़ला और मिस्वाक	31	46.	नमाज़ तहज्जुद	70
16.	वज़ू	32	47.	क़ियाम	71
17.	हाथों का धोना	33	48.	औरतें	73
18.	नाक में पानी डालना	35	49.	मर्द	73
19.	चेहरा धोना	36	50.	रुकूअ	74
20.	चेहरे की एलरजी	37	51.	सजदा	74
21.	चेहरे का मसाज	38	52.	सजदा और टेली पैथी	75
22.	आँखों के अमराज़ से बचाव	39	53.	नमाज़े तहज्जुद का फ़ायदा	77
23.	दाढ़ी का ख़िलाल	40	54.	अमराज़े क़ल्ब से बचाव	78
24.	किहनियों तक धोना	40	55.	गेठिया का इलाज क़ियाम के ज़रीये	79
25.	हबलिल वरीद का राज़	42			
26.	पाँव का धोना	42	56.	पेट कम करने के लिये	80
27.	एक नुक़ता	44	57.	जुमला दिमाग़ी अमराज़	81
28.	वज़ू का बचा हुआ पानी	44	58.	चेहरे पर झुर्रियाँ	82
39.	नमाज़ दुखों का इलाज	46	59.	सीने के अमराज़	83

Scanned by CamScanner

न0.	मज़मून	स.	न0.	मज़मून	स.
60.	अफ़ादात	83	86.	जदीद तहक़ीक़ात	113
61.	नमाज़ मजमूअ-ए-अजाइब	85	87.	सिर्फ़ हाथों से खाना और उंगलियां चाटना	117
62.	खुदकशी के रुजहानात में कमी	88	88.	योरोपी माहिरीन के तजरिबात	118
63.	सरविल्लियम करकस की तहक़ीक़	88	89.	खाने के ग़लत और सही तरीक़े	118
64.	इमाम की तिलावत और जदीद साइंस	89	90.	सोने से पहले खाना	120
			91.	ग़िज़ा का बुनयादी उसूल	121
65.	नमाज़े तरावीह और साइंसी इनकेशाफ़ात	91	92.	खिलाल	129
			93.	खाने के बाद पानी न पीना	131
66.	खाना	93	94.	खाना खाते ही सो जाना	132
67.	वाशिंगटन के डाइरेकटर्ज़ मेरा जाती तजरिबा	94	95.	कैलूला सुन्नत है	133
			96.	मलहूज़े ख़ास	133
68.	खाने से कब्ल कुल्ली करना	96	97.	एक सिहराई वाक़िआ	134
69.	दायाँ हाथ इस्तेमाल करना	96	98.	पानी देखकर पीना	135
70.	खाने में फूँक न मारना	97	99.	बैठकर पानी पीना	136
71.	मिलकर खाना जूठा खाना	97	100.	खड़े होकर पानी पीना	136
72.	खाना खाने के अन्दाज़	98	101.	तीन साँस में पानी पीना	136
73.	उकड़ूँ बैठना	98	102.	खुले बर्तन में पीना	137
74.	एक ज़ानू बैठना	98	103.	आराम- सोना- नींद	139
75.	दो ज़ानू बैठना	98	104.	दायें करवट लेटना	139
76.	कोरिया, खाना और सय्याह	99	105.	औंधे मुंह न लेटो	140
77.	खाने को चबाकर खाना	99	106.	अमरिकन कौंसिल फ़ॉर हेल्थ	142
78.	प्लेट का साफ़ करना	100	107.	इशा से कब्ल सोने से मना	142
79.	खाने में उंग्लियों की इहतेयात	101	108.	वज़ू करके सोना	143
80.	हारुन रशीद का वाक़िया	102	109.	बिस्तर को झाड़ना	144
81.	फ़ाक़ा और जदीद साइंस	107	110.	हाजती	144
82.	डा. इलेकजेन्डर कानन के तजरिबात	109	111.	मुशकेज़े का मुंह बांध कर रखना	145
83.	इस्लामी तालीमात और सोशालिज्म	111	112.	सख़्त ज़मीन पर सोना	146
			113.	चिराग बुझा देना	146
84.	ज़ौ और जदीद साइंस	113	114.	अफ़ादाते किबला जुलफ़िक़ार अहमद	147
85.	जौ की कीमयावी साख़्त	113			

Scanned by CamScanner

न0.	मज़मून	स.
115.	सोने की सुन्नते और जदीद साइंस	147
116.	लिबास	148
117.	इब्ने बतूता का तजज़िया	149
118.	सूती लिबास	150
119.	रंगत की तबदीली	152
120.	पगड़ी	152
121.	सब्ज़ लिबास	154
122.	रेशम और जदीद साइंस	157
123.	कालर और जदीद साइंस	158
124.	अमले तनफ़्फ़ुस की रुकावट	160
125.	लिबास की सफ़ाइ और जदीद साइंस	162
126.	रोज़ा	164
127.	सिकन्द्रे आज़म और अरस्तू	166
128.	चन्द्र गुप्त मोरिया और चांनकिया जी महाराज	167
129.	गांधी जी की ख्वाहिश	167
130.	डा. लोथर जीम आफ़ केम्ब्रीज़	169
131.	सिगमंड नराइड	169
132.	पैरासाइकोलोजी की तहक़ीक़	170
133.	वह दिन भी आएगा जब हर इंसान रोज़ा रखेगा	172
134.	रोज़े का निज़ामे हज़्म पर असर	175
135.	रोज़े के दौरान ख़ून पर फ़ायदामंद असरात	175
136.	तरीक-ए-कार और वसाइल	182
137.	दौराने रमज़ान मुशाहिदात	182
138.	नताइज	183
139.	जिस्म की माइयत और इखराजे बौल	184

न0.	मज़मून	स.
140.	रोज़ा कियामे सेहत का बेनज़ीर तरीक़ा	185
141.	खजूर से इफ़तार और जदीद साइंस	189
142.	हाजते ज़रुरिया और जदीद साइंस	190
143.	हाजत के लिये दूर निकल जाना	191
144.	बैठने के तरीके	192
145.	इस्तिंजे के लिये ढेले का इस्तेमाल	193
146.	खड़े होकर पेशाब करने से मना	195
147.	हवा के रुख़ पर	199
148.	ममनूआत कज़ाए हाजत	200
149.	नमाज़ से कब्ल इस्तिनजा	201
150.	कज़ाए हाजत के बाद मिट्टी से हाथ साफ़ करना	201
151.	कमौड	202
152.	तहारत के लिये बायाँ हाथ	202
153.	इस्लामी निज़ामे तहारत और योरोपी मआशरा	204
154.	एक ग़ैर मुस्लिम का वाक़िया	205
155.	तहक़ीर और इसका अन्जाम	207
156.	इहतेयाते नबवी और जदीद साइंस	218
157.	प्याला-ए-नबवी और जदीद साइंस	219
158.	तेज़ गर्म खाने से मना	220
169.	दूध और मछली जमा न करना	221
160.	दो सर्द गिज़ायें जमा न करना	222

Scanned by CamScanner

न0.	मज़मून	स.
161.	दो क़ाबिज़ गिज़ायें जमा न करना	223
162.	दो रक़ीक़ गिज़ायें जमा न करना	224
163.	एक ताज़ा दूसरी बासी गिज़ा जमा न करना	225
164.	मिटटी खाने से मना	226
165.	डा. कियोर के तजरिबात	226
166.	चार फ़ायदे और जदीद साइंस	228
167.	वालिदैन की अताअत और जदीद साइंस	235
168.	वालिदैन से सुलूक और उसका अन्जाम	236
169.	मां की दुआ	236
170.	वालिदैन की दुआ का असर	237
171.	वालिदैन की बददुआ से बुरी मौत के मुशाहिदात	239
172.	इस्लाम और खिदमते वालिदैन	244
173.	शराब और जदीद साइंस	248
174.	शराब का निज़ामे हज़्म पर असर	251
175.	शराब का आसाबी निज़ाम पर असर	256
176.	नशा, सेहत, इस्लाम और जदीद साइंस	259
177.	बलूग़त की शादी और जदीद साईस	270
178.	ख़तना	271
179.	ख़तना और अक़्वामे आलम	272
180.	नज़रे बद और जदीद साइंस	275
181.	कभी कभार नंगे पांव चलने का हुक्म	279
182.	बीमार को ज़्यादा खाने पर इसरार न करना	280
183.	गाली और जदीद साइंस	281
184.	मुस्कुराहट और जदीद साइंस	283
185.	सुब्ह सवेरे जल्दी काम शुरु करना	283
186.	बेदारी से मुतअल्लिक़ बाज़ इब्तेदाइ हिदायत	286
187.	मौरुसियत अमराज़ और जदीद साइंस	287
188.	जमाई को हाथ से रोकना	288
189.	कुत्ते के जूठे को मिटटी से धोना	289
190.	डा. मोर के मुशाहिदात	291
191.	जिल्दी अमराज़	291
192.	म-र-जल बहरैन का राज	302
193.	छींक में अल्हम्दुल्लिाह कहना	308
194.	अच्छा नाम और जदीद साइंस	310
195.	नाम और साइंसी इन्केशाफ़ात	311
196.	अलफ़ाज़ की ताक़त का एक हैरत अंगेज़ वाक़िया	311
197.	मग़रिबी माहिरीन की रुहानी तहक़ीक़ात	313
198.	फलसफ़-ए-दुआ और इबादत	314
199.	ज़िना उम्मुल अमराज़	317
200.	योरोप में ज़िना की तबाह कारियां	319
201.	तीन ज़बरदस्त महरेकात	323
202.	फवाहिश की कसरत	324
203.	तलाक़ और तफ़रीक़	326

Scanned by CamScanner

न0.	मज़मून	स.
204.	इंग्लिस्तान की हालत	330
205.	कलफ़, काटन और जदीद साइंस	333
206.	फोम	334
207.	पोलिस्टर या नाइलून का कपड़ा	335
208.	शिकंजा	335
209	माओं में दूध की कमी	336
210.	जिल्दी हस्सासीयत	337
211.	तवज्जुह तलब मिसाल	337
212.	आसाबी अमराज़	338
213.	नाखुन पालिश और जदीद साइंस	339
214.	करोमो पैथी का उसूल	339
215.	डेल करानेगी के इन्केशाफ़ात	340
216.	अय्यामे हैज़ और नफ़ास में तर्के जमाअ	342
217.	तवक्कल और जदीद साइंस	344
218.	पैदाइश के वक्त बच्चे को खजूर चटाना	345
219.	नेचरल थरापी	347
220.	नालैने नबवी और जदीद साइंस	349
221.	क्या आप सेहत के ओसूलों के खिलाफ़ जूता इस्तेमाल करते है	350
222.	दिमाग़ पर जूते के असरात	351
223.	आसाबी तनाव	352
224.	शाहाने हिन्द का इनतेख़ाब	352
225.	कैनविस के जूते बच्चों के लिये नुक़सान देह हो सकते है	353
226.	पंजों की खराश या चोट	355

न0.	मज़मून	स.
227.	साइज़ और मौज़ूनीयत	355
228.	ऊँची एड़ी के जूते	356
229.	आप के चलने का अन्दाज़ और जदीद साइंस	356
230.	बेख़्वाबी	359
231.	दाइमी क़ब्ज़	360
232.	दिल के अमराज़	360
233.	मोटापा	361
234.	बवासीर	361
235.	औरतों और मर्दों के आँसू	364
236.	मूछे तरशवाना	365
237.	दिलका दौरा और दम्मा	367
238.	एक पाइलट का इमान	368
239.	आयते करीमा का असर	370
240.	एक प्रोफ़ीसर की मुहलिक मरज़ से शिफ़ायाबी	370
241.	सुर-ए-यासीन के अमली फ़ाइदे	371
242.	एक मरीज़ नज़अ की हालत में	371
243.	हवाई सफ़र के दौरान असरात	372
244.	तकलीफ़ दिह सफ़र	372
245.	एक वलीयुल्लाह का वाक़िया	373
246.	हुज़ूर के तरीक़ा पर सफ़र के चन्द वाक़िआत	376
247.	रात का सफ़र	378
248.	पहाड़ी सफ़र	378
249.	कपड़ों के पहन्ने का तरीक़ा	380
250.	डा. लेक्सर के ख़्यालात	384
251.	कुव्वत बढ़ाने के लिये	385
252.	अक़ीक़	389
253.	अक़ीक़ की शनाख़्त	390

Scanned by CamScanner

न0.	मज़मून	स.
254.	अक़ीक़ की तिलिस्माती ख्वास	392
255.	अकीक़ के तिब्बी ख्वास	393
256.	तलबीना और जदीद साइंस	393
257.	मां का दूध और जदीद साइंस	398
258.	तेजारत और ताजिर का किर्दार जदीद साइंस की नजर में	408
259.	एक ग्राम सताइश और एक कीलो सरज़निश	409
260.	तेजारत और ताजिर का किर्दार	412
261.	अहले योरोप के माहिरीन	413
262.	इस्लाम की रु से	413
263.	वादे	415
264.	कर्ज़	416
265.	बुरे असरात वालीअदविया से मना और जदीद साइंस	418
266.	हराम चीज़ों में शिफ़ा नहीं	418
267.	हराम की साइंसी हैसीयत	420
268.	ख़ून	421
269.	सुअर का गोश्त	422
270.	बुलन्दी से गिरा हुआ, लाठी से मारा हुआ	426
271.	दरिन्दों के खाये हुये जानवर	429
272.	हराम चीज़ों की माहीयत	431
273.	ज़ब्ह	432
274.	यहूदियों में जानवर का जबीहा	435
275.	सैहूनी ज़बीहा और इस्लाम	437
276.	इस्लाम में ज़बीहा का तसव्वुर और अमल	439
277.	ज़ब्ह की साइंसी हैसियत	441
278.	मरीज़ की इयादत और जदीद साइंस	443
279.	अजीब मुशाहिदा	444
280.	इस्लाम और उसूले सादगी	447
281.	वल बहरिल मसजूर के मुशाहिदात	450
282.	सहाब -ए- कराम की छः खोराके और जदीद साइंस	453
283.	गाय का गोश्त और जदीद साइंस	454
284.	बकरी का दूध और जदीद साइंस	456
285.	हामला औरतों के लिये खजूर की शक्ल में आइरन कैप्सुल	459
286.	तेल और कंघी का इस्तेमाल साइंस की रोशनी में	465
287.	सरजेम्स सागिम के मुशाहिदात	465
288.	बर्तनि नबवी और जदीद साइंस	467
289.	दूध की लस्सी और जदीद साइंस	473
290.	लस्सी	474
291.	मोटा आटा और जदीद साइंस	475
292.	दिल के अमराज़ से बचाव	476
293.	दाइमी क़ब्ज़ से बचाव	476
294.	नाखुन काटना, सुन्नते नबवी भी इलाज भी	477
295.	गाइना कोलोजिस्ट की वारनिंग	480
296.	हाइड्रो पैथी का उसूल	481
297.	इबादत में लिहाज़े सेहत..	488
298.	ज़मीमा	491
299.	सुन्नते नबवी का लूग़त	492

Scanned by CamScanner

सबबे तहक़ीक़ व तसनीफ़

बहुत अर्सा की बात है मै एक इंजीनीयरिंग कॉलिज के प्रींस्पल से मिलने गया । दौराने गुफ़तगू फ़रमाने लगे यह कैसी बात है कि खाने के बाद बाज़ लोग उंगलियां छाटना शुरु कर देते हैं हालांकि अगर खाना कम हो तो फिर उंगलियां चाटने में कोई हर्ज नहीं लेकिन अगर खाना ज्यादा हो और फिर भी उंगलियां चाटी जायें तो बड़ा मायूब है ।

मैंने प्रींस्पल साहिब से अर्ज़ किया कि यह सुन्नत है लेकिन उन्हें बात समझ न आई । आख़िर उन्हें उंगलियां चाटने की साइंसी तोजीह बताई तो बहुत हैरान हुये फ़रमाने लगे वाक़िई मुझे तो इल्म न था अब तो मैं भी उंगलियां चाटूंगा ।

स्काटलैंड के एक साहिब मेरे शहर में अपने रिश्तेदारों के हां मिलने आये हुये थे । मौसूफ़ मुसलमान थे लेकिन इस्लाम और इस्लाम की बुनयादी मालूमात से दूर थे । मौसूफ़ के रिश्तेदारों ने मुझे कहा कि आप रोज़ाना मौसूफ़ को दीन की इबतेदाई बातें सिखाने के लिये वक़्त दें । बहर हाल वह मेरे पास रोज़ाना आते और मुझसे दीन के हर अमल का दुनयवी नफ़ा कोई साइंसी वजह दरयाफ़्त करते और आजिज़ अपनी बसात के मुताबिक़ उसे बताता और वह मुतमईन हो जते । उनका कहना था कि मैं नहीं आज हर यूरपी मुस्लिम और ग़ैर मुस्लिम इस तरह के सवालात करता है । जब वह मुतमइन हो जाता है तो इस्लाम के क़रीब आता है । हत्ता कि मुसलमान हो जाता है ।

मेरे एक दोस्त ने बताया कि उन्होंने बैलजीयम में एक साहिब को इस्लाम की दावत दी । वह मुझसे वज़ू की साइंसी तौजीह पूछने लगे लेकिन मुझे इल्म नहीं था । वह फ़रमाते हैं कि मैं उन्हें वहां के एक आलिम के पास ले गया लेकिन उन्हें भी इसका इल्म न था । हत्ता कि एक साहिब ने उन्हें वज़ू के मुतअल्लिक़ बताया लेकिन मसह के मुतअल्लिक़ न बता सके । मैंने कोशिश की कि वह राज़ी हो जाये लेकिन उसकी तसल्ली न हुई । कुछ अर्सा के बाद आये और कहने लगे मुझे मुसलमान करें ! मैंने पूछा क्यों? कहने लगे हम यूनीवर्सीटी में पढ़ रहे थे हमारे प्रोफ़ेसर ने बताया कि अगर

Scanned by CamScanner

गर्दन की पुश्त और अतराफ़ पर रोज़ाना दिन में चंद बार पानी के चंद क़तरे लगा दिये जायें तो रीढ़ की हड्डी और हराम मग़ज़ का तमाम निज़ाम बिल्कुल दुरुस्त रहेगा और हराम मग़ज़ के नक़्स से पैदा होने वाले अमराज़ कभी नहीं होंगे । तब मुझे फ़ौरन मसह की क़द्र व मन्ज़िलत मालूम हुई लिहाज़ा मैं मुसलमान होना चाहता हूं । और वह मुसलमान हो गया ।

आजिज़ का तअल्लुक़ ज़्यादा पढ़े लिखे और मग़रिब ज़दह तबक़े के साथ है । जब भी इन से दीने इस्लाम की कोई बात हुई उन्होंने बेशुमार नक़्स और अग़लात निकाले लेकिन जब उनके सामने यही बात इस्लाम और साइंस के हवाले से की गई तो मुताअस्सिर हुये । हत्ता कि उनकी ज़िन्दगी में इस्लाम की नुमायां झलक दिखाई दी ।

इंसान फ़ितरी तौर पर लालची वाक़ि हुआ है । जिस तरफ़ नफ़ा नज़र आया फ़ौरन माइल, घाइल और क़ाइल हो जाता है । इसलिये जब इस इंसान को इस्लाम के दुनयावी फ़ायदे बतलाये जाते हैं तो वाक़िइ वह अमल पर आता है ।

इस किताब को कम्प्यूटर कम्पोज़ कराने के लिये एक साहिब की खिदमत ली गई चूंकि पहला बाब मिस्वाक था । जब उसने मिस्वाक का बाब कम्पोज़ किया तो मैंने उसकी मेज़ पर मिस्वाक देखा । कहने लगा ! मुझे अब तक इल्म नहीं था लेकिन अब इन्शाअल्लाह कभी नहीं छोड़ूंगा ।

यह चन्द महरिकात थे जिन्होंने मेरे ज़िहन को इस तहक़ीक़ की तरफ़ माइल किया और मैं अर्सा दराज़ तक मुसलसल इसी तहक़ीक़ में लगा रहा ।

हत्ता कि पीरे तरीक़त हज़रत क़िब्ला मौलाना सय्यद अब्दुल वहहाब शाह साहिब मद्दज़िल्लहुल आली की माईयत में सफ़र के दौरान मुख़्लिस दोस्त मुहम्मद ज़ाहिद राशदी साहिब हासिलपूरी और खास तौर पर हज़रत मौलाना अब्दुल्लाह साहिब हासिलपूरी ने इस तहक़ीक़ को किताबी शक्ल में लाने के बारे में तवज्जुह दिलाई । यूं यह किताब आप के हाथों पहुंचाने में कितने जांगुदाज़ मराहिल से गुज़री । यह अलग दास्तान है । बहर हाल मैं नाशरीने दारुलमुतालिआ हासिलपूर का तहे दिल से ममनून हूँ जिन के तआउन से यह

Scanned by CamScanner

औराक़ परेशां गुलदस्ता-ए-वरक़ व क़लम की शक्ल में आप के मशकूर हाथों में आये ।

इस जगह इस बात का इआदा भी ज़रुरी है कि दारुलमुतालिआ इतने कम अर्सा में अवामुन्नास के लिये जितने इमली जवाहर पारे शाया कर चूका है उसकी नज़ीर चार दांगेआलम में बहुत कम मिलती है । अल्लाहतआला इसके मआविनीन और कारकुनूं को दुनिया और आख़िरत की सरबुलन्दी और तरक़्क़ी अता फ़रमाये । (आमीन)

एतराफ़े हक़ीक़त

किताब सुन्नते नबवी (स0) और जदीद साइंस आप के हाथों में है । इस किताब को लिखने से क़ब्ल बन्दा ने मुल्क भर के तक़रीबन एक सौ तीस माहिरीन (प्रोफ़ेसरज़, डाक्टरज़, उल्मा-ए-कराम, स्कालर्ज़, एडीटर्ज़) से राबता किया और उनसे इस किताब से मुतअल्लिक़ मवाद और तहक़ीक़ मांगी लेकिन सबका एक ही जवाब था कि अब तक इस्लाम और फ़ल्सफ़ा, इस्लाम और मेराज, इस्लाम और तिब, इस्लाम और नफ़सीयात वग़ैरा पर तहक़ीक़ हुई और कुतुब लिखी गई लेकिन ख़ुसूसी तौर पर सुन्नते नबवी (स0) और जदीद साइंस पर कोई जामा किताब सामने नहीं आई । हां किसी अखबार, रिसाले या मैगज़ीन में सुन्नत और साइंस के मुतअल्लिक़ कभी-कभी कोई वाक़िया पढ़ने में आता है या किसी मुसन्निफ़ ने अपनी किताब में सुन्नत और साइंस के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ या वाक़िया लिख दिया हो ।

जहां तक सुन्नते नबवी (स0) और जदीद साइंस का तअल्लुक़ है इस मौज़ूं पर शायद यह किताब इन्फ़रादी हैसियत रखती है ।

बन्दा ने इस किताब को लिखते हुये अहादीस, हवाला जात की खास इहतयात की है ।

मग़रिबी माहिरीन की कुतुब से इस्तफ़ादा किया और फिर उन कुतुब के हवाले जात साथ तहरीर करने की भर पूर कोशिश की है ।

एक मौज़ूअ के लिये बेशुमार तहक़ीक़ व रिसर्च के बाद इस बात को

Scanned by CamScanner

तहरीर किया है । सुनी सुनाई और गै़र मुसदिक़ा बातों को इस किताब में तहरीर करने से गुरेज़ किया है ।

इस बात की ज़्यादा कोशिश की गई है कि एक आम पढ़ा लिखा शख़्स भी इस कितब से भरपूर इस्तेफ़ादा कर सकें । इसलिये उसलूब, तहरीर और तहक़ीक़ को आसान और सादा अन्दाज़ में पेश किया गया है ।

इस बात की वज़ाहत बहुत ज़रुरी है कि मुझे अपनी कम इल्मी और नातजरिबाकारी का भरपूर इहसास है । शायद मैं आप के मय्यार पर पूरा न उतर सकूं लेकिन अगर आप अपनी दोनों आंखों में एक आंख मेरी तहरीर और दूसरी आंख मेरी मेहनत और काविश पर लगायें तो फिर आप शायद इससे भरपूर इस्तेफ़ादा कर सकें वर्ना "करना तंक़ीद मेरा मौजूअ"!!!

क्योंकि यह इस मौजूअ की तरफ़ पहला क़दम है और इन्शाअल्लाह वक़्त की रफ़्तार, तजरिबा, तहक़ीक़, मुशाहिदात इस को मज़ीद शान्दार बना देंगे।

मुझे इहसास है कि मेरी किताब हर्फ़े आख़िर नहीं और मेरी तहक़ीक़ मुकम्मल और जामअ नहीं । लेकिन यह इस मौजूअ की तरफ़ पहला क़दम है । आइये दूसरा क़दम आप बढ़ायें । लेकिन अगर आप ऐसा नहीं कर सकें या नहीं कर सकते तो बराहे करम किसी अमली तहक़ीक़ को निशान-ए-तनक़ीस न बनायें ।

मुझे इहसास है कि मेरे मुल्क में मेहनत क़रने वाले कम और तंक़ीद करने वाले ज़्यादा है । मेरा नाक़िदीन से सिर्फ़ एक ही जवाब है कि वाक़िइ आपकी बात दुरुस्त है तो इससे कहीं बेहतर आप ही कर लें । और बस ।

क़ारेईन से इस्तद्दुआ

क़ारेईन से इतनी अर्ज़ ज़रुर करुंगा कि अगर आप कहीं कोई ग़लती कमी या एज़ाफ़ा चाहते हैं तो आजिज़ को लिखें इन्शाअल्लाह आप की मुखलिसाना कोशिश पर अमल होगा ।

एक अहम अर्ज़ यह है कि इस किताब की जिल्द दोम ज़ेर तहक़ीक़ व तसनीफ़ है । इसमें आप भी हिस्सा ले सकते है । वह इस तरह कि अगर आप की नज़र से सुन्नत और साइंस की वज़ाहत (अखबार, रिसाला, किताब, आप का मुशाहिदा या किसी शख़्सीयत से सुनी हुई कोई मुसदिक़ा बात) गुज़रे

तो ज़रुर तहरीर फ़रमायें या उसकी फ़ोटो कॉपी इरसाल फ़रमायें । बन्दा उसकी क़ीमत अदा कर देगा । उम्मीद है कि मेरी इस इस्तदुआ को नज़र अन्दाज़ नहीं फ़रमायेंगे ।

आखिर में बन्दा उन तमाम मावनीन और मुखलेसीन का ममनून और शुक्र गुज़ार है जिन्होंने इस किताब की अशाअत में दामे, दिरमे, सुखने, क़दमे मेरी मदद की चूंकि इन हज़रात ने महज़ रज़ायें इलाही और इखलास से यह काम किया इसलिये बाज़ हज़रात ने नाम तहरीर करने से मना किया है । अल्लाहतआला उन्हें जज़ाये खै़र अता फ़रमयें । (आमीन) ।

कुछ मेरी ज़बान में

अल्हमदुल्लिाह मक़ामे मुसर्रत है कि इस वक्त दारुलमुतालिआ की यह चौथी अशाअत आपके हाथों में है इससे क़ब्ल (मंज़िल रसूलुल्लाह (स0) पर दरुद व सलाम, कुरआन व हदीस के अनमोल खज़ाने) कारेईन व नाज़िरीन तक पहुंच चूके है । दारुलमुतालिआ की असास व बुन्याद दीनी दावत के बुन्यादी उसूल "कल्लिमुन्ना-स अला अदरे अक़ूलिहिम" (यानी लोगों से उनकी अक़ली और फ़िकरी मय्यार के लिहाज़ से गुफ़्तगू करो) को पेशे नज़र रखते हुये आलिमे बा अमल मौलाना मौहम्मद अब्दुल्लाह साहिब और उनके मुखलिस अहबाब ने मई 1993 ई0 में रखी । इदारा की सरपरस्ती के लिये शैखे वक्त, मुबल्लिगे इस्लाम हज़रत मौलाना सैय्यद अब्दुल वहहाब शाह बुखारी मद्देज़िल्ला को अल्लाहतआला ने मई ही में बर वक्त भेज दिया दारुलमुतालिआ का अज़ीम मक़सद मुसलमान मर्द व खवातीन, बिलखसूस नौजवानों में दीनी मुतालिया, इस्लामी अक़दार का अहया आमाल की रग़बत, अक़ाइदे इस्लाम की पुख़तगी, इस्लामी तारिख़ से रुशनासी, अकाबेरीने उम्मत मशाहरीरे इस्लाम से अक़ीदत व मुहब्बत, मआशरती,

Scanned by CamScanner

समाजी बुराईयों का ख़ात्मा, जिहालत व नाख्वान्दगी के खिलाफ़ जिहाद बिलखसूस दीनी तालीम का शौक़ बेदार करना, नस्ले नौखेज़ को हर इतबार से फ़िक्रे आखिरत इस्लामी रंग में रंगना यह हमारे मक़ाएम है । इब्दताई सतह पर इसे एक दीनी लाईबेरेरी के अन्दाज़ में मुतआरिफ़ कराया गया अल्हम्दुल्लिाह इसके मुफ़ीद व मुसबत असरात व समरात शहर व मुज़ाफ़ात व दिगर इज़लाअ तक ज़ाहिर हुये और अल्लाहतआला की खा़स अनायत से तादादे कुतुब में भी तवक़्क़ा से बढ़कर इज़ाफ़ा हुआ और हो रहा है ।

दारुलमुतालिआ तफ़सीर, हदीस फ़िक्ह, तारीख, व दीगर इखलाक़ीयात पर मुश्तमिल कुतुब हर मकतब-ए-फ़िक्र में बिला उजरत व मआविज़ा अपने मुसलमान भाईयों, बहनों के मुतालिआ के लिये फ़राहम करता है । ख्वातीन में परदा की अज़मत को उजागर करते हुये ख्वातीन के तवस्सुत से ही कुतुब का इजरा किया जाता है जिस से पढ़ी लिखी ख्वातीन मर्दो से कहीं ज़्यादा इस्तेफ़ादा कर रही है (वलहमदु अला ज़ालिक)

दारुल्मुतालिआ तामीरी अन्दाज़ में अस्रे हाज़िर के जदीद तक़ाज़ों की रिआयत रखते हुये खालिसतन अल्लाहतआला के फ़ज़ल व करम और मुआवनीन के अख़लास की बदौलत बहम्दिल्लाह यौमे तासीस से ताहाल अपनी मंज़िल की जानिब रवां-दवां है अल्हम्दुल्लिाह राक़िमुल हुरुफ़ भी इदारा का अदना ख़ादिम व कार कुन है । दारुलमुतालिआ से मुंसलिक अहबाब की औव्वलीन व आख़िरीन फ़िक्र व नज़र यही है जो हदीसे मुक़द्देसा में है कि जो शख़्स दीन को सीखने और जानने की इसलिये कोशिश करे कि उसके ज़रीये इस्लाम को ज़िन्दा करे (यानी दूसरों में उसको फैलाये और लोगों को इसके मुताबिक़ चलाये) और इसी असना में उसकी मौत आ जाये तो आखिरत में वह पैगम्बरों के इस क़दर क़रीब होगा कि उसके और पैगम्बरों के दरमियान सिर्फ़ एक दर्जा का फ़र्क़ होगा (हदीसे मुबारका) दारुलमुतालिआ के हुदूद व फ़ूयूज़ कहां तक पहुंचे । उसका अन्दाज़ा तो अरबावे इल्म व नज़र ही कर सकते है हर आन, हर लिहज़ा हमारी दिली आर्ज़ू है कि इस्लाम के पाकीज़ा अफकार व ख़्यालात पूरी दुनिया में पहुंचे और इन्शाअल्लाह पहुंचेगे । शोब-ए-नशर व अशाअत हो या इजराये कुतुब व दिगर शोबा जात में तरक़्क़ी इसमें अस्ली बानी अहबाब व मुन्तज़ेमीन का इख़्लास है।

Scanned by CamScanner

मेरे हज़रत शैख़ (इंजीनीयर हज़रत हाफ़िज़ ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़शबन्दी दामत बरकातहुम) के तरबीयत याफ़्ता व खलीफ़ा-ए-मजाज़ हज़रत मौलाना सैय्यद अब्दुल वहहाब शाह बुख़ारी मद्दज़िल्लहु अपने दीनी इजतमाआत और हल्क़-ए-अहबाब में दारुलमुतालिआ का न सिर्फ़ तआरुफ़ करवाते है बल्कि मुतअद्दि बार आप एक वर्कर की तरह दूर-दराज़ से दारुलमुतालिआ के लिये कुतुब भी सर पर उठाकर लाते है और अमलन तआउन फ़रमाते है इसी तरह बानी मौसूफ़ (उस्ताद मुकर्रम मौलाना अब्दुल्लाह साहिब) का तो यह हाल है कि पिछले ही रमज़ानुल मुबारक में बन्दा की जब मसरुफ़ीयत देखी तो फ़रमाने लगे कि दारुलमुतालिआ के झाडू देने की ख़िदमत मेरे सुपुर्द करो ।

जब दारुलमुतालिआ का बानी मबानी व सरपरस्त हज़रात के इख़्लास का यह आलम हो तो इन्शाअल्लाह फिर तरक्क़ी दारुलमुतालिआ का मुकद्दर है। (अल्लाहुम-म ज़िद फ़ज़िद)

एक मुद्दत से हमारा ज़िहने नारसा इस सोच को अपने क़ल्ब व नज़र में समेटे हुये था कि मग़रिबी तहज़ीब व तमद्दुन जिसके साये बड़ी तेज़ी से हमारी इस्लामी तहज़ीब व तमद्दुन पर छा रहा है जिससे बिलख़्सुस नौजवान तबक़ा अज़ हद मुताअस्सिर होकर अग़यार की राह चल निकला है और तहज़ीबे मग़रीब का मनाद, बरकर बन गया है ।

मांगते फिरते है अग़यर से मिटटी के चिराग़
अपने ख़ूरशीद पे फैला दिये साये हम ने

इस्लाम दुनिया के दूसरे मज़ाहिब की तरह कोई (वक़्ती) या आरज़ी दीन नहीं बल्कि क़यामत तक बाक़ी व बरक़रार रहने वाला एक ज़िन्दा और लाज़वाल दीन है इसी फ़िक्र और कुढ़न को समझने के लिये शैखुल इस्लाम हाफ़िज़ इबने तीमीया के इस क़ौल ने मज़ीद ताक़त बख़्शी कि इन्सानी तबीयतें हमेशा किसी चीज़ से उसी वक़्त दस्त बरदार होती हैं जब उनको इसका बदल मिलता हो । इन्सान फ़ितरतन कुछ करने के लिये पैदा हुआ है और उसकी फ़ितरत का तक़ाज़ा अमल और मशग़ूलीयत से एक लाइन और प्रोग्राम देने के लिये एक सलीमुत्तबाअ अदीब व मुहक्क़िक़ की ज़रुरत थी जो नौजवानों के सामने सालेह अफ़कार व नज़रियात पेश करे । इसके लिये दारुलमुतालिआ

के मुनतज़मीन ने मुहतरम हकीम मुहम्मद तारिक़ महमूद चुग़ताई का इन्तखाब किया मौसूफ मुहक्क़िक़कुलअस्र, तवाज़ो, तक़वा और इत्तबा-ए-सुन्नत में सलफ़ सालिहीन का नमूना हैं, खुश ज़ोक़, खुश पोश, और खुश गुफ़्तार इन्सान, महफ़िल आरा शख़्सीयत, एक मुख़लिस दोस्त खिदमते इन्सानीयत के अलम्बरदार, इल्म व अदब से गहरा तअल्लुक़ व लगाव रखने वाले और सच तो यह है कि वह बू अली सिना के मानवी फ़रज़न्द हैं । असरे हाज़िर में नौजवान तबक़ा के मचलते जज़बात के तरजुमान हैं और इनकी आंखों के तारे (आईडीयल) है । सो यह काम उन्होंने इस किताब की शक्ल में सरअन्जाम दिया ।

आख़िर में हम अपने देरीना करम फ़रमा और मुहसिन जनाब अब्दुल लतीफ़ भटटी, चौधरी तनवीर हुसैन गुल साहिब (जंगी प्रिंटिंग प्रेस) के बेहद शुक्र गुज़ार हैं अगर उनकी मेहनत-ए-शाअक्क़ह और तवज्जुह किताब की अशाअत में शामिल न होती तो शायद किताब इतनी जिल्द ज़ेवरे तबा से मुज़य्यन व आरास्ता होकर मंज़रे आम पर न आती । मौसूफ़ दारुलमुतालिआ के अशाअती प्रोग्राम के आग़ाज़ से ता हाल दारुलमुतालिआ के साथ बेपनाह तआउन कर रहे हैं अल्लाहतआला उनके इल्म व अमल में ख़ैर व बरकत अता फ़रमावें और उनसे अपने दीन की ख़िदमत लें अल्लाहतआला से दुआ है कि वह हमारी इस हक़ीर सी ख़िदमत को क़ुबूल फ़रमाकर अपने बन्दों को इसके ज़रीये फ़ायदे पहुँचायें और हमें दौलते इख़लास अता फ़रमायें और इस किताब की अशाअत को हमारे लिये ज़ख़ीर-ए-आख़िरत बनायें आमीन (सुम-म आमीन या इलाहल आलमीन बेहुरमते सय्यदिल मुरसलीन (स0)

दुआओं का ख्वास्तगार

मुहम्मद ज़ाहिद राशदी

Scanned by CamScanner

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

मिस्वाक और आधुनिक साइंस

Miswak and Modern Science

फ़ितरत कभी भी इन्सान के बरअक्स नहीं ये भटका हुआ इन्सान जब हर तरफ़ से दुनिया की अय्याशियों में फिरता–फिराता वापस फ़ितरत (Nature) की तरफ़ आता है तो यह फिर उसे वही लुत्फ़ और फ़ाइदा देती है। जिसे छोड़कर चमकने वाले धोखे की तरफ़ भागा था। बिलकुल यही कैफ़ियत मिस्वाक की है। ये अज़ल से अबद तक सेहते इन्सानी के लिए मुमिद् व मआविन रहा था और रहेगा।

जब से हमने इस नेअ्मत को हाथ से जाने दिया है उस वक़्त से अब तक लोग मुसलसल् परेशान हो रहे हैं, हज़ारों रुपये बरबाद करने के बाद भी सेहते जिस्मानी के असल मब्दा और मरकज़ की तरफ़ रुजूअ् नहीं करते।

बल्कि एक साहिबे अक़्ल ने बड़ी हकीमाना और पुर–लुत्फ़ बात कही है कि जब से हमने मिस्वाक छोड़ा है उस दिन से डेण्टल सर्जन **(Dental Surgeon)** की इबतिदा हुई है।

आईये हम देखते हैं कि सुन्नत ऐन फ़ितरत है? क्या यह सुन्नत हमारी तरक़्क़ी में रुकावट है या उरूज? यह सुन्नत हमें पत्थर के ज़माने की तरफ़ ले जाती ह? या साइंस से क़रीब करती है?

फ़ैसला आपके हाथ में है।

रात और मिस्वाक

Miswak and Night

हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रात को उठकर मिस्वाक करते थे (ज़ादुल मआद)

हुजूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के मामूलात में था कि आप रात को

Scanned by CamScanner

सोते वक़्त मिस्वाक करते थे (ज़ादुल मआद, मामूलते नबवी, उस्च-ए रसूल)

क़िब्ला इंजीनियर नक्शबन्दी अपने मुवाइज़ में फ़रमाते हैं कि, वाशिंगटन (अमेरीका) का डॉक्टर मुझे कहने लगा कि सोते हुये भी मिस्वाक करके सोया करें। मैंने कहा वह क्यों? वह कहने लगा कि इसलिए कि आज की रिसर्च ये है कि इन्सान जो खाना खाता है, चीज़े खाता है तो मुंह के अन्दर प्लाज़्मा आम कुल्ली करने से साफ़ नहीं होता।

कहने लगा कि (Maximum) जो दाँत ख़राब होते हैं वह सोने के वक़्त होते हैं। मैंने कहा वह क्यो? कहने लगा उसकी वजह यह है कि जब इन्सान सो जाता है तो उसका मुंह बिलकुल बन्द हो जाता है और बन्द मुंह के अन्दर उसका (Work) यानी काम असाान हो जाता है। यूँ न तो मुंह मु–त–हर्रिक होता है और प्लाज़्मा (Plazma) अपना पूरा काम कर रहा है।

कहने लगा कि आप देखेंगे कि दिन के वक़्त कभी बन्दा बोल रहा है, कभी ज़बान बोल रही है, कभी खा रहा है, कभी पी रहा है। दिन के वक़्त हरकत करने की वजह से प्लाज़्मे को काम करने का मौक़ा नहीं मिलता और रात के वक़्त जब मुंह बन्द हो जाता है तो उसे काम करने का मौक़ा मिल जाता है। इसलिए दांत ज़ियादा ख़राब रात के वक़्त होते हैं।

फिर कहने लगा कि सुब्ह टुथपेस्ट करें या न करें मर्ज़ी है लेकिन रात को सोते वक़्त मिस्वाक ज़रूर करें।

मैंने अलहम्दुलिल्लाह पढ़ी कि हमारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सुन्नत है कि रात वुज़ू के साथ सोते हैं और बग़ैर मिस्वाक के वुज़ू नहीं फ़रमाते थे। जब भी इन्सान खाना खाकर वुज़ू करेगा, मिस्वाक करेगा और नुक़सान से बचेगा कि नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम खाने से क़ब्ल हाथ धोते थे और खाने के बाद कुल्ली करते थे और आज लोग खाना खाकर इसी तरह उठकर चले जाते हैं। हालाँकि उनके मुंह के अन्दर मीठा खाया है, तो मीठे के असरात हैं और काफ़ी देर तक रहते हैं और अगर उसी वक़्त कुल्ली करने की आदत पड़ जाये तो कितना फ़ाइदा हो जाये। और फिर दिन में पाँच दफ़ा वुज़ू कर रहा है और फिर मुस्तकिल मुंह साफ़ हो रहा है और पाँच दफ़ा फिर इन्सान का यह इलक्ट्रॉनिक सिस्टम

Scanned by CamScanner

(Electronic System) साफ़ हो रहा है। ये हाथ पाँव वग़ैरह साफ़ हो रहे हैं।

नमाज़ से क़ब्ल मिस्वाक

(MISWAK BEFORE NAMAZ (PRAYER)

✡ दरअस्ल अज़ीमुशशान रब की हम्द बयान करना है तो मुँह का साफ़ होना ज़रुरी है।

✡ अगर खाना खाया है और मिस्वाक किये बग़ैर नमाज़ का वज़ू करके नमाज़ पढ़ी है तो ख़ोराक के ज़र्रात ज़बान में अटकते रहेंगे और नमाज़ के खुशूअ व खुजूअ में फ़र्क़ पड़ेगा ।

✡ नमाज़ी ने नमाज़ में खड़ा होना है अगर मुँह में से बदबू निकली तो लोग नफ़रत करेंगे और नमाज़ीयों को तकलीफ़ पहुँचेगी लेहाज़ा मिस्वाक से मुँह की बदबू ख़त्म होती है।

✡ मिस्वाक करने से मुँह के अन्दर ऐसी लहरें (RAYS) पैदा हो जाती हैं जिससे तिलावत–तसबीह और हम्दे इलाही में मज़ा और आसानी होती है।

✡ नमाज़ एक खालिक़ि ला यज़ाल और मौलाए अज़ीम के सामने हज़िरी है और अगर मेरा मुँह पाक न हुआ तो अल्लाह तआला के सामने शरमिंदगी होगी।

मिस्वाक–डाक्टर और सूइटज़रलैंड

Miswak-Doctor & Switzerland

दिलबर मन्सूर साहिब एक ताजिर और बहुत मुख़लिस आदमी है बन्दा से फ़रमाने लगे कि मैं सूइटज़रलैंड में था एक नौ मुस्लिम से मुलाक़ात हुई मैंने उस नौ मुस्लिम को मिस्वाक (पीलुकी) तोहफ़ा दिया उसने मिस्वाक लेकर उसको आँखों से लगाया तो उसको आँसू आ गये और फिर उसने जेब से एक रुमाल निकाला तो उसमें एक बिल्कुल छोटा तकरीबन दो इन्च से कम एक मिस्वाक लिपटा हुआ था कहने लगा की जब मैं मुस्लमान हुआ था तो मुस्लमानों ने मुझे ये हदीया दिया

था मैं उसको बड़ी एहतियात से इस्तेमाल करता रहा अब यही टुकड़ा बाकी बचा है तो आपने मेरे साथ एहसान किया है ।

फिर उसने अपना वाकि़या सुनाया कि मुझे तकलीफ थी और मेरे दाँत और मसूढ़े ऐसी मरज़ में मुबतला थे जिसका इलाज वहाँ के स्पेशलिस्ट डाक्टरों के पास कम था मैंने यह मिस्वाक इस्तेमाल करना शुरु कर दी कुछ अर्सा के बाद अपने डाक्टर को दिखाने गया तो डाक्टर हैरान रह गया और पूछा आपने कौन सी ऐसी दवा इस्तेमाल की है जिसकी वजह से इतनी जल्दी सेहतयाबी हो गई है तो मैंने कहा कि सिर्फ़ आपकी दवाई इस्तेमाल की है कहने लगा हरगिज़ नहीं मेरी दवाई से इतनी जल्दी सेहतयाबी नहीं हो सकती आप सोचें तो जब मैंने ज़ेहन पर ज़ोर दिया तो फ़ौरन ख़्याल आया मैं मुस्लमान हूँ और मैं मिस्वाक इस्तेमाल करता हूँ और मैंने मिस्वाक दिखाया तो डाक्टर बहुत हैरान हुआ और नई तहकीक में पड़ गया ।

मिस्वाक और गुरुनानक

Miswak & Guru Nanak

गुरुनानक के मुतअल्लिक मशहूर है कि वह मिस्वाक हाथ में रखते थे और दाँतों को मिस्वाक करते रहते थे, और फ़रमाते थे– "या ये लकड़ी ले लो या फिर बीमारी ले लो कितनी गहरी बात है कि मिस्वाक ले लो" तो अमराज़ ख़त्म वर्ना अमराज़ से वास्ता पड़ना एक ज़रुरी बात है ।

मिस्वाक और मुँह की बदबू

Miswak & Mouth Bad Stench

एक साहिब मुँह की बदबू के लिये आला किस्म की टूथ पैस्ट इस्तेमाल कर चुके थे अदवायात मंजन और तरह–तरह की दाफ़ए तअफ़्फून अदवियह (MEDICINE ANTISEPTIC) इस्तेमाल कीं । मशवरह किया तो पिलू का मिस्वाक इस्तेमाल करने का मशविरा दिया और साथ यह इहतियात बताई कि रोज़ाना मिस्वाक के रेशे नये हों यानी रोज़ाना इन रेशों को काटते रहें और नये रेशे इस्तेमाल करते रहें (ये आदमी के लिये ज़रुरी है वर्ना मिस्वाक के फ़वायदे मतलूबा से महरुमी होगी) कुछ थोड़े अर्से

Scanned by CamScanner

के बाद वह तन्दुरुस्त हो गया।

दिल की झिल्लियों में पीप और मिस्वाक

Pus In Sultry of Heart & Miswak

हकीम एस. एम. इक़बाल अखबारे जहाँ में लिखते हैं कि मेरे पास एक मरीज़ आया जिसके दिल की झिल्लियों में पीप भरी हुई थी और दिल का इलाज करते रहे अफ़ाक़ा न हुआ आख़िर दिल का ऑपरेशन करके पीप निकाली गई है कुछ अर्से के बाद फिर पीप भर गई थक हार कर मेरे पास आये तो मैंने तशख़ीस की तो पता चला कि उसके मसूढ़े ख़राब हैं और इनमें पीप पड़ी हुई है और वह पीप दिल को नुक़सान पहुँचा रही है इस तशख़ीस को डाक्टरों ने भी तसलीम किया है ।

अब उसका पहला इलाज दाँतों और मसूढ़ों का किया गया खाने के लिये कुछ दवाएं और पीरु का मिस्वाक इस्तेमाल करने के लिये दिया गया बहुत जल्द मरीज़ ने अफ़ाका महसूस किया ।

दाँतों के अमराज़ और दस हज़ार दिरहम

Diseases Of Tooth & Ten Thousand Dirham

अरब मुल्क से एक मरीज़ ने लिखा कि दाँतों के एक पुराने मरज़ में मुबतला हूँ और इस इलाज पर दस हज़ार दिरहम लगा चुका हूँ लेकिन अफ़ाका नदारद ख़त में जवाब दिया कि आप मिस्वाक सिर्फ़-पीलू का इस्तेमाल करें और दो माह मुस्तकिल दिन में पाँच दफ़ा नमाज़ों में और एक दफ़ा तहज्जूद में किसी किस्म की दवाई इस्तेमाल न करें । अलहम्दु लिल्लाह मरीज़ हैरत अंगेज़ तरीक़े से तन्दरुस्त हो गया लेकिन मिस्वाक ताज़ा हो ।

Scanned by CamScanner

मुँह का ज़ाइक़ा और मिस्वाक

Taste of Mouth & Miswak

एक साहिब मुँह के ज़ाइक़े की लज़्ज़त से महरुम थे बहुत इलाज करायें लेकिन अफ़ाक़ा न हुआ हत्ता कि किसी ने बताया कि आप ज़बान पर जोंके लगवाएं उसने ज़बान को जोंको के ज़रीये ज़ख़्मी किया लेकिन फ़ायदा फिर भी न हुआ । उसको मशविरा दिया कि आप बिल्कुल ताज़ा मिस्वाक (पीलू) इस्तेमाल करें एक माह के बाद फिर बताएं मरीज़ का कहना है कि ये एक रुपये की मिस्वाक हज़ारों दवाओं पर भारी है और उसका ज़ाइक़ा वापस आ गया ।

मिस्वाक और गले

Miswak & Throat

टॉनसिल (TONSILS) के मरीज़ों को जब मिस्वाक बाक़ायदा इस्तेमाल कराया गया तो ऐसे मरीज़ बहुत जल्द सेहतयाब हुये।

एक साहिब के गले के गदूद बढ़ने से परेशान थे उनको शरबते तूत और मिस्वाक इस्तेमाल कराया गया यानी शरबते तूत पीने के लिये और मिस्वाक बिल्कुल ताज़ा इस्तेमाल कराई गई और मिस्वाक के टुकड़े करके उसको पानी में उबाल कर उसके ग़रारे कराये गये मरीज़ ने फ़ौरी अफ़ाक़ा महसूस किया।

एक अजीब केस

(A STRANGE CASE)

एक मरीज़ को तकलीफ़ ये थी कि उसके गर्दन में दर्द, गले में दर्द और सूजन आहिस्ता–आहिस्ता आवाज़ में कमी और फिर दिमाग़ी याददाश्त में कमी, सर का चकराना वग़ैरह अमराज में मुबतला था । ब्रेन स्पेशलिस्ट (BRAIN SPECIALIST) और आम जेनेरल फ़िज़िशीयन (GENERAL PHYSICIAN) के बहुत इलाज कराये

लेकिन हालत नहीं बदली । उसके इलाज के लिये मिस्वाक काटकर उसको उबालकर उसको गरारे कराये गये । मिस्वाक मुस्तकिल करने को कहा गया बाहरी तौर पर गर्दन के सामने यानी ठूड़ी के नीचे उभार पर दवा का लेप कराया गया बहुत फायदा हुआ ।

अलअस्ल उसकी तश्ख़ीस यही की कि थाईरायेड गलैन्ड प्रभावित (INFECTED) हैं जिसकी वजह से उसका तमाम जिस्म प्रभावित हुआ अब उनका इलाज किया गया। मरीज़ तन्दरुस्त हो गया ।

मिस्वाक और मुँह के छाले

Miswak & Blister Of Mouth

कुछ मुँह के छाले गर्मी की वजह से और तीज़ाबियत की वजह से होते हैं। और उनमें एक किस्म ऐसी भी है जिसमें खास किस्म का जरासीम फैल जाता है और उसके लिये ताज़ा मिस्वाक को मुँह में मलें और उसके लुआब को मुँह में हासिल करके मुँह के अन्दर ख़ूब मलें। इस तर्कीब से कई मरीज़ तंदरुस्त हो गये।

मिस्वाक और दाँतों की पीलाहट

Miswak & Yellowness Of Tooth

अकसर लोग शिकायत करते हैं एक तो दाँत से सफ़ेदी का अस्तर उतर जाता है वर्ना मिस्वाक के नये–नये रेशे दाँतों की पीलाहट के लिये मुफ़ीदतर है।

मिस्वाक और जरासीम

Miswak & Germs

मिस्वाक दाफ़ए तअफ़्फ़ुन है (ANTI-SEPTIC) जब भी उसको मुँह में इस्तेमाल किया जायगा तो ये अन्दर के जरासीम क़त्ल कर देता है जिससे नमाज़ी बेशुमार अमराज़ से बच जाता है। हत्ता कि बाज़ जरासीम सिर्फ़ मिस्वाक के अन्दर अन्ती

Scanned by CamScanner

सेप्टिक मवाद की वजह से मरते हैं ।

मिस्वाक और दिमाग़

(MISWAK AND BRAIN)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहु का कौल है कि मिस्वाक से दिमाग़ तेज़ होता है । अस्ल मिस्वाक के अन्दर फास्फूरस (PHOSPHORUS) होता है। तहक़ीक़ात के मुताबिक जिस ज़मीन में कल्शियम और फास्फूरस की ज्यादती होगी वहाँ पीलू का दरख़्त ज़्यादा पाया जाएगा। इसलिये चूंकि क़ब्रिस्तान की मिट्टी में कैल्शियम और फास्फूरस इन्सानी हड्डियों के गलने की वजह से ज्यादा होता है। यही वजह है कि यहाँ पीलू का दरख़्त भी ज्यादा होता है और दाँतों के लिये कल्शियम और फ़ास्फूरस अहम ग़िज़ा है और ख़ास तौर पर पीलू की जड़ में ये अजज़ा आम होते हैं। मुशाहदे में ये बात सामने आयी है कि अगर पीलू की मिस्वाक को ताज़ा और नर्म हालत में चबाया जाये तो उसके अन्दर से एक तल्ख़ और तेज़ माद्दा निकलता है। यही माद्दा मिस्वाक के अन्दर जरासीमों की पैदाइश को राकता है और दाँतों को मरज़ से बचाता है। इसलिये ये बात अहम है कि पीलू के मिस्वाक के रेशे तोड़ते या काटते रहें ताकि नये रेशे इस्तेमाल हों और उसका तल्ख़ माद्दा सेहत के लिये काबिले इस्तेमाल रहें।

कनेर– कीकर– नीम

Oleander- Acacia- Margosa

कीकर या नीम इन दोनों के फ़ायदे और अच्छाई से कौन आगाह नहीं लेकिन मैं यहाँ कनेर की मिस्वाक का ज़िक्र करुँगा यानी कनेर दो किस्म की होती है। लाल फूलों वाली और सफ़ेद फूलों वाली दोनों आम तौर पर पारकों और बाग़ों में पाई ज़ाती है। बाग़ के मालियों से मालूम करने से इनके मिस्वाक तोड़े जा सकते हैं ।

एक साहिब ने दस हज़ार दिरहम अपने दाँतों के इलाज़ के लिये ख़र्च किये। वह साहिब मुलके अरब से तअल्लुक रखते हैं आख़िर कार जब उसको कनेर और पीलू की मिस्वाक इस्तेमाल कराइ गयी तो वह बिलकुल तन्दुरुस्त हो गये। इलाज़ करने वाले और खुद में बहुत अर्सा से पाइरिया के मरीज़ों को कनेर की मिस्वाक

Scanned by CamScanner

इस्तेमाल करा रहा हूँ और लाइलाज मरीज़ इससे सेहत पा चुके। मिस्वाक को पहले पानी के गिलास में भिगो रखें फिर उसको चबा–चबा कर रेशादार करें और दाँतों पर उपर से नीचे और नीचे से उपर मिस्वाक करें।

कनेर की मिस्वाक अगर्चे कड़वी होती है लेकिन दाँतों के अमराज के लिये बहुत मुफ़ीद है उसके अन्दर ऐसे अजज़ा पाये जाते हैं जो दाँतों को मजबूत चमकदार और पाइरीया जैसे मुहलिक अमराज़ की रोक थाम के लिए अक्सीर है।

दाँत और दिमाग़

Tooth & Brain

गन्दे और पीप वाले दाँत दिमाग़ी बीमारियों का कारण बनते हैं। इनमें नफ़सियाती बीमारी मसलन, जुनून, ख़ब्त और दूसरी ख़तरनाक बीमारीयाँ शामिल है । एक साहिब की बीबी को दिमाग़ी बीमारी थी । पेचीदा टेस्टों के बाद मालूम हुआ कि दिमाग़ के परदे में पीप पड़ चुकी है और मरीज़ा लम्बे अर्से से पाइरीया में मुबतला थी और वही पीप इस मरज़ की वजह बन गई । इस तरह पीप के असरात पिचौड़ी ग्लैन्ड पर मुहलिक होते हैं।

दाँत और कान

Tooth & Ear

बाज़ ऐसे मरीज़ों पर डाक्टरों के ख़्याल में कि जिनके कानों में वर्म, पीप, लाली और दर्द की कैफ़ीयत पायी जाती थी बहुत इलाज कराये लेकिन बिलकुल अफ़ाका न हुआ। तहक़ीक़ और तशख़ीस पर मालूम हुआ कि मरीज़ के मसूढ़ों में पीप पड़ चुकी है। जब मरीज़ के मसूढ़ों का इलाज किया गया तो मरीज़ बिलकुल ठीक हो गया ।

दाँत और बसारत

Tooth & Sight

दाँत के अमराज़ का बसारत और आँखों की बीमारियों से गहरा तअल्लुक़ है।

Scanned by CamScanner

दाँतों की पीप या दाँतों की खाली जगहों में जब खोराक के जर्रात फंसकर मुतअफ्फिन हो जायें जिस की वजह से आँखें अमराजों एलल में मुब्तिला हो जाती हैं तो देखने की कमज़ोरी और अंधापन पैदा हो जाता है। आजकल ज़ोफ़ें बसारत की जहां और वजूहात हैं उनमें एक बड़ी वजह दाँतों की तरफ़ से ग़फ़लत है। अगर दाँतों को साफ़ किया भी जाता है तो बर्श से, क्या बर्श दाँतों के लिये मुफ़ीद है ? या हानीकारक उसकी विज़ाहत आगे बयान करेंगे ।

दाँत और मेदा

Tooth & Kidney

माहिरीन के तमातर तजरिबे और तहक़ीक़ के मुताबिक अस्सी फीसद मेदा की बीमारियाँ दाँतों की ख़राबी और मरज़ की वजह से होते हैं। क्योंकि मेदा की बीमारियाँ आज के दौर की इलामत बनकर रह गयीं हैं। लेकिन जब मसूढ़ो की पीप ग़ेज़ा के साथ या बग़ैर ग़ज़ा के मुँह के लुआब के साथ मिलकर मेदे में जाती है तो यही पीप मरज़ की वजह बनती है। और तमाम पाकीज़ा ग़ज़ा को ग़लीज और मुतअफ़्फ़िन बना देती है। मेदे और जिगर के इलाज से पहले दाँतों की सेहत का ख़ास ख़्याल किया जाये इस तरह मेदे की बीमारियों का जल्दी और मुस्तक़िल इलाज मुमकिन है।

दाँत और मआशरह

Tooth & Society

इन्सान जब किसी मजलिस में शरीके गुफ़तगू होता है या सवारी में साथ होता है ख़ास तौर पर जहाज़ की स्वारी में तो उसकी सांस से बदबू महसूस होती है और साथ बैठने वाले की शामत आ जाती है। इस तरह अगर इन साहिब को खाँसी शुरु हो जाये तो फिर तमाम फ़िज़ा मुअत्तर होकर रह जाती है। इस सिलसिले का इलाज करते वक़्त सबसे पहले दाँतों का ख़्याल रखा जाये क्योंकि अकसर बदबू की वजह दाँत होते हैं। वर्ना मेदे का इलाज किया जाये।

अलगरज़ सेहत और तन्दुरुस्ती के लिये दाँतों की तन्दुरुस्ती और हिफ़ाज़त बहुत

Scanned by CamScanner

ज़रुरी है। क्योंकि कामयाब ज़िन्दगी सेहतमन्द ज़िन्दगी है और वह ज़िन्दगी कभी कामयाब नहीं हो सकती जिस में सेहत की हिफ़ाज़त के उसूलों से बग़ावत हो।

बर्श और मिस्वाक में फ़र्क़

Differnce Between Bursh & Miswak

एक अहम सवाल ये पैदा होता है कि दाँतों की सफ़ाई और हिफ़ाज़त के लिये बर्श ज़रुरी है या मिस्वाक? हम पहले बर्श की अच्छाई या बुराई पर बहस करते हैं।

बर्श

Bursh

जरासीम के माहिरीन की बरसों की तहक़ीक़ के बाद ये बात साबित हो चुकी है कि जिस बर्श को एक दफ़ा इस्तेमाल किया जाये उसका इस्तेमाल सेहत और तन्दुरुस्ती के लिये उस वक़्त तक हानीकारक है जब उसको दोबारा इस्तेमाल किया जाये । क्योंकि उसके अन्दर जरासीमों की तह जम जाती है अगर उसको पानी से साफ़ किया भी जाये तो जरासीम फलते–फूलते रहते हैं। दूसरी बात बर्श दाँतों के उपर चमकीली और रोशन तह को उतार देता है जिसकी वजह से दाँतों के दरमियान ख़ाली जगह पैदा हो जाती है और दाँत आहिस्ता–आहिस्ता मसूढ़ों की जगह छोड़ते जाते हैं। इस ग़ज़ा के ज़र्रात ख़ाली जगहों में फंसकर मसूढ़ों और दाँतों के लिये नुकसान की वजह बनते हैं।

मिस्वाक

Miswak

हर उस लकड़ी का मिस्वाक दाँतों के लिये ठीक होता है जिसके रेशे नर्म हों और दाँतों के दरमियान ख़ाली जगहों को ज़्यादा न करें और मसूढ़ों को ज़ख़्मी न करें लेकिन इनमें सबसे ज़्यादा अहम तीन किस्म की लकड़ी मिस्वाक में

(1) पीलूका मिस्वाक (2) कनेर का मिस्वाक (3) नीम या कीकर का मिस्वाक

Scanned by CamScanner

पीलू का मिस्वाक

Miswak of Peelu

मिस्वाक सुन्नते नबवी है दरअस्ल हर नमाज़ के पहले उसका इस्तेमाल दीने इस्लाम में लाज़िम क़रार दिया है। अगर उसके असरात और फ़ाइदे को देखे जाये तो उस के रेशे नर्म होते हैं और उसके अन्दर कल्शियम और फास्फोरस पाया जाता है। पंजाब के इलाक़ों में ये दरख़्त अकसर शोर और कलरजदह और वीरान इलाक़ों में पाया जाता है। और माहिरीने अरज़ियात की जहीद तहक़ीक़ से ये बात साबित होती है कि दिमाग़ की ख़ोराक और मददगार जहाँ और बहुत सी ज़रुरीयात है वहाँ फासफोरस भी और ये फासफोरस लुआब और मसार्से के ज़रीये दिमाग़ तक पहुँचता है। इसलिये दिमाग़ ताकतवर और मज़बूत होता है।

दाइमी नज़ला और मिस्वाक

Permanent Catarrh & Miswak

दाइमी नज़ला के वह मरीज़ जिनका बलग़म रुका हुआ होता है जब वह मिस्वाक इस्तेमाल करते हैं तो बलग़म अन्दर से निकलता है जिससे दिमाग़ हलका होता है। एक पैथो लोजिस्ट (PATHOLOGIST) कहने लगे और तजरिबे और तहक़ीक़ में ये बात आ चुकी है कि मिस्वाक दाइमी नज़ले के लिये तिरयाक़ है। हत्ता कि उसके मुस्तक़िल इस्तेमाल से नाक के आप्रेशन और गले के आप्रेशन के चॉन्स (CHANCE) बहुत कम हो जाते हैं।

दाँत और मिस्वाक

Tooth & Miswak

ज़िन्दगियों के तजरिबात और मुशाहिदात का निचोड़

मुसकुराहट दिल की शादमानी और जौफ़शानी के लिये माया ग्रॉक़द्र से कम नहीं लेकिन जब यही मुस्कुराहट नफ़रत और कराहत का सबब बनकर इनसान के लिये उलफ़तों और चाहतों की ज़िद बन जाये यानी जब एक खूबसूरत व खूबसीरत शख़्स

Scanned by CamScanner

इजहारे मुसर्रत में मुसकुराता है तो दाँत जो कि ज़बान की लज़्ज़त का जरीया बनकर ताक़त और कुवत के लिये मददगार साबित होते हैं वही दाँत इस इन्सान की ग़फ़लत और लापरवाही का खुला सुबूत होते हैं यानी गन्दे पीले, मैले दाँत इन्सान के लब पर गुनाह और ज़बान सत्या नासी के दरमियान ज़ाहिर होते हैं।

सेहत और उम्र को बढ़ाने के लिये शुरु ही से इनसान कोशिश करता नज़र आता है लेकिन हस्सास और अक़लमंद आदमी को देखा तो दाँत ना साफ़ नज़र आये। आइये हम मुशाहिदात और तजरिबात की रोशनी में इस बात को बताते हैं कि दाँतों की सफ़ाई से ग़फ़लत इनसान को बहुत सी बीमारियों से मिला देती है। अगर कोई मंजन देसी तरीक़े से बना हुआ हो जिसमें तेज़ दवा शामिल न हों तो भी दाँतों के लिये मुफ़ीद है। लेकिन जो असरात कनीर, पीलू या नीम के मिस्वाक में पाये जाते हैं वह किसी और चीज़ में नहीं पाये जाते।

वज़ू
(WAZOO)

अज़ान :– हुक्म है अब छोड़ वह सब असबाबे गिलाज़त जिससे तुम्हारा ज़ाहिर और बातिन बदनुमा हो गया है। अज़ान :– हुक्म है कि छोड़ दो असबाबे अमराज़ जिससे तुम रुहानी और जिसमानी मरीज़ बन गये हो। और आप मस्जिद में आयें अगर हमारे हुज़ूर आना चाहते हों तो अन्दर और बाहर की सफ़ाई ज़रुरी है तो तुम बाहर को साफ़ करने की कोशिश तमाम करो तुम्हारा हम अन्दर साफ़ कर देंगे।

वज़ू, तहरारत (WAZOO-A-TAHARAT) एक ऐसा इस्लामी इमतेयाज़ी अमल है जो किसी भी मज़हब में नहीं पाया जाता। ऐसा अमल जिससे बदन के वह हिस्से साफ़ हों जिनके ज़रीये अमराज़ जिस्म में दाख़िल होते हैं। और यही ज़रीया है अमराज़ के फैलने और फूलने का। यही तरीक़ा है अमराज़ को कन्ट्रोल करने का कि इन रास्तों की हिफ़ाज़त की जाये।

वज़ू मुहाफ़िज़ है उन रास्तों का जिनके ज़रीये सेहत का दुशमन जिस्म में दाख़िल होता है। शायद ऐसा मुहाफ़िज़ (GUARD) किसी को मिले। क्या इस्लाम तरक़्क़ी का नाम है या तनज्जुलीका? इस्लाम का मुसतक़बिल रोशन है या तारीक? इस्लामी अहकामात सेहत है या गरज? इसलाम सेहत और तन्दुरुस्ती का रास्ता है।

Scanned by CamScanner

अगर समझते हैं तो फिर समझें वर्ना फिर अक़्ल पर ज़ोर देकर इस किताब के सफ़हात पढें। इसलाम क्या देता है और साइंस क्या चाहती है और फ़ैशन ने क्या दिया?

हाथों का धोना
(Hand Washing)

दौराने वज़ू सबसे पहले हाथ धोए जाते हैं क्योंकि हाथों के बाद कुल्ली करनी है और अगर हाथ ना साफ़ और जरासीम (GERMS) आलूदा होंगे तो यही जरासीम मुँह के रास्ते जिस्म में गुतअद्दिद अमराज़ का सबब बन जाएंगे।

मौजूदा मशीनी दौर में इनसान बहुत मसरूफ़ हो गया है। ऐसे मसरुफ़ इनसान के लिये हर काम करना ज़रुरी है। अब बाज़ औकात यही हाथ केमीकल्ज़ को लगते हैं। अगर यही केमीकल्ज़ कुछ वक़्त हाथों को लगे रहें तो बहुत नुकसान पहुँचता है।

बिलकुल यही कैफ़ीयत ऐसे कारोबारी हज़रात की है जिनके हाथ हर वक़्त किसी न किसी चीज़ में अटके और भरे रहते हैं और यही हालत अगर सुबह व शाम तक रहे तो हाथ बहुत जल्द जिल्दी अमराज़ में मुबतिला हो जाते हैं। अगर हाथों को नमाज़ के बहाने वज़ू क़े दौरान धोया न जाये तो नीचे लिखे अमराज़ के फैलने के बहुत ज़्यादा ख़तरात होते हैं। जिल्द का रंग और उसकी बीमारियाँ (SKIN AND DISEASESof skin) गर्मी दाने (PRICKLY HEAT) जिल्दी सोज़िश (INFECTION OF SKIN) फफोंदी की बीमारियाँ (DISEASES OF FONGUS) अलगर्ज़ जब हम वज़ू के लिये हाथों को धोते हैं तो उंगलियों के पोरों में से निकलने वाली शुआएं (RAYS) एक ऐसा हलक़ा बना लेती हैं जिसके नतीजे में हमारे अन्दर गर्दिश करने वाला बिजली का निजाम तेज़ हो जाता है और बिजली की रौ जिसके (ELECTRIC RAYS) एक हदतक हाथों में सिमट आती है इस अमल से हाथ खूबसूरत हो जाते है । सही तरीक़ा पर वज़ू करने से उंगलियों में ऐसी लचक पैदा हो जाती है जिससे आदमी के अन्दर तख़लीक़ी सलाहीयतों को केन्विस पर मुनतक़िल करने की पोशीदा सलाहीयतें बेदार हो जाती है

Scanned by CamScanner

कुल्ली करना

(Mouth Wash)

कुल्ली करने से क़ब्ल मिस्वाक किया जाता है जिसका ज़िक्र हो गया है। कुल्ली दरअस्ल उस चीज़ का नाम है कि हम जो पानी इस्तेमाल कर रहे हैं वह सेहत के लिये नुकसानदेह तो नहीं क्योंकि हाथ पानी को छूते हैं और कुल्ली से रंग–बू–और जाइक़े की पहचान होती है। हम खाना खाते हैं तो गिज़ाई ज़र्रात दाँतों में अटक कर रह जाते हैं और फिर वह गिज़ाई जर्रात मुत्तअफ़्फ़िन (SEPTIC) होकर एक ख़ास शक्ल इखतियार कर लेते हैं और मुँह के लुआब के ज़रीये मेदे में पहुँचते रहते हैं और यही मुतअफ़्फ़िन माद्दा (SEPTIC MATERIAL) दाँतों और मसूढ़ों को नुक़सान पहुँचाता रहता है। कुल्ली और मिस्वाक से ये बीमारीयाँ नहीं होती। हम हवा में बेशुमार मुहलिक अमराज़ के जरासीमों को नहीं देख सकते लेकिन वह जरासीम हमारे मुँह में हवा के रास्ते जाते रहते हैं और लुआब की वजह से चिपक जाते हैं अगर उनको साफ़ न किया जाये तो वह नीचेलिखी हुई बीमारियों के वजह बनते हैं।

मुँह की बीमारीयाँ

(Stomatitis) (Thrush)

एडज़ (AIDS) की इबतेदाई अलामात में मुँह पकना भी शामिल है मुँह के किनारों का फटना (CHEILOSIS ANGULAR STOMATITIS) होंटों और मुँह की दाद कूबा (CANDIDIASIS) (MONILIASIS) मुँह में फफोंदी की बीमारियाँ (छाले वगैरह) (DISEASES OF FUNGUS) अलगरज़ कुल्ली एक ऐसा अमल है जिससे इनसान ऐसी अमराज़ से बच जाता है जिस मरज़ में इनसान न दीन का रहता है और न दुनिया का। मज़ीद ये कि कुल्ली के साथ ग़रारा है जिससे नमाज़ी टानसिल और गले के बेशुमार अमराज से बच जाता है। हत्ताकि गले में बार–बार पानी पहुँचाना आदमी को गले के केन्सर से बचाता है।

Scanned by CamScanner

नाक में पानी डालना

(Nose Wash)

नाक साँस लेने का वाहिद रास्ता है और जिस हवा में साँस लेते हैं उसके अन्दर बेशुमार अमराज़ फलते फूलते रहते हैं और नाक के रास्ते इंसानी जिस्म में आसानी से गुज़र जाते हैं। अब अगर यही जरासीम धूल, गर्दोगुबार जो हर वक़्त हमारी नाक में साँस के ज़रीये पहुँचती रहती है सुब्ह से शाम तक पहुँचती ही रहे तो जल्द ख़तरनाक अमराज़ फैलने के ख़तरात बढ़ जाते हैं। हत्ता कि दाइमी नज़ला और नाक के जख़्म के मरीज़ों के लिये नाक का गुस्ल बहुत मुफ़ीद और मुजर्रब है।

अब हम वज़ू की बरकत से नाक दिन में पाँच बार साफ़ करते हैं इसलिये मुमकिन ही नहीं कि किसी किस्म का कोई जरासीम नाक में परवरिश पा सके।

क्योंकि नाक इनसानी जिस्म में एक निहायत अहम और क़ाबिले तवज्जुह अज़्व है। नाक की ज़बर्दस्त सलाहीयत ये है कि आवाज़ में गहराई और सोहाना पन पैदा करती है। ज़रा उंगलियों से नाक के नथनों को दबाकर बात करने की कोशिश कीजिये आप को फ़र्क़ मालूम हो जायेगा। नाक के अन्दर के परदे आवाज़ की खूबसूरती में एक मख़सूस किर्दार अदा करते हैं और मुँह सर को रोशनी फ़राहम करते हैं।

नाक के खास फ़राइज़ में सफ़ाई के काम को बड़ा दख़ल है। फेफड़ों के लिये हवा को साफ़, मरतूब, गर्म और मौजू बनाती है। हर आदमी के अन्दर रोज़ाना तक़रीबन पाँच सौ मकअब फिट हवा नाक के जरीये दाख़िल होती है।

बर्फ़ बारी के मौसम में मुंजमिद और खुश्क दिन में आप बर्फ़ पोश मैदान में स्केटिंग शुरु कर दें लेकिन आप के फेफड़े खुश्क हवा से कोइ दिलचस्पी नहीं रखते और उसकी एक रमक़ कुबूल करने को तैयार नहीं। उन्हें उस वक़्त भी ऐसी हवा की ज़रुरत होती है जो गर्म और मरतूब फ़िज़ा में मिलती है यानी वह हवा जिसमें अस्सी फीसद रतूबत हो और जिसका दर्जाए हरारत नव्वे दर्जा फारेन हाइट से ज़्यादा हो। फेफड़े जरासीम से पाक, धुएं या गर्दो गुबार से साफ़ होते हैं ऐसी हवा फ़राहम करने वाला मामूली एयर कंडीशनर (AIR CONDITIONER) एक छोटे ट्रंक

Scanned by CamScanner

के बराबर होता है। लेकिन नाक के अन्दर कुदरत ने उसको इतना मुख़्तसर और जागे (INTEGRATED) कर दिया है कि वह सिर्फ़ चंद इंच चौड़ा है।

नाक हवा को मरतूब बनाने के लिये तक़रीबन चौथाई गेलन नमी सर अनजाम देते हैं। नाक के अन्दर एक खुर्दबीनी (MICROSCOPIC) झाडू है । इस झाडू के अन्दर गैर मरई (NON DESCREPTIVE) रोएं होते हैं जो हवा के ज़रीये मेदा के अन्दर पहुँचने वाले मुज़िर जरासीमों को हिलाक कर देते हैं। जरासीम को अपने मशीनी अनदाज़ में पकड़ने के एलावा उन गैर मरई रोओं के पास एक और दिफ़ाई निज़ाम है जिसे अंग्रेज़ी में (LYSOZIUM) कहते हैं। इस दिफ़ाई निज़ाम के ज़रीये से नाक और आँखों की ख़तरनाक बीमारी (INEECTION) से बचाती है।

जो नमाज़ी वज़ू करते वक़्त नाक के अन्दर पानी डालता है तो पानी के अन्दर काम करने वाली बर्क़ी रौ नाक के अन्दर गैरमरई रोओं की कार करदगी को तक़वीयत पहुँचाती है। जिसके नतीजे में वह बेशुमार पेचीदा बीमारियों से महफ़ूज़ रहता है।

चेहरा धोना

(Face Wash)

एक मरीज़ का चेहरा हर वक़्त गर्म रहता था। ठंडी दवाएं हर किस्म की अन्टी एलर्जी (ANTL ALLEGRY) दवाएं इस्तेमाल कीं लेकिन फ़ायदा नहीं हुआ। उसको नमाज़ पढ़ने और हर नमाज़ के बाद नया वज़ू करने की ताकीद की गयी और दरुद शरीफ़ पढ़कर हाथों पर फूँक कर मुँह पर फेरने को कहा गया । मरीज़ हैरत अंगेज़ तरीक़े से जल्द तन्दुरुस्त हो गया चेहरे का धोना बेशुमार अमराज़ से महफ़ूज़ रखता है। जो नीचे लिखे जाते हैं।

केमीकल्ज़ से बचाव

Protection Of Chemicals

एटमी दौर में हर तरफ़ एटमी धमाके हो रहे है। माहिरीन बार-बार ताकीद कर रहे हैं कि ज़्यादा से ज़्यादा दरख़्त लगाए जाएं और आलूदगी को कम किया जाये

Scanned by CamScanner

चेहरे और खुले आज़ा को धोया जाये वर्ना ये केमीकल्ज़ जो धूएं, गर्दो गुबार और धूल की शक्ल में चेहरे पर जमते रहते हैं उनका वाहिद इलाज सिर्फ़ वज़ू है। धूएं में कई ख़तरनाक केमीकल्ज़ मसलन सीसा (LEAD) वग़ैर होते हैं जो अगर मुस्तक़िल या कुछ अर्सा तक जिल्द पर जमे रहें तो जिल्दी अमराज़ और एलर्जी के अमराज़ पैदा हो जाते हैं।

चेहरे के मुहासे और दाने

Pumple Of Face

चेहरा धोने से चेहरे पर दाने नहीं निकलते या फिर उन के निकलने की शर्ह कम हो जाती है। माहिरीने हुस्नो सेहत इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि तमाम क्रीमें, उबटन और लूशन चेहरे पर दांग़ छोड़ते हैं। हुस्न और खूबसूरती के लिये चेहरा का कई बार धोया जाना बेहद ज़रुरी है।

अमेरिकन कान्सिल फार ब्यूटी

(Amirican Council For Beauty)

की सरकरदा मिम्बर लेडी बेचर ने अजीब–व–गरीब इन्केशाफ़ किया है । उसका कहना है कि मुसलमानों को किसी किस्म के क्रीम या लूशन की ज़रुरत नहीं उनके इसलामी वज़ू से चहरा का गुस्ल हो जाता है और चेहरा कई अमराज़ से बच जाता है।

चेहरे की एलर्जी

Allergy Of Face

चेहरे की एलर्जी के मरीज़ अगर चेहरे को वज़ू के वक़्त अच्छी तरह धोएं तो एलर्जी के नुकसानात कम हो जाते हैं।

मुहक्कम–ए माहौलियात के माहिरीन इस बात पर मुत्तफ़िक़ है कि एलर्जी से

Scanned by CamScanner

बचने के लिये चेहरे को बार–बार धोया जाये और ऐसा सिर्फ़ वज़ू के ज़रीये ही मुमकिन है।

चेहरे का मसाज

Massage of Faces

जब हम वज़ू के लिये चेहरा धोते हैं तो तीन दफ़ा चेहरा धोने का हुक्म है तो इस कैफ़ियत में जब नमाज़ी चेहरा धोता है तो उसका हाथों से चेहरे का मसाज हो जाता है। और दौराने खून चेहरे की तरफ़ रवाँ हो जाता है मज़ीद ये कि जमी हुई मैल और गर्द उतर जाती है जिससे चेहरे का हुस्न बढ़ जाता है।

चेहरे को तीन बार धोने की हिकमत ये है कि पहले चेहरे पर पानी डालकर नर्म करें दूसरे पानी से उसकी मैल उतरेगी और तीसरे पानी से चेहरा धुल कर साफ़ व शफ़्फ़ाक हो जायेगा।

भवों में पानी का रुकना

Water Stoping In Eyebrow

वज़ू करने के बाद भवें पानी से तर हो जाती हैं। मेडीकल के ओसूल के मुताबिक अगर भवों में नमी रहे तो आँखों की एक ऐसी ख़तरनाक मरज़ से इनसान बच जाता है जिसमें आँख के अन्दर रतूबते जुजाजीयह कम या ख़त्म हो जाती है और मरीज़ आहिस्ता–आहिस्ता बसारत से महरुम हो जाता है।

बन्दा के पास इलाज के लिये एक मरीज़ लाया गया जो नाबीना था उसके अन्धेपन को कुछ महीने गुज़रे थे मरीज़ का कहना था कि मेरी निगाह आहिस्ता–आहिस्ता कम हुई डाक्टरों का कहना है कि आँखों में रतूबत और नमी गुम हो गयी है। एसाब खिंच गये हैं।

Scanned by CamScanner

आँखों के अमराज़ से बचाव

(Protection From Eye Diseases)

आप के घर में अगर किसी की आँख में तकलीफ़ हो तो कहते हैं कि आँख पर ठंडे पानी के छींटे मारो पानी एक ऐसा तिर्याक़ है जिससे आँखों की हर मरज़ ख़त्म हो जाती है। गर्दो गुबार जहाँ चेहरे और नाक को मुतअस्सिर करते है इस तरह आँख को भी बहुत ही ज़्यादा मुतअस्सिर करते हैं। आशूबे चश्म की वजह यही गर्दो गुबार ही होती है और अगर आँखों को धोते रहें तो आँखें बेशुमार अमराज़ से बच जाती हैं एक योरोपीयन डाक्टर ने एक मज़मून में लिखा जिसका उनवान था

आँखें–पानी–सेहत

Eye-Water-Health

इसमें उसने इस बात पर ज़ोर दिया है कि अपनी आँखों को रोज़ाना कई बार पानी से धोते रहो वर्ना तुम्हें ख़तरनाक अमराज़ से दो चार होना पड़ेगा।

(बहवाला "हमदर्द सेहत")

वज़ू की हिकमतें और मोतियाबिन्द का इलाज

Treatment Of Cataract & Wisdom Of Wazoo

किबला इंजिनीयर नक़्श बन्दी मद–द ज़िल्लहु आली मवाइज़ में लिखते हैं. "हुज़ूरे अक़दस (स0) जब सुब्ह उठते तो वज़ू किया करते थे" आज साइंस की दुनिया कहती है कि आँखों में मोतिया बिन्द हो जाता है उसका बुनियादी इलाज ये है कि इनसान सुब्ह–सुब्ह आँखों के अन्दर पानी के छींटे मारे जो आदमी तहज्जुद के लिये उठेगा तो वज़ू करेगा फिर फजर के लिये वज़ू करेगा तो उसकी आँखों की

Scanned by CamScanner

मरज़ दफ़ा हो जाती है।

अलगर्ज़ चेहरे का धोना जहाँ दीगर आज़ा को फ़ाइदा देता है वहाँ पल्कों के गिरने के मरज़ को भी ख़त्म करता है । आँख के पपूटे के वरम को भी ख़त्म करता है।

दाढ़ी का ख़िलाल

Khilal Of Beard

चूंकी दाढ़ी घनी और गुनजान होती है इसलिये शरई हुक्म यही है कि उसकी जड़ तक पानी पहुंचाया जाए ऐसा करने से बालों की जड़े मज़बूत होंगी । आम जरासीम (COMMON GERMS) और छूती अमराज़ के ज़रासीम (CONTAGIOUS GERMS) ख़त्म हो जाते हैं और पानी के जरीये बह जाते हैं अगर दाढ़ी का ख़िलाल न किया जाये तो जूओं (LICES) का ख़तरा लाहक़ रहता है।

मज़ीद यह कि अगर दाढ़ी में पानी रुक जाएगा तो वह गर्दन के पट्ठों (MUSCLES OF NECK) थाई राईड गलैंड (THYROID GLAND) और गले के अमराज़ से महफ़ूज़ रखता है।

(रिसर्च डाक्टर प्रोफेसर जार्ज एल ब–हवाला साइन्सी दुनिया)

केहनियों तक धोना

To Wash Elbow

जिस्म का ये हिस्सा हमेशा ढका रहता है अगर इस हिस्से को पानी और हवा न लगे तो बेशुमार दिमाग़ी और ऐसाबी अमराज़ पैदा होते हैं । केहुनी पर तीन किस्म की बड़ी रगे़ होती हैं जिनका तअल्लुक बिल वास्ता दिल दिमाग़ और जिगर से है जब हम केहुनि तक धोऐंगे तो मज़कूरा बाला तीनों आज़ा को तकवीयत पहुँचेगी और वह अमराज़ से महफ़ूज़ रहेंगे ।

मज़ीद ये के किहनीयों तक हाथ धोने में यह मसलेहत पोशीदा है कि इस अमल से आदमी का तअल्लुक बराहे रास्त सिने के अन्दर जख़ीरा शुदा रोशनीयों से क़ायम हो जाता है और रोशनियों का हुजूम एक बहाव की शक़्ल इख़्तियार कर लेता है इस अमल से हाथों के अज़लात और ताक़तवर हो जाते हैं

Scanned by CamScanner

मसह करना

To Wiping

फरान्सीसी सर्जन और पागल ख़ाने

क़िबला इन्जिनीयर नक़्श बन्दी के मवायेज़ से एक वाकिया रक़म है । हमारे एक दोस्त फरांस गये और वह फ़रमाते हैं कि मैं वहाँ वज़ू कर रहा था कि एक आदमी ग़ौर से खड़ा देख रहा था मैंने महसूस तो कर लिया लेकिन मैं वज़ू करता रहा जब मैंने वज़ू मुकम्मल कर लिया तो उसने मुझे बुलाकर पूछा आप कौन है मैंने कहा कि मैं मुसलमान हूँ । कहा कहाँ से आये हो मैंने कहा पाकिस्तान से। कहने लगा कि पाकिस्तान में कितने पागल खाने हैं । बड़ा अजीब सा सवाल था मैंने कहा कि दो या चार हैं बहरहाल मुझे तो पता ही नहीं वह कहने लगा तुम नहीं जानते । कहने लगा कि ये अभी तुमने क्या किया है मैंने कहा वज़ू किया। कहने लगा कि रोज़ाना करते हो ? मैंने कहा रोज़ाना बल्कि दिन में पाँच बार करता हूँ वह हैरान हुआ और कहने लगा ।

यहाँ मेन्टल (MENTAL) दिमाग़ी अमराज़ के लिये अस्पताल है मैं उसमें सर्जन हूँ सोचता रहता हूँ, तहक़ीक करता रहता हूँ कि लोग पागल क्यों होते हैं । फिर कहने लगा कि मेरी तहक़ीक यह है कि इन्सान के दिमाग़ से सिंगनल पूरे जिस्म में जाते हैं और हमारे जिस्म के आज़ा काम करते हैं । और हमारा दिमाग़ हर वक़्त (Fluid) के अन्दर FLOAT कर रहा है इसलिये हम भागते हैं, कूदते हैं दौड़ते हैं फिरते हैं और दिमाग़ को कुछ नहीं होता अगर वह कोई RIGID चीज़ होती तो अब तक टूट चूकी होती अल्लाहतआला ने उसको FLUID के अन्दर रखा है इस दिमाग़ से चन्द बारीक–बारीक रगें (CONDUCTOR) बन कर आ रही हैं और रगें हमारी गर्दन की पुश्त से पूरे जिस्म को जाती हैं ।

सर्जन मज़ीद कहने लगा । मैंने जो रिसर्च की है अगर बाल बहुत बढ़ा दिये जाये और गर्दन की पुश्त को खुश्क रखा जाये तो इन रगों के अन्दर कई दफ़ा (CONDENSATION) खुश्क़ी पैदा हो जाती है और इन्सान के जिस्म पर फिर उसका असर होता है।

Scanned by CamScanner

कई दफ़ा ऐसा भी होता है कि इन्सान का दिमाग काम करना छोड़ देता है इसलिये डाक्टर ने सोचा इस जगह (यानी मसह वाली जगह को) दिन में दो चार बार ज़रुर तर रखा जाये कहने लगा अभी मैंने आप को देखा के आपने हाथ मुँह तो धोया ही है लेकिन गर्दन की पिछली की तरफ़ आपने कुछ किया है इसलिये वह डाक्टर कहने लगा आप लोग फिर कैसे पागल हो सकते हैं मज़ीद यह के मसह से लू लगना (SUN STROKE) और गर्दन तोड़ बुखार का खात्मा होता है।

सोचने की बात

एक डाक्टर की सारी उम्र एक मुस्तहब अमल पर ख़त्म हो गई तो फिर सुन्नत, वाजिब और फ़र्ज़ की क्या हैसियत होगी और उनके फवायद अहातये तहरीर से बाहर हैं ।

हबलिल वरीद का राज़

Confidence Of Jugular Vein

माहिरीने रुहानियत ने इनसानी जिस्म को छः हिस्सों में तकसीम किया है। एक हिस्सा हबलुल वरीद है। अल्लाहतआला ने इरशाद फ़रमाया है "मैं तुम्हारी शहरग से ज़्यादा करीब हूँ" यह शहरग या रगे जान (हबलिलवरीद) सर और गर्दन के दरमियान में वाक़े है। गर्दन का मसह करने से इनसानी जिस्म को एक ख़ास किस्म की तवानाई हासिल होती है। जिसका तअल्लुक रीढ़ के अन्दर हराम मग़ज़ और तमाम जिसमानी जोड़ों से है। जब नमाज़ी गर्दन का मसह करता है तो हाथों के ज़रीये बर्क़ी रौ निकल कर रगेजान में जख़ीरा हो जाती है। और रीढ़ की हड्डी को अपनी गुज़रगाह बनाते हुये जिस्म के पूरे एसाबी नेज़ाम में फैल जाती है। जिस के ज़रीये एसाबी नेज़ाम को तवानाई मिलती है।

पाँव का धोना

Foot Washing

एक सर्जन का शूगर (DIABETES) के मरीज़ों को कहता है कि :– आप जिस तरह अपने चेहरे की हिफ़ाज़त करते हैं उसी तरह पाँव की हिफ़ाज़त करें। क्योंकि

Scanned by CamScanner

शूगर के मरीज़ को पाँव की इन्फ़ेक्शन (INFECTION) ज़्यादा होती हैं अब अगर मरीज़ बन्द जूता इस्तेमाल करता है और सिर्फ़ सुबह व शाम जूता खोलता है तो अगर यूरप के तरक़्क़ी याफ़्ता लोग कई–कई दिनों तक जूता नहीं खोलते बल्कि रात को जूतों समेत सो जाते है। ऐसे लोग बहुत जल्द पाँव के अमराज़ में मुबतिला हो जाते हैं।

सबसे ज्यादा धूल मिट्टी और जरासीम से हमारे पाँव आलूदा होते हैं और सबसे पहले जो इन्फ़ेकशन शुरु होता है वह पाँव की उंगलियों के दरमियान शुरु होता है। अब इसलाम ने दिन में पाँच दफ़ा पाँव धोने और उंगलियों के ख़िलाल का हुक्म दिया है ताकि किसी किस्म का कोई जरसूमा अटका न रह जाये ।

पाँव को धोने की वजह से बेशुमार अमराज़ का ख़ात्मा भी होता है, मसलन डीप्रेशन (DEPRESSION) बेचैनी, बेसकूनी, दिमाग़ी ख़ुशकी और नींद की कमी जैसे मुहलिक अमराज़ ख़त्म होते हैं।

वज़ू और हाई बलड परेशर
(Wazoo & High Blood Pressure)

शरई हुक्म है कि जब गुस्सा हो तो वज़ू कर लो । तिब्बी हुक्म है कि जब बलड परेशर ज़्यादा हो तो वज़ू कर लो । अब इन दोनों अहकामात और एलामात को मिलाये तो तहक़ीक की नई राह खुलती है । गुस्से में बलड परेशर हाई होता है और दिल के मरीज का जब बलड परेशर हाई होता है तो इन दोनों अमराज़ का इलाज वज़ू है ।

एक माहिरे अमराज़े कल्ब
(Heart Specialist)

कहने लगे मेरा तजरिबा है हाई बलड परेशर के मरीज़ को वज़ू कराओ फिर उसका बलड परेशर चेक करो लाजमी कम होगा। बिल्कुल यही कैफियत माहिरे नफ़सीयात डाक्टर सलामत अज़ीज़ की है डाक्टर साहिब का कहना है ।

Scanned by CamScanner

वज़ू नफसीयाती अमराज़ के खात्मे का एक अच्छा नुसखा है मग़रबी माहिरीन नफ़सीयाती मरीज़ों को रोज़ाना कई बार वज़ू की तरह बदन पर पानी लगवाते हैं और इस्लाम ने पहले ही फरमा दिया कि वज़ू करो ।

एक नुकता

One Point

वज़ू में पहले हाथ धोना फिर कुल्ली करना फिर नाक में पानी देना फिर चेहरा धोना और दिगर आज़ा धोना है ये एक ऐसा इमतेज़ाज़ और तरतीब है कि इससे फालिज और लकवा से बचा जा सकता है । क्योंकि अगर पहले चेहरा धोना और मसह करना होता तो जिस्म बेमुशार अमराज़ में मुबतला हो सकता था । लेकिन पानी में हाथों को डाला गया जिस्म का ऐंसाबी इन्तेज़ाम मुत्तला हो गया और फिर आहिस्ता–आहिस्ता चेहरे और दिमागी रगों की तरफ बढ़ा गया ।

वज़ू का बचा हुआ पानी

Surplus Water Of Wazoo

कुतेबे अहादीस में लिखा है कि वज़ू का बचा हुआ पानी पीना शिफ़ा है । इस जिम्न में (Q.M.C.) के डाक्टर फारूक़ अहमद ने अपनी रिसर्च बयान की जो वज़ू का बचा हुआ पानी पीयेगा तो उसका असर मुनदरजा जेल आज़ा पर पड़ता है

(1) उसका पहला असर मसाने पर पड़ता है और खुब खुल कर पेशाब आता है और पेशाब की रुकावट कम हो जाती है।

(2) ना जाइज़ शहवत को ख़त्म करने के लिये मेरा आज़मूदा है ।

(3) पेशाब के बाद कतरात की मरज़ के लिये शिफ़ा का ज़रीया है ।

(4) जिगर–मेदे और मसाने की गर्मी और खुश्की को दूर करता है ।

Scanned by CamScanner

मग़रबी जर्मनी का सिमीनार और वज़ू

Seminar Of W-Germany & Wazoo

डाक्टर नूर अहमद नूर साहिब फ़रमाते हैं (नश्तर मेडिकल कॉलिज मुलतान) मग़रबी ममालिक में मायूसी या डिपरेशन का मरज़ जिस तेज़ी से आम हो रहा है हर महल्ले में पाग़ल खाने मौजूद है और नफसीयाती अगराज़ के माहिर सबसे ज़्यादा मसरुफ़ रहते हैं ।

इसके बरअक्स मुसलमानों में यह मरज़ बहुत कम पाया जाता है खास तौर पर जिनका तअल्लुक दीन से ज़्यादा है ।

चुनांचि मग़रबी ममालिक के डाक्टरों ने उसकी वजह दरयाफ़्त करने की कोशिश की ।

चन्द साल कब्ल फैसल आबाद गया तो वहाँ के पंजाब मेडिकल कॉलिज के सामने एक फिज़योथरापिस्ट ने दुकान खोली उनसे मुलाकात हुई उसने डिपलोमा मग़रबी जर्मनी से किया था । मुझे बताया उसको दौराने तालीम जर्मनी के डाक्टरों ने बताया कि मायूसी का इलाज उन्होंने दवाओं के अलावा और तरीक़ों में दरयाफ़्त किया है ।

चूनांचि मग़रबी जर्मनी में एक सेमिनार हुआ जिसका मुजूअ था कि मायूसी या डिपरेशन (DEPRESSION) का इलाज दवाओं के अलावा और किन–किन तरीक़ों से किया जा सकता है। एक डाक्टर ने वताया कि उसने डिरेशन के चन्द मरीज़ों को रोज़ाना पाँच बार मुँह धुलाये और कुछ महीनों के बाद उनकी बीमारी ख़त्म हो गई।

उस डाक्टर ने मायूसी के मरीज़ों का दूसरा ग्रुप लिया जिसके हाथ, मुँह और पाँव रोज़ाना पाँच मरतबा धुलवाये तो उस ग्रुप में मायूसी के मरीज़ों को बहुत अफ़ाक़ा हुआ । अपने मकाले के आखिर में उसने ये नतीज़ा निकाला कि ये मरज़ मुसलमानों में कम इसलिये है कि वह दिन में कई मरतबा मुँह, हाथ और पाँव धोते हैं ।

Scanned by CamScanner

नमाज़ दुखों का इलाज

Prayer Cure Of Anxiety

नमाज़ दरअसल ऐसा नेज़ाम है जो इनसान को अपनी रुह से क़रीब कर देता है । जब कोई बन्दा अपनी रुह को जान लेता है तो उसके सामने ये बात आ जाती है कि खुद अल्लाहतआला उसकी रहनुमाई करता है अब आप इस बात का अनदाज़ा लगाइये कि आपकी हसती उस वक़्त क्या होती है और आप अल्लाह के कितने करीब होते हैं वाक़िया ये है कि इस तरजे अमल की हर तहरीक अल्लाह की तहरीक पर मबनी होती है।

इस तरजे अमल की नफसीयाती गहराई पर ग़ौर करें कि इनसान जब खालिस अल्लाह का होकर कोई काम करता है तो उसे कितनी बड़ी खुशी हासिल होती है वह खुशी उसके अन्दर समा जाती है जो उसकी रुह के कोने–कोने को मुनव्वर कर देती है। इस खुशी से उसकी रुह इस कद्र हलकी हो जाती है कि वह अपने जिस्म को भूल जाता है अगर हम अपने बुजुर्गो के हालाते ज़िन्दगी पर नज़र डालें तो ये बात रोज़े रोशन की तरह आयाँ है कि गोया वह इस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारते थे जिस तरह एक आम आदमी ज़िन्दगी गुजारता है। लेकिन फर्क़ सिर्फ़ इतना है कि वह तरज़े अमल की लज़्ज़त से आशना थे जब कि हम इससे आशना नहीं । क्या हुज़ूरे अकदस (स0) के हर उम्मती के लिये ये मुमकिन नहीं जैसा कि हमारे बुजुर्गो के लिये ये मुमकिन हुआ। यक़ीनन तुम सब के लिये मुमकिन है लेकिन हम गफ़लत में है ।

हमारे बुजुर्गो ने इस लज़्ज़त से शनाशा होकर नमाज़ और हकीक़ी नमाज़ की बरकत से एक बड़ी जमाअत की शक्ल इख़्तियार की और चन्द लोगों की जमीयत ने उलट–पलट कर इस काइनात का नक़्शा बदल दिया ।

मुकद्दस कीमीया असर इबादत को एक रस्म बना लिया । कुदरत ने इस पादाश ने हम से सरदारी और हाकमियत छीन ली । सोज़ों गुदाज़–फिक्र व नज़र–इल्म व तमन्ना–इज़्ज़ व इन्केसारी–हिल्म व इल्म– फहमो फरासत और फिक्रे सलीम से हम तही दामन हो गये । नमाज़ में इरतेकाज़े तवज्जुह–इदराके खालिक़–फरामोशी

Scanned by CamScanner

मख़लूक़–रुह का इरफान–दिल का गुदाज़ अलगरज खुशुअ और खुजुअ न हो तो ऐसी नमाज़ उस जिस्म की तरह है जिसमे रुह नहीं अगर हम अपनी नमाज़ अल्लाह जल्ले शानहू और उसके रसूल (स0) के बताये हुये तरीक़े पर अदा करते हैं तो फिर हमारी नमाज़ें नमाज़ें क्यों नहीं?

हम इन बरकात व इनआमात से क्यों बेबहरा हैं जिनसे हमारे असलाफ़ मालामाल थे ।

अल्लाह जल्ले शानहू और उसके रसूल (स0) के फ़रमान के मुताबिक नमाज़ हमारे तमाम दुखों का इलाज़ और हमारे तमाम जख़्मों को मुनदमिल करने का मरहम और दर्द का मुदावा है लेकिन हमने अपनी मसलिहतों के पेशे नज़र इस अमले ख़ैर को बेरुह बनाने में कोई कसर नहीं उठा रखी ।

जब नमाज़ तमाम दुखों का इलाज बताया गया है तो क्या ये दुख सिर्फ आखिरत के हैं? या दुनिया में भी है । यूँ नमाज़ दुनिया व आख़िरत के तमाम दुखों का इलाज है । जब मुसलमनों का कलमा और नमाज़ दुरुस्त होगा यानी हक़ीकत अमल के हक़ीक़ी साचे में ढली हुई होगी तो मुसलमान गालिब और काफ़िर मगलूब होगा । और जब से हमने कलमे और नमाज़ की मेहनत को छोड़ा तो उसकी हक़ीकत दिलों से काफूर हो गई ।

और जिस चीज़ की हक़ीकत हक़ीकत नहीं रहती वह चीज़ कतई बेअसर और खाम होती है ।

आज हमारी नमाज़ें जानदार क्यों नहीं यही चार सजदे और दो रिकाते ही तो थीं जिनसे सहाबा, अहलेबैत और औलियाये कराम ने काइनात के निज़ाम को पलट दिया था । लेकिन वह नमाज़ें हक़ीकत से लबरेज और हमारी नमाज़ें बे हक़ीक़त और बेअसर । मसलन एक साहिब ने राइफल की गोली शेर को मारी कि सुना है इससे शेर मर जाता है लेकिन शेर ने क्या मरना था उसे बड़ी मुशकिल से अपनी जान बचानी पड़ी अब लोगों को कहता फिरता है कि ये बात कतई झूठी है कि गोली से शेर मरता है । एक साहिबे अक़्ल ने इस मर्दे नादाँ को समझाया कि गोली बाअसर है लेकिन अगर उसको राईफल में रखकर इस्तेमाल किया जाये क्योंकि बग़ैर राईफल के गोली की कोई हैसियत नहीं । बिल्कुल इसी तरह आज हमारी नमाज़ें

यानी गोली तो है लेकिन ईमान तक्वा और खुशुअ व खुज़ूअ की राईफल नहीं है इसलिये ये नमाज़ें बेअसर हैं तो बेअसर नमाज़ें जहाँ दुनिया के काम नहीं बनाती सोचने की बात है वह इतनी बड़ी जन्नत जिसकी लम्बाई काईनात से ज़्यादा है कैसे दिलवाएंगी।

मुसलमान और काफ़िर के दरमियान फ़र्क़ और सबसे बड़ा फ़र्क़ नमाज़ का है जब मुसलमान नमाज़ पढ़ता है तो जहाँ उसकी आखिरत बनती है वहाँ दुनिया भी बनती है तो आइये तहक़ीक की नज़र से देखें की इससे दुनिया के कितने इनअमात हासिल होते हैं।

नमाज़ और जिस्मानी सेहत

Prayer & Body Health

नमाज़ एक बेहतरीन वरजिश है सुस्ती, काहिली और बेअमली के इस दौर में सिर्फ नमाज़ ही एक ऐसी वरजिश है कि अगर उसको सही तर्ज पर पढ़ा तो दुनिया के तमाम दुखों का मुदावा बन सकती है।

नमाज़ की वरजिशें जहाँ बैरुनी आज़ा की खुशनुमाई व खुबसुरती का ज़रीया है वहाँ अन्दरुनी आज़ा मसलन दिल, गुर्दे, जिगर, फेफडे, दिमाग, आतें, मेदा, रीढ़ की हड्डी, गर्दन, सीना और तमाम किस्म के (GLANDS) गलैन्डस की नश–व–नुमा करती है बल्कि जिस्म को राड्ल और खूबसूरत बनाती है।

ये वरजिशें ऐसी हैं जिनसे उम्र में एजाफ़ा होता है और आदमी गैर मामूली ताकत का मालिक बन जाता है। ऐसी भी हैं जिनसे चेहरे कि नक़्श–व–निगार खुबसूरत और हसीन नज़र आते हैं ।

उम्र का तअय्युन

(Age Factor)

वरजिशी नेज़ाम में हर उम्र के लिये इलाहिदा वरजिशें हैं बड़ों के लिये इलाहिदा छोटों के लिये इलाहिदा हत्ता कि मर्दों और औरतों के लिये वरजिशी नेज़ाम मुनफरिद

Scanned by CamScanner

है। लेकिन नमाज़ एक ऐसी वरजिश है जो हर उम्र और जिन्स के लिये यकसां मोजूं हैं ।

नमाज़ का वरजिशी चार्ट

(Exercise Chart)

आदमी तमाम रात सोया रहता है जिसकी वजह से आज़ा मुज़महिल और सुस्त हो जाते हैं जिस्म का दौराने खुन सुस्त हो जाता है अब इस जिस्म को ऐसी वरजिश की ज़रुरत है जिससे खुन फिर से पुरे जिस्म में मुकम्मल तौर पर पहुँच सके और जिस्म अज़सिरेनौ बिल्कुल चुस्त और सेहत मन्द हो जाये तो उसके लिये तहज्जुद की नमाज़ है और फ़र्ज़ की नमाज़। फिर वक्फा फिर इश्राक़ की नमाज़ फिर वक्फा फिर चाश्त की नमाज़ और फिर तवील वक़्फा और काम–काज करते–करते परेशान हो जाता है तो फिर जोहर की नमाज़ के लिये वरजिशी प्रोग्राम तैयार होता है हत्ता कि सोते वक़्त नमांज़े इशा का वरजिशी प्रोग्राम कुछ तवील होता है कि आदमी खाना खाता है कुछ पीता है नमाज़े इशा कि रिकअतें ज़्यादा है ताकि खाया पीया हज़म हो जाये और ग़ैर हजम खाना जिस्म और सेहत के लिये परेशानी का बाइस न बने।

एक गैर मुसलिम माहिर की हैरानगी

SurprizeOf A Non-Muslim

एक साहिब (ए. आर कमर) अपने यूरप के सफ़र नामा में लिखते हैं कि मैं नमाज़ पढ़ रहा था और एक अंग्रेज़ मुझे कुछ देर खड़ा देखता रहा। जब मैं नमाज़ से फारिग़ हुआ तो मुझे कहने लगा कि ये वरजिश का तरीक़ा तुमने मेरी किताब से सिखा है क्योंकि मैंने भी इसी तरीक़े से वरजिश करने का तरीक़ा बताया है जो शख्स इसी तरीक़े से वरजिश करेगा वह कभी भी तवील पेचिदा और सन्सनी खेज अमराज़ में मुबतला न होगा ।

फिर उस माहिर ने वज़ाहत की कि अगर खड़ा आदमी फौरन सजदे की वरज़िश में चला जाये तो इससे ऐसाब और दिल पर बुरा असर होता है इसलिये मैंने अपनी

Scanned by CamScanner

किताब में ये बात खास तौर पर तहरीर की है कि पहले खड़े होके वरजिश कि जाये जिसमें हाथ बंधे हों (यानी कियाम) फिर झुक कर हाथों और कमर की वरज़िश करी जाये यानी (रुकुअ) और फिर सर को ज़मीन से लगा कर वरजिश की जाये (यानी सजदा) ये वरज़िश सिर्फ माहिरीन ही करा सकते हैं।

जब उसने ये बात कही तो नमाज़ी साहिब फ़रमाने लगे मैं मुसलमान हूँ और मेरे इसलाम ने मुझे ऐसा करने का हुक्म दिया है । मैंने आप की किताब हरगिज़ नहीं पढ़ी और ऐसा मैं दिन में कम अज़ कम पाँच बार करता हूँ।

इस बात के सुनते ही वह अंग्रेज़ माहिर हैरान रह गया और उन साहिब से मज़ीद इसलामी मालूमात लेने लगा ।

एक फिज़िशियन का रद्दे अमल

Reaction Of A Physician

एक मशहूर डाक्टर ने अपने ऐसाब की कमज़ोरी, ज़ोड़ों का दर्द और दिगर अज़लाती अमराज़ के लिये अपना इलाज नमाज़ के जरीये किया । मुसलसल नमाज़ के इलाज के बाद वह सेहत मन्द हो गया और तमाम दवाओं का इस्तेमाल छोड़ कर सिर्फ़ नमाज़ के ज़ेरे इलाज रहने लगा ।

वह अपने हर मरीज़ को नमाज़ की पाबन्दी की ताकीद और नमाज़ के हर एक रुक्न को ऐतदाल और शरई हैसियत के मुताबिक करने की ख़ास तंबीह करता इस तरह उसके मरीज़ जल्द शिफ़ायाब होने लगे।

आस्ट्रेलिया के माहिर का मशविरा

(Of An Australian Expert Opinion)

एक पाकिस्तानी मरीज़ दिल के मरज़ में मुबतला इलाज कराते—कराते आख़िर

Scanned by CamScanner

कार जब आस्ट्रेलिया में इलाज के लिये पहुँचा । वहाँ एक मशहूर माहिरे अमराज़े कल्ब ने उनके मुकम्मल मुआइना के बाद कुछ दवाएं और एक वरजिश तज़वीज़ की कि आप मेरे फिजीयों वार्ड में वरजिश मेरी निगरानी में आठ दिन करें। उसे जब वरजिश कराई गई तो वह मुकम्मल खुशुअ व खुज़ुअ और तसल्ली वाली नमाज़ ही थी । अब ये पाकिस्तानी मरीज़ इस वरज़िश को बिल्कुल दुरुस्त अन्दाज से करने लगे डाक्टर साहिब ने पूछा आप पहले मरीज़ हैं कि इतनी जल्दी मेरी वरजिश सिख कर अच्छी तरह करना शुरु कर दिया है हालांकि यहाँ तो मरीज़ आठ दिन में ये तरीक़ा सिखता है तो मरीज़ ने बताया कि मैं मुसलमान हूँ और ये तरीक़ा बिल्कुल नमाज़ की तरह है इसलिये यह मुझे उसके समझने में बिल्कुल परेशानी नहीं हुई तो डाक्टर ने दूसरे दिन इस मरीज़ को दवाएं और ख़ास हिदायत (इस वरज़िश के बारे में) देकर रुख़सत कर दिया ।

फिजीयों थरापिस्ट की होश रुबाई

Amazement Of Physiologist

एक पाकिस्तानी डाक्टर (माज़िद ज़मान उस्मानी) यूरप में फिजीयों थरापि में आला डिग्री के लिये गये । जब वहाँ उनको बिल्कुल नमाज़ की तरह की वरज़िश पढ़ाई और समझाई गई तो ये इस वरज़िश को देख कर हैरान रह गये कि हमने तो आज तक नमाज़ को एक दीनी फ़रीज़ा समझा और पढ़ लिया लेकिन यहाँ तो अजीब–व–गरीब इनकेशाफ़ात हैं कि वरज़िश के जरीये तो बड़े–बड़े अमराज ख़त्म हो जाते हैं । डाक्टर साहिब ने उसकी लिस्ट दी कि जो बीमारियाँ इस वरज़िश से दूर हो सकती है ।

1 दिमागी अमराज़ (MENTAL DISESASES)

2 ऐसाबी अमराज़ (NERVE DISEASES)

3 नफ़सियाती अमराज़ (PSYCHICS DISEASES)

4 बेसुकुनी, डिपरेशन और बेचैनी के अमराज़

Scanned by CamScanner

(RESTLESSNESS DEPRESSION AND ANXIETY)

5 दिल के अमराज़ (HEART DISEASES)

6 जोड़ों के अमराज़ (ARTHRITIS)

7 यूरिक ऐसिड से पैदा होने वाले अमराज़ (DISEASES DUE TO URIC ACID)

8 मेदे और अल्सर की शिकायात (STOMACH ULCER)

9 शुगर और उसके माबाद असरात (SUGER AND ITS AFTER EFFECTS)

10 आखों और गले के अमराज़ (EYE AND E.N.T DISEASES)

खास तजरिबा

(Special Experiment)

बन्दा का तअल्लुक चूंकि मुकम्मल रिसर्च से है इसलिये एक खास निगाह से हर एक चीज़ को देखता है । ये बात तजरिबे में आई है कि अगर आप सारा दिन कारोबारी मसरुफियात में डूबे रहें और नमाज़े जोहर में जल्दी पहुँच कर सुन्नतें पढ़ें और जमाअत की नमाज़ में शरीक होकर नमाज़ मुकम्मल अदा करें तो अपने जिस्म की साबिक़ा और मौजूदा कैफ़ियत का अन्दाज़ा लगा लें।

बन्दा एक दफ़ा किसी काम के सिलसिले में किराची गया मार्किट में काम के सिलसिले में घुमता रहा हत्ता कि जिस्म और दिमाग़ थक गया दोस्त ने कहा कि करीब मस्जिद है नमाज़ पढ़ लें जब मैंने नमाज़ पढ़ी तो अपने आप को फिर से तरो ताज़ा पाया और वह एहसास आज अर्सा गुजरने के बावजूद भी महसूस करता हूँ।

प्रोफेसर डाक्टर बरथम जोजिफ का तजरिबा

(Experiment Of Prof. Dr. Burthom Jozif)

मशहूर अमरीकन डाक्टर एक इन्टर विव्यू में नमाज़ और इसलाम के मुतअल्लिक

उसकी जिन्दगी के तजरिबात शाये हुये । उसका तजरिबा है कि नमाज़ एक मुकम्मल और मुतवाजिन वरज़िश है जिसमें कमी और बेशी का सवाल ही पैदा नहीं होता शायद इस वरज़िश को तरतिब देने वाले ने मौजूदा मशीनी और नफ़सियाती दौर को भांप कर उसको तरतीब दिया था ।

इस में हाथों का उठाना फिर बांधना और निगाह को जमाना फिर हाथ छोड़ना और झुकना और सर फिर सर को झुका कर दिल व दिमाग़ की तरफ़ जल्दी और ज़्यादा खुन मुहय्या करने का मौक़ा देना और वक्फ़े से दो जानू बैठना ये सब कुछ एक जामे वरज़िशी तरीक़ा है।

नमाज़ और योगा

Prayer & Yoga

योगी माहिरीन ने नमाज़ को साँस की मश्क का बिल्कुल आसान तरीक़ा करार दिया है । इसमें वह तीन मकाम ख़ास तौर पर बयान करते है एक क़याम और उसमें सजदा की जगह निगाह का इरतेकाज़ दुसरा रुकुअ इसमें पाँव की जगह निगाह का इरतेकाज़ और सजदा में साँस की मश्क़ और साँस का इरतेकाज़ ।

इटालियन माहिरीन के तजरिबात

(Experiments Of Italian Experts)

इटली के एक नौ मुस्लिम जमाल अब्दुर्रहमान माहिरीने नफसियात ने नमाज़ के वरज़िश को कुछ इस तरह बयान किया है "वरज़िश का ये अमली उसूल है कि अगर आप किसी वरीद शिरयान या किसी और मखसूस अज़्व की सख़्ती दूर करना चाहते हैं तो सबसे पहले जिस्म को बिल्कुल ढीला छोड़ दिजीये और फिर इस हिस्से जिस्म में तनाव पैदा किजीए और कुछ देर तनाव की हालत बरक़रार रखने के बाद फिर ढीला छोड़ दिजीए मैंने वरज़िश के उसूल और ज़वाबित और वरज़िश के लिये निशशतें भी मखसूस की हैं। अलग–अलग अमराज़ के लिये अलग–अलग निशशत

या आसन है । मसलन रीढ़ की हड्डी के मरज को ख़त्म करने के लिये एक अलग अन्दाज से निशश्त है और दिल की तकलीफ़ से नजात पाने के लिये दूसरा अन्दाजे निशश्त है । कोई गुर्दो का मरीज़ है तो उसके लिये ऐसा तरीक़ा तजवीज़ किया जायेगा जिससे गुर्दे सेहतमन्द हो जायें ।

शराइते नमाज़ और जदीद साइन्स

(The Conditions For Prayer & Modern Science)

नमाज़ एक मुकम्मल ज़िन्दगी, बन्दगी, हियात और जियाये दारैन है। इस्लाम ने इसको पढ़ने यानी इस नमाज़ के अमल को शुरु करने से क़ब्ल कुछ शराइत मुकर्रर की हैं इनमें :–

फ़राइजे़ नमाज़

सुन्नते नमाज़

वाजिबाते नमाज़

मुसतहब्बाते नमाज़

मकरूहाते नमाज़

मुफ़सिदाते नमाज़ : वग़ैरह अहकमात इसलामी तालीमात में मिलते हैं । यानी जिस तरह किसी भी वरज़िश शुरु करने से कब्ल उसकी तैयारी की जाती है या उस वरज़िश की मालूमात करके फिर उस अमल को किया जाता है बिल्कुल इसी तरह चूंकि नमाज़ एक मुकम्मल और मुतवाज़िन वरज़िश है इसलिये इस अमल को शुरु करने से कब्ल उसका इल्म ज़रुरी है ।

चूंकि नमाज़ इलाज है दुखी लोगों के लिये इसलिये इस शिफ़ाई अमल को शुरु करने से कब्ल जिन चीज़ों का होना ज़रुरी हैं वह शराइत हैं ।

जिस तरह एक शिफ़ाई दवाई की तैयारी के लिये जड़ी बूटीयों या केमिकल फिर उसके तैयारी के औज़ार और उसके माहिरीन उसका तरीक़ा बिल्कुल यही चीज़ें

Scanned by CamScanner

नमाज़ का भी हिस्सा है ।

फ़राइज़े नमाज़ और साइंसी हक़ाइक़

Fraize Namaz & Truth Of Science

ज़ेरे नज़र सुतूर में नमाज़ और उसके मुतअल्लिक़ात यानी फ़राइज़, वाजिबात, सुनन, मकरुहात वग़ैरह का इजमाली साइन्सी तहक़ीकी जायज़ा लिया जाता है।

इसलाम दीने फितरत है इसलिये उसका हर हुक्म अज़ल से अबद तक मुफीद है ज़मीन, बदले जमान बदले, मकी बदले लेकिन हुक्मे रब्बानी कभी बदल नहीं सकता ।

जगह का पाक होना

Be Clean Of Space

चूंकि नमाज़ की अदाइगी एक मुकम्मल अमल है इसलिये उसके लिये ऐसी जगह जहाँ किसी मरज़ के जरासीम न हों क्योंकि बाज़ औकात जिसे हम नापाक समझते हैं वहाँ पैथालोजी (Pathology) के मुताबिक छुती अमराज़ (Diseases Contagious) के जरासीम होते हैं क्योंकि गोबर में तशन्नूज (Tetanus) आतों के किड़ों के अन्डे (Eggs of interstinal Worms) हैज़ा (Cholera) और टाईफ़ाइड (Typhoid) के जरासीम होते हैं लेकिन ये तहक़ीक़ात तो अब हुइ हैं इसलाम ने सदीयों पहले इससे आगाह कर दिया था ।

बिल्कुल यही कैफियत बदन के पाक होने की है क्योंकि जब मुसलमान नमाज़ी मस्जिद में नमाज़ के लिये जायेगा तो अगर उसके कपड़े और बदन साफ न हुये तो उससे मुनदरजाज़ेल नुकसानात फैलने के ख़तरात हैं ।

नमाज़ी का बदन अगर साफ न हुआ और उसके बदन पर बेशुमार किस्म के जरासीमी माद्दे लगे हुये होंगे तो यही नमाज़ी दूसरे नमाज़ीयों के लिये इन छूती अमराज़ के फैलाने का ज़रीया बन जायेगा।

Scanned by CamScanner

यही नमाज़ी नफ़रत और कराहत का जरीया बन जायेगा और लोग उसके करीब नहीं आयेंगे ।

फिर अगर नासाफ़ कपड़ों और नापाक और नासाफ़ बदन नमाज़ी जिस जगह बैठेगा तो वहाँ ये अमराज के फैलाने का जरीया बन जायेगा ।

अगर उसने मस्जिद की टोपीयाँ इस्तेमाल की तो गन्ज (Baldness) जिल्दी खारिश और दिगर छूती अमराज (Contagious Diseases) फैलाने का जरीया बन जायेगा।

डाक्टर राबर्ट एस्मिथ का तजज़िया

Analysis Of Dr. Robert Smith

मशहूर सर्जन बल्कि सर्जरी के बावा का क़ौल है कि हमने अमले ततहीर (Sterlization) इसलाम से सिखा है ।

मआशरती असरात

Social Effects

एक बेहतरीन मआशरे के लिये ये बात बहुत ज़रुरी है कि इसमें रहने वाले तमाम अफ़राद आपस में मुहब्बत, उलफत और हमदर्दी से मिलें और रहें ये बात मुशाहिदे में है कि नासाफ़ बदन और कपड़ों में मलबूस शख़्स से हर आदमी गुरेज़ करता है । इसलाम ने नमाज़ के जरीये आदमी को मआशरे में रहने और इज़्ज़त के साथ ज़िन्दगी गुजारने का सलीक़ा बताया है कि वह साफ और पाक रहे ताकि हर शख़्स उससे मुहब्बत करे ।

आज के (Socialogist) जब इनसान की सोशल लाइफ़ (Social life) के मुतअल्लिक गुफतगू करते हैं तो पहला उसूल यही बयान करते हैं कि (Man Is a Social Animal) कि इनसान एक मआशरती जानवर है यानी वह दूसरे इनसानों के साथ मिलकर रहने पर मज़बूर है और यही बात इसलाम ज़ोर देकर कहता है । हदीस का मफहूम

Scanned by CamScanner

है इसलाम में रोहबानियत नहीं यानी मआशरे से अलग थलग रहकर ज़िन्दगी गुजारने का इसलाम में कोई तसव्वूर नहीं । फिर मआशरे में रहते हुये भी इनफ़ेरादी ज़िन्दगी नहीं गुज़ारनी इजतेमाई ज़िन्दगी की तरगीब है । हदीस का मफहूम है कि मुसलमान एक जिस्म की मानिन्द है जब एक हिस्से को तकलीफ पहुँती है तो सारा जिस्म तकलीफ महसूस करता है ।

इसी इजतिमाइयत के पेशे नज़र नमाज़ बाजमाअत पढ़ने की न सिर्फ़ तरग़ीब बल्कि सख़्ती से हुक्म दिया गया है कि नमाज़ बाजमाअत ही अदा होनी चाहिये। जब दिन में पाँच मरतबा मुसलमान एक जगह जमा होंगे तो यक़ीनन एक दूसरे के साथ तबादला ख़्याल होगा बाहिमी दुख–सुख दरयाफ़्त किया जायेगा फिर एक दूसरे के मसाइल हल करने के लिये चारहजूई की जायेगी ।

नफ़सीयाती असरात

(Psychological Effects)

इनसान की फितरत में इज़्ज़त और वक़ार के साथ रहना लिखा है । अगर यही इनसान इसलामी तालिमात तिहारत से गुरेज़ करेगा तो यह तरह–तरह की नफसीयाती अमराज़ में मुबतला रहेगा । जिन में सबसे बड़ी मरज़ एहसासे कमतरी का मरज़ है (Inferiority Complex) और इस मरज़ के इबतदा होते ही ये दिगर वेशुमार नफसीयाती अमराज़ (Phychological Diseases) में मुबतला होता चला जायेगा।

तरतीब से नमाज़ पढ़ना

Arrangement Of Namaz

ये नमाज़ के वाजिबात में जरुरी अमल है । अगर नमाज़ की तरतीब को छोड़ दिया जाये तो जिसमानी और सेहतमन्द फ़ायदे से महरुमी होगी । क्योंकि जैसा कि पहले मज़कूर हुआ कि नमाज़ की वरज़िश की तरतीब खास अन्दाज़ की है जिसका लिहाज ज़रुरी है अगर पहले कियाम न किया जाये और फौरन सजदा किया जाये तो वह मकसद जो एक आदमी के लिये लाज़िम है वह क़तई मयस्सर नहीं हो सकेगा। बल्कि ऐसी हालत में मज़ीद मरीज़ होने का ख़तरा है ।

Scanned by CamScanner

हाथों का कानों तक उठाना

Arise Of Hands Till Ears

हाथों का कानो तक उठाना नमाज़ की सुन्नत और ज़रुरियात में शामिल है जब हाथों को कानो तक उठाते हैं तो बाजुओं, गर्दन के पट्ठों और शाने के पट्ठों की वरज़िश होती है ।

दिल के मरीज़ के लिये ऐसी वरज़िश बहुत मुफ़ीद है जो कि नमाज़ पढ़ते हुये खुद–ब–खुद हो जाती है और ये वरज़िश फालिज के ख़तरात से महफूज़ रखती है।

तकबीरे तहरीमा के वक़्त सर को न झुकाना

तकबीरे तहरीमा में अगर सर को नीचे झुकाया जाये या दायें–बायें झुकाया जाये तो वह फायदे जो हाथों के कानो तक उठाने के ज़िम्न में वाजिह हुये हैं कामिल मयस्सर नहीं होते और नमाज़ का मक़सद कि ये दुनिया और आख़िरत की शिफ़ा है फौत हो जाता है ।

दायें हाथ को बायें हाथ पर रखना

Right Hand Keep-back Left Hand

इसलाम ने हर अच्छे अमल को करने के लिये दायां हाथ इस्तेमाल करने की ताकीद की है और दायें हाथ में बरकत है।

दरअसल इनसानी आज़ा के दायें अतराफ और बायें अतराफ की कैफ़ियात अलग–अलग हैं दायें हिस्से खास तौर पर दायें हाथ के गैर मरई शोआएं (Invisible Rays) निकलती हैं जो कि मुसबत (Positive) होती हैं ।

Scanned by CamScanner

नमाज़ में निगाह सजदे की जगह लाज़िम होती है चूंकि ऊपर के दायें हाथ से होती हुई निगाह सजदे की गजह जाती है इसलिये ऊपर का हाथ दायें रखा गया है ताकि दायें हाथ की मुसबत लहरें पेशे नज़र रहें ।

मज़ीद ये कि काम करते हुये दोनों हाथ इस्तेमाल होते हैं इसलिये दाये हाथ की मुसबत शोआएं (Positive Rays) बायें हाथ में मुनतक़िल होकर ताक़त, कुव्वत और तहरीक का बाइस बनती है जिसकी वजह से इन्सान मामूलाते ज़िन्दगी में मुतवाजिन रहता है और परेशान नहीं रहता ।

हत्ता कि बाज़ दायें हाथ फालिज ज़दह को ये वरज़िश बताई जाती है कि वह बायें हाथ पर हाथ रखकर कुछ वक़्त बैठा करें ताकि दोनों हाथों की लहरें और बिजलीयाँ एक दुसरे में मुनतकिल होकर ताक़त और तहरीक़ का बाइस बने।

नमाज़ और दीवान सिंह मफ्तून

Namaz & Diwan Singh Maftoon

दिवान सिंह मफ़तून मशहूर जरनलिस्ट (Journalist) और हुर्रीयत पसन्द हिन्दुस्तानी गुजरा है । उसका रिसाला "रियासत" के नाम से निकलता था जिसकी तक़सीमे हिन्द से पहले अदबी, इल्मीं हल्कों में बड़ी धूम थी वह अपने रिसाला में लिखता है "नमाज़ औकाते कार की पाबन्दी सिखाती है जिसने डिसिप्लिन (Discipline) और बाक़ाएदगी सिखनी हो वह नमाज़ पर ग़ौर करे नमाज़ से मालिक और गुलाम का फर्क़ ख़त्म होता है जब उसकी सफ में महमूद और अयाज़ खड़े होते हैं" ।

अगर तमाम मुसलमान नमाज़ पढ़ना शुरु कर दें तो वही गालिब हों जैसा कि उनका कुरआन कहता है ।

नमाज़ जिस्म और मआशरे की इसलाह का बेहतरीन जाप और जपन है इससे राम (अल्लाहतआला) भी राज़ी और मख़लूक़ भी राजी ।

ब–हवाला रियासत एडीटर दिवान सिंह मफतून

Scanned by CamScanner

डिपरेशन का इलाज बज़रीया नमाज़े तहज्जुद व सेहर खेज़ी

Treatment Of Depression Thorugh Namaz-e- Tahajjud & Early Rising

मुशाहेदे और तजरिबात से ये बात अज़हर मिनशशम्स है कि पज़ मुर्दा और जबूं हाल मरीज़ों के लिये "महरुमी–ए नींद" के मरीज़ों के लिये जहाँ और इलाज हैं वहाँ एक मुसतकिल और दुनिया और आख़िरत में कामयाबी का इलाज नमाज़ है । बतौरे खास दिक़्क़त तलब मरीज़ जिनके जिस्मों में अन्दुरुनी पैदा शुदा मसाइल भी थे रात के आख़िरी घड़ीयों में "ज़ुज़वी माज़ूली नींद" या "ख्वाब से वक़्ती मौकुफियत" से बेहद मुतस्सिर हुये हैं ।

नफ़सियाती और दिमाग़ी इलाज के मुमताज और बुज़ुर्ग माहिरीन ने महरुमी इसतेराहत के डिपरेशन मुखालिफ असरात और उसके साथ मरबूत हयातेयाती हक़ाएक के मुतअल्लिक तहरीरी सबूत भी फराहम किये हैं।

इस बात का मुशाहिदा किया गया है कि माहे रमज़ान के दौरान मुसलमान में डिपरेशन की बीमारी निस्बतन कम पाई जाती है उसकी दलील माहे रमज़ान के दौरान ऐसे मरीज़ों की तादाद में नुमायां कमी है । इस मुशाहिदे से इस नज़रीये को तक़वीयत मिलती है कि सेहरी के लिये उठने से नींद में जो आरज़ी तअत्तुल पैदा होता है वह सेहर खेज़ी के साथ मुनसलिक मख़सूस मसरुफीयात मसलन तहज्जुद और दुसरी इबादात के साथ मिलकर डिपरेशन में कमी का मौजिब हो सकता है । इसी मुशाहिदे की बुनयाद पर ये नज़रिया क़ायम किया गया कि सेहर ख़ेजी (मअ तहज्जुद और दिगर इबादात व अज़कार) ऐसे अमराज़ के लिये एक मुअस्सर तरीक़ेए इलाज है जो डिपरेशन के नतीज़े में पैदा होतें हैं।

Scanned by CamScanner

तरीक़ए इलाज (अल्लामा इक़बाल मेडिकल कॉजिल का मुतालियाती प्रोग्राम)

(Method of Treatment)

मुंदरजा बाला नज़रिये की अमली तसदीक़ के लिये अल्लामा इक़बाल मेडिकल कॉजिल सर्वीसेज़ हस्पताल लाहौर के शोबए इलाजे नफसियाती और दिमाग़ी अमराज में एक मुतालियाती प्रोग्राम बनाया गया । ये तजरिबाती प्रोग्राम तकरीबन आठ नौ महीने (जनवरी सन् 1985 ता सितम्बर सन् 1985) तक जारी रहा ।

मरीज़ों को मिली जुली जमाअतों में तक़सीम किया गया । पहली जमाअत को "इलाज बित तहज्जुद जमाअत" (मोतालियाती जमाअत) क़रार दिया गया और दुसरी को "जुज़वी महरुमीये ख्वाब जमाअत" (निगरां जमाअत) का नाम दिया गया मरीज़ों की कुल तादात 64 थी और दोनों जमाआतों के अरकान को उम्र, जिन्स, तालीम और मआशरती रुतबे की मुनासिबत से ग्रुपों में तकसीम किया गया। हर जमाअत में मरीजों की मजमूई तादात 32 थी जिनमें 20 मर्द और 12 औरतें शामिल थीं ।

ये डिपरेशन के ऐसे दिक़्क़त तलब मरीज थे जो अर्सा दराज तक मुखतलिफ दवाईयां बग़ैर किसी फायदे के इस्तेमाल कर चुके थे । तजरिबे के दौरान तमाम मरीजों की दवाईयां बन्द कर दी गई । दोनों ग्रुपों के लिये सेहर ख़ेज़ी दो ता चार बजे लाज़मी करार दी गई ।

1 मोतालियाती जमाअत को मस्रुफीयत के तौर पर ज़िक्र, इबादत व तिलावत तहज्जुद और मुनदरजाजेल आयाते कुरआनी का सौ–सौ दफा विर्द करने की हिदायत की गई ।

1 अला बिजिक़रिल्लाहि तत–मईन्नुल कुलूब

2 व इजा मरिज़तु फ–हु–व यशफीन

मरीजो को हिदायत की गई कि इस दौरान नर्म दिली के साथ इन अज़कार पर तवज्जुह मरकुज़ करें और दिली अमादगी और पूरी संजीदगी के साथ खुदा की कुरबत को महसूस करने की कोशिश करें। निगरां जमाअत या कंट्रोल ग्रुप के लिये भी दो घंटे के लिये जागते रहना ज़रुरी था और उनहें हिदायत की गई कि वह ये वक़्त फारिग बैठने के बजाये घर के छोटे मोटे काम या पढ़ाई जैसी मसरुफियात में सर्फ करें ।

दौराने इलाज मरीजों को जाँच कब्ल अज़ इलाज कैफियत के साथ मोवाजने के तौर पर की गई । ये जाँच हफ़्ते में दो बार होती रही और इलाज शुरु होने के चार हफ़्ते बाद मरीज़ों को (HAMILTON DEPRESSION RATING SCALE) पर मोजूई और मस्रुफ़ी दोनों सतहों पर जाँचा गया । हत्मी रिपोर्ट की बुनयांद मोआलिजीन (दिमागी व नफ़सीयाती) के मरीज़ के साथ इन्टर विव्यू और मरीज़ के डिपरेशन की शिद्दत की पैमाइश की गई । हत्मी नतायज में नोट किया गया कि मोतालियाती जमाअत के डिपरेशन में निगरां जमाअत की निसबत वाज़िह कमी हुई । हत्मी नताइज की तफसील व तोज़ीह यह है।

नताइज़ (Results)

चार हफ़्ते इलाज के बाद	सेहतयाब	गैर मुतअस्सिर	कुल
मोतालिआती जमाअत	25	7	32
निगरां जमाअत	5	27	32
कुल	30	34	64

आइये मोतालियाती जमाअत पर एक नज़र डालें । 32 मरीज़ों में 25 यानी 78 फीसद (15 मर्द और 10 औरतें) ने अपनी बीमारी से नजात हासिल की जबकि सात मरीज यानी 21.9 (5 मर्द और दो औरतें) कोई भी मुसबत नतीजा बरआमद न कर सके ।

दूसरी तरफ निगरां जमाअत में 32 में से सिर्फ पाँच मरज से नजात हासिल कर सके जब्कि 27 मरीज (84.3 फीसद) (16 मर्द और 11 औरतें) कोई मुसबुत नतीजा

Scanned by CamScanner

दिखाने में नाकाम रहें । ये नताएज (आदाद व शुमार) अहम होने के साथ–साथ ज़ेरे बहस मफरुज़े (Hipothesis) को साबित भी करते हैं यानी मोतालियाती जमाअत जिसके अरकान दिल जमई से जिक्रे इलाही, तहज्जुद और तिलावते आयात करते रहे मुसबत नताइज दिखाने में कामयाब रहे । निगरां जमाअत के निगरा जो सिर्फ़ जागते रहे सिर्फ घरेलू काम काज में मस्रुफ रहे बेहतर नताइज न दिखा सके ।

सलाते तहज्जुद एक मुसल्मान के लिये दीनी अहमीयत की हामिल है जैसा कि मुनदरजा जेल आयाते कुरआनी बावर करवा रही है ।

वमिनल लैले फ़–त–हज्जद बिही नाफ़ि–ल–तल लक

और रात के कुछ हिस्से में तहज्जुद भी पढ़ लिया कीजिए (जो आप के हक में जायद चीज़ है). (सुरए बनी इसराईल 79)

ये मरीज़ों के लिये सीधे रास्ते की तरफ रहनुमाई कराती है और उस पर अमल बहैसियत "इलाज बराये मिज़गां" बशरते कि, दिल जमई, लगन और अक़ीदत और मुहब्बत से किया जाये तो यकीकन खुशआइन्द होगा और बीमारी के मुज़िर असरात कम करते–करते ज़िन्दगी पर खुश गवार असर मुरत्तब करेगा क्योंकि ये हज़रात जिक्रे इलाही से अन्दरुनी चैन और इतमीनाने कल्ब हासिल कर लेते हैं।

कुरआने करीम की दुसरी आयत सर चशमए सेहत की रहनुमाई करती है।

व नुनज़्ज़िलु मिनल कुरआने मा हु–व शिफ़ाउन व रहमततुल लिल्मोमेनीन और हम कुरआन में ऐसी चीज़ें नाज़िल करते हैं जो इमान वालों के हक़ में शिफ़ा और रहमत हैं। (सुरह बनी इसराईल 82)

यहाँ ये बात खास तौर पर तवज्जुह तलब है कि मुसलमानों का इमान बल्कि यक़ीन है कि मुसीबत मिन जानिबिल्लाह ही है और जब हम सच्चे दिल और खलूस नियत से ग़लतीयों का ऐतराफ करके माफी के तालिब होंगे और मुकम्मल सेहतयाबी के लिये दुआ करेंगे तो वह यक़ीनन अल्लाहतआला के यहाँ मग़फ़िरत भी करायेगी और अपनी रहमत से हमारी मुशकिलात और मसाइब को दूर भी कर देगा।

इलाज बित तहज्जुद एक नफसीयाती तरीक़ाए इलाज है जिसकी तालिमात कुरआन से माखूज़ हैं और बहैसियत तकाबुल यह मग़रिबी तरीक़ाए इलाज को पास फटकने नहीं देता। एक मुसलमान का यक़ीने कामिल है कि वह सिर्फ अल्लाह ही

Scanned by CamScanner

का एक अदना गुलाम है और ज़िन्दगी और मौत सिर्फ उसी के कब्जाए कुदरत में है उसे ज़िन्दगी के गोनागों हंगामों में बहुत से मसाईल से यकसर नजात दे देता है।

ये मज़हबी तरीकाए इलाज जो अहादीसे नबवी (स0) और आयाते कुरआनी से मुसतआर लिया गया है वाकिअतन बहुत सी दुसरी नफ़सानीयाती और गैर नफसानीयाती तकालीफ़ का मुँह तोड़ जवाब है।

हक़ीक़त ये है कि कोई भी बीमारी लाइलाज नहीं जेसा कि मुनदरजा जैल हदीस नबवी (स0) से साबित है।

लिकुल्ले दाइन दवाअ

अल्लाहतआला ने मरीज़ों के लिये शिफ़ा अता फरमाई है। बहुत सी बीमारीयाँ ऐसी हैं जिन का इलाज अभी तक दरयाफ़्त नहीं हुआ यानी सरतान और ऐडज़ (CANCER AND AIDS) वगैरह लेकिन मुनदरजा बाला हदीस के आइने में ये बात सौ फीसद वसूक़ से कही जा सकती है कि ये बिमारीयां भी लाइलाज नहीं लिहाज़ा नफसीयाती बीमारी का बेहतरीन इलाज सकुने क़ल्ब में मुज़मिर है जो ज़िक्रे इलाही और नमाज़ के ज़रीये मुम्किन है ताकि रुहानी और नफसियाती सफाई व पाकीज़गी का मोजब बने। दर हक़ीक़त हम किसी भी बीमारी की इहतियात और रोक थाम के लिये इसलाम के सराते मुसतकीम पर साबित क़दम रहकर सुरखरू हो सकते हैं। जैसा कि आयाते कुरआनी, अहादीसे नबवी (स0) और सुन्नते नबवी (स0) से साबित है।

(ब–हवाला माहनामा इशराक़, डाक्टर शरीफ़ चोधरी)

Scanned by CamScanner

औकाते नमाज़ और जदीद साइंस

Timings Of Prayers And Modern Science

इनसान तबई तौर पर मुहरिके जिस्म है । ये जामिद और साकित अजसाम की ज़िद है । इसलिये उसकी सेहत, तन्दुरुस्ती और बका तहरीक़ में है और नमाज़ बार–बार इसी तहरीक़ का नाम है । कुदरत ने उसके मामूलाते ज़िन्दगी और उसको अज़ल से अबद तक जानते और पहचानते हुये नमाज़ में उसके लिये औकात और वक़्फे मुकर्रर किये हैं।

नमाज़े फ़जर

Fajar Prayer

नमाज़े फ़जर उस वक़्त होती है जब रात डूबने को होती है और उस वक़्त आदमी रात के सूकुन और आराम के बाद उठता है । साइन्स और हिफज़ाने सिहत (Hygiene) का उसूल है कि किसी भी वरज़िश को करने के लिये आहिस्ता–आहिस्ता अपनी रफ़्तार, कुव्वत और लचक में इज़ाफा किया जाये हत्ता कि दौड़ने के लिये भी यह ज़रुरी है कि इसमें पहले आहिस्ता–आहिस्ता दौड़ें फिर और तेज़ और फिर सुबुक रफ़्तार बन जायें ।

अब अगर इन्सान उठते ही सत्रह रिकआत की नमाज़ पढ़े तो उसकी जिस्मानी सिहत बहुत जल्द ख़त्म हो जायेगी और वह बहुत ही जल्द आसाब और बेताक़ति का मरीज़ बन जायेगा ।

फिर रात को सोने के बाद उठते ही पेट खाली होता है और खाली पेट और उस वक़्त जब आज़ा रात भर सुकून में रहे हों और फिर फौरन उन्हें तहरीक़ दी जाये दोनों हालतों में सख़्त मेहनत और ज़्यादा उठक बैठक बहुत मुज़िर हैं इसलिये अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने सुब्ह की नमाज़ बहुत मुखतसर रखी है ।

सुब्ह की नमाज़ का बुनयादी मक़सद इनसान को तहारत (Sterilization) और

सफाई की तरफ मायल करना है अगर उसने नमाज़ का वज़ू न किया और मिस्वाक न किया और सुब्ह का नाश्ता कर लिया और रात भर जरासीम मुँह में फैलते–फूलते रहे और (Bacteria) की एक खास किस्म रात को सोते वक़्त मुँह में पैदा हो जाती है । अगर वह गिज़ा, लोआब या पानी के जरीये अन्दर चली जाये तो मेदे की सोजिश (Stomach Swelling) और आतों की वरम (Inflammation Of Intestines) और अल्सर (Ulcer) के ख़तरात बढ़ जाते हैं ।

नमाज़े जोहर

Zuher Prayer

सुब्ह से दोपहर तक आदमी कसबे मआश के लिये साई व कोशां रहता है। उसी दौरान गर्द व गुबार, धूल और मिट्टी से उस का वास्ता पड़ता है । बाज औक़ात ऐसे ज़हरिले किमीकल हवा के जरीये खुले अज़ाअ, चेहरे और हाथों पर लग जाते हैं जो अगर ज़्यादा देर रहें तो इन्तेहाई नुक़सान देह साबित होते हैं। तो ऐसी कैफियत में जब आदमी वज़ू करता है तो उस पर से तमाम कसाफतें और तकान दुर हो जाती है और उस पर सूरुर और कैफ की एक दुनिया रोशन हो जाती हैं।

सुरज की तमाज़त ख़त्म होकर जो ज़वाल से शुरु होती है तो ज़मीन के अन्दर से एक गैस खारिज होती है यह गैस इस क़दर ज़हरीली होती है कि अगर आदमी के उपर असर अन्दाज़ हो जाये तो वह क़िस्म–क़िस्म की बीमारियों में मुबतला कर देती है। दिमागी निज़ाम इस क़दर दरहम बरहम हो जाते है कि आदमी पागल पन का गुमान करने लगता है। जब कोई बन्दा ज़ेहनी तौर पर इबादत में मशगूल हो जाता है तो उसे नमाज़ की नूरानी लहरें उस ख़तरनाक गैस से महफूज़ रखती हैं। अव नूरानी लहरों से ये ज़हरीली गैस बेअसर हो जाती है।

नमाज़े अस्र

Assar Prayer

ज़मीन दो तरह से चल रही है एक गर्दिश महवरी और दुसरी तूलानी, ज़वाल के बाद ज़मीन की गर्दिश में कमी वाक़े हो जाती है और फिर रफ़्ता–रफ़्ता यह गर्दिश

Scanned by CamScanner

कम होती चली जाती है और अस्र के वक़्त तक ये गर्दिश इतनी कम हो जाती है कि हवास पर दबाव पड़ने लगता है। इनसान, हैवान, चरिन्द, परिन्द सब के उपर दिन के हवास की बजाये रात का हवास का दरवाज़ा खुलना शुरु हो जाता है और शऊर मग़लूब हो जाता हैं हर ज़ी शऊर इन्सान इस बात को महसूस करता है कि अस्र के वक़्त उसके उपर ऐसी कैफीयत तारी होती है जिस को वह तकान, बेचैनी और इज़्मेहलाल का नाम देता है । ये तकान और इज़्मेहलाल शऊरी हवास पर लाशऊरी हवास की गिरफ़्त का नतीज़ा होता है । अस्र की नमाज़ शऊर को इस हद तक मुज़्महिल होने से रोक देती है जिससे दिमाग पर खराब असरात मुरत्तब हों । वज़ू और अस्र की नमाज़ क़ायम करने वाले बन्दे के शऊर में इतनी ताक़त आ जाती है कि वह लाशऊरी नेज़ाम को आसानी से कुबूल कर लेता है और अपनी रूह से क़रीब हो जाता है । दिमाग रूहानी तहरीक़ात कुबूल करने के लिये तैयार हो जाता है ।

एक मरीज़ की परेशानी

Trouble Of A Patient

बन्दा के क्लिनिक में एक रईस आदमी इलाज के लिये आया उसका सिर्फ एक मसला था कि अस्र के वक़्त से दिमागी दबाव, बेचैनी और बेसकूनी शुरु हो जाती है जो फिर मुसलसल बढ़ती है और कुछ अर्सा रहने के बाद मगरीब के बाद कम होना शुरु हो जाती है ।

बन्दा ने उन्हें कुछ दवाएं दीं और दरुद शरीफ़ कसरत से पढ़ने को कहा मरीज हैरत अंगेज़ तरीक़े से शेफ़ायाब हो गया ।

Scanned by CamScanner

नमाज़ अस्र के बाद औराद की वजह

(The Reason Of "Aoraad" After Assar Prayer)

नमाज़ अस्र के बाद कुछ देर ज़िक्र, तसबीह की जाती है जो कि शरई हुक्म है और फिर दुआ की जाती है। उस की वजह भी यही है कि उन अज़कार और वज़ाइफ की नूरानी शआयें और लहरें इस ख़तरनाक असर पर ग़ालिब आ जाती हैं जो ज़मीन की हरकत से पैदा होता है ।

औलिया का मामूल

(The Routine Of "Aoulya")

औलिया–ए कराम के मालूममात में यह बात मिलती है कि वह अस्र से मग़रिब तक मुसलसल ज़िक्र अज़कार और वज़ाइफ़ में मशगूल रहते हैं उस की साइन्सी वजह यही है जो साबिक़ा बयान हो गई है कि ज़मीन की गर्दिशे महवरी और तुलानी के असरात से वह हज़रात ज़िक्र अज़कार के ज़रीये महफ़ूज़ रहते थे ।

नमाज़े मग़रिब और रूहानी लहरें

Spiritual Rays & Namaze Maghrib

आदमी बिलफेल इस बात का शुक्र अदा करता है कि अल्लाह तआला ने रिज़्क़ अता फ़रमाया है और कारोबार से उसकी और उसके बच्चों की ज़रुरीयात पूरी होती है । शुक्र के ज़ज़्बात से वह मसरूर और खुश व खुरन्म और पुरकैफ हो जाता है । उसके अन्दर खालिक़े काइनात की वह सिफ़त मुतहर्रिक़ हो जाती हैं जिनके ज़रीये

Scanned by CamScanner

काइनात की तखलिक़ होती है । जब वह अपने घर वालों के साथ पुरसकून ज़ेहन के साथ महवे गुफ़तगु होता है तो उसके अन्दर की रोशनियाँ (लहरें) बच्चों में बराहे रास्त मुनतकिल होती हैं और उन रोशनियों से औलाद के दिल में माँ–बाप का इहतराम और वक़ार कायम होता है । बच्चे गैर इरादी तौर पर माँ–बाप की आदात को तेज़ी के साथ अपने अन्दर ज़ज़्ब करते हैं और उनके अन्दर माँ–बाप की मुहब्बत और इश्क़ का ज़ज़्बा पैदा होता है । मुखतसर यह कि मग़रिब की नमाज़ सही तौर पर और पाबन्दी के साथ अदा करने वाले बन्दे की औलाद सआदत मन्द और माँ–बाप की ख़ादिम होती है ।

(ब हवाला "नमाज़" ख्वाजा शमसुद्दीन अज़ीमी)

नमाज़े इशा

Isha Prayer

इनसान तबई तौर पर लालची है और जब वह कारोबारे दुनिया से फारिग़ होकर घर आता है तो वह खाना खाता है और लज़्ज़त व हिर्स में खाना ज़्यादा खा लेता है अब अगर वह इस खाने के बाद लेट जाये तो मुहलिक अमराज़ में मुबतला हो जायेगा । अब अल्लाहतआला ने उसको एक फ़ायदा भी दिया है कि सारा दिन का थका हुआ ज़ेहन लेकर अगर नींद करेगा तो बेसकून होगा । उसको सकून नमाज़ के अन्दर मिलेगा ।

तो यूँ खाने और सकून का तमाम निज़ाम नमाज़ के ज़रीये हल हो जाता है और फिर जब वह नमाज़ पढ़ते–पढ़ते सोएगा तो जिस तरह सुब्ह होती है फजर की नमाज की वरज़िश की तो उसी तरह सोते वक़्त इशा की नमाज़ की मुकम्मल और तवील वरज़िश उसको सकून और आराम की नींद सोलायेगी ।

अब तो माहिरीन सोने से कब्ल हल्की वरज़िश पर ज़ोर देते हैं और खुद माहिरीन का कहना है कि नमाज़ से बढ़कर सोते वक़्त की कोई बेहतर वरज़िश नहीं ।

Scanned by CamScanner

नमाज़े तहज्जुद

Tahajjud Prayer

जैसा कि पहले जिक्र किया कि तहज्जुद की नमाज़ से तवील तहक़ीक़ात के बाद मुनदरजा जेल फायदे हासिल हुये हैं जो माहिरीन ने अपनी किताबों और वाकियात में बयान किये हैं ।

(1) बेसकूनी और नींद का इलाज है ।

(2) दिल के अमराज के लिये तिरयाक़े आज़म है ।

(3) आसाबी खिंचाव और जकड़ाव के लिये मुफीद है ।

(4) दिमागी अमराज ख़ास तौर पर पागल पन की ख़तरनाक कैफियत के लिये आखिरी इलाज है ।

(5) निगाहों में खास तौर पर जिनकी निगाह में दो चीज़ें नजर आती हों उनका इलाज है ।

(6) इनसानी जिस्म में निशात, फ़रहत और ग़ैर मामूली ताक़त पैदा करता है जो उसे सारा दिन हश्शाश–बश्शाश रखती है ।

(ब हवाला 1 डाक्टर डारविन और उसके नजरीयात 2 तसव्वुराते दीन मुकम्मल 3 दीनी ज़िन्दगी (जिल्द अव्वल।)

अरकाने नमाज़ की साइंसी तौजीह

Scientific Reason Of Fundamentals of Namaz

नीयत बांधना

दिमाग़ में खरबो खुलये काम करते हैं और खुलयों में बरकी रौ दौड़ती रहती है । इस बरकीरौ के ज़रीये ख़्यालात शऊर और तहतुश शऊर से गुजरते रहते हैं।

Scanned by CamScanner

दिमाग़ में खरबों खुलयों की तरह ख़ाने भी होते हैं । दिमाग़ का एक ख़ाना वह है जिसमें बरकीरौ फोटो लेती रहती है और तकसीम करती रहती है । ये फोटो बहुत ही तारीक़ होता है या बहुत ज़्यादा चमकदार, एक दुसरा ख़ाना है जिसमें कुछ अहम बातें होती हैं इन अहम बातों में वह अहम बातें भी होती हैं जिन्हें शऊर ने नज़र अन्दाज़ किया होता है और जिनको हम रुहानी सलाहियत का नाम दे सकते हैं । नमाज़ी जब हाथ उठाकर सर के दोनों कानों के करीब ले जाता है तो एक मखसूस बरकीरौ नीहायत बारीक़ रग अपना कन्डेंसर **(Condensor)** बनाकर दिमाग़ में जाती है और दिमाग़ के अन्दर उस ख़ाने की खुलयों **(Cells)** को चार्ज कर देती है जिसको शऊर ने नजर अन्दाज कर दिया था । ये खुलिये चार्ज होते हैं तो दिमाग़ में रोशनी का एक झमाका होता है और उस झमाके से तमाम आसाब मुतअस्सिर होकर उस खाने की तरफ मुतवज्जिह हो जाते हैं जिसमें रूहानी सलाहियतें मख़फी हैं साथ ही साथ हाथ के अन्दर एक तेज बरकीरौ दिमाग में से मुनतकिल हो जाती हैं जब कानों से हाथ हटाकर नाफ की तरफ ले जाते हैं और फिर बांधते हैं तो हाथों के कन्डेंसर **(Condensor)** से नाफ (जेली जेन्रेटर) में बिजली का जख़ीरा हो जाता है । जेरे नाफ बांधने से जिनसी नेजाम में तादील और इस जिस्म के लिये मोज़ूं और ज़रुरी तहरीक़ पैदा हो जाती है ताकि नौए इन्सानी की नस्ल दूसरी नोओं से मुमताज और अशरफ रहे । और सुब्हा–न–क अल्लाहुम्म पढ़ा जाता है जैसे ही ये अल्फ़ाज अदा होते हैं रूह अपनी पूरी तवानायों के साथ सिफाते इलाहिया में ज़ज्ब हो जाती है और पूरे जिस्मानी नेजाम में अल्लाह की सिफात रोशनी बनकर सरायत हो जाती हैं । जिस्म का रोवां–रोवां अल्लाह की पाकी बयान करने में मशगूल हो जाता है ।

क़ियाम

Standing Up

क़ियाम नमाज़ की सबसे पहली कैफियत और इबतेदा है और उसमें जिस्म बिलकुल बे हरकत और साकिन होता है ऐसी कैफियत से मुनदरजा ज़ेल असरात जिस्मे इनसानी पर पड़ते हैं ।

Scanned by CamScanner

- जब नमाज़ी क़राअत शुरु करता है तो अहादीस में है कि इतनी ऊंची क़राअत होकि अपने कान सुन सकें । अब उन कुरआनी अलफाज़ के अनवारात पूरे जिस्म में सरायत कर जाते हैं जो अमराज के दफ़इए के लिये अकसीर आज़म है ।

- क़याम से जिस्म को सकून और कैफियत महसूस होती है ।

- चूंकि कुरआन पाक की तिलावत हो रही होती है इस लिये उसका जिस्म एक नूर के हलके में मुसलसल लिपटा रहता है और जब तक वह उस हालत में रहता है तो उस वक़्त वह नूर जिसे साइंसी जबान में **(In The Language Of Science)** गैर मरई शुआएं उसका अहाता किये हुयं होती हैं।

- क़याम में नमाज़ी जिस हालत में होता है अगर रोज़ाना 45 मिनट ऐसी हालत में खड़ा रहें तो दिमाग और आसाब में जबरदस्त कुवत और ताकत पैदा होती है । कुवते फैसला और कुवत मुदाफिअत बदन में ज़्यादा होती है ।

सजदा इन तीन उलूम का मरक्कअ है :–

- उसूले योगा
- उसूले टेली पैंथी
- उसूले हाईजेन

- क़याम से मुअख़्ख़र दिमाग **(Pons)** (जिसका काम, चाल, ढाल और जिस्मे इनसानी की रफतार को कन्ट्रोल करना होता है) कवी हो जाता है और एक ऐसे खतरनाक मरज से बचाता रहता है जिससे आदमी अपना तवाजुन दुरुस्त नहीं रख सकता ।

(फज़यालोजी रिसर्च)

Scanned by CamScanner

हाथ बांधना

Respectfully With Folded Hands

औरतें

(Females)

औरतें नियत के बाद जब सिना पर हाथ बांधती हैं तो दिल के अन्दर सेहत बख्श हरारत मुनतकिल होती है और वह ग़दूद नशोव नुमा पाते हैं जिन के ऊपर बच्चों की गिज़ा का इनहसार है । नमाज़ क़ायम करने वाली माओं के दूध में तासीर पैदा हो जाती है कि बच्चों के अन्दर अनवारात का ज़खीरह रहता है जिस से इन के अन्दर ऐसा पैटरन (Pattern) बन जाता है जो बच्चे के शऊर को नूरानी बनाता है ।

जदीद तहक़ीक़ में यह बात साबित है कि औरतें जब सिना पर हाथ रखकर एक खास मुराक़बा करती है जिससे दुनिया से कट कर किसी पूरसकून खियाल में खो जाती हैं (यानी अल्लाह की तरफ जब नमाज़ी औरत मतवज्जह होती है) तो ऐसी हालत में एक खास किस की रेज़ (Rays) पैदा होती है जो बक़ौल डाक्टर डरविन हलके निले या सफेद रंग की होती हैं जो उसके जिस्म में दाखिल और खारिज होती रहती हैं और उस जिसम के अन्दर कुवते मुदाफिअत (Immunity) के बढ़ने से वह जिस्म कमी भी खुलयात के सरतान (Cancer Of Cells) में मुबतला नहीं होता ।

मर्द

(Males)

मर्द जब नाफ पर या उसके नीचे हाथ बांधते हैं तो जैसा कि आप ने पहले पढ़ा कि दोनों हाथों से लहरें निकलती हैं जो कि मुसबत (Positive) और मनफी (Negative) होती हैं । अब इन लहरों के इमतज़ाज से एक खास असर होता है जो नाफ के जरीये निज़ामे आसाब तक पहुँचता है जिससे गुर्दे और ग़दह फौकुल कुलयह (Adernal Glands) क़वी होते हैं जिस से जिनसी कुवत क़वी और मुहरिक होती है।

Scanned by CamScanner

रुकूअ

Bowing

एक मरतबा पिन्डी मेडीकल कालेज के प्रिन्स्पल डा. मुहम्मद नवाज़ साहिब ने फ़रमाया कि मेरे पास एक सर्जन डाक्टर आया जिसकी बीवी भी सर्जन थी कहने लगा "डाक्टर साहिब घुटनों और कमर का दर्द बहुत ज़्यादा है इलाज बहुत किये है लेकिन अफ़ाक़ा नहीं हुआ डाक्टर नवाज साहिब फरमाने लगे मैंने डाक्टर (सर्जन) से पूछा कि आप नमाज़ पढ़ते हैं ? सर्जन साहिब कहने लगे हाँ पाँच वक्त की! तो फिर डाक्टर नवाज़ साहिब फ़रमाने लगे कि आप रुकूअ और सजदा अच्छी तरह नही करते और उन्हें रुकूअ और सजदा सुन्नत के मुताबिक करने को बताया! कुछ ही अर्सा के बाद डाक्टर साहिब सेहतमन्द हो गये ।

रुकूअ से हराम मग़ज़ (Spinal Cord) की कारकरदगी में इज़ाफ़ा होता है और वह मरीज़ जिन के आज़ा सुन हो जाते हैं वह इस मरज़ से बहुत जल्द अफ़ाक़ा हासिल कर सकते हैं ।

रुकूअ से कमर के दर्द के मरीज़ या ऐसे मरीज़ जिनके हराम मग़ज़ में वरम (Inflamation Of Spinal Cord) हो गया हो वह बहुत जल्द सेहतयाब हो जाते हैं।

रुकूअ से गुर्दो में पथरी बनने का अमल सुस्त पड़ जाता है और पथरी का मरीज़ जिसके गुर्दो में पथरी बन गई हो, रुकूअ से बहुत जल्द निकल जाती है।

रुकूअ से टाँगों के फ़ालिज ज़दह मरीज़ चलने फिरने के क़ाबिल हो जाते हैं। रुकूअ से दिमाग़ और आखों की तरफ़ दौराने खून के बहाव (Circulation of Blood) की वजह से दिमाग़-व-निगाह की कारकरदगी में इज़ाफा होता है

सजदा

Prostration

जब नमाज़ी सजदा करता है तो उसके दिमाग़ के शिर्यानों (Artries) की तरफ़ खून ज़्यादा हो जाता है! जिस्म की भी पोजिशन में खून दिमाग़ की तरफ़ ज़्यादा

Scanned by CamScanner

नही जाता सिर्फ़ सजदे की हालत में दिमाग़ (Brain) दिमाग़ी आसाब (Brain Nerves) आखों (Eyes) और सर के दीगर हिस्सों की तरफ़ ख़ून (Blood Circultion) मुतवाज़न हो जाती है! जिसकी वजह से दिमाग़ और निगाह बहुत तेज़ हो जाती है।

दाइमी ख़ूबसूरती का राज़

Cofidence of Permanent Beauty

शैख़ नक्शबन्दी क़िबला जुलफ़िक़ार अहमद साहिब (इन्जिनियर ऐण्ड जेनरल मेनेजर) फ़रमाते हैं "नमाज़ी आदमी के चेहरे पर ताज़गी रहती है क्योंकि नमाज़ और सजदे की वजह से उसकी तमाम शिर्यानों में खून पहुंचता रहता है! जो नमाज़ नही पढ़ता उसके चेहरे पर एक अफ़सुर्दगी सी फैली रहती है! इसलिए हदीसे पाक में वारिद है कि जो नमाज़ पढ़ता है उसके चेहरे पर सालिहीन का नूर होगा।

औरतों का सजदा और वाशिंगटन का डाक्टर

Women's Prostration & Doctor of Washington

शैख़ इन्जिनियर नक्शबन्दी फ़रमाते है "मेरी मुलाक़ात अमरीकन डा० से हुई कहने लगे कि यकीन जानें औरतों को अगर यह पता चल जाए कि नमाज़ में लम्बे सजदे की वजह से चेहरा ख़ूबसूरत होता है । और नूर आता है तो वह सजदे से सर न उठाएं।

सजदा और टेलीपैथी

Prostration and Telepathy

रोशनी एक लाख छयासी हज़ार दो सौ ब्यासी (186282) मील फ़ी सिकन्ड की रफ़तार से सफ़र करती है और ज़मीन के गिर्द एक सिकन्ड में आठ दफ़ा घूम जाती है! जब नमाज़ी सजदे की हालत में ज़मीन पर सर रखता है तो उसके

दिमाग़ के अन्दर की रोशनियों का तआल्लुक़ ज़मीन से मिल जाता है। और ज़ेहन की रफ़्तार रोशनी की रफ़्तार हो जाती है।

दूसरी सूरत ये वाक़े होती है कि दिमाग़ के अन्दर ज़ाइद ख़्याल पैदा करने वाली बिजली बराहेरास्त ज़मीन में जज़्ब हो जाती है और बन्दा लाशऊरी तौर पर कशिशे सक़ल (Force of Gravity) से आज़ाद हो जाता है। उसका बराहेरास्त तआल्लुक़ ख़ालिके काइनात से हो जाता है। रुहानी ताक़तें इस हद तक बहाल हो जाती कि आँखों के सामने से परदा हटकर उसके सामने ग़ैब की दुनिया आ जाती है।

जब नमाज़ी फ़ज़ा और हवा के अन्दर से रोशनियाँ लेता हुआ सर, नाक, घुटनों हाथों और पैरों की बीस उंगलियां क़िबला रुख़ ज़मीन से मिलाता हुआ सजदे में चला जाता है तो जिस्मे आला का ख़ून दिमाग़ में आ जाता है और दिमाग़ को तग़ज़िया फ़राहम करता है। कीमियाई तबदीलियाँ पैदा होकर इन्तेक़ाले ख़्याल (Telepathy) की सलाहीयतें उजागर हो जाती हैं।

(बहावाला ख़्वाजा अज़ीमी साहिब)

सलाम

Finish Prayer (Salam)

क्यों कि नमाज़ी को सलाम फेरने के लिए सर दायें बायें करना पड़ता है और ऐसा कई बार एक नमाज़ में करना पड़ता है! तो ऐसा करने वाला अमराज़े क़ल्ब (Heart Diseases) और उसकी अन्दरुनी पेचीदगियों से हमेशा बचता रहता है और बहुत कम इन अमराज़ में मुबतला होता है।

(रिसर्च डा. क़ाज़ी अब्दुल वाहिद नशतर मेडिकल कालेज, मुलतान)

अफ़ादाते नूरी

Benefits Of Noori

जैल में क़ाबिले सद इहतराम डाक्टर नूर अहमद साहिब प्रौफ़ेसर आफ़ मेडीकल कालेज मूलतान की नमाज़ पर तहक़ीक़ पेश है!

Scanned by CamScanner

नमाज़े तहज्जुद का फ़ाइदा

Benefit Of Namaze Tahajjud

मायूसी यानी डिप्रेशन (Depression) के अमराज़ का इलाज मग़रिबी डाक्टरों ने एक और दर्याफ़्त किया है। ये बात मुझे ख़ैबर मैडीकल कालेज के माहिरे नफ़सियात ने बताई! मग़रिबी ममालिक के डाकटरों ने देखा कि जो मुसलमान तहज्जुद के वक़्त जागते हैं मायूसी का मरज़ उन्हें नही होता। चुनान्चे उन्हों ने सोचा कि तहज्जुद के वक़्त जागना मायूसी के मरज़ का इलाज है! इल्मे नफ़सियात (Psychology) के माहिरीन ने मायूसी के मरीज़ों को तहज्जुद के वक़्त जगाना शुरु किया। ये मरीज़ जागकर कुछ पढ़ लेते थे और फिर सो जाते थे ये मामूल जब कई महीनें तक मुसलसल जारी रखा गया तो मायूसी के मरीज़ों को बहुत फ़ायदा हुआ और दवाओं के बग़ैर ठीक हो गये । चूनान्चे इस मग़रबी डा० ने यह नतीजा आख़ज़ किया कि आधी रात के बाद जागना मायूसी के मरीज़ों का इलाज है ।

पाँच वक़्त नमाज़ पढ़ने की वजह

Cause Of Five Times Prayer

तक़रीबन हर मज़हब के पैरुकार मानते हैं कि इन्सान जिस्म और रुह का मुरक्क़ब है। जिस्म की ग़िज़ा ज़मीन से निकलने वाली ख़ूराक़ है और रुह की ग़िज़ा नमाज़ है। दीने इसलाम में जिस्म और रुह की ग़िज़ा का साथ साथ इन्तेज़ाम किया गया है। सुब्ह के वक़्त नाशता कर के जिस्म को ग़िज़ा देते है और फ़जर की नमाज़ पढ़ कर रुह को कुव्वत बख़्शाते हैं।

दोपहर का खाना खाकर जिस्म को कुव्वत मिलती है और ज़ोहर की नमाज़ पढ़ कर रुह की ग़िज़ा का सामान बन जाता है। अस्र की नमाज़ ढलते दिन के बाद मज़ीद रुह के लिये तक़वियत का बाइस बनती है। चूँकि शाम के वक़्त कई लोग खाना ज़्यादा खा लेते हैं इसलिये इशा की नमाज़ की रकअतें ज़्यादा

होती है।

अमराज़े क़ल्ब से बचाव

Protection Of Hearts Diseases

दिल के माहीर डा०साहिबान ने कई सालों की मेहनत के बाद एक वर्ज़िश दर्याफ़्त की है। जिससे दिल के अमराज़ कम हो जाते हैं। और यह वर्ज़िश नमाज़ से मिलती जुलती है। जब हम क़याम करते है तो जिस्म के निचले हिस्से को खून ज़्यादा मिलता है और जब हम रुकूअ में जाते हैं तो दर्मियानी हिस्से को फ़ायदा होता है और जब हम सजदे में जाते हैं तो जिस्म के ऊपर वाले हिस्से को ज़्यादा ख़ून मिलता है।

लेहाज़ा नमाज़ के दौरान जिस्म के हर हिस्से को मौज़ूँ मिक़दार में ख़ून मियस्सर होता है। जिसकी वजह से कई बिमारियाँ मसलन दिल के अमराज़ कम हो जाते हैं। मुशाहिदा की बात है की आबिद लोग अकसर नहीफ़ होते है। लेकिन उसके बावजूद उनके दिल क़वी होते है और दिल के अमराज़ में कम मुबतला होते हैं।

अफ़ादाते अज़ीमी

Benefit Of Azemi

जेल में ख़्वाजा शमसुद्दीन अज़ीमी के अफादात दर्ज है।

नमाज़ हाई बलड प्रेशर का इलाज

Namaz Treatment of High Blood Pressure

नमाज़ क़ायम करने के लिये हम सबसे पहले वज़ू का इहतेमाम करते है। वज़ू के दौरान जब हम चेहरा और किहनियों तक हाथ धोते है, पाँव धोते है और सर का मसा करते है तो हमारे अन्दर दौड़ने वाले ख़ून को एक नई ज़िन्दगी

Scanned by CamScanner

मिलती है जिससे हमें सकून मिलता है। इस तसकीन से हमारा सारा आसाबी निज़ाम मुतअस्सिर होता है। पुर सकून असाब से दिमाग़ को आराम मिलता है। आज़ाए रइसा. सर, फेफड़े, दिल और जिगर वग़ैरा की कारकरदगी बहाल होती है। हाई बलड प्रेशर कम हो कर नारमल हो जाता है, चेहरे पर रौनक़ और हाथों में रानाई और ख़ूबसूरती आ जाती है। वज़ू करने से आसाब का ढिलापन ख़त्म हो जाता है। आँखे पुर कशिश होती हैं। सुस्ती काहिली दूर हो जाती है। आप कभी भी तजरिबा कर सकते है कि हाई बलड प्रेशर के मरीज़ों को वज़ू कराएं तो बलड प्रेशर कम हो जयेगा।

गेठिया का इलाज क़याम के ज़रिये

Treatment Of Arthritis By Bowing

गेठिया या जोड़ों के दर्द का इलाज नमाज़ में मुमकिन है। जब हम वज़ू करने के बाद नमाज़ के लिये खाड़े होते हैं तो क़ुदरती तौर पर जिस्म में तनाव पैदा हाजाता है इस हालत में आदमी के ऊपर से सिफली जज़बात का ज़ोर टूट जाता है। सीधे खड़े होने में उम्मुद दिमाग़ से रोशनियाँ चल कर रीढ़ की हड्डी से होती हुई पूरे आसाब में फैल जाती हैं। ये बात सब जानते है कि जिसमानी सेहत के लिये रीढ़ की हड्डी को एक मुमताज़ मुक़ाम हासिल है। और उमदह सेहत का दारो मदार रीढ़ की हड्डी की लचक पर है।

नमाज़ में क़याम करना, घुटनों, टख़नों और पैरों से ऊपर पिन्डलियाँ, पँजो और हाथ के जोड़ो को क़वी करता है, गेठिया के दर्द को ख़त्म करता है लेकिन शर्त यह है कि जिस्म सिधा रहे और टाँगो में ख़म वाक़े न हो।

Scanned by CamScanner

रुकूअ से जिगर के अमराज़ का ख़ातमा

Liver Diseases Cured By Bowing

झुक कर रुकूअ में दोनों हाथ इस तरह घुटनों पर रखे जाएं कि कमर बिलकुल सीधी रहे और घुटने झुके हुये न हों इस अमल से मेदे को कुव्वत पहुँचती है। निज़ामे इनहेज़ाम दुरुस्त होता है, क़ब्ज़ दूर होती है, मेदे की दूसरी ख़राबियाँ नीज़ आँतो और पेट के अज़लात का ढीला पन ख़त्म हो जाता है। रुकू का अमल जिगर और गुरदों के अफ़आल को दुरुस्त करता है इस अमल से कमर और पेट की चरबी दूर हो जाती है, ख़ून का दौरान तेज़ हो जाता है। चूँकि दिल और सर एक सीध में हो जाते हैं इसलिए दिल के लिए ख़ून को सर की तरफ़ पम्प (Pump) करना आसान हो जाता है। इस तरह दिल का काम कम हो जाता है और उसे आराम मिलता है जिससे दिमाग़ी सलाहियतें उजागर होने लगती हैं। दौराने रुकू चूँकि हाथ नीचे की तरफ जाते हैं इसलिए कन्धों से लेकर हाथ की उंगलियों तक पूरे हिस्से की वरज़िश हो जाती है। इससे बाज़ू के पट्ठे (Muscles) ताक़त वर हो जाते हैं और जो फासिद माद्दे बुढ़ापे की वजह से जोड़ो में जमा हो जाते हैं वह अज़ख़ुद ख़ारिज हो जाते हैं।

पेट कम करने के लिये

To Reduce Pot Belly

रुकूअ के बाद सीधे खड़े हो कर हम सजदे में जाते हैं। सजदे में जाने से पहले हाथ ज़मीन पर रखे जाते हैं (ख़ास तौर पर ख़्वातीन के लिए) ये अमल रीढ़ की हड्डी को मज़बूत और लचकदार बनाता है और ख़्वतीन के अन्दरुनी आसाब को तक़वियत बख़्शाता है।

अगर रुकूअ के बाद सजदे में जाने की हालत में जलदी न की जाये तो ये अन्दरुनी जिसमानी आज़ा के लिये नेमते ग़ैर मुतरक्क़िबा वरज़िश साबित होती

है। सजदे की हालत एक वरज़िश है जो रानों के ज़ाइद गौश्त को घटाती है और जोड़ों को खोलती है। अगर कूलहों के जोड़ों में ख़ुशकी आ जाए या चिकनाई कम हो जाए तो इस अमल से यह कमी पूरी हो जाती है और बढ़ा हुआ पेट कम हो जाता है। मुतनासिब पेट से जिस्म ख़ूबसूरत और सुडौल लगता है।

मेरा अजीब वाक़िया

My Strange Event

मेरे एक दोस्त अमरीका में अपने जिस्म को पतला करने के इलाज के लिये गये। अमरीका के एक माहिर डाक्टर ने कहा कि तुम मुसलमान हो तुम्हारा इलाज नमाज़ है। नमाज़ पढ़ो इससे तुम्हारा जिस्म स्मार्ट हो जाएगा अगर फिर भी कोइ कमी रह जाये तो नमाज़े तहज्जुद पढ़ो।

अलसर का इलाज सजदे के ज़रिये

Treatment Of Ulcer By Prostration

जिन लोगों के मेदे में जलन रहती है और जख़्म (Ulcer) होता है, सही सजदे के अमल से यह मरज़ ख़त्म हो जाता है। सजदा में पेशानी ज़मीन पर रखी जाती है और इस अमल से दिमाग़ी लहरें ज़मीन के अन्दर दौड़ने वाली बरक़ी रौ से बराहे रासत हम रिश्ता हो कर दिमाग़ की ताक़त में कई गुना इज़ाफ़ा कर देती हैं। इस हालत से दिमाग़ पुर सकून और मुतमईन हो जाता है। पुर सकून दिमाग़ मेदे की तीज़ाबी ग्लैन्डज़ को ज़्यादा तीज़ाब पैदा करने से रोकता है और यूँ मेदे की तीज़ाबियत ख़त्म और ज़ख़्म मुनदमिल होना शुरु हो जाते है।

जुमला दिमाग़ी अमराज़

Brain Diseases

ख़ुशुअ व ख़ुज़ूअ के साथ देर तक सजदा करना दिमाग़ी अमराज़ का इलाज

है। दिमाग़ अपनी ज़रुरियात के मुताबिक खून से ज़रुरी अजज़ाअ हासिल करके फ़ासिद माद्दों को खून के ज़रीये गुर्दों को वापस भेज देता है ताकि गुर्दे उन्हें पेशाब की शक्ल में बाहर निकाल दें। सजदे से उठते वक्त इस बात का ख़्याल रखा जाये कि सर झुका हुआ हो और बाजू सीधे और उनमें क़दरे तनाव हो। उठते वक्त रान पर हथेलियाँ भी रखें, कमर को पुरी कोशिश से ऊपर उठाएं और आहिस्ता से खड़े हो जाएं या बैठ जाएं।

चेहरे पर झुर्रियां

Wrinkless On Face

रीढ़ की हड्डी में हराम मग़ज़ बिजली की एक ऐसी तार है! जिस के ज़रिये पूरे जिस्म को हयात मिलती है सजदा करने से ख़ून का बहाव जिस्म के ऊपरी हिस्सों की तरफ़ हो जाता है! जिससे आँखें, दाँत और पूरा चेहरा सैराब होता रहता है और रुख़्सारों पर से झुर्रियाँ दूर हो जाती हैं! याददाश्त सही काम करती है! फहम-व-फरासत में इज़ाफ़ा हो जाता है! आदमी के अन्दर तदब्बुर की आदत पड़ जाती है! बुढ़ापा देर तक़ नहीं आता सौ साल की उमर तक चलता फिरता रहता है और बरक़ी रौ दोड़ती रहती है जो आसाब को तक़वियत पहुँचाने का सब्ब बनती है! सही तरीके पर सजदा करने से बन्द नज़ला सक़ले समाअत और सरदर्द जैसी तक़लीफ़ों से निजात मिलती है।

जिनसी अमराज़

Sexual Diseases

दोनों सजदो के दरमियान बैठना (जलसा) घुटनों और पिन्डलियों को मज़बूत बनाता है! इसके अलावा रानों में जो पट्ठे (Muscles) अल्लाहतआला ने नस्ल कशी के लिऐ बनाए है उनको ख़ास कुव्वत अता करता है जिससे मरदाना ज़नाना कमज़ोरियाँ दूर हो जाती हैं ताकि इन्सान की नसलें दिमाग़ी और जिस्मानी ऐतबार से सेहत मन्द पैदा हों!

सीने के अमराज़

Chest Diseases

नमाज़ के इख़्तेताम पर हम सलाम फेरते है! सलाम फेरने के इस अमल से गर्दन के अज़्लात को ताक़त मिलती है और वह अमराज़ जिनका तअल्लुक अज़्लात से है लाहक़ नही होते और इन्सान हशशाश बशशाश और तवाना रहता है! नीज़ सीना और हँसूली का ढीलापन ख़त्म हो जाता है! सीना चौड़ा और बड़ा हो जाता है! इन सब वरज़िशों का फ़ायदा उस वक़्त पहुँचता है जब हम पूरी तवज्जुह और दिलजमई और उसके पूरे आदाब के साथ अदा करें और जल्दबाज़ी से काम न लें ।

अफ़ादात

Benefits

हज़रत क़िबला हफ़िज़ इंजिनयर ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़शबन्दी मददज़िल्लहूलआली

वाशिंगटन का डाक्टर नमाज़ का क़ाइल

एक दफ़ा मेरी वशिंगटन में एक डाक्टर से मुलाक़ात हुई वह कहता था मेरा दिल कहता है कि सारे मुल्क़ में नमाज़ लागू कर दूँ! मैंने पूँछा वह क्यों भई! कहने लगा इसके अन्दर इतनी हिकमत है कि कोइ हद नही! वह जिल्द स्पेशलिस्ट (Skin specialist) था,कहने लगा उसकी हिकमत ये है कि आप तो इंजिनियर हैं आप तो समझ लेंगे मैने कहा फरमाएं? कहने लगा अगर इन्सान के जिस्म की फ़िज़ियोलोजी (Physiology) को देखा जाये तो इनसान का दिल वह पम्प है जो खुन को ले भी रहा है वह Input भी है और Output भी है। सारे

Scanned by CamScanner

जिस्म में ताज़ा Fresh खून जा रहा होता है और दूसरा वापस आ रहा होता है। उसने कहा जब इन्सान बैठा हुआ होता है या खड़ा हुआ होता है तो जो जिस्म के हिस्से नीचे है उन में परेशर निस्बतन ज़्यादा होता है।

कहने लगा समझने के लिये मसलन तीन मनज़िला इमारत हो और नीचे **Pump** लगा हो तो नीचे तो पानी होगा और दूसरी मनज़िल पर भी कुछ पानी पहुँच जायेगा और तीसरी मनज़िल पर पानी बिलकुल नहीं पहुँचेगा हाँलाकी वही पम्प है जो नीचे मुकम्मल पानी दे रहा है लकिन तीसरी मनज़िल को बिलकुल पानी नही दे रहा,कहने लगा क्येंकि पम्प पानी तो दे रहा है लेकिन उसका हेड **(Head)** इतना नहीं है कि वह पानी को मतलूबा जगह पहुँचा सके।

अगर इसी मिसाल को सामने रखते हुये ये सोचें तो इन्सान का दिल खून पम्प कर रहा है और यह ख़ून नीचे के आज़ा में बिल्कुल पहुँच रहा है, हर जगह पर लेकिन जो ऊपर के आज़ा हैं उनमें इतना नहीं पहुँच रहा होता, जब कोई ऐसी सूरत आती है कि इन्सान का सर नीचे होता है और दिल ऊपर होता है तो ख़ून सर के अन्दर भी Flooded हो कर पहुँचता है।

मसलन जब इन्सान नमाज़ के सजदे में जाता है तो महसूस करता है कि जैसे पूरे चेहरे में गोया ख़ून भर गया है! आदमी सजदा थोड़ा सा लम्बा करे तो महसूस करता है कि चेहरे की बारीक रगों तक मुकम्मल ख़ून पहुँच गया है।

तो डाक्टर कहने लगा आम तौर पर इन्सान या बैठा होता है, या खड़ा होता है या लेटा होता है! बैठे, खड़े और लेटे इन्सान का दिल नीचे ही होता है और सर ऊपर होता है! कहने लगा एक ही ऐसी सूरत है कि नमाज़ में जब इन्सान सजदे में जाता है तो उसका दिल ऊपर होता है ख़ून Flooded हो कर आता है या फिर दूसरी सूरत यह है कि इन्सान उल्टा सर के बल खड़ा हो और यह मुश्किल है।

नमाज़ी आदमी के चेहरे पर ताज़गी रहती है क्योंकि नमाज़ और सजदे की वजह से उसकी तमाम शिरयानों में ख़ून पहुँचता रहता है और जो नमाज़ नहीं पढ़ते उनके चेहरे पर एक अफ़सुर्दगी सी फैली रहती है।

Scanned by CamScanner

नमाज़, मुराक़बा और जदीद साइंस

Namaz, Meditation & Modern Science

नमाज़ एक मुकम्मल और जामे मुराक़बा है।

आज मग़रिब की दुनिया इसको Meditation का नाम दे रही है। Meditation के कलब बने हुए हैं! मर्द, औरतें जाती हैं! मैंने फ़लाडाल्फ़िया की यूनीवर्सिटी आफ़ पेलोविना में लेक्चर दिया! मुझसे लोगों ने सवाल किया कि यह Meditation क्या है? मेंने एक Counter Question किया कि आप क्या जानते हैं? कहने लगे हर जगह महल्ला महल्ला Meditation Centre खुले हुऐ हैं। मर्द, औरतें जाती हैं वह उनको बठा देतें हैं। कभी कहते हैं कि अपनी नाक के सिरे पर तवज्जोह मरकूज़ करो, कभी कहते हैं अपनी नाफ़ पर तवज्जुह मरकूज़ करो, हर चीज़ भूल जाओ Feel Relax वगैरह।

वह लोग घंटा आध घंटा बैठे रहते रहते हैं। पैसे भी देते हैं। टाईम देते है और उनके एहसानमन्द भी होते है कि हमने Relax Feel किया।

अब सोचिये कि वह थक थका कर हमारी राह पर आ रहे हैं इसमें शक नहीं कि अल्लाह ने जो सकून अपनी याद के अन्दर रखा है वह किसी चीज़ में नहीं है।

(ब हवाला मवाइज़ इनज़िनियर साहिब मद्दज़िल्हूलआली)

नमाज़ मजमूअ–ए–अजाइब

Namaz A Collection Of Wonders

युरोप में ऐसे कलब मौजूद हैं जहाँ लोग रक़म देकर ऐसी महफ़िल में बैठते है जिसमें उन्हें हंसाया जाता है और वह हंसते हुयें ग़में ज़िन्दगी वक़्ती तौर पर भूल जाते हैं और फिर वही ज़िन्दगी और फिर वही नया अज़ाब। योरप में ऐसे सेन्टर भी हैं जहाँ लोगों को रुलाया जाता है और लोग रो रो कर अपना ग़मे

Scanned by CamScanner

ज़िन्दगी दूर करते है लेकिन ग़मे ज़िन्दगी कहाँ जाये।

अक्ल की ऐनक से बनज़रे अमीक़ देखें, क्या यह खुशी और ग़म यानी गुनाहों के आँसु, अल्लाह तआला की मुहब्बत और मुलाक़ात के आँसू नमाज़ में मुमकिन हैं। वाक़ई नमाज़ खुशी व ग़म की मिली जुली कैफ़ियत है। ऐसा ग़म जिसके बाद सकून और ख़ुशी ही ख़ुशी महसूस होती है। और उसके बाद ग़म की कोई चीज़ क़रीब नहीं आती।

(बहवाला "वीकली सन" Weekly Sun)

नमाज़ के दौरान सजदे में हाथों को सीधा रखना

Keeping Hands Straight During Prostration

हुक्म यही है कि सजदे में हाथों को बिल्कुल सीधा रखा जाए। दर असल हम तमाम दिन रात अपने हाथों को बिल्कुल अकड़ाकर नहीं रखते बल्कि हमारे हाथ ढीले डाले रहते हैं। अगर मुस्तक़िल ऐसी हालत में हाथ रहें तो एक बीमारी हाथों में हो जाती है। जिसकी अलामत में गिरफ़्त का ढीलापन है, इसमें हाथों की गिरफ़्त (Grip) ढीली और सुस्त पड़ जाती है। हाथों की फ़ितरी हरकात और ताक़त में कमी आ जाती है।

और जब हम सजदे में हाथ सीधे रखते हैं तो ये हाथों, उंगलियों और जोड़ों की ख़ास क़िस्म की वरज़िश है जिससे हाथ मज़कूरा मरज़ से महफ़ूज़ रहते हैंऔर हाथों की फ़ितरी ताक़त और क़ूव्वत बाकी रहती है।

Scanned by CamScanner

ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ से नफ़सियाती अमराज़ का ख़ातमा

End Of Psychological Diseases By Humility

इन्सान दुनिया में फंसता चला जा रहा है और जितना दुनिया में फंसता है उतना ही बेसकून और बैचैन होता है। अब फिर सकून की तलाश में मज़ीद कोशिश करता है मज़ीद दुनिया हासिल करता है लेकिन फिर मज़ीद फंसता है।

मक्खी शहद के मीठे पर आई, बैठी, कुछ खाया लेकिन फिर फंस गयी अब निकलने के लिए कोशिश की तो फंसती चली गयी। आख़िरकार रेशम के कीड़े की तरह मर गई। बिल्कुल इसी तरह इन्सान की कैफ़ियत है लेकिन नमाज़ वाहिद इलाज है सकून का। लेकिन कौन सी नमाज़, मेरी और आपकी, नहीं हर्गिज़ नहीं बल्कि वह नमाज़ जिसके अन्दर ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ हो

ख़ुशूअ अन्दर के सकून, ध्यान और तवज्जुह का नाम है।

ख़ुज़ूअ बाहर की तरतीब और तवज्जुह का नाम है।

और यही दानों चीज़ें मतलूब हैं टैलीपैथी में।

यही दा चीज़ें मतलूब है हिप्नाटिज़्म में।

यही दो चीज़ें मतलूब है योगा में।

माहिरे नफ़सियात इस बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि नमाज़ मुकम्मल सकून है। और इस वक़्त नफ़सियाती मरीज़ों को नमाज़ ध्यान से पढ़ने की तरग़ीब दी जाती है।

एक माहिरे नफ़सियात (Psychologist) कहने लगे कि अगर लोगों को ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ के फ़ाइदे और अच्छाई का इल्म हो जाये तो वह कारोबार छोड़कर ऐसी नमाज़ पढ़े कि उन्हें फिर दुनिया भूल जाये।

कहने लगे मेरे पास एक मरीज़ आया तमाम दवाई इलाज कर चुका। मैंने

Scanned by CamScanner

कहा मेरा सिर्फ़ और सिर्फ़ यही मशवरह है कि नमाज़े तहज्जुद से लेकर नमाज़ अव्वाबीन तक तमाम नफ़ल और फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ें और पढ़ें इस ध्यान और तवज्जुह से जिस तरह दीन कहता है। कुछ अर्से के बाद मरीज़ ने बताया कि वाक़ई मेरे अमराज़ से एक तिहाई हिस्सा ख़त्म हो गया है।

ख़ुदकुशी के रुजहानात में कमी

कम्फ़र्ट सेन्टर ऑफ़ फ़्राँस (Comfort Centre of France) की तहक़ीक़ के मुताबिक़ ख़ुदकशी की तरफ़ माईल मरीज़ों को ऐसा मुराक़बा कराया गया जो न सिर्फ़ नमाज़ से मिलता जुलता है बल्कि इस में मामूल को इधर उधर न देखना, ध्यान और तवज्जुह सिर्फ़ आमिल की तरफ़ रखना वग़ैरह में मशग़ूल कर के मुकम्मल ख़ुशूअ ख़ुज़ूअ की कैफ़ियत पैदा की जाती है तो मरीज़ ख़ुद बख़ुद ख़ुदकशी की तरफ़ से मुतनफ़्फ़िर हो जाते हैं।

वहां डाक्टर एलैग्ज़ेन्डर (Dr. Alexander) का कहना है हमने इसलाम में ख़ुदकशी कम देखी है तहक़ीक़ पर पता चला कि वज़ू और नमाज़ और ख़ास तौर पर ध्यान वाली नमाज़ से यह रुजहान कम और आख़िरकार बिल्कुल ख़त्म हो जाते हैं।

सर विल्लियम करकस की तहक़ीक़

Research Of Sir William Karkas

मशहूर यूरपी माहिरे रुहानियात ने एक किताब Research In The Phenomenon Of spiritualism में लिखता है। हिर्स, तमा, लालच, दरोग़ गोई, बुख़्ल; कीना, हसद, इन्तक़ाम, वह ज़लील अमराज़ है जिनसे इन्सान ऐसे नफसीयाती अमराज़ में मुबतला होता है जहाँ से निकलना उसके बस का रोग नहीं सिर्फ मौत निकालती है लेकिन यही आदमी मुसलमानों की नमाज़ इन्तहाई ख़ुशूअ व ख़ुज़ूअ और ध्यान से पढ़ना शुरु कर दे तो बहुत जल्द इससे नजात हासिल कर सकता है ।

मशहूर मग़रिबी मसतशरिक़ वाईस एंडमिरल ने अपनी किताब Usborne Moor Voice में ध्यान और तवज्जुह को नमाज़ का हिस्सा नही बल्कि सकून का हिस्सा क़रार दिया है बल्कि उसने कहा है अगर रुहानी मक़ाम तक पहुँचना चहते हो तो नमाज़ पढ़ो, नमाज़ पढ़ो नमाज़ पढ़ो!!!

इमाम की तिलावत और जदीद साइंस

Recitation Of Imam & Modern Science

इमाम जब तिलावत करता है और मुक़तदी ध्यान के साथ और तवज्जुह के साथ सुनते है और इस पढ़ने और सुनने के अमल के दरमियान एक ख़ास क़िस्म की लहरें Rays पैदा होती है और ये लहरें दोनों के दरमियान अनवारात मुनतक़िल करती है। अगर इनमें इमाम की बरक़ी कुव्वत (Potential power) तेज़ और ज़्यादा होती है तो वह मुक़तदियों में मुनतक़िल होती है और अगर बरक़ी कुव्वत मुक़तदियों की ज़्यादा क़वी होती है तो इमाम में मुनतक़िल होती है ।

'माहिरे रुहानियात लैड बेटर लिखता है कि "हर लफ़्ज़ एक युनिट है इससे एक तेज़ रोशनी निकती है जो मुसबत (Positive) और मन्फी (Negative) होती है।

क़ुरआन से निकला हुआ लफ़्ज़ मुसबत होता है और मुक़तदियों पर जब ये मुसबत असरात (लहरें) पड़ेंगी तो उनके अन्दर बेशुमार अमराज़ ख़त्म होंगें। (ब हवाला"मन की दुनिया"डाक्टर गुलाम जीलानी बर्क़)

ख़ून के सुर्ख़ ज़र्रात तहक़ीक़ के मुताबिक़ ग़ैर मरई (Invisible) असरात से टूटते रहते है और इस के टूटने के अवामिल बढ़ते जायें तो फिर (Blood Cancer) के असरात बढ़ जाते है और नमाज़ में तिलावत कि लहरें उस मरज़ से बहुत महफ़ूज़ रखती हैं।

इल्ला माशाअल्लाह।

नफ़सियाती अमराज़ (Psychological Diseases) फ़ी ज़माना इन्सान के लिये वबाले जान हैं और उन से बचाव सिर्फ़ और सिर्फ़ यही है कि एसी लहरों को

Scanned by CamScanner

अपने अन्दर मुन्तकि़ल किया जाये।

हत्ताकि डिपरेशन (Depression) बेचैनी (Anxiety) जैसे अमराज़ इस महफ़िले नमाज़ से ख़त्म हो जाते है और अगर ध्यान खुशूअ व खुज़ूअ ज़्यादा हो तो उन अमराज़ का बिलकुल ख़ात्मा हो जाता है वरना आम नमाज़ी के लिये यह मरज़ कम हो जाता है। हत्ता कि खुद कशी के रुजहान ज़ेहनी सतह से कम हो कर धुल जाते है।

नमाज़ में मुनासिब पाँव खोलना

Suitable Space Of Foot Open In Namaz

अगर नमाज़ी जिस तरह शरई हुक्म है पाँव खोलें, ज़्यादा न खोलें, अगर ये पाँव बहुत कम खोलेगें तो जिस्मानी तौर पर नुक़सान होगा तंग पाँव से ज़्यादा खुसयतैन (Testes) पर पड़ता है उन की बैरुनी जिल्द जकड़न का शिकार होती है और अन्दरुनी तौर पर घुटन होती है जिससे उन के अन्दर तौलीद दरहम बरहम हो जाता है।

इस तरह अगर पाँव ज़्यादा खोले जायें और टाँगो को चौड़ा किया जाये तो उस का नुक़सान भी खुसयतैन (Testes) पर पड़ता है। और जिस्म के तवाज़ुन में ख़राबी पैदा होती है और ऐसे आदमी को दिमाग़ के ज़ोफ़ की वजह से लड़खड़ाहट, चाल ढाल की लचक और गै़र मुतवाज़न चाल की शिकायत होने का ख़तरा होता है।

पाँव के जोड़ों पर भी ज़्यादा पाँव खोलने के नुक़सान का असर ज़ाहिर होता है जिस से क़दमो की ऐड़ी और बैरुनी सतह पर दबाव ज़्यादा पड़ता है इसलिये जहाँ पाँव के जोड़ मुतअस्सिर होते है वहां जोड़ों की हैअत बदलने के मरज़ का ख़तरा होता है जिस में ऐढ़ी के जोड़ फिर जाते है।

Scanned by CamScanner

ख़्वातीन की नमाज़ और साइन्सी हक़ाइक़

Women Prayes and Scientific Fruth

औरतों को शरई हुक्म है की वह किहनियों को न फैलायें बल्कि किहनियाँ बदन के साथ लगी रहें ऐसा करने से औरतों के आसाब, पैदा करने वाले ग़ुदुद, सीने के आतसाब और हुस्ने निसवाँ पर बहुत गहरे असरात पड़ते हैं।

यही कैफियत सजदे में रानों को जुदा न करने से है क्योंके औरत शरई हुक्म के मुताबिक़ सजदा करेगी तो वह बेशुमार निसवानी अमराज़ से महफूज़ रहेगी वरना ऐसी पोशीदा निसवानी अमराज़ पैदा होती है जो ज़िन्दगी के लिए वबाले जान बन जाती है।

नमाज़े तरावीह और साइंसी इन्केशाफ़ात

Namaze Taraaweeh & Scientific Discovery

रमज़ानुल मुबारक के अय्याम और मामूलात को अगर ग़ौर से देखा जाये तो ये बात वाज़िह हो जाती है कि इसमें नमाज़े तरावीह को बहुत अहमीयत हासिल है ।

इफ़्तार के वक़्त मुख़्तलिफ़ क़िस्म के खाने सामने होते हैं और यह फितरी हरीस इनसान खाना खाते हुये इस बात का ख़्याल नहीं रखता कि सारा दिन मेदा खाली होता है और अगर उसके अन्दर ज़्यादा खाना एंक ही वक़्त में समो लिया जाये तो उसका मामला क्या होगा लेकिन ये बेख़बर और ग़ाफिल इनसान अपने साथ जुल्म पर जुल्म करता रहता है ।

अल्लाह तआला हबीब भी है और तबीब भी । उसकी तबाबत के अन्दाज़ मुखतलिफ और हर किसी से निराले होते हैं । मेदा के मरीज़ के इनसान का इलाज

Scanned by CamScanner

यही किया है कि उसको नमाज़े इशा के बाद ऐसी वरजिश पर लगा दिया जाता है कि मुसलसल उस में मसरूफ रहे और उठता-बैठता रहे । हत्ता के वह मोज़िर असरात जो कि उसके जिस्म पर मुरत्तब होने थे वह इस वरज़िश यानी तरावीह से काफूर हो जाते हैं और यह अज़सीरेनौ हश्शाश-बश्शाश घर लौटता है। अगर तरावीह की नमाज़ न हो तो सेहरी बिलकुल न खाई जाये और अगर फिर भी खाली जाये तो बेशुमार अमराज़ को दामन में समेट लेगा ।

अगर तरावीह न होती तो ये आदमी खाने के बाद सो जाता जिससे मुनदरजा ज़ैल अमराज पैदा होने के कवी खतरात होते ।

- दिल की घुटन और तंगी
- दिल की धड़कन की ज़्यादती और हाई बलड परेशर
- दिल की धड़कन की कमी और लो बलड परेशर
- मेदे की तिजाबियत
- दिमागी चक्कर और उल्टी की कैफ़ियत
- मसूढ़ों के अमराज और खास तौर पर पाईरीया
- बलगमी रतुबात और दाईमी नज़ला
- बदन की खुश्की और नज़ला
- दस्त और पेचिश या हैज़ा

आप मज़कूरा ख़तरनाक और फ़ौरी असर अमराज की तरफ गौर से देखें तो इहसास होगा कि सिर्फ़ एक सुन्नत अमल तरावीह की वजह से हम मोहलिक अमराज से बच जाते हैं ।

तरावीह एक हल्की-फुल्की वरज़िश है जिसके बाद सकून और आराम की नींद आती है ।

बेख़ाबी के मरीज़ों के लिये तरावीह अकसीरे लाजवाब है ।

बदख़ाबी के मरीजों के लिये तरावीह इलाज भी है और वरज़िश भी है एक फ़ारमासिस्ट कहने लगे : तरावीह से जिनसी अमराज़ ख़त्म होते हैं और आसानी

खिचांव और-दबाव कम होता है रानों और पिंडलीयों के पट्ठे (Muscles) मज़बूत होते हैं मेदे के अमराज़ और दिल के अमराज़ कम होते हैं चूंकि रमज़ानुल मुबारक में शाम के बाद बदन में सुस्ती आ जाती है उसका इलाज सिर्फ़ तरावीह ही है ।

खाना

(Meal)

खाना जिस्म की ज़रुरत है और सभी खाते हैं लेकिन अगर यही खाना हिफ़ज़ाने सेहत के उसूलों के मुताबिक खाया जाये तो सेहत और तन्दुरुस्ती होगी।

लेकिन इससे भी एक और बेहतर बात यह है कि अगर यही खाना अल्लाहतअला का हुक्म और रसूले करीम (स0) का तरीक़ा समझ कर खाया जाये तो सुन्नत और साइंस के मुताबिक हो जायेगा ।

माहिरीने गिज़ा इस बात पर मुत्तफिक़ हैं कि अस्सी फिसद अमराज़ सिर्फ़ और सिर्फ़ खाने की वजह से होते हैं ।

इस वक़्त तमाम यूरेपियन माहिरीन इस बात की तशरीह और रिसर्च (Research) में मसरूफ है कि इनसानी जिस्म को किन–किन खानों की ज़रुरत है इनसान क्या खाये और क्या न खाये ।

बल्कि सिर्फ़ एक खाने की तहक़ीक़ पर माहिरीन डाक्टरीएट (पी. एच. डी) कर रहें हैं । एक माहिर ने "जौ" पर पी. एच. डी. की हुजूरे अकदस (स0) ने जौ की रोटी तनावुल फरमाते थे ये किस हद तक मुफ़ीद है ।

नोट : ज़ेल की रिसर्च खाने के जिम्न में है इस सिलसिले में अहादीस और साइंसी तहक़ीक़ के लिये बन्दा ने मुनदरजा ज़ेल किताबों से इसतेफादा किया है।

(1) उसवए रसूले अकरम	डाक्टर अब्दुल हई साहिब
(2) ज़ादूल मआद	मशहूर किताबे हदीस
(3) मज़ाकूल आरेफीन	इमाम गज़ाली
(4) रहबरे ज़िन्दगी	सय्यद मौहम्मद सईदुल हसन साहिब

Scanned by CamScanner

(5) मामूलाते नबवी — इसलामी कुतूबखाना

(6) मवाएज क़िबला इन्जिनीयर हाफिज़ जुल्फेकार अहमद नक़्श बन्दी मदज़िल्हु आली

(7) इस्तेफादा डा. नूर अहमद साहिब नशतर मेडिकल कॉलिज

(8) फजाएले सदकात — कुतुबखाना फैजी लाहौर

(9) सेहत व ज़िन्दगी — खुश्तर गिरामी देहली, राबेआ बुक डिपो लाहौरं

(10) मेडिकल एन्ड हाईजिन — डा. जार्ज एल. डब्लू

(11) मदारे जुन नबुवत — शैख अब्दुल हक़ मोहददिस देहलवी

(12) इसतेफादा — डा. काज़ी अब्दुल वाहिद साबिह, नश्तर मेडिकल कॉलिज मुलतान

वाशिंगटन के डायरेक्टरज़ और मेरा ज़ाती तजरिबा

Washington's Directors & My Personal Experience

इन्जिनीयर साहिब फ़रमाते हैं ।

"एक दफ़ा वाशिंगटन में मिटिंग थी और उसमें अमरीका के तीन बड़े क्वालिफाइड कंपनी के डायरेक्टरज़ और जिनेरल मैनेजर मौजूद थे । हम ने एक ही मेज़ पर खाना खाया । मैंने देखा हम मेहमान तो हाथों से ही शुरु हो गये थे लेकिन उन्होंने भी हाथों से खाना शुरु कर दिया छूरी काटें (Cut lery) एक तरफ़ धरी रही मुझे बड़ी हैरत हुई ।

मतलब ये कि अहम लोगों (V.I.Ps) की मिटिंग वह भी कुर्सी पर बैठकर हाथों से खाना खा रहे हैं, बूटी तोड़ रहे हैं और बूटी नोच रहें हैं । मैं बहुत हैरान हुआ और पूछा कि आपने ये छूरी काटें इस्तेमाल नहीं किये तो उन्होंने कहा :-

हमें हाथों से खाना खाना पसन्द है दूसरे को देखा वह भी ऐसे ही खा रहा है तीसरे को देखा वो भी इसी तरह खा रहा है, मैं हैरान हुआ। मेरा अपना तो खाना बहुत मुश्किल हो गया । ये आज पहली दफ़ा गोरों को देखा कि ये छूरी काटें छोड़ कर इस तरह उंगलियों से खा रहे हैं । जब हम खाना खा चूके तो हमारे पास पेपर पड़ा हुआ था । मैंने उन्हें हाथ साफ करने के लिये पेपर दिया लेकिन उन्होंने हाथ साफ नहीं किये बल्कि बकायदा उंगलियों को चाटा ।

मैंने सवाल किया **(Where you learnt it)** तो कहने लगे कि ये अमरीकन रिसर्च है कि जब खाना उंगलियों से खाया जाता है तो उंगलियों में जो मसाम है उनमें प्लाज़्मा ख़ास तौर पर ख़ारिज होता है जिसको अगर माइक्रोस्कोप **(Microscope)** के ज़रिये देखा जाये तो वाजिह नजर आता है । कहने लगे अब हम छूरी काटों की बजाये उंगलियों से खाना पसन्द करते हैं ये मेरा ज़ाती वाकिया और तजुर्बा है"

खाने से पहले हाथ धोना

Hand Wash Before Fooding

इनसानी ज़िन्दगी के मामूलात में है ये कभी यहाँ और कभी वहाँ हाथ लगाता है तो चूंकि हाथों पर जरासीम चिपके हुये होते हैं इसलिये हुक्मे शरई है कि हाथों को पानी से धो लो ।

फिर दूसरा हुक्म यह है कि इसको कपड़े वग़ैरह से साफ न करो इसलिये कि इस कपड़े पर लगे हुये जरासीम फिर कहीं हाथों को न लग जायें ।

एक ट्रक ड्राइवर ने खाने के लिये एक होटल के करीब अपना ट्रक खड़ा किया नीचे उतर कर उसने ट्रक के टायर चैक किये और फिर खाना खाया । वाकिया यह हुआ कि ड्राइवर खाना खाते ही मर गया । हालांकि इसी होटल से और लोगों ने भी खाना खाया लेकिन उन्हें कुछ न हुआ । बहुत सोच विचार और खोज के बाद मालूम हुआ कि मरहूम ने टायरों के चेक करने के लिये उन पर हाथ लगाया था। वहाँ एक ज़हरीला सांप कुचला हुआ था और उसकी ताज़ा जहर उस पर लगी हुई थी और वही ज़हर हाथों पर लग गई और हाथ न धोने की वजह से ज़हर खाने में शामिल होकर उसकी मौत का सबब बन गई ।

Scanned by CamScanner

खाने से क़ब्ल और बाद में नमक चखना

Before & After Meals Test Of Salt

खाने से कब्ल नमक इसलिये चखा जाता है क्योंकि नमक के अन्दर खाने की ख्वाहिश को बढ़ाने वाले अज्ज़ा हैं और फिर हम जब हम नमक चखते हैं तो फौरन लुआब पैदा करने वाले गुदूद हाजीमे तआम रतूबत को मोतरश्शेह करना शुरु कर देते हैं जिसकी वजह से खाने में दिल लगता है । खाना लज़ीज लगता है और मूड चमक उठती है और अल्लाह की नैमत की क़द्रदानी होती है ।

खाने के बाद चूंकि ज़बान, गले और खुराक के नाली में खाने, घी और दीगर रौगानियात की तह चिमट जाती है जो सेहत के लिये नुकसान देह होती है इसलिये नमक जाकर उस तह को ख़त्म कर देता है ।

खाने से क़ब्ल कुल्ली करना

Gargling Before Meals

हुक्म है कि खाने से कब्ल कुल्ली भी कि जाये । सारा दिन हवा साँस के जरिये गर्द व गुबार और जरासीम (Gerns) अन्दर जाते रहते हैं अब अगर नवाला निगलेंगे तो इन जरासीम को भी निगल जायेंगे इसलिये कुल्ली ज़रुरी क़रार दिया गया है ताकि मुँह साफ हो जायें (हुक्म से मुराद शरइ मसाइल की तशरीह है मुसन्निफ ने हुक्म से मुराद कुरआन, हदीस और फ़िक्ह तीनों मतालिब लिये हैं। कहीं हुक्म कुरआन का, कहीं हुक्म हदीस का और कहीं हुक्म फिक़्ह का)

दायां हाथ इस्तेमाल करना

To Use Of Right Hand

पहले नमाज़ के बाब में ये बात गुज़र चुकी है कि दायें हाथ से गैर मरई शुआएं (Invisible Rays) निकलती हैं और बायें हाथ से भी लेकिन दायें हाथ की शुआएं

मुसबत (Positive) और बायें हाथ की शुआएं मनफी (Negative) होती हैं। मुसबत में शिफा और मनफी में मरज है ।

दायें हाथ से खाना शिफ़ा को अपने अन्दर डालना है ।

चूंकि बायां हाथ इसतिनजा के लिये इस्तेमाल होता है । इसमें किसी भी वक्त कोई भी जरासीम रह सकता है ।

खाने में फूंक न मारना

Not Blow In Meals

इनसान आक्सीजन (Oxygen) लेता है और कार्बन डाई आक्साइड (Corbon dioxide) ख़ारिज करता है अब इस कार्बन डाई आक्साइड में बेशुमार जरासीम होते हैं जब ये फूंक मारेगा तो इस फूंक के ज़रीये जरासीम खाने में शामिल हो जायेंगे।

मज़ीद ये कि बाज़ औक़ात इजतेमाई खाने में अगर किसी ने फूंक मारी और उसकी फूंक मरज़ के जरासीम हुये तो उस खाने में फैल जायेंगे तो तमाम खानें वालों का नुकसान होगा इसलिये खाने में फूंक मारना मना है ।

मिलकर खाना–जूठा खाना

Jointly Eat

पैथालोजी (Pathology) के एक प्रोफेसर ने इनकेशाफ किया है कि जब मिलकर खाना खाया जाता है तो तमाम खाने वालों के जरासीम खाने में मिल जाते हैं जो दुसरे तमाम अमराज के जरासीमों को ख़त्म कर देते हैं और इस तरह वह खाना बेज़रर बन जाता है और खाने में बाज औकात शिफा के जरासीम मिलकर तमाम खाने को शिफ़ा बना देते हैं जो कि मेदे के अमराज़ के लिये मुफीद है ।

बन्दा को साहिब मिले बहुत अच्छी गुफतगु और आला शख़्सियत के मालिक थे फरमाने लगे कि मैं पहले पागल था और इतना अर्सा पागल खाने में दाख़िल रहा और पागल खाने का दाख़िला फार्म दिखाया मैं बहुत हैरान हुआ और पूछा कि आप फिर तन्दुरुस्त कैसे हुये ? कहने लगे कि जब मेरा इलाज कराकर घर वाले थक गये तो मुझे पागल खाने में दाख़िल करा दिया वहाँ एक दफ़ा बिलकुल होश में बैठा

Scanned by CamScanner

तो एक साहिब ने कहा कि मुसलमान के जूठे में शिफा है तो उस दिन से मैंने लोगों का जूठा सुन्नत समझ कर खाना शुरु कर दिया और सिर्फ़ सात महिने में तन्दुरुस्त हो गया ।

एक और साहिब गुजरान वाला के मिले दिल के पुराने मरीज़ थे कहने लगे जब से मैंने जूठा खाना सुन्नत समझ कर खाना शुरु किया है उस वक़्त से अब तक मुझे दिल की तकलीफ फिर नहीं हुई ।

एक साहिब फ़रमाने लगे मेरा एक दोस्त था उसे सन् 1970 में आख़िरी स्टेज की टी. वी. हो गई वह दवाईयां इस्तेमाल कर–कर के तंग आ गया लेकिन अफ़ाका न हुआ । आख़िर किसी से सुना तो दवाईयां छोड़ कर मुसलमानों का जूठा खाना शुरु कर दिया और सिर्फ़ चार महीने के इलाज में बेहतरीन अफ़ाक़ा हो गया मुझे सन् 1996 में सदाद पूर में मिला बिल्कुल तन्दुरुस्त था ।

खाना खाने के अन्दाज़

(Ways Of Having Meal)

अहादीस में खाना खाने के तीन अन्दाज़ बताये गये हैं

अकड़ों बैठना

इस तरीक़े से बैठ कर खाने से बक़दरे ज़रुरत ही खाना मेदे में जाता है और बेला ज़रुरत खाना मेदे में नहीं जाता और जितना कम खाना मेद में जाये उतना ही अमराज़ कम पैदा होंगे ।

एक ज़ानू बैठना

इस तरीक़ा से खाना मामूल से कुछ ज़्यादा मेदे में जायेगा और उस अन्दाज़ से बैठकर खाना खाने वाला तल्ली (Spleen) के अमराज़ से महफूज़ रहेगा और उस की रानों के असाब मज़बूत रहेंगे ।

दो ज़ानू बैठना

इस तरीक़े से खाना कुछ ज़्यादा खाया जायेगा यह तरीक़ा सिर्फ़ उन लोगों के

लिये है जो सख़्त मेहनत करते हैं। ज़्यादा पैदल चलते हैं और वरज़िशी मिज़ाज हैं। कुरसियौंर गाड़ियों पर बैठने वाले लोग अगर उस तरीक़ा से खाना खायेंगे तो जल्द ही अमराज़ का सामना करेंगे।

और पहले तरीक़ा से खायेंगे तो कभी भी इन्शाअल्लाह मरज़ का मुँह नहीं देखेंगे।

कोरया–खाना और सय्याह

Korea-Meals & Travellers

मैंने कोरया के सफर में वहाँ के बाज़ लोगों को अकड़ूँ, एक ज़ानूँ और दो ज़ानूँ बैठकर खाना खाते देखा और यहाँ तक कि अगर कुर्सी पर बैठकर खाना खा रहे हैं तो भी उसी अन्दाज़ से कुर्सी पर बैठे हुये हैं।

हैरत हुई मैंने पूछा कि आप ने यह तरीक़ा कैसे अपनाया है कहने लगे रिसर्च हुई है कि इस वक़्त मोटापा जान लेवा मरज़ है और उसकी तबाह कारयों से बचने के लिये सिर्फ यही तरीक़ा हैं क्योंकि अब तमाम दवाएं नाकाम हो गई हैं बल्कि दवाओं से मज़ीद अमराज़ फैलते हैं।

जदीद रिसर्च ने हमें यह अन्दाज़ सिखायें हैं। अब इस तरीक़े पर किताबें लिख कर हम पूरी दुनिया में तक़सीम करेंगे।

जब मैंने उन्हें यह बताया कि यह अन्दाज़ और तरीक़ा तो इसलाम ने सदयों पहले अपने पैरु कारों यानी मुसलमानों को बताया है तो वह हैरान हुये और कहा तो फिर आपने हमें क्यों नहीं बताया ?

(चश्मदीद सफ़हा 106)

खाने को चबा कर खाना

उलमा ने अहादीस के हवाले से खाने को चबा–चबा कर खाने की ताकीद की है।

जदीद तहक़ीक़ **(Modern Research)** के मुताबिक डिन्टल सर्जन **(Dental Surgeon)** इस बात की तसदीक़ करते हैं कि जो आदमी खाना कम चबाता है उस के दांत जल्दी खराब हो जाते हैं और अगर एक तरफ़ से खाना चबाया जाये तो

Scanned by CamScanner

दुसरी तरफ के दांत खराब हो जायेंगे ।

लिहाज़ा दोनो तरफ से खाना चबाया जाये और खूब चबा कर खाया जाये। अगर खाना बगैर चबाये मेदे में डालेंगे तो उसका नुकसान मेदे पर पड़ेगा । वरमे मेदा (Stomach Inflammation) और तबखीरे मेदा (Stomach Acidity) जैसी अमराज़ पैदा हो जाती हैं ।

अलगरज़ अगर हम अपने निज़ामे इनहेज़ाम (Digestive System) को दुरुस्त रखना चाहते हैं तो आक़ा हुज़ूरे अक़दस (स0) की इस चबाने वाली सुन्नत को जिन्दा करें ।

प्लेट का साफ़ करना

To Plate Washing

जब खाना खा लिया तो फिर जिस बरतन में खाना खाया उस बरतन को साफ करना चाहिये । सहाबा कराम (रज़ि0) फरमाते हैं कि हुज़ूरे अकदस (स0) की प्लेट पहचानी जाती थी कि वह सबसे ज़्यादा साफ होती । और तरीक़ा यही है कि प्लेट को उंगलियों से साफ़ कर लिया जाये ।

जदीद साइंस (Modern Science) कहती है है कि जब खाने के प्लेट या बरतन के पैंदी में विटामिन्ज़ (Vitamins) और खास तौर पर खाने के पैन्दे में मौजूद विटामिन बी कम्पलैक्स (Vitamin-B Complex) और ऐसे गिज़ाई अजज़ा होते हैं जो तमाम खाने में कम और उस पैंदे में ज़्यादा होते हैं । अगज़यह में मौजूद मादनी नमकियात (Mineral Salts) तो सिर्फ़ पैंदे ही में होते हैं ।

खाना टेक लगाकर नहीं खाना चाहिये

यह शरई हुक्म है ।

अगर खाना टेक लगाकर खाया जाये तो उस के तीन नुक़सान हैं ।

Scanned by CamScanner

(1) खाना सही तौर पर चबाया नहीं जायेगा और उस में लुआब जिस मिक़दार में मिलना था और फिर मेदे में जाकर निशास्तादार अग़ज़ायह (Corbohydrtes) को हज़्म करना था वह नहीं मिल सकेगा जिस से निज़ामे इनहिज़ाम (Digestive System) मुतअस्सिर होगा ।

(2) टेक लगाकर बैठने से मेदा फैल जाता है जिस से ग़ैर ज़रुरी खुराक मेदे में चली जायेगी और नेज़ामे इनहिज़ाम मुतअस्सिर होगा ।

(3) टेक लगाकर खाने से आतों और जिगर (Liver) के निज़ाम पर बुरा असर पड़ता है और यह बात तजरिबा से वाज़िह है ।

खाने में उंगलियों की इहतेयात

Fingers Precaution In Meals

फरमाया कि खाने में उंगलियों में इहतेयात ज़रुरी है कि जब खाने में उंगलियां डाले तो जड़ों समेत यानी तमाम उंगलियां खाने में न डूबो दें (उसवए रसूले अकरम (स0) ।

दरअसल खाने के बाद उंगलियां चाटने ज़रुरी हैं अगर खाने के बाद उंगलियां न चाटी गई तो मतलूबा फवायह से महरुमी होगी और फिर जड़ों तक उंगलियां चाटी नहीं जा सकतीं ।

मज़ीद यह कि बाज़ औक़ात उंगलियों की जड़ों के दरमयान (दो उंगलियों के मिलने के दरमयान) जरासीम अटके रह जाते हैं अब अगर उसने तमाम उंगलियां खाने में डूपो दें तो जरासीम उस में शामिल हो जायेंगे और उंगलियों के उन हिस्सों को अगर चाटा गया तो मज़ीद जरासीम अन्दर दाख़िल होंगे ।

Scanned by CamScanner

हारुन रशीद (रह0) का वाक़िया

Eventh Of Haroon Rasheed

हारुन रशीद (रह0) ने एक मरतबा चार माहिर हकीमों को जमा किया एक हिन्दी हकीम, दुसरा रोमी (अंग्रेज़), तीसरा इराक़ी और चौथा सवादी (सवाद का करने वाला) और उन चारों से दरयाफ़्त किया कोई ऐसी दवा बताओ जो किसी चीज़ का नुकसान न करती हो ।

हिन्दी ने कहा मेरे ख्याल में ऐसी दवा जो किसी चीज़ का नुकसान न करती हो वह हलीला सयाह (काली हड़हड़) है ।

इराकी ने कहा मेरे ख्याल में ऐसी दवा जो किसी चीज़ का नुकसान न करती हो वह हब्बुर रीशाद (हालीया या हालून) है ।

रुमी हकीम ने कहा कि मेरे ख़्याल में ऐसी दवा जो किसी चीज़ का नुकसान न करती हो वह गरम पानी है ।

जब सवादी हकीम की बारी आई तो उसने कहा :–

यह सब ग़लत है हलीला मेदा को रुंदता है और हब्बुर रेशाद मेदा में फिसलन पैदा करता है और गरम पानी मेदा को ढ़िला करता है ।

फिर इन सब हकीमों ने कहा तुम बताओ ऐसी कौन सी दवा है जो किसी चीज़ का नुकसान नहीं करती तो सवादी ने कहा कि :–

खाना उस वक़्त तक खाया न जाये जब तक खूब रग़बत न हो और ऐसी हालत में ख़त्म किया जाये कि ज़्यादा की रग़बत बाक़ी हो ।

इस बात पर तमाम हकीमों ने इत्तेफाक किया ।

Scanned by CamScanner

खाने की इहतियात और जदीद साइंस

Precaution Of Dieting & Modern Science

जदीद साइंस

Modern Science

जदीद साइंस (Modern Science) इस वक़्त बार–बार इस बात पर ज़ोर दे रही है कि कम खायें (Dieting) ज़्यादा देर ज़िन्दा रहेंगे और बार–बार लोगों को उसके फायदे बताये जाते हैं । ज़्यादा खाने से जो अमराज़ फैलते हैं उन अमराज़ की लिस्ट प्रोफेसर रिचर बार्ड (डियूज़ बरी इंगलैन्ड) ने तरतीब दी है ।

1. दिमाग़ी अमराज़ (Brain Diseases)
2. आखों के अमराज़ (Eyes Diseases)
3. ज़बान और गले के अमराज़ (E.N.T Diseases)
4. सीने और फेफड़ों के अमराज़ (Chest and Lungs Diseases)
5. दिल और वालूज़ के अमराज़ (Heart and Volves Diseases)
6. जिगर और पित्ते के अमराज़ (Liver and GallBladder Diseases)
7. शुगर (Diabetese)
8. हाई बलड परेशर (High Blood Pressure)
9. दिमाग़ी रग का फटना (Destruction Of Brain Veins)
10. फालिज और लक़वा
11. नफ़सियाती अमराज़ (Pschycological Diseases)
12. डिप्रेशन (Depression)
13. निचले हिस्सये जिस्म का सुन होना

(ब–हवाला "सन" वीकली संवेडन)

Scanned by CamScanner

अगर इस बात पर ग़ौर से देखा जाये तो उन अमराज़ की लिस्ट मेरे ख्याल में मौत की लिस्ट है जो कि प्रोफेसर ने बहुत ही रिसर्च और तहकीक़ के बाद अख़्ज़ की है ।

लेकिन दुसरी तरफ हुज़ूरे करीम (स0) का बयान मुलाहिज़ा हो ।

पेट के तीन हिस्से और जदीद साइंस

Three Parts Of Abdomen & Modern Science

हुज़ूरे अकरम (स0) का इरशाद है कि तिहाई पेट खाने के लिये, तेहाई पानी के लिये और तिहाई सांस के लिये (मज़ाकुल आरेफीन)

एक फलसफी के सामने जब ये फरमान सुनाया गया तो कहने लगा कि मैंने इससे बेहतर और मज़बूत बात आज तक नहीं सुनी ।

यह है मेरे हुज़ूर (स0) का फ़रमान और दूसरी तरफ़ जदीद साइंस की तमाम काविश और कोशिशें ।

और हुज़ूर का फरमान सिर्फ़ पेट को तीन हिस्से करने के बाद ख़त्म और उसके मतलूबा फायदे फौरी हासिल, जब कि साइंस अब रिसर्च कर रही है।

डा. बेलन केयूर ऑफ इटली और खड़े होकर खाना

मशहूरे आम डा. माहिरे अग़ज़िया है– उसकी तहरीक हर वक़्त यही है कि कम से कम गि़ज़ा खाओ ।

उसका कहना है कि खड़े होकर गिज़ा न खाओ ऐसा करने से तुम दिल और तिल्ली (Spleen) के मरज़ में फंसते जाओगे ।

उसका कहना है कि बैठ कर खाओ और कम खाओ क्योंकि खड़ा होना

नफ़सियाती अमराज़ पैदा करता है और एक मरज़ ऐसी पैदा होती है जिससे आदमी को अपने की पहचान ख़त्म हो जाती है ।

इसलाम ने पहले ही अपने पैरों कारों को खड़ा होकर खाने से मना फरमाया और साइंस अब मना कर रही है– फ़र्क़ साफ़ ज़ाहिर है ।

इमाम गज़ाली का क़ौल और सलमिंग सैन्टर

Words Of Imam Ghazali & Salming Certre

इमाम गज़ाली फरमाते हैं कि कम खाने की आदत आहिस्ता–आहिस्ता पैदा करनी चाहिये । जो शख़्स ज़्यादा खाने का आदी हो वह दफ़अतन कम करेगा तो उससे तहम्मुल न होगा । ज़ोफ भी होगा और मुशक़्क़त भी बढ़ जायेगी । (अहयाउल उलूम)

आज से दस साल क़ब्ल यूरप में मोटापे का इलाज खास केमिकल से शुरु हुआ फिर ये बात सामने आई कि केमिकल से गुर्दे (Kidneys) खराब और मुतअस्सिर होते हैं । माहिरीन ने तजरिबात और तहक़ीक़ के बाद गिज़ाई इलाज तजवीज़ किया और उसके मरीज़ को कुछ दवा, वरज़िश और खास तौर पर गिज़ा पर कंट्रोल कराया गया ।

इस गिज़ाई शिडउल पर काबू पाने के लिये एक शिडउल तरतीब दिया जिसका मरक़जी नुकता गिज़ा है । जब तक ग़िज़ाई इहतयात नहीं बरती जायेगी उस वक़्त तक मोटापे का इलाज मुमकिन नहीं ।

मैदा, घी और मिठा इन तीन चीज़ों से परहेज़ बताया गया और गिज़ा कम खाने की हिदायत की गई ।

गिज़ाई सिडउल में अहम हिदायत यह की गई कि गिज़ा आहिस्ता–आहिस्ता कम करें अगर फौरी गिज़ा कम हुई तो जिस्म बे काबू और कमज़ोर और अमराज़ के कबूल करने के लिये मुसतइद हो जायेगा ।

इस सिडउल में हर गिज़ाई वज़्न में हफ़्ता के बाद कमी दिखाई गई है ।

(ब–हवाला "सेहत व ज़िन्दगी" Health and Life)

Scanned by CamScanner

हज़रत हसन बसरी (रह०) का क़ौल और माहिरीने नफ़सियात

Words Of Hazrat Hasan Basri & Phychologist

हज़रत बसरी फरमाते हैं कि मुसलमान की मिसाल बकरी के बच्चा की सी है जिसे एक मुटठी पुरानी खजूर, एक मुटठी सत्तू, और एक घोट पानी काफ़ी है

(ब–हवाला सदक़ात)

ये नमूना है इसलामी तालिमात का जिस पर अमल करके मुसलमान कामयाब व कामरान हुये ।

जब कि जदीद साइंस और नफ़सीयात उसकी तरवीज के लिये तबलीग़ी प्रोगाम बना रही है ।

इसाई मिशनरी और ग़िज़ाई तबलीग़

Christian Missionary & Dietery Preaching

इसाई मिशनरी ने डाक्टरो का इन्तेखाब करके इस बात की तबलीग़ को आम किया है कि कम खाओ, खुद खाओ और दूसरों को खिलाओ ।

एहतयात से खाओ और जीने के लिये खाओ ।

मईशत का ख़्याल रखकर खाओ–मआशरे को जीने दो ।

खुद खाओ–दूसरों को खिलाओ ।

मआशरती आदमी बनो–खुद सेहतमन्द रहो दूसरों की सेहत की ख़्याल रखो।

(ब–हवाला सेहत व ज़िन्दगी)

Scanned by CamScanner

यह सब कुछ आज के डाक्टर कह रहे हैं क्या यही सब इसलामी तालीमात नहीं? गौर करें शायद समझ आजाये।

फ़ाक़ा और जदीद साइंस

Fasting & Modern Science

फ़ाक़ा इलाज है– अपने मरीजों का फ़ाक़े के जरीये इलाज करो । ये अलफाज़ उलमा–ए हदीस ने अक्सर बयान किये हैं । सहाब–ए कराम भूखे होते थे खुद हुज़ूरे अक़दस (स0) भूखे रहे । लेकिन जहाँ तक अमराज़ की ज़्यादती का मसला है उससे सहाब–ए कराम और खुद हुज़ूरे अकदस (स0) बहुत कम दो चार हुये हैं ।

आज पूरखुरी ही तमाम अमराज़ का सबब है और अगर फ़ाक़ा किया जाये तो उसके फायदे वाज़िह होते हैं ।

यूरोशलम के डा. यूफ ग़ौन मशहूर माहिर यहूदी है जो मुबल्लिग़ भी है और मुआलिज भी वह इलाज फाक़ा से करता है ।

शुगर, **(Dibetese)** दिल के अमराज़ **(Heart Diseases)** मेदे के अमराज़ **(Stomach Diseases)** दिमाग़ी अमराज़ **(Mental Diseases)** इन जैसे अमराज़ का तअल्लुक़ ग़िज़ाई बदपरहेजी से है । जदीद साइंस अब फ़ाक़े कि तरफ़ मायल हुई है जबकि हुज़ूरे अकरम (स0) की ज़िन्दगी सहाब–ए कराम, अहले बैत और औलिया–ए अज़ाम की ज़िन्दगी फ़ाक़े से लबरेज़ है लेकिन दूसरी तरफ़ उनका जिहाद, इल्मी कारनामे, तबलीग़ी मसाई देखी जायें तो अक़्ल दंग रह जाती है। दरअस्ल जिस चीज़ को आज हमने आर समझी हमारे असलाफ़ ने उसको अपना कर दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़त औ मक़ाम हासिल किया । अफ़सोस आज इसी चीज़ को काफ़िर अपना कर नफ़ा ले रहा है लेकिन मुसलमान महरूम है। यानी

मुनकिरीने कुरआन व इसलाम दीन के फायदे लें रहे हैं और हामिलीने कुरआन इससे महरूम है ।

Scanned by CamScanner

फ़ाक़ा–करामात और जदीद साइंस

Fasting, Miracle & Modern Science

अब्दुल वाहिद बिन ज़ैद कसम खा कर फरमाते हैं अल्लाहतआला किसी शख़्स की सफाई बग़ैर भूखा रहने के नहीं करते और उसकी वजह से बुजुर्ग पानी पर चला करते हैं । इसकी वजह से उनको तय्युल अर्ज़ हासिल होता है।

(अहयाउल उलूम इमाम ग़ज़ाली)

तय्युल अर्ज़, बुजुर्गों की एक खास रफ़्तार का नाम है जिसकी वजह से चन्द कदम में हज़ारों मिल तै कर लेते हैं ।

औलिया–ए कराम खाने को छोड़कर मकाम हासिल करते थे बल्कि उसको यूँ कहें कि वह रिज़्क़ को छोड़कर रज़्ज़ाक की तलाश में रहते थे और इन फाकों से उन्हें क्या मकाम मिला ऐसे वाकियात कि जिनको आज की दुनिया के लोग मानने से इन्कार कर रहें हैं ।

मुजाहिदात (Sacrifices) और नफस की मुखालिफ़त मकामे मुकर्रबीन तक पहुँचने की सीढ़ी है और मुजाहिदात में सबसे पहला मुजाहिदा तरके लज़्ज़त है। इसलिये औलिया–ए कराम ने तंगदस्ति वाली ज़िन्दगी कुबूल फ़रमाई । यह सुन्नत है हुज़ूरे अकदस (स0) की ।

तस्वीर के दुसरे रूख को देखें तो यही फ़ाक़ा कशी अगर गांधी जी करे तो हिन्दु उसकी पूजा करने लगे ।

रीशी के फ़ाक़ों से टुटा न तिलिस्मे बरहमन (इक़बाल)

यही फ़ाके अगर हुज़ूर करें तो अल्लाहतआला की मदद ख़न्दक और बदर में पहुँचे । यही फाके अगर सहाबा करें तो पुरी दुनिया में ग़ालिब आ जाये ।

अब सवाल ये पैदा होता है कि क्या ये मसला तय्युल अर्ज दुरुस्त है या मुग़ालिता–फ़ाक़ों और मुजाहिदात से काफ़िर ने क्या लिया ? कुछ ऐसे वाक़ियात

लिखता हूँ जो अंग्रेज़ इसाई ने लिखे हैं इससे अन्दाजा हो सकता है कि तरके लज़्ज़ात और फ़ाके इन्सान को कहाँ से कहाँ पहुँचा सकते हैं । और हुज़ूरे अकदस (स0) का हुक्म लारैब और सच्चा है जिनको मानने वाले कामयाब और कामगार है लेकिन इन फ़ाक़ों से मकसूद महज़ रिज़ाये इलाही है ।

इस ज़िम्न में जो वाक़ियात लिखे जा रहे हैं उनका तअल्लुक ख़ालिस रूहानीयात से हैं और हवाले के लिये– मन की दुनिया, मुसन्निफ़ डा. गुलाम जीलानी बर्क ।

लैड बेटर अपनी किताब **(Invisiale Helpers)** में दास्ताने लिखता है सन् 1957 में इंग्लैड के एक अखबार में एक सवाल शाया हुआ ।

"क्या कोई ऐसा शख़्स मौजूद है जिसने जिस्मे लतीफ़ में सफ़र या परवाज़ की हो दो ख्वातीन ने जवाबन लिखा कि उन्हें यह ताक़त हासिल है उनके नाम ये हैं :–

(1) मीसेज़ बी. ई. बकीज़

(2) मीसेज़ ए. वसीम

ये सवाल व जवाब पाकिस्तान टाईम्स की अशाअत बारह अक्तूबर 1957 ई0 में भी शाया हुई डा. निगटन ने अपनी मशहूर किताब

The projection of the Astal Body

में बेशुमार ऐसे लोगों का ज़िक्र किया जो जिस्मे लतीफ़ में सफ़र किया करते थे।

डा. एलेगज़िन्डर कानन के तजरिबात

Experience Of Dr. Alexendra Canan

डा. कार्टन पी–एच–डी लन्दन का शोहर–ए आफाक तबीब और स्कॉलर है रूहानियात से गहरा शगफ़ था । उन्होंने हिन्दुस्तान और तिब्बत का दौरा किया अपने मुशाहिदात एक **(The Invisible Influence)** में कलम बन्द किये । ये किताब बहुत

पहले शाया हुई । इस किताब के कुछ वाक़ियात दर्ज हैं ।

एक मरतबा एक कर्नल मुझसे मिलने आया इन्हीं मसाइल पर बहस हो रही थी तो मैंने कर्नल को दिमाग़ी लहरों के असर से ग़ाफ़िल कर दिया और कागज कलम उसके हाथ में थमाकर हुक्म दिया कि फलां सियासतदां जो कुछ कर रहा है लिखो वह तीन घंटे लिखता रहा और बाद में इस तहरीर को मैंने उसी सियासतदां को दिखाया उसने ताईद की ।

अभी हम तिब्बत से सौ मील दूर थे कि हमारे यहाँ एक अजनबी वारिद हुआ गेरुवे रंग के लम्बे कुर्ते में मलबूस । कहने लगा दलाई लामा ने पेशवाई के लिये भेजा है हम सब हैरान कि इसको हमारी ख़बर किस तरह पहुँची और ये इतनी दूर से यहाँ कैसे पहुँच गया ?

उसके बाद लामा कहने लगा इनसान अल्लाह की मर्ज़ी के साचे में ढल जाये और उससे मुहकम रवाबिता कायम कर दे तो उसका इरादा अल्लाह का इरादा बन जाता है जो कज़ा की तरह मुअस्सर है ।

"दो वाक़ियात सिर्फ़ बतौरे नमूना है– ऐसे बेशुमार वाक़ियात लामाई किताबों में भरे हुये हैं । आज दुनिया सकून की तलाश में है ये सकून बाहर नहीं अन्दर (इमान की ताक़त आमाल की कुव्वत) से मिलेगा । क़ारिईन शायद मेरी बातों को मुबालिग़ा समझे क्योंकि एक छोटे दिमाग़ का आदमी ज़िद्दी होता है ये फख़्र एक बड़े दिमाग़ को हासिल है । कहीं रहबर बनता है और कहीं रहबरी क़बूल करता है ।

इसके लिये मज़ीद किताबे मुनदरजा ज़ेल हैं

1. **Astral Plane ------------------- Lead Beater**

2. **Man and His Bodies -------------- Annie Besant**

3. **Little Journeys in to the Invisible by Gifford Shin**

इसलामी तालीमात और सोशललिज़म

(Islamic Education & Socialism)

हज़रत सलमान फ़ारसी (रह0) से किसीने अर्ज़ किया कि ज़मीन के ख़ज़ाने तो आपके कबजे में है फिर भी आप भूखे रहते हैं फरमाया कि मुझे यह डर है कि खुद पेट भर लेने से कहीं भूखों को न भूल जाऊँ । और भूखे प्यासे रहने से क़यामत के दिन की भूख और प्यास की याद भी ताज़ा होती है । अल्लाहतआला के अज़ाब का ख़ौफ़ भी पैदा होता है ।

इसलाम इन्साफ़ और अमल का दीन है गरीबों के साथ हमदर्दी और लावारिसों की सरपरस्ती इसलाम का शैवा और पहचान है ।

इस्टालिन और बरलीन नज़रीयात शोसललिज़म और कमयूनिज़म कहलाते हैं। रोटी, कपड़ा और मकान इसी नारे का हिस्सा है ।

मज़कूरा माहिरे मआशयात ने आसूदगी के लिये जो मेहनत की है इसलाम ने सिर्फ़ इन अलफ़ाज़ में इसकी तशरीह कर दी है कि :–

अपने घर के धूएं से पड़ौसी को तकलीफ़ न दो (यानी खाना पकाते वक़्त इस की खुश्बू पड़ोस तक पहुँचेगी और उसकी कुदरत न होने पर परेशान और नेअमत न मिलने पर ग़मज़दा होंगे)

अपने बच्चे को कोई ऐसी चीज़ न दो जिसे लेकर बाहर जाये और पड़ोसी का बच्चा उसको देखकर ग़मज़दा हो ।

क्या इसलाम में इन्साफ़ नहीं ? मईशत और मआशिरत का सकून नहीं? इसलाम ग़रीब का दीन है और अमीर का भी ।

ज़्यादा खाना और इसलाम में पहली बिदअत

हज़रत आइशा (रज़ि0) फ़रमाती हैं कि सब से पहली बिदअत जो हुज़ूर (स0) के बाद पैदा हुई वह पेट भरकर खाने की है । (फज़ाइले सदक़ात)

वाक़ई सहाब–ए–अकराम (रज़ि0), औलिया–ए–कराम (रह0) के अदवार में उनको पेट भरकर खाना मिलता ही नहीं ।

जब खाना पेट भर कर खायेंगे तो अमराज़ व अल्ल भी खाने के बक़दर पैदा होंगी ।

प्रोफेसर बराउन और इसलामी दुनिया

Prof. Browne & Islamic World

प्रोफेसर बराउन ने अपनी किताब (Lectures of Prof. Browne) में लिखा है कि हारिस बिन कल्दह असस़क़फ़ी एक हकीम हुज़ूर (स0) के ज़माने में आया लेकिन उस के पास कोई मरीज़ न अया । हुज़ूर (स0) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ । आप से शिकायत की । फरमाया कि यह उस वक़्त खाना खाते हैं जब तेज़ भूख लगती है और अभी भूख बाक़ी होती है तो खाना छोड़ देते हैं ।

क्या हम ने ज़्यादा खाना बिदअत समझा जबकि जदीद साइंस तो हर इनसान को शिडउल दे रहीं है हत्ता कि पूछा जाता है कि आप कुर्सी पर बैठे हैं या फैक्ट्री में खड़े होकर काम करते हैं ।

तो कुर्सी वाले का खाना मुख़तलिफ़ और फैक्ट्री मुलाज़िम का खाना मुख़तलिफ़। ज़्यादा खाना बिदअत और फिर उस बिदअत से बेशुमार बिदआत फैलती हैं।

"जौ" और जदीद साइंस

Barley and Modern science

अहदे रिसालत (स0) में आम तौर पर "जौ" की रोटी खाई जाती थी और उस रोटी की ताक़त व कुवत से सहाबा कराम (रज़ि0) ने पूरे आलम में दीन के डंके बजाये। अल्लामा इक़बाल ने उसी "जौ" (शईर) के बारे में यह शेर कहा था –

है जहाँ में नाने शईर पर मदार कुवते हैदरी

"जौ" की किमयावी सारव्त

Albrminoids ---------------- 11.5

Starch------------- 70

Fat--------------- 1.3

Fibir--------------2.6

Ash----------------2.1

Water------------12.5

मज़ीद इस में चिकनाई तेल की मुरक्कब सुरत लहमियात (Gluten) की शकल में है।

जदीद तहक़ीक़ात

Modern Research

जदीद तहक़ीक़ात के मुताबिक़ यह मक़वी गिज़ा है। मक़ामी तौर पर क़ाबिज़ और पेचिश को ख़त्म करके तसकीन देती है अगर दुध में पका कर दें तो आला दर्जा का मक़वी है।

दिल के मरीज़ों को अमरीकन हस्पताल में सिर्फ़ जौ की खुराक दी जाती है। और (बेयर बारले) के नाम से डिब्बे बन्द खुराक आम तौर पर मिल जाती है।

बच्चों के अमराज़ (Children Diseases) जिन में बच्चों का जिगर (Liver) फेल

Scanned by CamScanner

हो जाता है उस के लिये "जौ" मुफीद है ।

यूनान में ओलम्पिक खेल जब शुरु होती थीं तो खिलाड़ियों में तवानाई पैदा करने के लिये जौ खास खुराक तजवीज़ की गई उन में "जौ" की रोटी ज़्यादा अहम थी।

जदीद मुशाहिदात के मुताबिक और अहादिस में "जौ" के फवायद मेदा और आतों के अलसर के मरीज़ों को सुबह के नाशते में हुज़ूर (स0) के अज़ीम नुसखा तलबीना (जौ कूट कर उसे दुध में पकाने के बाद उसमें शदह का मिठा शामिल किया जाता है उसे जौ का दलिया या तलबीना कहते हैं) दिया गया । अलसर का हर मरीज़ दो से तीन माह में तन्दरुस्त हो गया । एक खातुन को अलामात के खत्म होने पर यक़ीन न आया तो वह मुज़ीद मआइनों के लिये अमरिका गई। वहाँ पर उन्हें बताया गया कि मेदा और आतें मुकम्मल तौर पर ठिक हो चुके हैं जबकि इलाज के ज़रीये यह मरज़ दो साल से कम अर्सा में नहीं जाता ।

पेशाब में खून और पीप के मरीज़ों में वजह जो भी हो मुनासिब इलाज के साथ जौ का पानी अगर शहद में डाल कर पिलाया जाये तो यह तकलीफ़ पन्दह रोज में खत्म हो जाती है । बाज औक़ात यही तरीक़ा पत्थरी निकालने के बाअस भी हुआ।

पुरानी क़ब्ज़ के लिये जौ के दलये से बिहतर और महफूज कोई दवाई नहीं देखी।

हज़रत आइशा (रज़ि0) से रिवायत है फरमाती हैं जो शख्स नबी (स0) से भूक की कमी की शिकायत करता तो आप (स0) उसे तलबीना खाने का हुक्म फरमाते और आप (रा0) फरमाते थे कि खुदा की क़सम जिस के क़बज़े में मेरी जान है यह तुम्हारे पेटों से गलाज़त इस तरह उतार देता है जिस तरह कि तुम में से कोई अपने चेहरे को पानी से धोकर साफ़ कर लेता है ।

(ब–हवाला तिब्बे नबवी और जदीद साइंस जिल्द अव्वल)

Scanned by CamScanner

खाने के दरमियान खुशी की बातें

Melodiousness Between Meals

इसलामी अहकामात के मुताबिक खाने के दरमयान अफसुरदगी और नागवारी की बातें नहीं करनी चाहिये । जदीद साइंस इस ज़िम्न में क्या कहती है अब उसकी ज़बानी सुनिये :–

मशहूर यूरिपयन डा. किफन ऐकसेरे के माहिर हैं । वह अपने तजरिबे में लिखते हैं कि एक्स–रे के ज़रीये मैंने मेदे, जिगर और आतों की मुख़्तलिफ़ हालतों का मुआइना किया मेरा मुशाहिदा है कि

"रन्ज और गुस्से की हालत में हाजमें के जुम्ले आज़ाअ पर कुछ ऐसा आसावी असर पड़ता है कि बेहिस हो जाते हैं" ।

और खुशी, मुसर्रत व शादमानी का असर ऐसा पड़ता है कि मेदे के अज़लात और आसाब मुसलसल ताक़तवर होते हैं ।

जदीद साइंसी तहक़ीक़ के मुताबिक़ वह लोग जो खाना खाते हुये अफ़सुरदह रहते हैं या अफसुरदगी की बातें और ग़म व गुस्से की हालत से दो चार रहते हैं ऐसे अफराद बहुत जल्द मेदे के अल्सर **(Stomach Ulcer)** और आतों की दिक़ **(T.B of Intestines)** में मुबतला हो जाते हैं ।

यह एक तिब्बी उसूल है कि खाना उस वक़्त खाया जाये जब ज़िहनी और जिसमानी दोनों हैसीयतों से बदन में सुकून हो ।

जालिनुस का कौल है ।

खुशी गिज़ा को हजम और जुज़वे बदन बनने में मदद देती है और रंज व ग़म खाने को जुज़वे बदन नहीं बनने देते ।

Scanned by CamScanner

खाने के बाद हाथों का मुँह पर मलना

खाने की चिकनाई हाथों, बाज़ुओं और क़दमों से साफ़ कर लें । (इबन माजा, ैवू रसूले अकरम (स0) ज़ादुलमआद)।

खाने के बाद खाने की चिकनाई का हाथें, चेरे वग़ैरह पर मलना मुख़तलिफ़ अलफाज में कुतबे अहादीस में यह आया है ।

चूंकि हाथों में खाने के वक़्त एक खास रतुबत उंगलियों से निकलती है जो कि जिस्म के लिये बहुत मुफ़ीद है इसलिये इसका जिस्म के ज़ाहिर हिस्सों पर मलना अमराज़े जिल्द (Skin Diseases) के लिये बहुत मुफ़ीद है ।

जिल्द के अन्दर रोग़नी गदूद (Sebeceous Glands) होते हैं जिन से एक रतूबत निकलती हे जिस का नाम सिबम (Sebom) है वह वज़ू करने से, ज़्यादा पानी पड़ने से और खुश्क आब व हवा से कम हो जाती है इस के लिये शरीयत में है कि अगर हाथों पर लगी चिकनाई चेहरे हाथों और पावों पर मल लें तो मतलूबा कमी पुरी हो जायेगी और जिल्द का फटना । जिल्द का उधड़ना ख़त्म हो जाता है ।

इस रोगनि माददे का जिल्द पर मलना जिल्द को खूबसुरत बनाता है हत्ता कि इस प्लाज़मा का असर जोड़ों, आसाब, अज़लात (Nerves & Muscles) पर बहुत ज़्यादा होता है । आसाबी दर्दो (Nerves Pain) अज़लाती खिंचाव (Strech Muscle) जोड़ों के दर्दो और कमर (Backache) के दर्द के मरीजों के लिये मुफ़ीद है ।

मज़ीद तहक़ीक़ यह है कि उंगलियों के पोरों से एक जरासीम कुश मवाद निकलता है जो जरासीमों को ख़त्म कर देता है सेहत के लिये इस मवाद का मेदे में जाना जरुरी है ।

Scanned by CamScanner

सिर्फ़ हाथों से खाना और उंगलियां चाटना

बन्दा के एक करीबी जानने वाले जब एक सफ़र से वापस लौटे तो मुझे कहने लगे कि आपके काम की एक बात, मैंने पुछा क्या? कहने लगे जिसके लिये तुम अर्से से कोशां हों सुन्नते नबवी और जदीद साइंस, मैं उनकी बात समझ गया मैंने कहा फरमायें ?

फ़रमाने लगे कि कनाडा के शहर टो रिन्टों में मेरी ज़्याफ़त एक पादरी ने की जब मैंने खाना शुरु किया और हाथों से खाना खाया तो वह देखता रहा जब खाना खा चूका तो कहने लगा कि आप की उंगलियां मैं चाटूंगा ।

मैं हैरान हो गया कि कैसी अजीब बात है कहने लगा कि तहक़ीक़ात से यह बात साबित हो गई है कि आदमी जो खाने का ख्याल लाता है तो गदा नखामिया (Pituatry Glands) से फौरन आसाबी असरात से रतूबते हाज़िम उंगलियों के ज़रीये निकलती है और वह शख़्स जब खाना खाता है तो वह रतूबत खाने में शामिल होकर खाने को हज़्म करने में मआविन साबित होती है।

और मुनदरजा जेल रतूबात का जरीया बनती है ।

हाज़िमे रतूबत (Digestive Secretion) का असर निशाश्तादार (Carbohydrates) पर पड़ता है । मज़ीद इस रतूबत का असर लिबलिबा पर पड़ता है जिससे शुगर के मरीज़ों को फ़ायदा होता है और जीस्म में इनसूलिन (Insulin) की कमी वाकि नहीं होती ।

मज़ीद उंगलियों का चाटना भी इस बात की गम्माज़ी करता है कि वह रतूबते हाज़िम (Digestive Secretion) उंगलियों पर लगी रहती है कुछ तो खाने के साथ अन्दर चली जाती है और बाकी उंगलियों पर लगी हुई खाने के बाद उंगलियों को चाटने से मुँह में चली जाती है ।

अजीब फिजीयालोजी (Physiology) यह है कि जूं–जूं खाने में मज़ा आता है भूख बढ़ती और उसी रफ़्तार से वह रतूबत ज़्यादा निकलकर खाने में शामिल हो जाती

Scanned by CamScanner

है ।

अगर उंगलियों को चाटा जाये तो उसका असर आंखों, दिमाग और मेदे पर पड़ता है ।

एक फिजिशीयन ने बताया कि मेरी तहक़ीक़ है कि खाने के बाद उंगलियां चाटना वाक़ियतन दिल के अमराज़, मेदे के अमराज़ और दिमागी अमराज़ के लिए मुफीद और बतौरे इलाज है तजरिबा शर्त है ।

यूरोपी माहिरीन के तजरिबात

(Experiments Of European Experts)

यूरोपी माहिरीन ने पूरी अमरिकी कौम को खाने के उसूल और ज़ाबते बताये हैं। अगर हम ग़ौर से पढ़ें तो इसमें हुज़ूरे अकदस (स०) के तमाम अहकामात वाज़ेह हो जाते हैं । ज़ेल में यूरोपी माहिरीन के तजरिबात का आसान तर्जुमा मुलाहिज़ा फ़रमायें ।

खाने के ग़लत और सही तरीक़े

Wrong & Right Way Of Eating

गिज़ा बदन की एक ऐसी ज़रुरत है जिसके बग़ैर इनसान ज़िन्दा नहीं रह सकता लेकिन हम जो कुछ खाते पीते हैं खुद–ब–खुद हज़म नहीं होता बल्कि उसको हज़म करके जिस्म के लिये कारआमद बनाने और गोश्त–पोस्त की शक्ल में तबदील करने में जिस्मानी कुव्वतों को बड़ी तग–व–दौ करनी पड़ती है इसलिये गिजा जो बदन की दोस्त है अगर ज़रुरत से ज़्यादा इस्तेमाल कि जाये या उसके इन्तेखाब और तरतीब में ज़रुरियाते बदन का ख्याल न रखा जाये तो यह कुव्वतों को थका कर बदन की दुशमन साबित होती है । इनसान जिन अमराज़ में मुबतला होता है उनमें से अकसर बराहे रास्त या बिल वास्ता खाने की ज़्यादती, बेतरतीबी, बार–बार खाने और हज़म से पहले ही दोबारा खा लेने का नतीजा होते हैं ।

Scanned by CamScanner

गिज़ा किस वक़्त खानी चाहिये?

सेहत के लिये खाने के औक़ात की पाबन्दी बहुत अहमीयत रखती है । हर खाने का एक खास वक़्त मुक़र्रर होना चाहिये । उसके बाद जब तक दुसरे खाने का वक़्त न आये दुनिया की कोई बड़ी से बड़ी नैमत भी नहीं खानी चाहिये। बहुत से लोग खाने के औक़ात की पाबन्दी नहीं करते– खाने के दो औक़ात के दरमियान भी कुछ न कुछ खाते रहते हैं । गिज़ा खाने में यह अम्र खुसुसियत से पेशे नज़र रखना चाहिये कि खाह गिज़ा कितनी ही उम्दा और तकवीयत बख़्श हो अगर उसकी मिक़दार और खाने के औक़ात में ऐतदाल मलहूज़ न रखा जाये तो जिस्म को सिर्फ़ फ़ायदा ही नहीं पहुँचता बल्कि उल्टा नुक़सान उठाना पड़ता है । हाज़मे की ख़राबी पैदा होकर सेहत बिगड़ने लगती है और मुख्तलिफ़ अमराज़ पैदा होकर जिस्मानी इमारत को खोखला कर देते हैं इस तरह गिज़ा सेहत का बाइस बनने के बजाये ज़हर साबित होती है । इसलिये सेहत के वास्ते ज़रुरी है कि गिज़ा कि मिक़दार और औक़ात की पाबन्दी की जाये ।

एक अरबी हकीम का मकूला है कि "जब भूख लगे तो खाना खाओ" हकीम बोक़रात का क़ौल है कि "बाज़ औक़ात बेवक़्त खाने से ऐसा फ़साद हो जाता है जैसा ज़हर है जब तक अच्छी तरह भूख न लगे हरगिज़ न खाओ और जब थोड़ी सी भूख बाकी हो तो खाना छोड़ दो" ।

इनसान को चाहिये कि वक़्त बे वक़्त अनाप–शनाप खाने की बुरी आदत से परहेज़ करे । इस तरह खाने से न गिज़ा पूरे तौर पर हजम होती और न जुज्वे बदन बनती है बल्कि सच्ची भूख ही कुदरत का एक ऐसा अतीया है कि इसमें खाई हुई गिज़ा ज़रा खूब हजम होकर जुज्वे बदन बन जाती है और हमें सेहत बख़्शती है । खाने के औक़ात मुक़र्रर होने चाहिये वक़्त बे वक़्त खाने से एहतराज़ करना चाहिये।

Scanned by CamScanner

सोने से पहले खाना

Meals Before Sleeping

सोने से पहले खाने की आदत भी सेहत के लिये निहायत मुज़िर है । बिस्तर पर जाने के वक़्त कुछ खा लेने या शाम का खाना देर से खाने का नतिजा यह होता है कि सोने की हालत में भी मेदा मुसलसल अपनी खिदमत में मसरूफ रहता है । इसके बावजूद सोने के वक़्त खाई हुई गिज़ा मुकम्मल तौर पर हज़म नहीं होती । आराम से नींद नहीं आती । नागवार से ख्वाब आते रहते हैं और सुब्ह आँख खुलती है तो चुस्ती और ताज़गी की जगह सुस्ती और कसलमन्दी महसूस होती है । सोने से पहले दुध पीने के नताइज भी यही होते हैं । सही उसूल यह है कि सोने से पहले मेदे का अमल ख़त्म होना चाहिये और जब हम आराम करते हों तो हमारे मेदे को भी मुकम्मल आराम हासिल होना चाहिये । वर्ना मेदे की मसरुफ़ियत दिल, दिमाग, आसाब और तमाम आज़ा की राहत में ख़लल डाल देती है और नींद का तबई मक़सद पूरा नहीं होता । राहत पसन्द लोगों के लिये जो ज़्यादा जिस्मानी मेहनत नही करते– शाम का खाना देर से खाने या सोने से पहले कुछ खा लेने की आदत ख़ास तौर पर ज़्यादा मुज़िर है ऐसे लोग हाज़मे की ख़राबी और ज़ोफे मेदा की वजह से मुख़तलिफ़ अमराज़ में मुबतला होते हैं तो उनकी सेहतयाबी बहुत दुश्वार होती है ।

रात के वक़्त तमाम बदन के साथ हज़म के आज़ा भी आराम करना चाहते हैं और इस तकान की हालत में अगर उनको फिर बोझल बना दिया जाये और रात के पाँच–छः घंटे भी उन्हें कामिल तौर पर आराम न दिया जाये तो उसका नतीजा खराबी–ए हज़म ज़ोफे मेदा की सिवा और कुछ नहीं होता । इसीलिये क़दीम अतिब्बा ने रात को देर से खाने से रोका है और मौजूदा दौर में भी जो हर तीन घंटे के बाद खाना और नाश्ता ज़रुरी समझा जाता है । ज़रुरीयाते बदन के बहुत से माहिरीन के नज़दीक शाम का खाना देर से खाना या सोने के वक़्त कुछ लेना ज़हर का हुक्म रहता है और रफ़्ता–रफ़्ता सेहत और ज़िन्दगी को तबाह कर देता है ।

Scanned by CamScanner

गिज़ा का बुन्यादी उसूल

Fundamental Principle Of Dieting

ज़्यादा खाना उन लोगों के लिये और भी ख़तरनाक है जो तबअन सुरत और राहत पसन्द होते हैं । ऐसे लोगों को हमेशा भूख से कम खाना और कुछ वरज़िश करनी चाहिये । बहुत से लोग ऐसे हैं जो फ़य्याज़ कुदरत की तरफ़ से अच्छी सलाहियतें लेकर आयें हैं । मगर उसके बावजूद जितना कुछ करना चाहते हैं उसका आधा भी नहीं कर सकते ऐसे लोग अपने हालात का जाइज़ा लें तो उनपर वाज़िह हो जायेगा कि उन्हें अपनी भूख पर कुदरत हासिल नहीं और वह महज़ शिकम के बोझल हो जाने की वजह से बुलन्दी में ज़्यादा परवाज़ नहीं कर सकते। यह एक हक़ीक़त है कि बोझल पेट के साथ कोई शख़्स अपनी ख़ुदादाद सलाहियत के साथ बुलन्दीयों में परवाज़ नहीं कर सकता ।

दिन भर में तीन बार से ज़्यादा न खाइये, सादे खाने के सिवा अनवाअ व अकसान की चीज़ें न खाइये । भूख से ज़्यादा हरगिज़ न खाइये और रोज़ाना थोड़ी सी वरज़िश कर लिया कीजिए फिर देखिये कि तबीयत की काहिली, जिस्म की माँदगी, फ़तूरे हज़्म, तबख़ीर और ज़ेहनी व जिस्मानी कुव्वतों की सुस्ती व कुन्दी किस कद्र जल्द ज़ायल हो जाती है और आपकी सलाहियत कितनी तेज़ी से उभरती है । अगरचे गिज़ा के बाद उन लोगों के लिये इस कद्र मुहतात होना ज़रुरी नहीं जो सख़्त जिस्मानी मेहनत व मुशक़्क़त के कामों में लगे हुये हैं मगर ऐसे लोग ये अगर थोड़ी सी इहतियात करें जिस्मानी ज़रुरीयात से ज़्यादा न खायें और खाने में तरतीब़ और वक़्त का ख़्याल रखें तो यह चीज़ उनके लिये भी सेहत, कुव्वत और जफ़ा कशी की सलाहियत का बाइस होगी ।

ज़ोफ़े मेदा और ख़राबी से बचने की तदाबीर

सख़्त मेहनत या वरज़िश के बाद फ़ौरन खाना ख़राबी का बाइस होता है क्योंकि बदन की बढ़ी हुई हरारत और तकान की हालत में आलाते हज़्म, दिमाग़ और

Scanned by CamScanner

आसाब पर बहुत ज़्यादा बार पड़ जाता है और तमाम हज़म में ख़लल वाकिअ हो जाता है । इसी तरह शदीद इज़तेराब, हैजान और उजलत की हालत में खाना भी फ़तूरे हज़म का मोजिब हो जाता है क्योंकि इस वक़्त तबीयत की तवज्जह दूसरी तरफ़ होती है और असबी मराकज़ नेज़ामे हज़म में तवाजुन क़ायम नहीं रख सकते। खाना खाने के फौरन बाद वरज़िश या मेहनत के काम में मसरूफ़ हो जाने का नतीजा भी यही होता है क्योंकि तबीयत की तवज्जुह और बदन की कुव्वतें दो जानिब तक़सीम हो जाती हैं । और हज़मे ग़िज़ा के आमाल पूरे तौर पर अन्जाम दे नहीं सकतीं यह एक तबई उसूल है कि खाना ऐसे वक़्त खाया जाये जब ज़िहनी और जिसमानी दोनों हैसियतों पर बदन में सकून हो । जालिनूस ने कहा है कि "खुशी गिज़ा को हज़म करने और जुज़वे बदन बनाने में मदद देती है और रंज व ग़म खाने को जुज़वे बदन नहीं बनने देता" ।

यूरप में डा. केनिन एक्स–रे के माहिर हैं । उन्होंने एक्स–रे के ज़रीये से मेदे जिगर और अंतड़ीयों की मुख़तलिफ़ हालतों का मुआइना किया है । उनका मुशाहिदा है कि रंज और गुस्से की हालत में हाज़मे के जुमला आज़ा पर कुछ ऐसा असाबी असर पड़ता है कि वह बेहिस हो जाते हैं । ये एक मुसल्लिमा तिब्बी उसूल है कि रंज व ग़म की हालत में खाया हुआ खाना ज़हर का असर रखता है । इसलिये खाना खाते वक़्त खुश व ख़ुर्रम रहना चाहिये ।

पूरी, कचौड़ी और पराठों की निस्बत सादा रोटी जूद हज़म होती है सादा तरीके पर घी डालकर पकाई हुईं सब्जियां, तरकारियां और गोश्त और तेज़ मसाला दार रोग़न जोश और रोगन दार ग़िज़ाओं से हज़ार दर्जा बेहतर जूद हज़म और सेहत बख़्श है मगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में आम तौर पर सब्ज़ियों वगैरह को पकाते वक़्त मसालों और घी में भुनकर सकील और देर हज़म बना दिया जाता है । मैदे की बनी हुई चीज़ें, सक़ील मिठाईयां, घी में तले हुये पकवान, जर्दे, पोलाव, रोगन जूश और तमाम रोग़न दार गिज़ाएं खाने से फतूरे हज़म की शिकायत पैदा होती है। केक, पैस्ट्री और चोक्लेट वग़ैरह भी नुक़सान देह हैं ।

खाना खाने के बाद कम से कम आधे घंटे तक कोई दिमाग़ी काम नहीं करना चाहिये बाज़ लोग खाने के दौरान में या खाना खाते ही मुतालिआ शुरु कर देते हैं

Scanned by CamScanner

इससे दिमाग़ और हाज़मे पर बुरा असर पड़ता है ।

खाने के दरमयान ज़्यादा पानी या दुसरी सय्याल चीज़ें पीने से हज़म में फ़ूतूर वाकिअ होता है और मेदे में ज़्यादा रतूबत की मौजूदगी में ग़िज़ा बखूबी हज़म नहीं हो सकती– खाने के दौरान में प्यास लगाने वाली चीज़ों से जहाँ तक हो सके परहेज़ करना चाहिये । खाने में ज़्यादा नमक, मसाला, अचार, चटनी और मुरब्बा जैसी चीज़ें हज़म में मदद देने के बजाये प्यास को बढ़ाकर हज़म में फ़तूर पैदा करती है ।

तिब्बी उसूल यह है कि जो चीज़ भी हम खायें उसका दर्जा–ए हरारत हमारे जिस्म के मुताबिक हो– न ज़्यादा सर्द न ज़्यादा गर्म बल्कि मुतदिल दर्जा–ए हरारत पर हो बर्फ, आईसक्रीम, कुल्फी, मलाई बर्फ, बर्फ में लगी हुई बोतल या बर्फ में लगा हुआ कोई भी फल जिसके पीने या खाने से दांत यख़ हो जायें । दांतों और मसूढ़ों के लिये नूकसान देह हैं– इसके इलावा बर्फ आमेज पानी और ज़्यादा ठंडी चीज़ें ज़ोफ़े मेदा का बाइस होती हैं ।

खराबी–ए मेदा के नफ़सियाती असबाब

Psychological Reason Of Kidney Trouble

खराबी–ए मेदा मसलन, कब्ज़, असहाल, पैचिश वग़ैरह के आम तिब्बी असबाब मोहताजे तशरीह हैं । ये बीमारीयां खाने पीने में बेएतदाली, बदपरहेज़ी और नाक़िस ग़िज़ा वग़ैरह से पैदा होतीं हैं या बेखाबी नशा आवर चीज़ों के इस्तेमाल, सुस्ती और काहिली से जड़ पकड़ती हैं मोनासिब तिब्बी और गिज़ाई इलाज, बकायदा जिस्मानी आदात और परहेज़ इख़्तियार करने से उन्हें दूर किया जा सकता है ।

मगर यह ज़रुरी नहीं कि मेदे की खराबी महज़ इन ज़ाहरी असबाब से मुतअल्लिक़ हो । अकसर हालतों में ऐसा भी होता है कि एक शख़्स ने खाने पीने के मामले में कोई बदपरहेज़ी नहीं कि लेकिन उसके बावजूद खराबी–ए मेदा का शिकार हो गया । क़ियास कहता है कि इस क़िस्म के मरीज़ों की तादात बदपरहेज़ी

Scanned by CamScanner

के मरजों से ज़्यादा नहीं तो उनसे कम भी नहीं होगी ।

अगर खराबीए मेदा के किसी माद्दी सबब की तशख़ीस हो सके तो मुआलिज को यह समझ लेना चाहिये कि उस की पुश्त पर कोई न कोई नफ़सियाती सबब ज़रूर कार फरमा होगा । इस सूरत में इलाज और परहेज़ से ज़्यादा मरीज़ की कैफ़ियत और ज़ेहनी जज़बात को एतदाल पर लाने की कोशिश करनी पड़ेगी । वरना आम मुआलिजाती तदाबीर का कोई मुफ़ीद नतीजा पैदा नहीं हो सकेगा ।

ज़ेल में मुख़तसर तौर पर उन नफसीयाती हालता पर रोशनी डाली जायेगी जो अमराज़े मेदा का बाइस हो सकतीं हैं ।

राबर्ट जो अच्छा सेहतमन्द आदमी है– खूब भूख लगी हुई थी– वह दफ़्तर से उठकर घर गया– बहुत अच्छा पसन्दीदा खाना तैयार था । उसके दो अज़ीज़ मेहमान भी आये हुये थे । उनके साथ बैठकर खाना खाने से इससे और भी ज़्यादा खुशी हुई । अच्छी सेहत अच्छी भूख अच्छा खाना, अच्छे साथी और अच्छी बात–चीत उन तमाम बातों का तक़ाज़ा यह होना चाहिये कि उसके फेले हज़म पर निहायत खुशगवार असर पड़ता– मगर वह खाना खाकर फ़ारिग़ हुआ ही था कि उसे एक अलमनाक तार वसूल हुआ । तार पढ़ते ही उसकी सारी बशाशत रुख़्सत हो गई। दिल डूबने लगा– चलने–फिरने की कुव्वत गोया सल्ब हो गई। उसके चेहरे से रन्ज और अफ़सुरदगी के एलावा नातवानाई के आसार भी साफ़ नज़र आने लगे । रात का खाना उससे नहीं खाया गया । यूं कहना चाहिये कि उसे भूख ही नहीं लगी । कभी–कभी उसे यूं महसूस होता कि मेदा किसी हैजानी कैफ़ियत से मग़लूब होकर डूबता जा रहा है ।

सुब्ह उसे मुकर्ररह वक़्त पर एजाबत नहीं हुई । दोपहर को एजाबत तो हुई मगर मामूल के मुताबिक आसानी और सहूलत के साथ नहीं बल्कि किसी कद्र तकलीफ के साथ, तीसरे दिन उसे पेचिश की शिकायत हो गई ।

मज़कूरा मिसाल से कतए नज़र दुनिया में दो तरह के लोग पाये जाते हैं । एक वह जो बड़े मज़बूत दिल, गुर्दे के मालिक हैं– छोटे मोटे हादसे, ग़लतियां और गुस्ताखियां उन्हें रन्जीदा नहीं कर सकतीं– वो बे फिक्रे और खुशी की ज़िन्दगी में

Scanned by CamScanner

यकीन रखते हैं । दूसरे क़िस्म के लोग वह हैं– जिन्हें हम नफ़सियात की इसतेलाह में असबीउल मिज़ाज कह सकते हैं । उनके मिज़ाज और तबियत के खिलाफ मामूली सा वाकिया भी उन्हें परेशान कर सकता है और निहायत मामूली परेशानी भी उनके आसाब में तनाव पैदा कर सकती है । फ़र्ज़ कीजिए इस किस्म का कोई आदमी कमरे में बैठा मोतालिया कर रहा है अगर कमरे के रोशनदान में दो चार चिड़ियां जमा होकर चहचहाने लगती या उसके पास कोई कुर्सी पर बैठ जाता है– या गली में बच्चे एकट्ठे होकर खेलते हैं– वो इन सारी बातों पर तंगी महसूस करेगा और बहुत मुमकिन है कि वो इनमें से किसी बात पर बरहम भी हो जाये ।

असबीयूल मिज़ाज लोगों को अगर मुसलसल एक मुद्दत तक ऐसे हालात से दो चार रहाना पड़े जो उनके जज़्बात और एहसासात के लिये मौजिबे तकलीफ़ हो, तो वह बीमार पड़ जायेंगे । ये दावा करना मुश्किल नहीं कि सबसे ज़्यादा और सबसे बुरा असर उनका मेदा कबूल करेगा और अगर मेदा बीमार होगा तो गोया सारा जिस्म ही बीमार होगा । न्यूर्याक के डा. जे. बी. राईस ने अपने एक मज़्मून में एक मरीज़ा का ज़िक्र किया है इसे हर वक़्त मेदे की कोई न कोई शिकायत रहती थी आख़िर मजबूर होकर एक वक़्त का खाना भी तर्क कर दिया। मगर उसके बावजूद उसका जी मतलाता रहता– वह क़ै करती रहती थी और इन्ही वजूह से वह बहुत कमज़ोर हो गई थी ।

डा. ने एक्स–रे और दूसरे तरीक़ों से मुआईने किये– मगर मेदे में कोई नुक़्स मालूम न हो सका । खूशकिस्मती से डाक्टर महज़ कोई डाक्टर ही न था– उसे नफसीयात से भी लगाव था– उसने मरीज़ा की खानगी ज़िन्दगी के मुताबिक कई सवाल किये– चन्द ही मिन्ट की गूफ़्तगू के बात बीमारी का हक़ीक़ी सबब मूनकशफ़ हो गया ।

मरीज़ा का शौहर एक जल्लाद था– सजा–ए मौत के मुजरिमों को तख़्त–ए दार पर चढ़ाना उसका पेशा था । मरीज़ा एक वफादार बीवी थी– मगर उसके बावजूद उसके अपने शौहर का यह पेशा पसन्द न था-- जब भी किसी मुजरिम को फांसी की सज़ा दी जाती तो कई–कई दिन उसकी तबीयत मुतअस्सिर रहती थी-- ये ख़्याल अन्दर ही अन्दर उसे बेचैन रखता था कि कहीं वह शख़्स जिसके उसे शोहर

Scanned by CamScanner

के हाथों फांसी के तख्ते पर लटकाया गया है बेगुनाह न हो– आहिस्ता–आहिस्ता उसकी कैफियत मज़बूत हो गई और वह अपने शौहर को कई बेगुनाह आदमीयों का कातिल समझने लगी और ये नफसीयाती रद्दे अमल उसके मेदे की खराबी की शक़्ल में जाहिर हुआ ।

डा. राईस लिखता है– दुनिया की कोई दवा उसे फायदा नहीं पहुंचा सकती थी। क्योंकि वह एक ख्याल का शिकार थी और यह मुसतकि़ल ख्याल उसकी सेहत को तेज़ी के साथ बर्बाद कर रहा था लेकिन जब डाक्टर की सिफारीश पर उसके शौहर को जल्लादी की खिदमात से सुबुकदोश कर दिया गया तो उसके मेदे की तकलीफ़ बहुत जल्द हमेशा के लिये ग़ायब हो गई ।

अब हम इस सवाल पर ग़ौर करेंगे कि मेदा इनसान के नफसीयाती अवामिल से क्योंकर मुतअस्सिर होता है ? इल्मे अफ़आलुल आज़ा के माहिरीन कहते हैं कि जब गिज़ा मेदे में दाखि़ल होती है तो खून की काफ़ी मिक़दार मेदे को फेले हज़म में मदद देने के लिये पहुंच जाती है । खून ही की मदद से मेदे में एक कि़स्म की रतूबत पैदा होती है ये रतूबत गि़ज़ा को इस शक्ल में तबदील करती है जिसे "हज़म" कहते हैं यानी अजज़ा को खून में तबदील होने के क़ाबिल बना देती है और गैर ज़रुरी मवाद को अंतड़ीयों की तरफ़ ढ़केल देती है ।

जब कोई शख़्स उस वक़्त जबकि उसके मेदे को फेले हज़म के लिये खून की इमदाद की ज़रुरत हो रंजीदा, अफ़सुरदा, ग़मगीन या मूज़तरिब होगा तो खून का रुझहान मेदे की तरफ नहीं रहेगा– बल्कि उसके दिमाग़ की तरफ़ हो जायेगा । क्योंकि रंजीदगी, अफसूरदगी और ग़म व इज़तेराबे जिहनी अफआल हैं और उनसे उहदा बरआ होने के लिये दिमाग को भी खून की ज़रुरत है । नतीजा यह होगा कि मेदा अपना अमल ठिक तौर से अनजाम नहीं दे सकेगा । मेदी में रतूबत पैदा नहीं होगी या बहुत कम पैदा होगी । और गि़ज़ा पर उसका अमल इस हद तक नाकि़स रहेगा कि वह ठिक तौर पर हज़म न हो सकेगी ।

ये बात सब को मालूम है कि तबीब और डाक्टर खाना खाने के बाद नहाने की इजाज़त नहीं देते । उसकी वजह ये है कि नहाते वक़्त खून मेदे से हटकर जिल्द की तरफ़ रुख कर लेगा । खाना खाने के बाद आम तौर पर मुतालिआ या दिमागी

Scanned by CamScanner

मेहनत से भी मना किया जाता है– ताकि खून मेदे कि बजाये दिमाग़ की तरफ़ न चला जाये । खाना खाने के फ़ौरन बाद वरज़िश भी मुज़िर बताई जाती है । उसका सबब भी ज़ाहिर है कि खून की तवज्जुह उसके मुकद्दम फ़र्ज़ से हटकर दूसरी तरफ़ न हो जाये– खाना खाने से क़ब्ल, खाना खाते वक़्त और खाना खा चूकने के बाद ज़िहनी और जिस्मानी सकून को इसलिये ज़रुरी समझा गया है कि मेदा खूशउसलुबी के साथ अपना फ़र्ज़ सर अन्जाम दे सके।

ठीक जिस तरह ये जिस्मानी और ज़ाहिरी असबाब मेदे के खराबी का बाइस होते हैं बिल्कुल उसी तरह नफ़सियाती उलझनें भी उसे बुरी तरह मुतअस्सिर करती हैं। हमारी ज़िन्दगीयों में परेशानीयों का पैदा होना नागूज़ीर है । कभी कारोबार में नुक़सान का अन्देशा सताता है तो कभी बीवी बच्चों की बीमारी हमारे जिहनी सकून को ख़तरे में डाल देती है । कभी बेरोज़गारी का ख़ौफ़ ज़िन्दगी को अजीरन बना देता है तो कभी खाँगी ज़िन्दगी की तलख़ियां दिल की आसूदगी को दरहम–बरहम कर देती हैं । गर्ज़ कि कोई न कोई ग़म, कोई न कोई मायूसी हमारे ज़िहनी या दिमाग़ी इतमीनान पर ज़रब लगा सकती है । इस क़िस्म के हालात में अगर हमारा मेदा ज़कीयूलहिस हो जाता है तो ये कोई तअज्जुबअंगेज़ बात नहीं, बल्कि उसे यास व इज़तेराब का कुदरती रद्दे अमल समझना चाहिये।

मगर इसका मतलब यह नहीं कि हम इस क़िस्म की मुश्किल नफ़सीयाती हालतों पर काबू नहीं पा सकते । उलमा–ए नफसीयात ने बाज़ ऐसी तदबीरें तज़वीज कीं हैं जिन पर अमल करके मेदे को मुख़तलिफ़ नफ़सीयाती ख़राबीयों के रद्दे अमल से बहुत हद तक महफूज रखा जा सकता है । इस सिलसिले में सबसे अहम तदबीर यह है कि मुसतक़बिल के मोहूम अंदेशों को ख़ाह मख़ाह अपने ऊपर मुसल्लत न होने दिया जाये । बहुत मुमकिन है कि जिस मुसीबत के वारिद होने से पहले ही हम उसका ख़्याल करके हल्कान हो रहे हैं । वह सिरे से आये ही नहीं और तजरिबा बताता है कि आम तौर पर ऐसा ही होता है । दूसरी तदबीर यह है कि रन्ज व परेशानी को फ़रामोश करने के लिये अच्छी मसरुफियतें तलाश की जायें । सैरो तफ़रीह दोस्तों की सुसाइटी, मोतालिया और ऐसे अशग़ाल जिसमें दिमाग़ और जिस्म दोनों मसरुफ़ रह सकें ज़िहनी परेशानी को दूर करने में बहुत मदद देते हैं । तन्हाई और गोशा नशीनी से जहाँ तक हो सके परहेज़ किया जाये और जहाँ तक हो सके

खुश रहने की कोशिश की जाये ।

मेदे को नफ़सीयाती हैजान के असर से महफूज़ रखने के लिये यह भी जरुरी है कि हम खाना खाने के आदाब का पूरी तरह ख्याल रखें । सबसे बड़ी बात यह है कि रन्ज और गुस्से की हालत में खाना खाने से हमेशा परहेज़ किया जाये । खाना खाने के दौरान कोई नागवार बहस न छेड़ें । किसी को मलामत न की जाये । किसी को शर्मीदा न किया जाये और किसी दर्दनाक या मकरुह हादसे का जिक्र न किया जाये । खाना खाते वक़्त बातें अव्वल तो कम की जायें और अगर की जायें तो ऐसी बातें जो मुशतरका खुशी और दिलचस्पी का बाइस हों।

याद रखिये कि नफ़सीयाती बीमारियों का इलाज भी नफ़सियाती ही हो सकता है । जो लोग ऐसी बीमारियों को दवाओं के ज़रीये दूर करने की कोशिश करते हैं उन्हें कभी फ़ायदे की उम्मीद न रखनी चाहिये बल्कि मुमकिन है कि उनकी तकलीफ पेचिदा शक्ल इख्तियार करे ।

ग़िज़ा किस तरह खानी चाहिये

खाना हमेशा आहिस्ता–आहिस्ता और अच्छी तरह चबा कर खाना चाहिये– ताकि हर लुक़मा लोआबे देहन में हल हो जाये । इससे खाना हज़म होने में ज़्यादा आसानी हो जाती है । लोआबे देहन ग़िज़ा को जूद हज़म बना देता है। सुए हज़म की शिकायत अकसर महज़ लुक़मा चबाकर खाने से दूर होती है अंग्रेज़ी में एक मकूला है कि **(Drink Your Meals And Eat Your Water)** "हमें अपनी ग़िज़ा के सय्याल हिस्सों को खाने की चीज़ की तरह इस्तेमाल करना चाहिये ठोस हिस्सो को पीना चाहिये"।

इससे मुराद यह है कि खाने के चिज़ों को इस क़दर चबाना चाहिये वह सय्याल होकर खुद–ब–खुद हलक़ से उतर जायें और पीने की चीज़ों को खाने की चीज की तरह अहिस्ता–आहिस्ता पीना चाहिये । एक दूसरे यूरोपियन डाक्टर का मकूला है "अगर मुझे कोई शख़्स यह कहे कि हज़म के बारे में किसी एक हिदायत का ज़िक्र करो तो बिलाशुबहा चबा–चबा कर खाने की हिदायत करुंगा।

ग़िज़ा को चिबा–चिबा कर खाने से जहाँ गिज़ा बेहतर तरीक़ा पर हज़म होकर जुज़्वे बदन बनती है वहाँ हज़म की कोई ख़राबी ज़ाहिर नहीं होती । इसके इलावा चबा–चबा कर खाने में ग़िज़ा की कम मिक़दार की ज़रुरत पड़ती है। हम में से बहुत से लोग खाने की बहुत से मिक़दार को जल्द–जल्द निगल लेते हैं– ग़िज़ा की ज़्यादा मिक़दार नुकसान पहुँचाए बगैर नहीं रह सकती । ज़िन्दगी को बढ़ाने के लिये ग़िज़ा को कम करना ज़रुरी है ।

खाना न ज़्यादा गर्म होना चाहिये और न ज़्यादा सर्द बहुत गर्म खाने और गर्म मशरुबात से मेदा ढिला हो जाता है और उसकी कुव्वतें तहलील हो जाती हैं । और अगर खाना ज़्यादा सर्द हो तो उसे हज़म करने से पहले मेदे की बहुत सी कुव्वत और हरारत से गर्म करने में सर्फ़ हो जाती है । खाने के साथ ज़्यादा सर्द पानी पीना और भी बुरा है क्योंकि पानी की ठंडक और उसकी ज़्यादती दोनों बातें मेदे को अज़ीयत पहुंचाती और हजम में फ़तुर पैदा करती है ।

ख़िलाल

Pick One's Teeth

खाने के बाद ख़िलाल की तरग़ीब कुतुबे अहादीस में बकसरत मिलती है । आज के मुडर्न मुआशरे में होटल हो या घर तमाम जगहों में खाने के बाद लकड़ी के खिलाल पेश किये जाते हैं ।

ये मेरे आक़ा हुज़ूरे करीम (स0) का अज़ीम तरीक़ा है ।

खाने के बाद ग़िज़ाई अजज़ा दांतों और मसूढ़ों के दरमयान फंस जाते हैं अगर उनको ख़िलाल के ज़रीये न निकाला जाये तो वह ग़िज़ाई जर्रे **(Food Particles)** मुतअफ़्फ़िम **(Septic)** हो जाते हैं और एक ख़ास प्लाज़मा बनकर मसूढ़ों को पहले मुत्तवर्रिम और फिर दांतों और फिर मसूढ़ों के तअल्लुक को ख़त्म करता है और दांत आहिस्ता–आहिस्ता मसूड़ों से जूदा हो जाते हैं हत्ता कि दांत गिर जाते हैं ।

अगर इन ग़िज़ाई ज़र्रात को ख़िलाल के ज़रीये दांतों से न निकाला जाये तो पाईरीया या मासखूड़े का सख़्त ख़तरा होता है– बल्कि मासखूड़ा होता ही इस बेइहतियाती से है ।

Scanned by CamScanner

और फिर जब मसूढ़ो में इस बेइहतियाती से पीप पड़ जाये तो ये पीप लुआब के ज़रीये मेदे में चली जाती है और मेदे के मुहलिक अमराज़ पैदा हो जाते हैं।

ख़ास तौर पर अल्सर (Ulcer) मेदे की तिज़ाबियत (Stomach Acidity) का सख़्त ख़तरा होता है।

ख़िलाल की इहतियातें

उलमाए हदीस व फ़िक्ह ने हदीस के हवाले से यह बात लिखी है जो ग़िज़ाई ज़र्रात मुंह से बग़ैर ख़िलाल के निकले उसे निगल या खा सकते हैं और जो ग़िज़ाई ज़र्रा ख़िलाल के ज़रीये निकले उसे फेंक दें।

हैरान करने की बात यह है कि दीन मुसलसल इनसानियत की बक़ा और हिफ़ाज़त ही चाहता है। वाक़ई दीनी ज़िन्दगी दूर होने की वजह से आज दुनिया के तमाम उलूम हमारे पास हैं लेकिन दीनी ज़िन्दगी और दीनी इल्म से हम ख़ाली हैं और जब किसी फ़र्द के सामने ऐसी दीनी ज़िन्दगी पेश की जाती है तो हैरान होता है कि क्या दीन इतना वसीअ है और दीन ने हमें यह भी दिया है।

अब अगर ख़िलाल के बग़ैर निकली हुई ग़िज़ा चूंकि छोटी ग़िज़ाई ज़र्रात होते हैं और यह ग़िज़ाई ज़र्रात खाने के बाद अटक जाते हैं चूंकि वह भी ग़िज़ा का हिस्सा हैं इसलिये उसका खाना और निगलना क़तई नुक़सान देह नहीं।

लेकिन जो ग़िज़ाई ज़र्रात ख़िलाल के साथ निकले वह नहीं निगलना चाहिये उसकी इहतियात यह है कि बाज़ औक़ात मसूढ़ो और दांतों के ख़ूलाओं में पीप (Pus) या जरासीम (Germs) होते हैं अब ये ग़िज़ाई ज़र्रात जो अब पीप और जरासीम आलूद हो चूके हैं अन्दर चले जाये तो अन्दर भी यह मूहलिक साबित होंगे इसलिये ख़िलाल से निकली हुई ग़िज़ा मुफ़ीद नहीं।

खाने के बाद हाथों को धोना और साफ करना

Hands Wash After Meals

शरई हुक्म है कि खाने के बाद हाथों को धोएं और कपड़े से पोंछ लें।

एक हदीस का मफ़हूम है कि जिसने रात को हाथ न धोये और उसको किसी हशरातुल अर्ज से नुकसान पहूँचा तो हमारा ज़िम्मा नहीं ।

यानी हाथों पर सालन या मीठा लगा हुआ हो और झींगुर, चूहा वग़ैरह हाथ काट लें तो जख़्म हो जाता है और इनसान तकलीफ में मुबतला हो जाता है ।

खाने के बाद चूंकि हाथों को ग़िज़ाई अजज़ा लगें होते हैं अगर यही ग़िज़ाई अजज़ा न धोयें तो यही हाथ जहां–जहां भी लगेंगे उस जगह को आलूदा कर देंगे और फिर यह ग़िज़ाई अजज़ा लगेंगे वहाँ तअफ़्फुन (Septic) पैदा होगा और बेशुमार ज़रासीमी अमराज़ (Germ Diseases) का ज़रीया बनेगा ।

और कपड़े से साफ़ इसलिये फ़रमाया कि हाथों में चिकनाई और रौगनियात लगे रहते हैं तो कपड़े से यह अजज़ा हाथों से साफ़ हो जाते हैं ।

अलगरज़ दीन नाम है मुसलसल इहतयात का और फवायद से लबरेज है ।

खाने के बाद पानी न पीना

अहादीसे उसवए रसूले करीम (स0) की कुतूब में खाने के बाद पानी पीने से मना फरमाया है

(मदारेजुन नबुवत)

डा. कर्नल चोपड़ा और इसलामी तालीमात

Dr. Chopra & Teaching of Islam

डा. कर्नल चोपड़ा मशहूर हिन्दू साइंसदां हैं उसने कई किताबें लिखी है एक वाक़िया कुछ यूं लिखा है ।

मैंने मुसलसल तहक़ीक़ात के बाद जब अपनी तहक़ीक को आम किया कि खाने के बाद पानी पीना मेदे के अज़लात को ढीला करता है । मेदे की अन्दुरुनी झिल्ली की वरम (Inflammation Of Internal Wall Of Stomach) का बाइस बनता है ।

मेदे की अलकली की कमी का बाइस बनता है और बाज़ औकात यही पानी मेदे की अमराज़ की वजह से दिल के अमराज़ (Heart Diseases) का बाइस बन जाता है।

तो इस असना में मुझे एक मुसलमान प्रोफेसर मिले फरमाने लगे कि आप की तहक़ीक की बड़ी धूम है लेकिन यह तहक़ीक़ कोई नई नहीं बल्कि यह तो सदियों पहले हमारे रहबरे आज़म हज़रत मुहम्मद (स0) ने बयान कर दीं ।

उसकी बात सुनते हुये मैंने उसकी तसदीक़ चाही तो प्रोफेसर ने अहादीस की किताबों में मुझे यह बात दिखा दी ।

खाना खाते ही सो जाना

खाना खाते ही सो जाना अमराज़ को दावत देता है ।

आप (स0) खाना खाकर सो जाने से मना फरमाते थे (ज़ादूल मआद)

खाना खाते ही मेदे का पूरा निज़ाम अपना काम शुरु कर देता है और आदमी जब सो जाता है तो मेदा भी सो जाता है यानी उसके निज़ाम में वह चुस्ती और तुन्दी नहीं होती जिसकी जिसमे इनसानी को ज़रुरत है ।

फिजीयालॉजी (Physiology) और (Pathology) के माहिरीन ने तमाम किताबों में इस हालत से मना किया है । उनका कहना है कि खाने के बाद हरकते जिसमानी (Body Movements) बहुत ज़रुरी है अगर ऐसा न हो तो मेदे में पड़ी हुई ग़िज़ा मुतअफ़्फिन हो जायेगी और तरह–तरह के अमराज़ पैदा होंगे ।

इस वक़्त गैस व तबखीर (Gas And Acidity Of Stomach) के अमराज़ की सबसे बड़ी वजह खाने के बाद फौरन सोने की है । आदमी दुनयावी मसरुफीयात के बाद घर लौटता और चूंकि थका हुआ होता है इसलिये खाना खाते ही फौरन सो जाता है और वह ग़िज़ा जिस अन्दाज़ से हज़म होनी थी दुरुस्त तरीके से हजम नहीं होती इसलिये शुगर (Suger) दिल के अमराज़ (Heart Diseases) मेदे के अमराज़ (Stomach Diseases) फालीज (Paralysis) वग़ैरह जैसी पेचीदा अमराज़ पैदा होती हैं ।

Scanned by CamScanner

कैलूला सुन्नत है

Siesta Is Sunnah

बेशुमार किताबों के मुसन्निफ़ और माहिरीने नफ़सीयात डाक्टर जियालिक आस्टीन लिखता है कि अगर मेरे इख़्तियार में होता तो तमाम कारख़ाने, फैक्ट्र्यां, बाज़ार और दफ़ातिर बन्द करके सबको कैलूला कराता क्योंकि ऐसा करने से हमारे पास मरीज़ों की तादाद कम हो जाती है । मख़लूक़ बेखाबी और नफ़सीयाती अमराज़ से कुल्ली तौर पर बच जाती है ।

जदीद साइंस इस वक़्त बेशुमार अमराज़ से घबरा कर अब सिर्फ़ मामूलाते ज़िन्दगी को सवांरने पर ज़ोर दे रही है माहिरीन फिजीयालॉजी **(Physiologist)** कहते हैं कि सारा दिन का थका हुआ और ज़ेहनी बोझ लिये हुये शख़्स की रात की नींद बेखाबी की नज़र हो जाती है अगर उसके अन्दर ज़िन्दगी के मामूलात हो तो वह कभी भी परेशान न हो और इस मामूलाते ज़िन्दगी में उन्होंने पहला कदम कैलूले की तरफ़ उठाया है ।

माहिरीन का कहना है कैलूले से जहां आदमी बाकी दिन तरो ताज़गी और निशात के साथ गुज़ारता है वहाँ वह बेशुमार नफसीयाती अमराज़ **(Psychological Diseases)** और दिमाग़ी अमराज़ **(Mental Diseases)** से भी महफ़ूज़ रहता है।

मलहूज़े ख़ास

लोकन इस बात का ख़्याल रहे कि कैलूला सिर्फ़ दोपर के खाने के बाद ही मुफ़ीद है और ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटा का आराम । इससे से ज़्यादा कैलूला खुद अमराज़ का बाइस बनता है ।

कैलूले का खास नफ़ा यह है कि बेख़ाबी का इलाज है ।

Scanned by CamScanner

पानी, सुन्न्ते नबवी और जदीद साइंस

Water, Sunnati Nabvi & Modern Science

पानी अहम ज़रुरीयाते जिन्दगी में से है । सुन्नत समझ कर पानी पीये तो सवाब भी होगा और ज़रुरत भी पूरी होगी ।

पानी चूस कर पीना

हुज़ूरे अकदस (स0) ने फ़रमाया पानी चूस–चूस कर पीयो और ग़ट–ग़ट करके न पीयो

(उसवये रसूले अकरम–मदारे जुन नबुवत)

एक सेहराई वाक़िया

(A Desert Incident)

एक साहिब ने बयान किया कि हम सिहरा में अपने दोस्तों से बिछड़र गये और सख़्त गर्मी थी आख़िर प्यास ने सताना शुरु कर दिया पानी कहीं मयस्सर न अया बहुत ही मुश्किल के बाद एक जगह कुछ लोग आबाद थे उन के पास पानी की तलब की एक बुजुर्ग ने मिटटी के प्याले में पानी दिया लेकिन उस में भूसा डाल दिया ।

हम हैरान हुये अब सख़्त प्यास लगी हुई है और जिस्म पानी को तलब कर रहा है लेकिन इस सेहराई बुढ़े ने पानी में भूसा डाल दिया अब पानी पीना चाहते हैं लेकिन छोटे–छोटे पीने पड़े । जब कुछ पानी जिस्म में गया तो तसल्ली हुई फिर उस भूसे की बाबत बाबा से पूछा ?

कहने लगा आप को जितनी सख़्त प्यास लगी थी अगर मैं आप को साफ़ पानी दे देता और आप फ़ौरन पी लेते तो फ़ौरन आप को सख़्त तकलीफ़ हो जाती और ऐसे पानी पीते और फिर मरते कई लोग हम ने देखे हैं ।

Scanned by CamScanner

(इंग्लैन्ड में एक साल) मो0 अख़्तार ख़ान

अगर हम बड़े–बड़े घूंट पीयें तो उस से खतरा है कि शायद कोई पानी का हिस्सा हवाई नाली में न चला जाये और नेज़ामे तनफ़्फ़ुस (Rspiratory System) में नक़्स न पड़ जाये ।

फिर जब पानी चूसेंगे तो मुँह में अगर कोई गिज़ाई ज़र्रात अटके हुये हैं तो वह दांतों से निकल कर दांतों के खुला साफ़ हो जायेंगे अगर वह गिज़ाई ज़र्रात दांतों में रहते तो उनके मुतअफ़्फ़िन होने का सख़्त ख़तरा था ।

पानी देखकर पीना

To Watch The Water Before Drinking

हमेशा पानी देखकर पीयें (मामूलाते नबवी (स0)

एक साहिब आरमी में आडिट इन्सपेकटर थे मैं उन के साथ सफ़र में था । उन्होंने सफ़ेद काटन का बिल्कुल बारीक कपड़ा रखा हुआ था रात को जब प्यास लगती तो वही कपड़ा उस गिलास पर रखकर और उस कपड़े के ऊपर से पानी पीते और फ़रमाते अगर पानी में कोई किड़ा हो तो वह अटक जायेगा अन्दर नहीं जायेगा ।

पानी में ऐसे किड़े होते हैं जो अन्दर चले जायें तो जिगर, मेदे और तिल्ली को नुक़सान पहुंचाते हैं बाज़ तूफ़ैली किड़े (Parasites) ऐसे होते हैं, अगर पानी को देखकर न पिया जाये तो वह पानी के ज़रीये अन्दर चले जाते हैं ।

एक दफ़ा पानी में बिच्छु का छोटा सा बच्चा था अब अगर वह अन्दर चला जाता तो क्या कैफ़ियत होती ।

मुलतान नश्तर हस्पताल में एक नौजवान का आप्रेशन हुआ उस के मेदे से एक कछुआ नुमा बला निकली डाक्टर ने कहा ये पानी के ज़रीये अन्दर चली गई थी और मरीज़ भी फ़ौत हो गया ।

हुज़ूरे अकदस (स0) की एक–एक सुन्नत कामयाबी की दलील है ।

Scanned by CamScanner

बैठकर पानी पीना

(To Drink Water In Sitting Position)

अगर पानी बैठकर पीया जाये तो जिस्म की हाजत के मुताबिक पानी जिस्म में जाता है और अगर ज़्यादा पानी जिस्म में चला जाये तो जो जिस्म की ज़रुरत से ज़्यादा होता है उसकी वजह से एक ख़तरनाक मरज़ होता है जिसे इसतिसक़ा **(Oedema)** कहते हैं और मरीज़ का तमाम बदन फूल जाता है ।

खड़े होकर पानी पीना

To Drink Water In Standing Position

हुज़ूरे अकदस (स0) ने खड़े होकर पानी पीने से मना फ़रमाया

(रहबरे ज़िन्दगी)

अगर पानी खड़े होकर पिया जाये तो उसकी वजह से मेदा **(Stomach)** और जिगर **(Liver)** की ऐसी बीमारियां फैलती हैं जिनके इलाज में मुआलिजीन आजिज़ आ जाते हैं ।

खड़े होकर पानी पीने से पाँव पर वरम का ख़तरा रहता है और अगर ये पांव की वरम शुरु हो जाये तो जिस्म के तमाम हिस्सों पर वरम का ख़तरा होता है और खड़े होकर पानी पीने से इसतिसक़ा **(Oedema)** हो जाता है ।

तीन सांस में पानी पीना

To Drink Water in Three Breathes

अहादीस में पानी को तीन और बाज़ में दो सांस में पीने का हुक्म है ।

(मामूलाते नबवी)

अगर पानी को तीन सांस में न पिया जाये तो मुनदरजा ज़ेल अमराज़ पैदा हो सकते हैं ।

❖ पानी सांस की नाली में जाकर निज़ामे तनफ्फुस **(Respiratory System)** में अटक जाता है जिस से बाज़ औक़ात मौत वाकअ होने का ख़तरा लाहक होता

Scanned by CamScanner

है ।

❖ उसका ज़्यादा नुकसान दिमाग़ के परदों (Meninges) पर पड़ता है ।

क्योंकि पानी की लहरें दिमाग़ के परदों के साथ तअल्लुक़ रखती हैं दिमाग़ में फलुइड है और उसकी निसबत पानी से है । अगर आहिस्ता अहिस्ता पानी पीया जाये तो मुज़िर असरात कभी भी दिमाग़ पर नहीं पड़ेंगे ।

❖ मेदे में फ़ौरन ज़्यादा मिक़दार में पानी चला जाये तो उसकी सतही अन्दरुनी कैफियत में इन्बेसात यानी फैलाव होता है अगर यह फैलाव ऊपर की सतह से हो तो दिल (Heart) और फेफड़ों (Lungs) को नुक़सान का ख़तरा रहता है अगर यह दायें तरफ़ हो तो जिगर (Liver) को नुक़सान पहुँचता है और अगर ये बायें की तरफ़ हो तो तिल्ली (Spleen) को नुक़सान पहुंचता है अगर यह नीचे की तरफ़ हो तो आतों (Intestines) पर दबाव पड़ता है ।

खुले बर्तन में पीना

Drinking In An Open Vessel

हुज़ूरे अकदस (स0) हमेशा प्याले में पानी नोश फ़रमाया करते थे

(मामूलाते नबवी)

इन्सान जब पानी पीता है तो अगर तंग बर्तन में पीया जाये तो दिल को फ़रहत हासिल नहीं होती ।

फीसा गौरस का अमल

Action Of Feesa Gouras

मशहूर रियाज़ी दां था उसका मकूला था कि पानी खूले बर्तन में, जूता चमड़े का और आंटा जौ का, ये तीनों चीज़ें मुझे मिल जाये तो मैं आसमानों का हिसाब लगा सकता हूं ।

(ब–हवाला ज़बान मेरी है और बात उनकी)

Scanned by CamScanner

प्याले में सांस न लेना

Don't Breath In Bowl

अहादीस में प्याले में सांस लेने से मना फरमाया गया है ।

(मामूलाते नबवी)

कैसी बारीक़ इहतियात है जो हुज़ूरे अकदस (स0) ने पसन्द फरमाई दरअस्ल अगर प्याले में सांस लिया जाये तो इसमें ख़तरा होता है कि पानी सांस की नाली में चला जाये और सांस की घुटन का बाइस बनें ।

पानी में सांस लेने से ख़तरा होता है कि पानी नाक की नालियों में चला जाये फिर दिमाग़ और नाक के परदों में वरम का बाइस बन जाये ।

शीरीं पानी नोश करना

To Drink Sweet Water

हुज़ूरे अकदस (स0) हमेशा शीरीं (यानी कुदरती मीठा पानी) और सर्द पानी नोश फ़रमाते थे ।

(मदारेजुन नबुवत)

इस वक़्त पानी आलमी मसाइल में शुमार होता है । बेशुमार ममालिक में पानी की दुशवारी होती है । पाकिस्तान के बेशुमार ऐसे इलाक़े हैं जहां पानी मुश्किल से मयस्सर होता है खास तौर पर मीठा पानी । इसी तरह हजाज़े मुक़द्दस में हुज़ूरे अकदस (स0) के ज़माने में पानी की क़िल्लत थी ।

अब आप मीठा पानी नोश फरमाते थे क्योंकि पानी जिसमें सल्फर **(Sulphur)** और आयोडिन **(Iodine)** की मिक़दार पाई जाये उस पानी में सेहत मन्दाना अजज़ा होते हैं और जिसमें नमकीयात **(Salts)** ज़्यादा हों वो पानी सेहत के लिये मुज़िर है।

हुज़ूरे अकदस (स0) इस लिये मीठा पानी नोश फरमाते थे । एक माहिर ज्यालोजिस्ट की तहक़ीक़ के मुताबिक जहाँ खजूर के दरख़्त ज़्यादा हों वहाँ का पानी मीठा होगा ।

Scanned by CamScanner

आराम– सोना– नींद

Rest-Sleep

सहाबा रिज़वानुल लाहि अजमईन में से कोई आदमी भी कभी बेखाबी का शिकार नहीं हुआ उसकी वजह हुज़ूरे अकदस (स0) का वह मुबारक तरीक़ा है जिससे आप आराम फ़रमाते थे । आइये इस मुबारक तरीक़ा को मेडिकल और साइंस (Medical And Science) की रु से देखें । क्या यह तरीक़ा मौजुदा इनसानी ज़िन्दगी के लिये मुफ़ीद और मुअस्सर है ?

दायें करवट लेटना

Sleep On Right Side

हुज़ूरे अकदस (स0) दायें जानिब रु–ब किबला होकर आराम फरमाते थे ।

(ब–हवाला उसवए रसूल)

दिल बायें तरफ है अगर बायें तरफ़ लेटे तो मुनदरजा ज़ेल आवारेज़ात का क़वी ख़तरा होता है ।

❖ दिल के अमराज़ पैदा हो जाते हैं क्योंकि बायें करवट लेटने से मेदा और आतों का बोझ दिल पर पड़ता है जिसकी वजह से दौराने खून (Blood Circulation) और दिल की हरकात में कमी पैदा हो जाती है ।

❖ नींद के बारे में मुम्बई हस्पताल के तजरिबात (मुम्बई आडिटोरियम) डा. कृष्ण लाल शर्मा ने किये हैं ।

डा. मौसूफ़ का कहना है कि जिन मरीजों को मुसलसल दायें करवट सुलाया गया वह मरीज़ बहुत जल्द सेहतयाब हो गयें और जिन मरीजों को बायें करवट सोने दिया वह मरीज़ बेचैन ही रहें ।

जदीद तहक़ीक़ से यह बात ज़ाहिर है कि दायें तरफ़ सोना दिल (Heart) और मेदे (Stomach) के अमराज़ से ब़चाता है हत्ता कि बेहोशी और मुसलसल बेहोशी (Coma) से भी महफूज़ रखता है ।

Scanned by CamScanner

साहिबे मदारिजुन नबूवत ने उस की हिकमत यह नक़ल की है कि चूंकि बाईं जानिब दिल होता है अगर उस करवट की बल सोया जाये तो नींद बहुत गहरी आती है (हत्ता कि आदमी अपने आप से बिल्कुल बेख़बर हो जाता है हल्की आहट पर भी आंख नहीं खुलती ज़ाहिर है कि ऐसी नींद महमूद नहीं) और अगर दायें करवट सोया जाये तो दिल मुअल्लक़ रहता है और शदीद गहरी नींद नहीं आती (यानी ज़रा सी आहट पर आंख खुल जाती है उस तरह खुदा नखवासतह किसी भी नागहानी सूरत में इनसान आपनी और अपने अहल व अयाल की हिफाज़त कर सकता है) और सुबह की नमाज़ के लिये आसानी से आंख खुल जाती है । इसलिये हुज़ूर (स०) दौराने सफ़र अगर सुब्ह के वक़्त कभी आराम फरमाते तो दायां बाज़ों खड़ा करके हथेली पर सर रखकर आराम फरमाते ताकि नींद ज़्यादा गहरी न आये और नमाज़े फ़जर क़ज़ा न हो जाये । इस तरह हुज़ूर (स०) ने ज़िन्दगी गुज़ारी ।

बग़ैर मुंडेर की छत पर सोने से मना फ़रमाया

Don't Sleep On Without Parapet Roof

इनसान जब नींद से बेदार होता है या रात को आदमी पेशाब वग़ैरह के लिये उठे और अंधेरे में पता न चले और आखें नींद से बोझल हो रही हों तो ऐसी सूरत में बग़ैर मुंडेर वाली छत से गिरने के इमकातान बहुत ज़्यादा हैं । ऐसी इहतयातें अब जदीद दुनिया ने बहुत ज़्यादा कीं हैं हालांकि हुज़ूरे अकदस (स०) ने सदियों पहले फरमा दिया था ।

अब छत के इर्द गिर्द गिरिल लगवाते हैं ताकि इहतियात रहे जबकि दीन पहले ही से ऐसी चीज़ों का क़ायल है ।

औंधे मुंह न लेटो (हदीस)

औंधे मुंह लेटने से तमाम आज़ाए हज़्म और आज़ाए रईसा औंधे और बेतरतीब हो जाते हैं ।

इसका सबसे पहला नुक़सान दिमाग़ पर पड़ता है । दिमागी लहरें (Nerve Impulses) अपनी तरतीब से हट कर दूसरा मनफी रुख इख़्तियार कर लेती है हालांकि वह मुसलसल मुसबत अन्दाज़ से इन्सान को फायदा पहुँचाती हैं जब ये लहरें मनफ़ी आती हैं तो आदमी को डेरावने ख्वाब आते हैं ।

हत्ता कि माहिरे नफ़सीयात (Psychologist) के मुताबिक़ ऐसे शख़्स की ज़िन्दगी का रुख़ भी अपनी तरतीब से हट जाता है और वह उनकी सोच का हामिल हो जाता है ।

इमाम ग़ज़ाली फ़रमाते हैं कि औंधे मुंह लेटना अहमको का तरीक़ा है ।

❖ हदीस में है कि शैतान ऐसे सोता है, औंधे मुंह, नीज़ औंधे मुंह (उलटा) होने वाले शख़्स से शैतान बदफ़ेली करता है ।

ज़्यादा सोने से मना

अहादीस में ज़्यादा सोने से मना फरमाया गया है ।

(ज़ादुल मआद)

❖ ज़्यादा सोने से बदन में सुस्ती और कसल मन्दी पैदा हो जाती है जिससे जहां दुनिया के कामों में हरज पड़ता है वहां दीन को भी नुक़सान पहुंचता है ।

❖ ज़्यादा सोने से मिरगी (Epiplepy) और इख़्तिनाकुर रेहम या हिस्ट्रया (Hysteria) और बेख्वाबी के मरज़ में इज़ाफ़ा होता है ।

❖ ज़्यादा साने से आँखों के अमराज़ ख़ास तौर पर पपुटों की वरम पैदा होती है ।

ज़्यादा सोने से बदख़ाबी का मरज़ पैदा होता है और बदखाबी के मरीज़ों के लिये ज़्यादा सोना सम्मे क़ातिल से कम नहीं ।

जापानी क़ौम कम सोती है वो दुनिया की तरक़्क़ी याफ़्ता अक़वाम में शुमार होती है ।

Scanned by CamScanner

चमड़े और खूजुर की छाल का बिस्तर

हुज़ूरे अकदस (स0) का बिस्तर चमड़े का था जिसमें खजूर की छाल भरी हुई थी ।

(मदारेजुल नबुवत)

साइंस फ़ितरत की तरफ़ लौट रही है । जदीद तहक़ीक़ात के मुताबिक चमड़े से बनी हुई चीज़ इन्सानी जिसम के ऐन मुताबिक है ये किसी तौर पर भी नुक़सान देह नहीं हो सकती है ।

अमरिकन कॉनसिल फार हेल्थ

American Council For Health

इस इदारे ने अपनी हालिया रिपोर्ट में चमड़े का जिक्र भी किया है उनका कहना है कि चमड़े का बिस्तर बवासीर (Piles), कमर का दर्द (Backeache), आसाबी कमज़ोरी (Nerves Depression) और अज़लाती खिचाव (Muscles Weakness) का वाहिद इलाज है ।

(ब–हवाला सेहत और ज़िन्दगी)

साइंस और उसकी तमाम मशीनरी फिर से साइंसी उलूम को खंगाल रही है तो इसमें कहां–कहां शिफा है और शिफ़ा सिर्फ़ सुन्नत में है ।

खजूर की छाल रेशादार होने की वजह से फोम की मानिन्द नरम होती है लेकिन नुक़सान फोम जैसा हरगिज़ नहीं होता इसलिये यह मुफ़ीद है ।

ईशा से कब्ल सोने से मना

आकाए दो जहाँ (स0) ने ईशा से कब्ल सोने से मना फ़रमाया

Scanned by CamScanner

(ज़ादुल मआद– उसवए रसूल)

अस्र के बाद ज़मीन की गर्दीश महूरी और गर्दीशे तुलामी के कम होने से एक ख़ास किस्म की गैस ज़मीन से निकलती है जिससे आदमी के दिल व दिमाग़ पर एक बोझ व वज़्न पड़ता है अगर यही आदमी अस्र या ईशा के वक़्त सो जाये तो इस गैस का मुक़ाबला नहीं कर सकता जिसकी वजह से यह तरह–तरह के अमराज़ में मुबतला हो सकता है ।

वज़ू करके सोना

Sleeping After Wazoo

हुज़ूर सोने से कब्ल वज़ू फरमाया करते थे ।

(मामूलाते नबवी)

इशा की नमाज़ के बाद ज़िन्दगी के कुछ मामूलात होते हैं और जबकि आराम का वक़्त आ गया है तो ऐसी हालत में आराम व सकून के लिये वज़ू बहुत ज़रुरी है जैसा कि आपने पहले पढ़ा कि वज़ू आज़ा को तादील में लाता है ।

वज़ू बेखबी और बेसकूनी का माकूल इलाज है वज़ू डिपरेशन का फ़ौरी इलाज है ।

इस सकून के मकसद को हासिल करने के लिये सुन्नत है कि वज़ू करके सोया करें ।

सोने से क़बल लिबास तबदील करना

Dress Changes Befor Sleeping

आप (स०) सोने से क़बल तहमद बांधते और कुरता उतार कर टाँग देते (मामुलात ऐ नबी)

हिफ़ज़ाने संहत (Hygiene) का उसूल है कि जिस लिबास में आप तमाम दिन रहे उसी लिबास में हरगिज़ न सोयें बल्कि किसी ऐसे लिबास में सोएं जो हलका

और ढीला हो क्योंके तंग और सख़्त लिबास में नींद की देवी नही मिलती।

सोने का लिबास या स्लीपिंग ड्रेस (Sleeping Dress) एहले यूरोप की इस्तेलाह है जिसे वह सेहत के उसूलों के मुवाफिक़ और फख़्र समझ कर पहनते है। जबकि इसलाम ने इससे क़ब्ल मुसलमानों को रात का लिबास तहमद बाँधना बताया है क्योंके तहमद वाहिद इलाज है जो कि हलका खुला और ढीला है।

बिस्तर को झाड़ना

Incantantion To Bed

आप (स०) ने सोने से क़ब्ल बिस्तर को झाड़ने की हिदायत फरमाई है। (रहबर ए ज़िंदगी)

ऐसी एहतियाती तदबीर जो शायद किसी भी मज़हब में न मिले।

एक साहिब का वाक़िया है कि सरदी के मौसम में उनके बिस्तर में रज़ाई की गरमाइश की वजह से साँप घुस गया। जब वह सोने के लिये लेटे तो उस साँप ने उन्हें डस लिया जिसकी वजह से वह साहिब फ़ौत हो गये।

इस तरह के बे शुमार वाक़ियात रुनुमा होते हैं जो जिस्म व जान के लिये ख़तरा है।

लेकिन हुज़ूर अक़दस (स०) ने हर लिहाज़ से महफूज़ रहने के लिये बिस्तर को झाड़ने का हुक्म फरमाया है ताकि किसी क़िस्म के हशरातुलअर्ज़ मस़लन "कीड़ा, साँप, बिच्छू वग़ैरा नुक़सान न दे सकें।

हाजती

Bed Pan

आप (स०) की चारपाई के नीचे एक हाजती (वह बर्तन जिस में पेशाब किया जाता है) होती थी जिस में आप (स०) रात को उठ कर पेशाब किया करते थे।

(रहबर ऐ ज़िंदगी)

Scanned by CamScanner

अटैच बॉथरुम यूरोप ने दिया है सिर्फ़ इसलिये कि सर्दी की रात में जबकि आदमी गर्म बिस्तर में लेटा हूआ होता है और ये बाहर जाये तो उसे ठन्डी हवा लग जयेगी और उस हवा से फ़ालिज, लक़वा और जोड़ों के दर्दो का ख़तरा हो सकता है

हाजती इसी अटैच बॉथ का नाम है यह अमल भी मुसलमानों को मुसलसल एहत्यात सिखाता है ताकि इस तन्दरुस्ती से अल्लाहतआला की मुकम्मल अताअत कर सकें।

नोटः- मुफ़स्सरीन ने इस बात की वज़ाहत में मुख़तलिफ़ आराअ पेश की है मुफ़स्सरीन के मुताबिक़ हो सकता है कि आप (स०) ने ऐसा किसी सख़्त ज़रुरत या मरज़ में किया हो या सख़्त सर्दि में ऐसा करते हों।

(रहबर ए ज़िंदगी)

मुशकीज़े का मुँह बाँध कर के रखना

अगर मुशकीज़े (मौजूदा दौर में घड़ा, पानी का कैन, पानी की बालटी वग़ैरह) का मुँह खुला रह गया तो इसमें कोई कीड़ा, साँप, बिच्छू वग़ैरह जा सकता है (ज़ादुलमआद)

इसलाम ने इसकी एहत्यात यहाँ तक बताई है कि मुशकीज़े को मुँह लगा कर पानी न पियो ताकि ज़रर रिसाँ जानवर मुँह में न चला जाये।

यही एहत्यातें आज मोर्डन ज़िंदगी का हिस्सा हैं (These Care Are The Part Of Todays Modern Life)

उठने के फ़ौरन बाद हाथ धोना

अहादीस में उठने के फ़ौरन "बाद हाथ धोने की हिदायत है।

सोते हुए हाथ न जाने कहाँ कहाँ लगते रहते है और उन पर क़िस्म क़िस्म के जरासीम लगे रहते है।

अब अगर वही जरासीम आलूदा, हाथ पानी वग़ैह में डालेंगे तो पानी भी आलूदह हो जायेगा।

Scanned by CamScanner

इस ख़तर्नाक कैफ़ियत से बचने के लिये इसलाम ने उठने के फ़ौरन बाद हाथ धोने का हुक्म फ़रमाया है पेट के कीड़ों के बअज़ मरीज़ों के नाख़ूनों में कीड़े के अन्डे पोशीदह होते है। अगर यही हाथ बग़ैर धोए पानी में डालें तो यह अन्डे पानी में मिल कर दूसरे इन्सान के लिये ज़रर का बाइस बन सकते है।

सख़्त ज़मीन पर सोना

हुज़ूर (स०) के मामुलात में ज़मीन पर आराम फ़रमाना ज़्यादा साबीत है। कमर के मरीज़ों को सख़्त ज़मीन पर सोने का मशवरा दिया जाता है। हत्ता कि जदीद तहक़ीक़ (Modern Research) के मुताबिक़ जो आदमी सख़्त ज़मीन या तख़्ते पर सोएगा वह कभी भी रीढ़ की हड्डी के दर्द (Sciatica) हराम मग़ज़ के वरम (Inflammstion Of Cord) और कमर के दर्द में मुबतला नही होगा।

इसलाम ने सदियों पहले इस की तालीम दी है और हुज़ूर (स0) ने खुद कर के दिखाया है।

चिराग़ बुझा देना

हदीस में सोने से क़ब्ल चिराग़ बुझाने की हिदायत है। चिराग़ बुझा दिया करो वरना बत्ती चोहया लेकर छत पर पहुँच जाती है और छत को आग लग जाती है उलमाए हदीस ने अकसर अहादीस के हवाले में ऐसे ही फ़रमाया है।

आज के दौर में बल्ब बुझाना ज़रुरी है। एक तो अगर बल्ब बुझा हुआ होगा तो नीन्द सकून से आयेगी और आँखों पर बुरे असरात नही पढ़ेंगे।

अगर बल्ब बुझा हुआ होगा तो वह नही फटेगा। हत्ता कि बिजली बुझा कर सोए तो घर आग से बच जाता है। आज के दौर में बिजली की वजह से मार्कीटें जल जाती हैं। मज़ीद ये कि धुवाँ जो मुकम्मल कार्बन गैस से मुरक्कब है अगर कमरे में भर जाये तो दम घुट कर मरने का ख़तरा है।

Scanned by CamScanner

अफादाते क़िबला ज़ुलफ़िक़ार अहमद नक़शबन्दी मदद्ज़िल्लहुलआली

सोने की सुन्नतें और जदीद साइंस

नबीए करीम (स०) दायें तरफ़ सोया करते थे।आज साइन्स कहती है कि बायें करवट सोने वाले को गहरी नीन्द आती है, दायें करवट सोने वाले को गहरी नीन्द तो आती है मगर जल्द पूरी हो जाती है यानी वह जल्द उठ जाता है और उस की नीन्द भी पूरी हो जाती है।

डरावने ख़्वाब क्यों आते हैं ?

एक तहक़ीक़ के मुताबिक़ जो मैं अगले ही दिन पढ़ रहा था कि बायें तरफ़ सोने वालों को डरावने ख़्वाब ज़्यादा आते हैं और उसकी दलील दी हुई थी कि दिल बायें तरफ़ होता है और बायें करवट सोते हुऐ इन्सान के मेदे और आँतों का बोझ दिल पर पड़ता है। यूँ दिल पर फिज़ीकल प्रेशर पड़ता है और जब दिल पर प्रेशर होता है तो फिर इन्सान को डरावने ख़्वाब नज़र आते हैं, जैसे किसी ने दिल को पकड़ रखा हो।

देखिये आज साइन्स की दुनया इस के अन्दर हिकमतें ढूँढ रही है ये दायें तरफ़ सोने की हिकमतें थीं इसलिए नबी-ए करीम (स0) दायें तरफ़ आराम फ़रमाया करते थे। (मवाइज़े नक्श बन्दी)

लिबास

Dress

सफ़ेद लिबास

White Dress

हुज़ूर अक़दस (स०) सफ़ैद लिबास को पसन्द फरमाते थे।

(उसवऐ रसूल)

सफ़ैद लिबास हर क़िस्म के (मौसमी) सख़्त तग़य्युरात का मुक़ाबला करता है। सख़्त गर्मी के मौसम में सफ़ैद लिबास गर्म नही होता क्यों के यह गर्मी को जज़्ब नही करता बलकि रादे हरारत है सख़्त सर्दी के मौसम में सर्दी की वजह से लिवास ठन्डा नही होता।

करोमोपैथी के उसूल

Laws Of Chropmo Pathey

रगं और रोशनी के माहिरीन ने सफ़ैद लबिास को केंसर (Cancer) से बचाव का बेहतरीन तिरयाक़ क़रार दिया है हत्ता कि माहिरीन के मुताबिक़ जो सफ़ैद लिबास ज़ैब तन करेगा तो गलैंडज़ (Sebecious Glands) की वरम, पसीने के मसामात का बन्द होना, फफूँद के अमराज़ (Fungal Infection) जैसी ख़तरनाक और तकलीफ़ दिह बिमारियाँ नही होंगी।

उनहों ने जिल्दी एलर्ज़ी (Skin Allergy) और हाई बलड प्रेशर के शिकार मरीज़ों को हमेशा सफ़ैद लिबास ज़ेबतन करने का मशविरा दिया है। करोमोपैथी के उसूलों के मुताबिक़ सफ़ैद लिबास दिमाग़, दिल और जिल्द का मुहाफ़िज़ है।

(उसूल करोमोपैथी सफ़हा नम्बर 43)

Scanned by CamScanner

इबने बतुता का तजज़िया

Analysis Of Ibn Batoota

मशहूर सिय्याह इबने बतूता उस वक़्त ज़्यादा मुतअस्सिर हुआ जब उसने बर्रे सग़ीर के अवाम को सफ़ैद लिबास बकस़रत पहनते देखा।

उसका कहना है कि बर्रे सग़ीर के लोगों को सफ़ैद लिबास पसन्द करते देखा है। और उसके शिफ़ाई असरात से मुतअस्सिर हुआ।

(सफ़रनामा इबने बतूता)

ख़लील जिबरान और सफ़ेद लिबास

Khalil Jibran & White Dress

ख़लील जिबरान मशहूर मुफक्किर और मुसन्निफ़ गुज़रा है उसने सफ़ैद लिबास को सफ़ैद गुलाब के फूल से तशबिह दी है।

उसका कहना है कि गुलाब की सफ़ैद पत्ती और मेरे बदन का लिबास दोनों बिल्कुल बराबर हैं और उन दोनों से मुझको बहुत राहत मिलती है मैंने राहत का सामान उनही से पाया है।

गुलाब की सफ़ैद पत्ती का लिबास ज़ैब तन करूँ और सफ़ैद झड़ी तले खुले आँगन में तेरी मुस्कुराहट की सफ़ैद किरनों को सफ़ैद दाँतों में देखूँ और तेरे सफ़ैद लिबास को पसन्द करूँ।

डाक्टर लोही कोनी

Doctor Lohi Cony

जर्मनी का मशहूर मुफक्किर और मुआलिज गुज़रा है। इलाज बिलमाअ (Hydro Therapy) का मौजिद है।

इस के तमाम तजरिबात में माहिरीन ने सफ़ैद लिबास को अहमियत दी है

अगर चे लोही के बॉथ (Bath) लिबास के बग़ैर भी है लेकिन जो (Bath) है उनमें सफ़ैद लिबास को फौकियत हासिल है। (लोही कोनी मौजिद फन)

सूती लिबास

Cotton Dress

आप (स०) का लिबास सूती था। (रहबरए ज़िन्दगी)

फितरत क़ायम और इन्सान फिर फिरा कर वापस फ़ितरत की तरफ़ लौट रहा है। मसनूई (Artificial) लिबास पहनने से क्या नुक़सानात होते हैं और सुन्नत के मुताबिक़ लिबास सुती लिबास के क्या फ़ायद है, ये ऐक मुसतक़िल मौज़ूअ है।

०अगर खुदाना खुवासता किसी को आग लग जाये तो सूती लिबास से ज़्यादा नुक़सान नहीं पहुँता।

०यह गरमी को बर्दाशत करता है गर्म तरीन इलाक़ों में इस के बग़ैर गरमी का क़तई ईलाज नही।

जिस बदन पर सूती लिबास होगा वह बदन बहुत कम जिल्दी अमराज़ (Skin Deseases) का शिकार होगा क्यों कि पौलिस्टर और मसनूई नाईलौनी धागे से तैयार लिबास जिस्म की रगड़ से गर्म तरीन (Hostest) हो जाता है और उसकी हरारत जिस्म की हरारत से बढ़ कर जिल्दी अमराज़ का बाइस बनता है।

०सुती लिबास जिस्म की हरारत को मुतावज़न रखता है जिस से जिल्दी और नुसियाती अमराज़ से बचाव होता है।

०पौलिसटर के लिबास से दो ख़तरनाक अमराज़ पैदा हो रहे हैं एक औरत में लिकोरिया और मर्दो में जिन्सी अमराज़ (Sexual Diseases) खुद गौर करें वज़ाहत नही करेंगे।

मोटा लिबास

Thick Dress

हुज़ूर अक़दस (स०) मोटा लिबास ज़ेबतन फ़माते थे। (मामूलातए नबवी स०)

Scanned by CamScanner

तमाम सहाब-ए-कराम (रज़ि०) और औलिया-ए-किराम का ज़िन्दगी भर मोटा लिबास ज़ैबतन करने का मामूल रहा है।

मौजूदा साइन्स ने तवील रिसर्च के बाद यह नतीजा अख़्ज़ किया है।

डाक्टर लूथर एम के तजरिबात

Experience Of Dr. Loother M

डाक्टर लूथर जर्मनी का मशहूर माहिरे (Cancer Specialist) सरतान है। उसका कहना है कि जब से अवाम और इन्सानियत ने मोटा सूती लिबास पहन्ना छोड़ा है उस वक़्त से यह मुन्दर्जा ज़ैल अमराज़ का शिकार हो गई हैं।

०जिल्दी सरतान (Skin Cancer)

०जिल्द के गुदूद का सरतान (Skin Glands Cancer)

०औरतों में सीना का सरतान (Breast Cancer½)

०टिशूज़ का सरतान (Tissues Cancer)

०हारमौनज़ का सरतान (हारमौनरी सिस्टम में सरतानी रतूबत का बढ़ाव) (Harmones Cancer)

०जिल्दी ख़ारिश (Allergic Keramtitis)

०ऐगज़िमा (Eczema)

०ऐलर्जी (Allergy)

(तहक़ीक़ देहली)

डाक्टर लूथर की ज़िन्दगी के तजरिबात बिलकुल दुरुस्त है या उसने बेकार सालहा साल की रिर्स्च में उमर गवाँ दी है, आप का क्या ख़्याल है ?

लेकिन मेरे हुज़ूर अक़्दस (स०) का सिर्फ़ एक एक तरीक़ा इस तहक़ीक़ पर ग़ालिब और हावी है।

इस ज़मन में एक वाक़्या अर्ज़ है एक साहिब फ़रमाने लगे मुलतान काटन मिल में मेरा एक साथी था। हम फैक्ट्री में इखट्टे मुलाज़िम थे।

Scanned by CamScanner

एक दफ़ा मालूम हुआ कि उसने फैक्ट्री से इसतिफ़ा दे दिया है हालाँकि हज़ारों रुपए उसकी तनख़्वाह थी मैंने इसकी वजह पूछी तो कहने लगा।

"फैक्ट्री ने फैसला क्या है कि अवामी। रुजहान के मुताबिक़ अब औरतों और मर्दो के लिए बारीक कॉटन बनाया जायेगा जबकि बारीक लिबास पहनना सुन्नत के ख़िलाफ है इसलिये मैं इस अमल में हिस्सेदार नहीं हो सकता।" इसलिए उस ने मिल छोड़ दी।

मै एक दफ़ा कराची की सड़क पर जा रहा था एक बड़ी कार मेरे क़रीब रुकी और उस मे मेरा वही दोस्त बाहर निकला मुहब्बत से मिला अहवाल दर्याफ़्त किया तो कहने लगा "जब से मैंने वह मिल छोड़ी है अल्लाह तआला ने उस से बेहतर नौकरी अता फ़रमा दी और यह मोटर भी! मालिक करीम का बहुत एहसान है।" यह वाक़या ज़िमनी तौर पर अर्ज़ था उम्मीद है आप के लिए और मेरे लिए सबक आमोज़ होगा।

रंगत की तब्दीली

Change of Colour

हमारे ख़ून में एक माद्दा मेलानिन (Melanin) होता है जिस से हमारे जिस्म का रंग तबई हालत पर रहता है लेकिन जब किसी की जिल्द पर धूप की तमाज़त, सर्दी की सख़्ती और मौसम की तबदीली असर अन्दाज़ होती है तो जिल्द की हालत तब्दील हो जाती है।

और ऐसा सिर्फ़ उस वक़्त होता है जब बारीक और पतला लिबास ज़ेबे तन किया जाये।

पगड़ी

Turban

हुज़ूरे अकदस (स0) ने तीन रंगों के पगड़ीयां इस्तेमाल फरमाई है ।

(1) सफेद (White) (2) सब्ज़ (Green) (3) सयाह (Black)

पगड़ी सुन्नते रसूल (स0) है उसके बेशुमार फायदे हैं ।

❖ जो आदमी पगड़ी बांधेगा वो लू लगने (Sun Stroke) से बच जायेगा

❖ पगड़ी बांधने से दाइमी नज़ला नहीं होता अगर हो भी तो उसके असरात कम हो जाते हैं ।

❖ सर दर्द के लिये पगड़ी बहुत मुफ़ीद है । जो पगड़ी बांधे उसे दर्देसर (Headache) का खतरा कम हो जायेगा ।

❖ पगड़ी दिमागी तक़वीयत और याद्दाश्त बढ़ाने के लिये अजीबुल असर है ।

❖ पगड़ी का शिमला रीढ़ की हड्डी के वरम (Inflammation Of Vertebral Column) से बचाता है ।

❖ पगड़ी का शिमला निचले धड़ (Lower Half Of The Body) के फालिज से बचाता है । क्ययेंकि पगड़ी का शिमला हराम मग्ज़ (Spinal Cord) को सर्दी गरमी और मौसमी तग़य्यूरात से महफ़ूज़ रखता है इसलिये ऐसे आदमी को सरसाम (Meningitis) के ख़तरात कम रहते हैं ।

❖ फिज़यालॉजी की तहक़ीक़ और रीसर्च के मुताबिक जब हराम मग्ज़ (Spinal Cord) महफ़ूज़ रहेगा तो जिस्म का आसाबी निज़ाम (Nervous System) और अज़लाती निज़ाम (Muscles System) दुरुस्त और मुनज़्ज़म रहेगा । और ऐसा पगड़ी के शिमले में मुमकीन है ।

सफ़ेद पगड़ी की वजह से दिमाग़ और दिमाग़ी आसाब (Brain Nerves) गर्मी की तमाज़त और लू के असरात से महफूज रहते हैं ।

ऐसे आदमी को लू लगना (Sun Stoke) सरसाम, दिमाग़ी फ़ालिज जैसे अमराज बहुत होते हैं ।

फैसल आबाद के एक साहिब ने बताया कि मुझे दाइमी नज़ला और दर्दे सर था किसी ने पगड़ी बांधने का मशवरा दिया मैंने मुस्तक़िल पगड़ी इस्तेमाल की मुझे बेहतरीन अफाक़ा हुआ ।

Scanned by CamScanner

पगड़ी और माहिरीने नफ़सीयात

Turban & Psychologist

इरशादे नबवी है कि इमामा बांधा करो इसमें इल्म में बढ़ जाओगे

(फतहूल बारी)

डाक्टर अज़ीज़ अहमद माहिरे नफसीयात है, फ़रमाने लगे कि मैं जब आला डिग्री के लिये मुल्क से बाहर गया तो वहाँ नफसीयाती अमराज़ से बचने के लिये पगड़ी नुमा एक कपड़ा सा सर पर बांधा जाता था । मैंने जब देखा तो फौरन बोला ये तो पगड़ी है और जिस अन्दाज़ से आप बांध रहे हैं हमारे नबीये करीम (स0) ने बिल्कुल इसी तरह बांधी थी । माहिरीन वह पगड़ी नुमा कपड़ा इसलिये बांधते थे कि इससे आदमी के अन्दर मसाइल व मसाइब की बरदाश्त और कुव्वत पैदा होती है और आदमी बेशुमार नफ़सीयाती अमराज़ से बच जाता है। (हिल्म नाम है कुव्वते बरदाश्त और तदब्बुर का)

सदियों कब्ल आकाए दो जहाँ (स0) ने फ़रमा दिया और मौजूदा साइंस अब तहक़ीक़ कर रही है ।

सब्ज़ लिबास

Green Dress

सफेद लिबास तो आप (स0) को महबूब था ही मगर रंगीन में सब्ज़ लिबास तबीयते पाक हो ज़्यादा पसन्द था ।

(ज़ादुल मआद)

सब्ज़, बाग़ात और फूलों वग़ैरह का देखना रुह व जिस्म की तसकीन के लिये मुफीद है इसी तरह सब्ज़ लिबास भी जिस्म की राहत के लिये मुफीद तर है ।

करोमोपैथी के माहिरन के मुताबिक सब्ज़ लिबास जिस्क के बेशुमार अमराज़ के लिये मुफीद है इसके बारे में एक मुकम्मल तहक़ीक़ है इस तहक़ीक़ के मुताबिक

— —

Scanned by CamScanner

सब्ज़ लिबास मनदरजा जेल अमराज से बचाता है :–

❖ मेदे के अलसर के लिये

❖ मेदे की पुरानी तेज़ाबियत के लिये

❖ आसाबी और दिमागी खिचाव के लिये

❖ डिपरेशन के लिये

❖ दिल के अमराज खास तौर पर हाई बलड परेशर के लिये

❖ जिल्दी अमराज़ खास तौर पर जलनदार वरज़िश के लिये

सोचने की बात है आक़ा की एक–एक पसन्द कितनी क़ीमती है ।

(उसवल करोमोपैथी)

सुर्ख लिबास से ना पसन्दीदगी

Revulsion From Red Dress

हुज़ूरे अकदस (स0) ने सुर्ख लिबास को ना पसन्द फ़रमाया (मामूलाते नबवी) इस जम्द में उलमा–ए कराम ने बेशुमार अहादीस के हवाले दिये हैं

(मरदों के लिये)

सुर्खी मरदों के हारमुनरी निज़ाम **(Harmones System)** के लिये बहुत नुकसान देह है इससे जिस्म के हारमुन्ज़ मनफी असर पड़ता है जिसकी वजह से एक खास क़िसम की रतवबज **(Secretion)** उन से खारिज होकर खून में शामिल होती है उस रतवबत से माहिरीने नफसीयात के मारीन करोमुपैी के मुताबिक मरदरजा जेल अमराज़ पैदा होते हैं मज़ीद यह कि सुर्ख लिबास मरदों की फितरी पसन्द के बरअकस है ।

हाई बलड परेशर **(High Blood Pressure)**

जिन्सी हिजान **(Increased Sexual Desire Sexual Exctation)**

जिल्दी अमराज **(Skin Diseases)**

गदूद की वरम (Inflammation Of The Glands)

गदह दरक़ीय पर असर (Inflection Of Thyroid Gland)

कमर के बालाई अज़लात का खिचाव (Backache Pain In Back)

मसहूज खास :– बाज़ कुतुम में मफसरीन ने किसी खास हिकमत के तिहत सुर्खलिबास के इस्तेमाल की रियात दी है । लेकिन आजीज़ ने किाब असवए रसूले अकरम (स0) के हवाले से तहरीर किया है कि आप (स0) की तबियत मुबारकि को गहरा सुर्ख लिबास ना पसन्द था ।

टखनों के ऊपर लिबास

हुज़ूरे अकदस (स0) ने फ़रमाया लुंगी आधी पिन्डली तक होनी चाहिये और उसके के नीचे टखनों तक भी कोई मज़ायका नहीं टख़नोन से नीचे जितने हिस्से पर लुंगी लटकेगी वह हिस्सा आग में जलेगा । और जो शख्स मुतकबराना कपड़े को लटकायेगा क़ियामत में अल्लाहतआला उसकी तरफ नज़र नहीं करेंगे।

(अबूदाऊ, इबने माजा, उसवए रसूल (स0)

ताहिर मनीर साहिब फौम का कारोबार कते हैं अच्छे पढ़े लिखे हैं फरमाने लगे:–

मैं अमरिका (मशी गिन स्टेट) के सफर पर था । वहां एक हेल्थ सैन्टर (Health Centre) देखा मेरे दोस्त ने कहा कि यहा चलो आप को मज़ेदार चीज़ें दिखाता हूं हम इकट्ठे उस सैन्टर में पहुंचे बड़ा सैन्टर था उसके मुखतलिफ शोबे थे हम फिरते फिराते शेबा लिबास में पहुंचे तो एक जगह लिखा हुआ था शलवार को टखनों से ऊपर लटकाओ (शलवार मैं कह रहा हूं वहा लफ़्ज़ लिबास था) उससे टखनों की वरम, जिगर की अन्दरुनी वरम, और पागल पन से बच जाओगे।

मैं चौंक पड़ा मैंने पूछा कि ये सैन्टर मुसलमानों का है ? कहा कि नहीं यह ईसाइयों का तहक़ीक़ी इदारह है और यहां यह सेहत के मुखतलिफ उनवानात पर तहक़ीक़ करते हैं जिन में बाज़ इसलामी अहकामात भी ज़ेरे बहस आते हैं ।

अगर शलवार टखनों के नीचे होगी तो बाज़ अहम तरीन शिरयानें (Arteries) और वरीदें ऐसी होती हैं जिन को हवा और पानी की अशद् ज़रूरत होती है और अगर वह ढकी रहें तो जिस्म के अन्दर मज़कूरा बाला तबदीलियाँ आती हैं।

Scanned by CamScanner

रेशम का लिबास और जदीद साइंस

Silk Dresses and Modern Science

रेशम मर्दों के लिए हराम है। (रहबरे ज़िन्दगी)

तबई नुक़्तए नज़र से देखा जाए तो इस का मिज़ाज गरम माइल बा ख़ुश्क है। रेशम का कीड़ा शहतूत के दरख़्त पर ज़्यादा होता है और इस की तारों का मजमूआ अब्रेशम कहलाता है और अब्रेशम के ख़ोल के अन्दर कीड़ा होता है जो बनते–बनते आख़िरकार ख़ुद मर जाता है।

रेशम और जदीद साइंस

Silk And Modern Science

किंग एडवर्ड शशुम का तज़किरा डॉक्टर ब्राऊन ने किया है कि वह रेशम का लिबास नहीं पहनता था दर अस्ल एक दफ़ा उसे जिस्म में सख़्त तपिश और बेचैनी महसूस हुई और उसकी तबीअत गुस्से की तरफ़ माइल हुई, हालाँकि उससे क़ब्ल उसकी यह कैफ़ियत नहीं थी।

उसने मुआलिजीन से मशवरा किया। मुआलिजीन ने दवाएँ दीं कुछ बैरूनी लगाने की दवाएँ भी दीं लेकिन अफ़ाक़ा न हुआ।

वह हमेशा रेशम का लिबास ज़ेब तन करता था एक दफ़ा उसने रेशम का लिबास उतारा तो उसे कुछ राहत महसूस हुई उस ने दूसरा लिबास दो दिन पहना तो मरज़ में काफ़ी अफ़ाक़ा महसूस हुआ अब उस ने कुछ अरसा के लिए रेशमी लिबास छोड़ा तो मरज़ दूर हो गया। वह समझ गया कि मरज़ दर अस्ल इसी लिबास की वजह से है।

Scanned by CamScanner

औरतों का पुश्ते क़दम तक शलवार लटकाने का हुक्म

औरतों को टख़्नों से नीचे कपड़ा लटकाने का हुक्म फ़रमाया।

(मदारिजुन्नबुव्वत– मामूलाते नबवी स०)

ताहिर मुनीर साहिब का तज़किरा पिछली मरतबा में पहले गुज़र चुका है।

यह भी इस बाब का हिस्सा है कि औरतों को शरीअत में शलवार क़दमों की पुश्त तक लटकाने का हुक्म है।

ताहिर मुनीर साहिब के मुताबिक़ वहाँ मैं इस सेंटर के मुतअल्लिक़ीन से मिला तो उन्होंने अजीब व ग़रीब इनकिशाफ़ात किए उनका कहना है कि

औरतें अगर खुले पाइंचों वाली शलवार या टख़्नों के ऊपर शलवार लटकाएंगी तो उनके अन्दर निसवानी हारमोन्ज़ की कमी या ज़्यादती हो जाएगी इसकी वजह से वह अन्दरूनी वरम (Vaginal Inflammation) कमर के दर्द (Backache), आसाबी कमज़ोरी और खिचाव का मुसतक़िल शिकार रहेंगी।

ताहिर साहिब फ़रमाने लगे जब मैंने यह कैफ़ियत ख़ाना दार औरतों में देखी तो वाक़िई जिन्होंने सुन्नत से एराज़ किया हुआ था उनकी हालत बिल्कुल वैसी ही थी।

कॉलर और जदीद साइंस

Collar & Modern Science

कॉलर का इसतिमाल मुहलिक ख़तरात का पेश ख़ीमा

इसलामी लिबास में कॉलर ना पसन्द किया गया है। (मामूलाते नबवी स०)

इसमें शक नहीं कि तहज़ीबे जदीद बाज़ ख़ूबियों की हामिल व सरमाया दार तो ज़रूर है लेकिन इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता इसके उयूब इसके महासिन से ज़्यादा और कहीं ज़्यादा हैं, फिर क्या बद बख़्ती है कि सर ज़मीने पाक के बसने वाले इन ख़ूबियों को इख़तियार करने से तो पहलू तही और किनारा कशी

से काम लेते हैं लेकिन तहज़ीबे जदीद की तमाम बुराईयाँ, ख़राबियाँ, उयूब और तमाम नक़ाइस इनके अन्दर घर करते जाते हैं। मुल्क के हालात पर एक सरसरी नज़र डालिये तो यह हक़ीक़त रोज़े रोशन की तरह अयाँ हो सकती है कि इस वक़्त सारा मुल्क तफ़रीह परस्ती के रंग में डूबा हुआ है, फ़ैशन परस्ती की वबा आम हो रही है पुराने तौर तरीक़े रुख़सत हो रहे हैं और इनकी जगह नई बातें ले रही हैं और ख़ास तौर पर मुल्क का तालीम याफ़्ता तबक़ा तो इन बातों में पेश पेश है। एक लिबास को ही लीजिए तो इसमें भी सौ तरह के फ़ैशन निकाल लिए गये हैं अगर अहादीस व सुन्नते नबवी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा जाए तो यह बात वाज़िह है कि सुन्नत के मुताबिक़ जहाँ दीनी फ़वाइद व महासिन हैं वहाँ दुनयवी फ़वाइद भी कसीर तादाद में हैं। सुन्नत के मुताबिक़ लिबास में कॉलर का इसतिमाल ममनू है लेकिन जदीद तहज़ीब ने कॉलर और टाई का इसतिमाल करके अपने आप को तरह तरह की बीमारियों में मुबतला कर दिया है क्योंकि कॉलर या टाई की बन्दिश से मुंदरजा ज़ैल बीमारियों के वक़ूअ होने के ख़तरात बढ़ जाते हैं।

गुद्दा दरक़िया का नुक़्स

गुद्दा दरक़िया (गर्दन में अगली तरफ़ का उभार) जिस्म के मुख़तलिफ़ नज़ामों की तामीर व तरक़्क़ी में हिस्सा लेता है इसी गुद्दे में नुक़्स होने की वजह से आदमी का क़द और नशोनुमा मुतअस्सिर होते हैं। तंग कॉलर में गर्दन आसानी से इधर उध र हरकत नहीं कर सकती जिस की वजह से गुद्दा दरक़िया पर रगड़ पहुंचती है और जिस्मे इनसानी बे शुमार नक़ाइस में मुबतला हो जाता है।

दिमाग़ के तग़ज़िये में कमी

हमारे दिल से ख़ून दिमाग़ी शरियानों के ज़रिए सप्लाई होता है जब कॉलर की बन्दिश शरियानों पर पड़ती है तो इससे दिमाग़ को ख़ून की सप्लाई कम होती है जिस की वजह से दिमाग़ की कमज़ोरी, ज़ुअफ़े बसारत, बे ख़्वाबी, बालों का गिरना और गंजापन हो जाता है। हत्ता कि बाज़ हालात में शरियानों के मुसलसल दबने की वजह से मौत के ख़तरात बढ़ जाते हैं। अगर दिमाग़ी मिहनत करने वाले

Scanned by CamScanner

अशख़ास कॉलर का इसतिमाल तर्क न करें तो दिमाग़ की सलाहियतों में नुक़्स वाक़े हो जाता है और पागलपन का शदीद ख़तरा हर वक़्त मरीज़ के सर पर मण्डलाता रहता है।

अमले तनफ़्फ़ुस की रुकावट

Cease To Follow Breath Action

हमारे फेफड़े ख़ून से कार्बनडाई ऑक्साईड को निकालने और ऑक्सीजन को जिस्म में दाख़िल करने का एक इनतिहाई अहम किरदार अदा करते हैं। लेकिन बन्द कॉलर के इसतिमाल से अमले तनफ़्फ़ुस में ग़ैर महसूस तरीक़े से रुकावट पैदा होती रहती है क्योंकि अज़लात गर्दन कॉलर की बन्दिश और रगड़ के आदी बन जाते हैं। अगर कोई नया पहनने वाला बन्द कॉलर की सदरी, जैकिट, शिरवानी, क़मीज़ या टाई इस्तिमाल कर ले तो अपना दम घुटता हुआ महसूस करेगा। गर्दन की पुश्त के अज़लात में खिचाव, दबाव, दिमाग़ी सुकून में कमी और उलझन फ़ौरी तौर पर महसूस करेगा। मैं यह नहीं कहता कि मज़कूरा लिबास क़ाबिले इसतिमाल नहीं बल्कि इनको इसतिमाल करते वक़्त कॉलर की बन्दिश का ख़ास ख़्याल रखा जाए और यह उसी सूरत में मुमकिन है जब हम कॉलर छोड़ कर "बैन" या बग़ैर बैन के लिबास इसतिमाल करें।

बरतानिया मेन्ज़ ड्रेस रिफ़ार्म पार्टी की काविशें

Make An Attempt Britain Men's Dress Reform Party

मज़कूरा ख़तरात को मग़रिब ने महसूस किया इस ज़िम्न में 1930 ई० में बरतानिया में एक जमाअत मौजूदा लिबास में इसलाह की ग़रज़ से क़ाइम की गयी जिसका नाम "मेंन्ज़ ड्रेस रीफ़ार्म पार्टी" रखा गया।

इस जमाअत ने सबसे पहले कॉलर के ख़िलाफ़ जिहाद का आग़ाज़ किया। और इस बारे में डॉक्टरों से इसतिसवाब किया जिन का मुत्तफ़क़ा फ़ैसला था कि तंग

कॉलर के इस्तेमाल को फौरन तर्क कर देना जिसमे इनसानी के लिए अज हद जरूरी है।

चुनाँचे लंदन के डॉक्टरों ने "डेली मेल" के एक नामा निगार को एक बयान दिया वह मुंदरजा ज़ैल है :

डॉक्टर अल्फ़र्ड सी जार्डन का बयान

Statement Of Dr. Alfard C Jarden

डॉक्टर अल्फ़र्ड सी जार्डन ऑनरेरी सेकरेट्ररी "मेन्ज़ ड्रेस रीफ़ार्म पार्टी" ने कहा कि गंज की शिकायत औरतों की ब निस्बत मर्दों में ज़्यादा होती है और यह बात पायाए तकमील को पहुंच चुकी है कि मर्दों में कॉलर और सख़्त टोपी का इसतिमाल इन शिकायात का मौजिब होता है। वजह यह है कि ख़ून इन ख़लियात तक नहीं पहुंच सकता जहाँ से बाल उगते हैं। इलावा अज़ीं कॉलर का इसतिमाल काम करने की सलाहियत कम कर देता है।

सर डब्ल्यू ऑरबूथ नाट का बयान

Statement Of Sir W Rbooth Naught

सर डब्ल्यू ऑरबूथ नाट कहते हैं कि तंग कॉलर का इसतिमाल सर खुसूसन दिमाग़ से ख़ून की वापसी में मज़ाहिम होता है। यहाँ शिरयानें बहुत बारीक होती हैं और इन पर ज़्यादा दबाव की सूरत में इनके फट जाने का क़वी इहतिमाल होता है और झुकने की हालत में यह ख़तरा और ज़्यादा बढ़ जाता है।

Scanned by CamScanner

डॉक्टर गोल्ड सीलीबी का बयान

Statement Of Dr. Gold Silibi

लंदन के डॉक्टर गोल्ड सीलीबी की राय है कि कॉलर की इसतिमाल साँस की आमद व रफ़्त में रुकावट का बाइस होता है। हवा जब कारबन ले कर बाहर ख़ारिज होना चाहती है तो कॉलर की बन्दिश इसकी राह को बन्द कर देती है और यह ग़लत हवा तमाम जिस्म को गरम और ख़ून को कसीफ़ करके मुसामात बन्द कर देती है।

इलावा अज़ीं यह अम्र मुसल्लम है कि गुद्दा तरमसिया बुलूग़त से पहले जिसमानी नशोनुमा का ज़रिया है लेकिन कॉलर पहनने की सूरत में जब यह गुद्दा हवा और धूप से पोशीदा रहता है तो जिसमानी नशोनुमा पर इस का बहुत असर होता है और यह अम्र बच्चों में ज़्यादा नुक़सानदेह होता है। माहिरीन के मुताबिक़ अगर कॉलर के इसतिमाल का रवाज न होता तो मौजूदा नस्ल के आदमियों के क़द व क़ामत में नुमायाँ फ़र्क़ होता और वह ज़्यादा मज़बूत और ज़्यादा क़द आवर होते।

आख़िर में एक वाक़िआ अर्ज़ करना मुनासिब होगा कि एक साहिब मुसलसल बद हज़मी, दिमाग़ी परशानी, सीने की जकड़न के मरीज़ रहते थे कुदरती तौर पर ख़ान्दानी दर्ज़ी फ़ौत हो गया वह एक कुहना मश्क़ और तजरिबाकार दर्ज़ी के पास गए। जब उन्होंने क़मीज़ के कॉलर की पैमाइश बताई तो दर्ज़ी ने कहा कि साहिब इस तरह की तंग कॉलर वाली क़मीज़ पहन कर आप दिमाग़ और मेदे के मरीज़ बन सकते हैं। इस साहिब को फ़ौरन अक़्ल आई और उन्होंने तंग गला रखवाना छोड़ दिया और बिल्कुल तंदुरुस्त हो गए।

लिबास की सफ़ाई और जदीद साइंस

Washing Dress & Modern Science

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से मरवी है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के नज़दीक मोमिन की तमाम ख़ूबियों में लिबास

का सुथरा रखना और कम पर राज़ी होना।

हुज़ूरे अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैले और गंदे कपड़ों को मकरूह और नापसंद जानते थे।

(उसवए रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) (मदारिजुन्नबुव्वत)

माहिरीने नफ़सियात लिबास की सफ़ाई पर इसरार कर रहे हैं क्योंकि लिबास की सफ़ाई का तअल्लुक़ इनसान की पूरी ज़िंदगी से मुतअल्लिक़ है इस इंसान ने घर में रहना है अगर इस का लिबास साफ़ न हुवा तो उसकी औलाद उसी के तरीक़े को देख कर अपनी ज़िंदगी गुज़ारेगी।

मुआशरती इनसान अगर नासाफ़ और गंदे मैले लिबास को लेकर अफ़राद से मिलेगा तो मुआशरे में इसके ऊपर इज़्ज़त की निगाह नहीं उठेगी बल्कि इसको हक़ारत की निगाह से देखा जाएगा और यह निगाह तहक़ीरे तुरफ़ैन को नफ़सियाती **(Psycholgical)** अमराज़ में मुबतला करती है।

इसके नासाफ़ लिबास पर अफ़ूनत और गंदगी की अनवा व अक़साम के जरासीम **(Germs)** लगे हुए होते हैं और बाज़ जरासीम मरज़ को फैलाने **(Infectious Germs)** वाले होते हैं जिससे पूरे मुआशरे में बीमारियाँ फैल कर माहौल और फ़ज़ा को मकद्दर कर सकती हैं।

अमले तहारत **(Sterlization)** इसलाम ही ने यूरोप को दिया है हालाँकि यूरोप की तारीख़ में यह बात वाज़िह है कि यह लोग महीनों गुसल नहीं करते थे। क्योंकि बरफ़ानी लोग हैं इसलिए ज़्यादा बीरूनी सफ़ाई पर ज़ोर देते हैं और जिस्म की अफ़ूनत और सडांद ख़तम करने के लिए सिर्फ़ बॉडी स्प्रे **(Body Spray)** पर इकतिफ़ा करते हैं।

बैरूनी तौर पर सफ़ाई भी इसलाम ने दी है

मशहूर डॉक्टर सर्जन (वलियम कम्फो डॉक) जिस ने जार्ज इलग्जेण्ड्रा का इलाज किया था उसका कहना है कि यूरोपी लिबास की सफ़ाई से ग़ाफ़िल थे उन्हें लिबास को साफ़ करनें में कुछ इस तरह कूफ़्त होती थी जिस तरह नाखुन उतारने

में फिर तुर्को से उन्होंने लिबास की सफाई सीखी। और ज़ाहिर है कि तरुर्क मुसलमान है।

रोज़ा

Fasting

इसलाम उसूल अम्न और हिफ़ाज़त का मज़हब है यह जहाँ अपने मानने वालों को अहकामात देता है वहाँ इन अहकामात के अन्दर हिफ़ाज़त भी फ़राहम करता है जहाँ इसलाम ने नमाज़ का हुक्म दिया है तो फिर इसकी अदाइगी में हुक्मे ख़ुदावंदी की बंदगी में जिंदगी और तन्दुरुस्ती की ताज़गी भी मिलती है।

इस तरह रोज़ा जहाँ हुक्मे ख़ुदावंदी है वहीं यह बे शुमार दुनयवी फ़वाइद से माला माल है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से रिवायत है कि रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रोज़ा रखा करो तन्दुरुस्त रहा करोगे। (तिबरानी)

एक नहीं बे शुमार मुबारक हदीस में बयान हैं जिस में वाज़िह मज़मून है कि रोज़ा अमराज़ से शिफ़ा है।

रोज़ा और जदीद साइंस

Fasting And Modern Science

इसलाम ने रोज़ा को मोमिन के लिए शिफ़ा क़रार दिया है इस ज़िम्न में साईंस क्या कहती है? कुछ वाक़िआत पेशे ख़िदमत हैं।

फ़्रांस में यहूदियों के रोज़े रखने का वाक़िआ

मैं फ़्रांस गया वहाँ मेरे एक दोस्त कहने लगे कि रमज़ानुल मुबारक आया मुझे रोज़े रखने थे, तरावीह पढ़नी थी, मैंने अपने प्रोफ़ेसर से कहा कि मुझे छुट्टी दे दो

उस ने कहा क्यों? मैंने कहा कि मुझे रोज़े रखने हैं, तरावीह पढ़नी है उसने कहा कि तुम्हें छुट्टी की क्यों ज़रूरत है? मैंने कहा कि मैंने फुलाँ जगह दूर जाना है और रोज़ाना आ जा नहीं सकता। उस ने कहा ठीक है । मैं वहाँ से दूर एक मस्जिद में गया वहाँ देखा कि दाढ़ियाँ, अमामे बांधे हुए, जुब्बे पहने हुए, मिस्वाक से वजू कर रहे हैं, अज़ानें दे रहे हैं और नमाज़ें पढ़ रहे हैं, एक आगे कुरआने पाक पढ़ रहा है दूसरे पीछे सुन रहे है फिर मज़े की बात यह कि रोज़े भी रख रहे हैं यानी पूरा महीना!!!

फिर इतिकाफ़ में भी बैठे, सुबह व शाम रोज़े की सेहरी व इफ़तारी मामूल के मुताबिक़ होती रही। कहने लगे कि फिर मैं ईद पढ़ कर वापस आ गया। मैंने प्रोफ़ेसर से कहा आपकी बड़ी मेहेरबानी कि आप ने मुझे ऐसे लोगों से मिला दिया। मेरा रमज़ानुल मुबारक तो बहुत अच्छा गुज़रा तो वह दोस्त प्रोफ़ेर मुसकुराया। मैंने पूछा क्या बात है? कहने लगा आप को मालूम भी है कि यह सब यहूदी थे मैंने कहा कि मुझे तो नहीं मालूम कहने लगा उन्होंने एक **(Project)** के तेहत काम किया कि इसलाम में मुसलमान मुस़लसल एक महीना रोज़े रखते हैं हम भी वैसे रोज़े रख कर देखते हैं कि इसलाम के अन्दर क्या अच्छाईयाँ हैं, और अच्छाईयाँ होंगी तो हम बिना कहे इसलाम कुबूल कर लेंगे।

(उलामाए किराम और उनकी की ज़िम्मेदारियाँ)

अमरिकी ग़ैर मुस्लिम का वाक़िआ

An Event Of American Non-Muslim

मुझे एक साहिब मिले कहने लगे मैं रोज़े रखता हूँ! अमरीकन था मैंने कहा वह क्यों तुम तो ग़ैर मुसलिम हो? कहने लगा वह ऐसे कि साल में कुछ वक़्त इंसान पर ऐसा गुज़ारना चाहिए कि वह डाइटिंग करके अपने नज़ामे हज़्म **(Digesive System)** को कुछ अरसा फ़ारिग़ रखे। इस तरह उसके अन्दर मौजूद रतूबतें जो वक़्त के साथ साथ ज़हर **(Poison)** में तबदील हो जाती हैं, रोज़े से ख़तम हो जाती

Scanned by CamScanner

हैं। इन ख़तरनाक रतूबतों के ख़तम होने से पेचीदा अमराज़का ख़ातिमा हो जाता है और इस तरह नज़ाने हज़्म पहले से मज़बूत हो जाता है।

इसलिए मैंने और मेरी बीवी ने यह फ़ैसला किया कि हम महीने में इस तरह रोज़ा रख कर डाईटिंग (**Dieting**) करेंगे। मैंने कहा हमें यह सुन्नत दीन में बताई गयी है कि हर महीने अय्यामे बैज़ के तीन रोज़े रखें बिलखुसूस वह लोग जो गैर शादी शुदा हों उनके अनदर एक डिसिपिलन (**Discipline**), सब्र और ज़ब्ते नफ़्स पैदा होता है।

(मवाई नक्शबन्दी)

सिकन्दरे आज़म और अरस्तु

The Great Alexendra & Aristotle

दोनों यूनानी लीडर और अपने फ़ील्ड के माहिर हैं। उन्होंने फ़ाक़ा और फिर मुसलसल फ़ाक़ा को जिस्म की तवानाई के लिए ज़रूरी क़रार दिया है।

सिकन्दरे आज़म कहता है कि मेरी ज़िंदगी मुसलसल तजरिबात और हवादिस में गुज़री है जो आदमी सुबह और शाम खाने पर इकतिफ़ा करता है वही ऐसी ज़िंदगी गुज़ार सकता है जिसमें किसी क़िस्म की लचक न हो।

मैंने हिन्दुस्तानी सर ज़मीन पर गरमी के ऐसे ख़ित्ते पाए जहाँ सब्ज़ा जल गया था लेकिन वहीं मैंने सुबह से शाम तक कुछ न खाया न पिया तो मैंने अपने अन्दर एक ताज़गी और तवानाई महसूस की।

(सिकन्दरे आज़म – महफूज़ुर्रहमान अख़तरी देहलवी)

चन्द गुप्त मोरया और चांकिया जी महाराज

Chandra Gupt Morya & Chanakya Ji Maharaj

चन्द्र गुप्त मोरया के वज़ीर बा तदबीर चांकिया जिस की मशहूर तसनीस "अर्थ शास्त्र" में उसका क़ौल है कि :

"मैंने भूका रह कर जीना सीखा और भूका रह कर उड़ना सीखा है। मैंने दुश्मनों की दतबीरों को भूके पेट से उल्टा किया है।

(सिकन्दरे आज़म)

गांधी जी की ख़्वाहिश

Desire Of Gandhi Ji

गांधी जी के फ़ाक़े मशहूर हैं। फ़ेरोज़ राज़ ने गांधी जी की ज़िंदगी के हालात में यह बात लिखी है कि गांधी जी रोज़े के क़ाइल थे।

वह कहा करते थे कि इनसान खा खाकर अपने जिस्म को सुस्त कर लेता है और काहिल कस्ल मंद जिस्म न दुनिया का और न ही महाराज का।

अगर तुम जिस्म को गरम और मुतहर्रिक रखना चाहते हो तो जिस्म को कम अज़ कम दो और रोज़े रखो सारा दिन जाप अलापरु और फिर शाम को बकरी के दूध से रोज़ा खोलो।

दास्ताने गांधी जी (ख़ास नम्बर रिसाला देहली)

Scanned by CamScanner

यूनिवर्सिटी ऑफ़ ऑक्सफ़ोर्ड की हैरांगी

Surprised Of University Of Oxford

प्रोफ़ेसर मोरपॉल्ड ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी की पहचान हैं। उन्होंने अपना वाक़िआ बयान किया कि मैंने इसलामी उलूम का मुतलआ किया और जब रोज़े के बाब पर पहुंचा तो मैं चोंक पड़ा कि इसलाम ने अपने मानने वालों को इतना अज़ीम फ़रमोला दिया है। अगर इसलाम अपने मानने वालों को और कुछ न देता सिर्फ़ यही रोज़े का फ़ारमोला ही देता तो फिर भी इससे बढ़ कर इनके पास और कोई नेमत न होती।

मैंने सोचा कि इसको आज़माना चाहिए फिर मैंने रोज़े मुसलमानों की तर्ज़ पर रखना शुरू कर दिए। मैं अरसा दराज़ से मेदे के वरम **(Stomach Inflammation)** में मुबतला था। कुछ दिनों के बाद ही मैंने महसूस किया कि इसमें कमी वाक़ि हो गयी है। मैंने रोज़ों की मश्क़ जारी रखी फिर मैंने जिस्म में कुछ और तबदीली भी महसूस की और कुछ ही अरसा बाद मैंने अपने जिस्म को नॉरमल पाया।

हत्ता कि मैंने एक माह के बाद अपने अन्दर इनक़िलाबी तबदीली महसूस की।

(रिसालए नई दुनिया)

पोप एल्फ़ गॉल का तजरिबा

(P.E.G.s Analysis)

यह हॉलेण्ड का बड़ा पादरी गुज़रा है। इस ने रोज़े के बारे में अपने तजरिबात बयान किये हैं।

मैंने अपने रूहानी पैरोकारों को हर माह तीन रोजे रखने का तलक़ीन करता हूँ। मैंने इस तरीका कार के ज़रिए जिस्मानी और वज़्नी हम आहंगी महसूस की मेरे मरीज़ मुसलसल मुझ पर ज़ोर देते कि मैं इन्हें कुछ और तरीका बताऊँ लेकिन मैंने यह उसूल वज़ा कर लिया कि उन में वह मरीज़ जो ला इलाज हैं उनको तीन यौम नहीं बल्कि एक माह तक रोज़े रखवाए जाएँ।

मैंने शूगर (Dibetese) दिल के अमराज़ (Heart Diseases) और मेदे के अमराज़ (Stomach Diseases) में मुबतला मरीज़ों को मुसतक़िल एक माह रोज़े रखवाए।

शूगर के मरीज़ों की हालत बेहतर हुई इनको शूगर कण्ट्रोल हो गयी।

दिल के मरीज़ों की बेचैनी और साँस का फूलना कम हुआ।

मेदे के मरीज़ों को सबसे ज़्यादा अफ़ाक़ा हुआ।

(हमफ़रिये के तजरिबात)

डॉक्टर लोथर जेम ऑफ़ कैम्ब्रिज

Dr. Lother Gem Of Cambridge

फ़ारमाकॉलोजी (Pharmacology) के माहिर थे। हर चीज़ को ग़ौर और तवज्जुह से देखना उनके मिज़ाज में था। उन्होंने सारा दिन ख़ाली पेट (रोज़े दार) शख़्स के मेदे की रतूबत (Stomach Secretion) ली और फिर उसका लेबारेट्री टेस्ट किया उस में उस ने महसूस किया कि वह गिज़ाई मुतअफ़्फ़िन अज्ज़ा (Food Particals Septic) जिन से मेदा अमराज़ को कुबूल करता है। बिल्कुल ख़तम हो जाते हैं।

लोथर का कहना है कि रोज़ा जिस्म और ख़ास तौर पर मेदे के अमराज़ में सेहत की ज़मानत है।

सिग्मण्ड नाईड

Sigmond Narayad

मशहूर माहिरे नफ़सियात है और इसकी थ्यूरी (Theory) नफ़सियाती माहिरीन (Psychologists) के लिए निशाने राह है। मौसूफ़ फ़ाक़ा और रोज़े का क़ाइल था।

उसका कहना है कि रोज़े से दिमाग़ी और नफ़सियाती (Mentasl And Psycological) अमराज़ का कुल्ली ख़ातिमा होता है जिससे इनसानी में मुख़तलिफ़ अदवार आते हैं

लेकिन रोज़ादार आदमी का जिस्म मुसलसल बैरूनी दबाव (External Pressure) को कुबूल करने की सलाहियत पा लेता है। रोज़ादार को जिस्मानी (Body Congestion) और ज़ेहनी डिप्रेशन (Mental Deperssion) से सामना नहीं होता।

पैरा साईकॉलोजी की तहक़ीक़

Research Of Para-Psychology

माद्दे की ज़िंदगी और माद्दियत के तअल्लुक़ के बाद बे सुकून हो कर खुद कुशी की तरफ़ माइल आज की इनसानियत फिर से सुकून के फूलों की तलाश में एक बाग लगा रही है जिसे पैरासाईकॉलोजी कहते हैं।

मग़रिबी माहिरीने साईंस (European Scientists), माहिरीन तिब्ब (Medical Experts) और माहिरीने नफ़सियात (Psychology) ने मिल कर इसलामी ज़िंदगी पर तहक़ीक़ और रिसर्च का नया बाब खोला है क्योंकि मग़रिब मौजूदा ज़िंदगी से तंग है और इस वक़्त सबसे ज़्यादा

खुद कुशी

इकदामे क़त्ल

ट्रैफ़िक हादिसात

अस्मत दरी

हम जिन्स परस्ती

इग़वा

क़त्ल

इनतिक़ामी कारवाईयाँ

बम धमाके

इजतिमाई क़त्ल

Scanned by CamScanner

नाजाइज औलाद

तलाकें

वग़ैरा जैसे मुहलिक, खतरनाक और आलम को तबाही के गढ़े में डालने वाले हादिसात की तरफ़ यूरोप और मग़रिबी मुआशरा गामज़न है।

अब वह इस दलदल से निकलना चाहते हैं लेकिन वह समझते हैं कि नजात का रास्ता सिर्फ़ इसलाम है।

"एक नौ मुसलिम ख़ातून ने जब गल्बर्ग, डिफ़ेन्स और लिब्रई जैसे मग़रिब ज़दा मुआशरे को देखा तो फ़ौरन बोली "ऐ काश मैं जिस मुआशरे को थूक कर आ रही हूँ आज इस ग़लीज़ मुआशरे को यह लोग चाट रहे हैं"।

कैसी वज़नी और अहम बात है। ग़ौर फ़रमाएँ।

शायद कि उतर जाए तेरे दिल में मेरी बात।

मुसतशरिक़ीन इस वक़्त इसलामी तालीमात को खंगाल कर उनमें अपने लिए इसलाही रास्ते और तरक़्क़ी की राहें तलाश कर रहे हैं।

रोज़ा के बारे में यूरोपियन माहिरीन मुसलसल तहक़ीक़ कर रहे हैं हत्ता कि वह इस बात को तसलीम कर चुके हैं कि रोज़ा जहाँ जिसमानी ज़िंदगी को नई रूह और तवानाई बख़्शता है वहाँ इससे बे शुमार मआशी (Economical) परेशानियाँ भी दूर होती हैं। क्योंकि जब अमराज़ कम होंगे तो हस्पताल का कम होना पुरसुकून मुआशरे की अलामत है।

आज यूरोप फिर फिरा कर इसलाम की तरफ़ लौट रहा है और हम यूरोप की तक़लीद में अंधे दौरे चले जा रहे हैं।

एक मशहूर आलमी करेक्टर ने क्या ख़ूब बात कही है कि आज का जवान जिस यूरोप को नमूना समझ रहा है मैंने इस को देख लिया है। सलामती चाहते हो तो इसलाम की तरफ़ लौट आओ।

मशहूर फ़िलमी अदाकार अबिद बट की ज़िंदगी इस बात का नमूना है कि जब वह इसलामी ज़िंदगी की तरफ़ आया तो फिर उसका लिबास सुन्नत के मुताबिक़, असा इत्तिबाइ सुन्नत में, सियाह पगड़ी, ज़ुल्फ़ें और दाढ़ी देखकर मालूम होता है कि

Scanned by CamScanner

यह कोई पुराने बुजुर्ग हैं हालांकि इसकी साबिका जिंदगी पूरा आलम जानता है।

आज भी मौका है कि हम फिर सुन्नत की जिंदगी की तरफ़ लौट आएं और हमारा मक़सूद और मतलूब हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की जिंदगी हो। अगर हम ने साईंस को मान कर सुन्नत नबवी स0 पर अमल किया तो फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क्या मुंह दिखाएंगे। मज़ीद यह कि अगर साईंस को मान कर इन तरीक़ों को इख़तियार किया जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताए तो इससे दुनयवी फ़वाइद का मिल जाना मुमकिन है लेकिन दीनी फ़वाइद या अज्र की उम्मीद रखना बेवकूफ़ी है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के फ़रमान के लिए किसी दलील की ज़रूरत नहीं।

वह दिन भी आएगा जब हर इन्सान रोज़ा रखेगा

The Day Will Come When Everyone Will Fast

या अय्युहल्लज़ीन आमनू कुति ब अलैकुमुस्सियामु कमा कुति बा अलल्लज़ी न मिन क़बलिकुम लअल्लकुम तत्तकून 0 अैयामम् मादूदातिन फ़मन का न मिन कुम मरीज़न औ अला स फ़ रिन फ़इद्दतुम मिन अैयामिन उख़र् व अलल्लज़ीन युतीकूनहू फ़िदयतु तआमिम् मिस्की न फ़ मन ततौव्वअ ख़ैरन फ़ हु व ख़ैरुल लहू, व अन तसूमु ख़ैरुल लकुम इन कुनतुम तालमून् 0

तरजुमा : "ऐ लोगो जो ईमान लाए हो तुम पर रोज़े फ़र्ज़ कर दिये गए जिस तरह तुम से पहले अम्बिया के पेरोओं पर फ़र्ज़ किये गए थे इससे तवक़्क़ु है कि तुम में तक़वा की सिफ़त होगी। चन्द मुक़र्रर दिनों के रोज़े हैं। अगर तुम में से कोई बीमार हो या सफ़र पर हो तो दूसरे दिनों में इतनी ही तादाद पूरी कर ले। जो लोग रोज़े रखने की कुदरत रखते हों (फिर न रखे) तो वह फ़िदया दें। एक रोज़े का फ़िदया मसकीन को खाना खिलाना है और जो अपनी ख़ुशी से कुछ ज़्यादा भलाई

Scanned by CamScanner

करे तो यह उसी के लिए बेहतर है। अगर तुम समझो तो तुम्हारे हक में बेहतर हैं"।

"अगर तुम सच को समझो तो तुम्हारे हक़ में यह बेहतर है कि मुशकिलात के बावजूद भी तुम रोज़ा रखो"।

हम सब जानते हैं कि सूरह बक़रा की आयात 183 से 187 तक दीन के एक अहम रुक्न रोज़ा का हुक्म दिया गया है और तमाम तफ़सीलात बताई गयी हैं। हम आयत नम्बर 184 आख़िरी हिस्से में बयान करदा हक़ाइक़ का तिब्बी नुक्ता–ए–नज़र से मुतालआ करेंगे। इस हिस्से में बताया गया है कि रोज़ा एक अच्छी चीज़ है जिससे बहुत से फ़वाइद हासिल होते हैं। इस अम्र का भी एलान किया गया है कि हम इससे हासिल करदा रहमतों को समझ सकते हैं अगर हम सच को पहचान सकें।

अभी कुछ अरसा क़ब्ल तक यह समझा जाता था कि रोज़ा बजुज़ इस के और कुछ नहीं कि इससे नज़ामे हज़्म को आराम मिलता है। जैसे जैसे तिब्बी इल्म ने तरक़्क़ी की इस हक़ीक़त का बतदरीज इल्म हासिल हुआ कि रोज़ा तो एक तबई मोजिज़ा है। इसी वजह से आयाते करीमा का आख़िरी हिस्सा ये कहता है। "अगर तुम समझो तो"।

आईये जैसा कि हम पहली आयात के सिलसिले में कह चुके हैं अब साईंसी तनाज़ुर में देखें कि किस तरह रोज़ा हमारी सेहत मंदी में मदद देता है।

(क) रोज़े का नज़ामे हज़्म पर असर

Effection On Digestive System Of Fasting

नज़ामे हज़्म जैसा कि हम सब जानते हैं कि एक दूसरे से क़रीबी तौर पर मिले हुए बहुत से आज़ा पर मुशतमिल होता है अहम आज़ा जैसे कि मुंह और जबड़े में लुआबी गुदूद, ज़बान, गला, मुक़व्वी नाली (**Alimentary Canal**) यानी गले से मेदा तक ख़ोराक ले जाने वाली नाली) मेदा, बारह अंगुश्ती आँत, जिगर और लबलबा और आँतों के मुख़तलिफ़ हिस्से वग़ैरा तमाम नज़ाम इस नज़ाम का हिस्सा हैं। इस

Scanned by CamScanner

नज़ाम का अहम हिस्सा यह है कि यह सबसे पेचीदा आज़ा खुद बखुद एक कम्प्यूटरी नज़ाम से अमल पज़ीर होते हैं। जैसे ही हम कुछ खाना शुरू करते हैं या खाने का इरादा ही करते हैं यह नज़ाम हरकत में आ जाता है और हर अज़्व अपना मख़्सूस काम शुरू कर देता है। यह ज़ाहिर है कि सारा नज़ाम चौबीस घण्टे ड्यूटी पर होने के इलावा आसाबी दबाव और ग़लत क़िस्म की ख़ोराक की वजह से एक तरह से घिस जाता है। क्योंकि जिगर के खाना हज़्म करने के इलावा पन्द्रह मज़ीद अमल भी होते हैं। यह इस तरह थकान का शिकार हो जाता है। जैसे एक चौकीदार सारी उमर के लिए पहरे पर खड़ा हो। इसी की वजह से सफ़रा की रतूबत जिसका इख़राज हाज़िमा के लिए होता है, मुख़तलिफ़ क़िस्म के मसाइल पैदा करती है और दूसरे आमाल पर भी असर पज़ीर होती है।

दूसरी तरफ़ रोज़े के ज़रिए जिगर को चार से छः घण्टों तक आराम मिल जाता है। यह रोज़े के बग़ैर कतई ना मुमकिन है। क्योंकि बे हद मामूली मिक़दार की ख़ोराक यहाँ तक कि एक ग्राम के दस्वीं हिस्से के बराबर भी, अगर मेदे में दाख़िल हो जाए तो पूरा का पूरा नज़ामे हज़्म अपना काम शुरू कर देता है और जिगर फ़ौरन मसरूफ़े अमल हो जाता है। साईंसी नुक्ता–ए–नज़र से यह दावा किया जा सकता है कि इस आराम का वक़्फ़ा एक साल में एक माह तो होना ही चाहिए।

जदीद दौर का इनसान जो अपनी ज़िंदगी की ग़ैर मामूली क़ीमत मुक़र्रर करता है मुतअद्दिद तिब्बी मआयनों के ज़रिए अपने आप को महफ़ूज़ समझना शुरू कर देता है। लेकिन अगर जिगर के खुलिये को कुव्वते गोयाई हासिल होती तो ऐसे इनसान से कहता कि "मुझ पर एक अज़ीम इहसान सिर्फ़ रोज़े के ज़रिए से ही कर सकते हो"।

जिगर पर रोज़े की बरकात में से एक वह है जो ख़ून के कीमयाई अमल पर असर अन्दाज़ी से मुतअल्लिक़ है। जिगर के इनतिहाई मुशकिल कामों में एक काम इस तवाज़ुन को बर क़रार रखना भी है जो ग़ैर हज़्म शुदा ख़ोराक और तहलील शुदा ख़ोराक के दरमियान होता है। इसे या तो हर लुक़्मे को स्टोर में रखना होता है या फिर ख़ून के ज़रिए इस के हज़्म होकर तहलील हो जाने के अमल की निगरानी करना होती है। जबकि रोज़े के ज़रिए जिगर तवानाई बख़्श खाने के स्टोर

करने के अमल से बड़ी हद तक आज़ाद हो जाता है। इसी तरह जिगर अपनी तवानाई ख़ून में ग्लोबलिन (Globulin) (जो जिस्म के महफ़ूज़ रखने वाले Immune सिस्टम को तक़वियत देता है) की पैदावार पर सर्फ़ कर सकता है। रोज़े के ज़रिए गले को और ख़ोराक की नाली को जो बे हद हस्सास हिस्से हैं, जो आराम नसीब होता है इस तुहफ़े के ज़रिए जो भी असरात हासिल करता है वह बे हद फ़ाइदामन्द होते हैं। इस ज़रिए से मेदे से निकलने वाली रतूबतें भी बेहतर तौर पर मतवाज़िन हो जाती हैं। इसकी वजह से रोज़ा के दौरान तेज़ाबियत (Acidity) जमा नहीं होती अगरचे आम क़िस्म की भूक से यह बढ़ जाती है। लेकिन रोज़ा की नीयत और मक़सद के तेहत तेज़ाबीयत की पैदावार रुक जाती है। इस तरीक़े से मेदे के पट्ठे और मेदे की रतूबत पैदा करने वाले ख़लिये रमज़ाम के महीने में आराम की हालत में चले जाते हैं। जो लोग ज़िंदगी में रोज़े नहीं रखते, उन के दाओं के बर ख़िलाफ़ यह साबित हो चुका है कि एक सेहतमंद मेदा शाम को रोज़ा खोलने के बाद ज़्यादा कामयाबी से हज़म का काम सर अंजाम देता है।

रोज़ा आँतों को भी आराम और तवानाई फ़राहम करता है। यह सेहतमंद रसूबत के बनने और मेदे के पट्ठों की हरकत से होता है। आँतों के ध्राईन के ग़िलाफ़ के नीचे महफ़ूज़ रखने वाले नज़ाम का बुनियादी उंसुर मौजूद होता है। जैसे अँतड़ियों का जाल, रोज़े के दौरान इन को नई तवानाई और ताज़गी हासिल होती है। इस तरह हम इन तमाम बीमारियों के हमलों से महफ़ूज़ हो जाते हैं जो हज़म करने वाली नालियों पर हो सकते हैं।

(ख) रोज़े के दौरान ख़ून पर फ़ाइदामंद असरात

दिन में रोज़े के दौरान ख़ून की मिक़दार में कमी हो जाती है। यह असर दिल को इनतिहाई फ़ाइदामंद आराम मुहैया करता है। ज़्यादा अहम बात यह है कि सीलों के (Intercellular) दरमियान माइ की मिक़दार में कमी की वजह से टिशू यानी पट्ठों

पर दबाव कम हो जाता है। पट्ठों पर दबाव या आम फ़हम डास्टालिक (Diastolic) दबाव दिल के सतह पर होता है यानी इस वक़्त दिल आराम या रेस्ट की सूरत में होता है। मज़ीद बरआं, आज का इनसान माडर्न ज़िंदगी के मख़सूस हालात की बदौलत शदीद तनाव या हाईपरटेंण्शन (Hypertension) का शिकार है। रमज़ान के एक माह के रोज़े बतौर ख़ास; स्टालिक प्रेशर को कम करके इनसान को बे पनाह फ़ायदा पहुंचाते हैं। रोज़े का सबसे बड़ा असर दौराने ख़ून पर इस पहलू से है कि यह देखा जाए कि इससे ख़ून की शरियानों पर क्या असर होता है। इस हक़ीक़त का इल्म आम है कि ख़ून की शरियानों की कमज़ोरी और फ़रसूदगी की अहम तरीन वुजूहात में से एक वजह ख़ून में बाक़ी मांदा मादे (Remnants) का पूरी तरह तहलील न हो सकना है। जबकि दूसरी तरफ़ रोज़े में बतौरे ख़ास इफ़तार के वक़्त के नज़दीक ख़ून में मौजूद ग़िज़ाईयत के तमाम ज़र्रे तहलील हो चुके होते हैं। इनमें से कुछ भी बाक़ी नहीं बचता। इस तरह ख़ून की शरियानों की दीवारों पर चरबी या दीगर अज्ज़ा जम नहीं पाते। इस तरह शरियानें सुकड़ने से महफ़ूज़ रहती हैं। चुनाँचे मौजूदा दौर की इनतिहाई ख़तरनाक बीमारियों जिस में शरियानों की दीवारों (Arterioscleresis) की सख़्ती नुमायाँ तरीन है से बचने की बेहतरीन तदबीर रोज़ा ही है। क्योंकि रोज़े के दौराने गुर्दे जिन्हें दौरान ख़ून ही का एक हिस्सा समझा जाता है। आराम की हालत में होते हैं। तो इनसानी जिस्म के इन अहम आज़ा की बहाली भी रोज़े की बरकत से बहाल हो जाती है।

(ग) ख़लिया, सेल ;ब्मसससद्ध पर रोज़े का असर

रोज़े का सबसे अहम असर ख़लिया के दरमियान और ख़लियों के अन्दरुनी सैयाल मादों के दरमियान तवाज़ुन को क़ाइम पज़ीर रखना है। चूँकि रोज़े के दौरान मुख़तलिफ़ सैयाल मिक़दार कम हो जाते हैं। ख़लियों के अमल में बड़ी हद तक सुकून पैदा हो जाता है। इसी तरह लुआब दार झिल्ली की बालाई सतह से मुतअल्लिक़ ख़लिये जिन्हें एपीथेलियल (Epithelial) सेल कहते हैं और जो जिस्म

Scanned by CamScanner

की रतुबत के मुतवातिर इखराज के जिम्मेदार होते हैं उनको भी सिर्फ़ रोज़े के ज़रिए बड़ी हद तक आराम और सुकून मिलता है जिसकी वजह इनकी सेहतमंदी में इज़ाफ़ा होता है। खलियातियात के इल्म के नुक्ता–ए–नज़र से यह कहा जा सकता है कि लुआब बनाने वाले गुदूद गर्दन के गुदूद तैमूसिया, और लबलबा (Pencreas) के गुदूद शदीद बेचैनी से माहे रमज़ान का इनतिज़ार करते हैं ताकि रोज़े की बरकत से सुस्ताने का मौक़ा हासिल कर सकें और मज़ीद काम करने के लिए अपनी तवानाईयों को जिला दे सकें।

(घ) रोज़े का आसाबी नज़ाम पर असर
(Nervous System)

इस हक़ीक़त को पूरी तरह समझ लेना चाहिए कि रोज़े के दौरान चन्द लोगों में चिड़चिड़ापन और बेदिली का आसाबी नज़ाम से कोई तअल्लुक़ नहीं होता। इस क़िस्म की सूरते हाल उन इनसानों के अन्दर अनानियत (Egotistic) या तबीयत की सख़्ती की वजह से होती है। इसके बर ख़िलाफ़ रोज़े के दौरान आसाबी नज़ाम मुकम्मल सुकून और आराम की हालत में होता है। इबादात की बजाआवारी से हासिल शुदा तस्कीन हमारी तमाम कदूरतों और गुस्से को दूर कर देती है। इस सिलसिले में ज़्यादा खुशू व खुज़ू और अल्लाह की मर्ज़ी के सामने सर नगूं होने की वजह से तो हमारी परेशानियाँ भी तहलील हो कर ख़तम हो जाती हैं। इस तरह आज के दौर के शदीद मसाइल जो आसाबी दबाव की सूरत में होते हैं तक़रीबन मुकम्मल तौर पर ख़तम हो जाते हैं।

रोज़े के दौरान हमारी जिन्सी ख़्वाहिशात चूँकि इलाहिदा हो जाती हैं चुनाँचे इस वजह से भी हमारे आसाबी नज़ाम पर मन्फ़ी असरात मुरत्तब नहीं होते।

रोज़ा और वुज़ू के मुशतरका असर से जो मज़बूत हम आहंगी पैदा होती है इस से दिमाग़ में दौराने ख़ून का बे मिसाल तवाज़ुन क़ाइम हो जाता है जो सेहतमंद आसाबी नज़ाम की निशानदही करता है। जैसा कि मैं पहले बयान कर चुका हूँ।

Scanned by CamScanner

अन्दरूनी गुदूदों को जो आराम और सुकून मिलता है वह पूरी तरह से असाबी नज़ाम पर असर पज़ीर होता है जो रोज़े का इस इनसानी नज़ाम पर एक और इहसान है।

इनसानी तहतुश्शुऊर जो रमज़ान के दौरान इबादत की मेहेरबरनियों की बदौलत उलझन को दूर करने में मदद देता है।

(च) ख़ून की तश्कील और रोज़े की लताफ़तें

ख़ून हड्डियों के गूदे में बनता है जब कभी जिस्म को ख़ून की ज़रूरत पड़ती है एक खुदकार नज़ाम हड्डी के गूदे को हरकत पज़ीर (Stimulate) कर देता है और लाग़र लोगों में यह गूदा बतौरे ख़ास सुस्त हालत में होता है। यह कैफ़ियत बड़े बड़े शहरों में रहने वालों के ज़िम्न में भी पाई जात है इसी की वजह से पज़्मुर्दा और पीले चेहरों में रोज़ बरोज़ इज़ाफ़ा होता जा रहा है।

रोज़े के दौरान जब ख़ून में गिज़ाई माद्दे कम तरीन सतह पर होते हैं। हड्डियों का गूदा हरकत पज़ीर हो जाता है। इसके नतीजे में लाग़र लोग रोज़ा रख कर असानी से अपने अन्दर ज़्यादा ख़ून पैदा कर सकते हैं। बहरे हाल यह तो ज़ाहिर है कि जो शख़्स ख़ून की पेचीदा बीमारी में मुबतला हो उसे तिब्बी मुआयना और डॉक्टर की तज़वीज़ को मलहूज़े ख़ातिर रखना ही पड़ेगा। चूँकि रोज़े के दौरान जिगर को ज़रूरी आराम मिल जाता है यह हड्डी के गूदे के लिए ज़रूरत के मुताबिक इतना मवाद मुहैया कर देता है जिससे असानी से और ज़्यादा मिक़दार में ख़ून पैदा हो सके।

इस तरह रोज़े से मुतअल्लिक़ बहुत सी अक़साम की हयातियाती बरकात के ज़रिए एक पतला व दुब्ला वज़न बढ़ा सकता है इसी तरह मोटे और फ़रबा लोग भी सेहत पर रोज़े की उमूमी बरकात के ज़रिए अपना वज़न कम कर सकते हैं।

हाँ मेहेरबान क़ारी ! आईये अब आयत नम्बर 184 के आख़िरी हिस्से को दोबारा याद करें और कुर्आन के पाक मोजिज़े की मुसर्रत से लुत्फ़अंदोज़ हों।

Scanned by CamScanner

"अगर तुम समझो (यानी अगर तुम जिस्म के हयातियाती इल्म को समझो) तो तुम्हारे हक़ में यह अच्छा है कि तुम रोज़े रखो"। (चाहे इस में तुम्हें मुशकिलात भी नज़र आएँ)।

रोज़े के मआशरती असरात

Social Effection Of Fasting

इसलाम इनसाफ़, अद्ल और ग़रीबपरवरी सिखाता है। जब पेट भरा हुआ होता है तो दूसरों की प्यास का इहसास नहीं होता।

रोज़ा मुसलमान को तर्स, रहम और ग़रीबपरवरी सिखाता है। यह चीज़े इसलामी मुआशरे का हिस्सा हैं।

यूरोप ग़रीबों की इमदाद और इहसास के लिए बे शुमार क़वानीन मुरत्तब कर रहा है। लेकिन इसतिहसाल की दुनिया शायद यूरोप में ज़्यादा आबाद है।

मावज़े तिंग चीन का क़ाइदे आज़म था। उस के सामने चीन के मआशी मसाइल थे। उस ने अपने खुतबात में इस बात पर ज़ोर दिया है कि ख़ुद खाना खाते हुए अपने पड़ोसी और देखने वालों को भी शामिल कर लिया करो। खुद भूके रह कर भूकों का इहसास पैदा करो। मज़कूरा तालीमात दरअस्ल मावज़े तिंग की नहीं बल्कि इसलामी तालीमात हैं।

इसलाम ग़रीबों का मज़हब है। इसलाम अमीरों को अम्न देता है। इसलाम दौलत का मुख़ालिफ़ नहीं बल्कि इस के कमाने और ख़र्च करने की इहतियात बताता है।

Scanned by CamScanner

ग़ैर मुल्की माहिरीन की पाकिस्तान में सर्वे रिपोर्ट

Survey Report In Pakistan By Foreighner Expert

जर्मनी, इंगलेण्ड और अमरीका के माहिर डॉक्टरों की एक टीम रमज़ानुल मुबारक में इस बात की तहक़ीक़ करने के लिए आई कि रमज़ानुलमुबारक में (E.N.T.) कान, नाक और गले के अमराज़ कम हो जाते हैं।

इस तहक़ीक के लिए उन्होंने पाकिस्तान के तीन शहरों का इनतिख़ाब किया। कराची, लाहौर और फ़ैसलआबाद। इस सर्वे के बाद उन्होंने जो रिपोर्ट मुरत्तब की उसका खुलासा यह है कि :–

"चूँकि मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं और ख़ास तौर पर रमज़ानुलमुबारक में ज़्यादा पाबन्दी करते हैं इसलिए वुज़ू करने से (E.N.T) कान, नाक और गले के अमराज़ कम हो जाते हैं।

खाना कम खाने से मेदे और जिगर (Liver) के अमराज़ कम हो जाते हैं।

चूँकि मुसलमान डाईटिंग करता है इसलिए वह आसाब और दिल के अमराज़ में भी कम मुबतला होता है।

(फ़ाईल रोज़नामा जंग 1988 ई०)

Scanned by CamScanner

बदने इनसानी पर रोज़े के असरात तजरिबात की रोशनी में

Fasting Effection On Human Body In Litght Of Experience

मौसम और जुग़राफ़ियाई वुक़ूअ के इख़तिलाफ़ के लिहाज़ से रोज़े की मुद्दत 12 से 19 घण्टों तक होती है और रात के तूल के इतिबार से आम तौर पर एक दो मरतबा (इफ़तार) के बाद और सेह्र् से पहले) खाना खाया जाता है। महज़ साईंटिफ़िक इतिबार से यह बात पूरे यक़ीन के साथ नहीं कही जा सकती कि रोज़े का जिस्म पर क्या असर पड़ता है और किस तरह बाज़ लोगों के ख़्याल में रोज़ा जिसमानी फ़ेलियात में नुक़सान और जिसमानी कमज़ोरी का मौजिब होता है। बाज़ लोग कहते हैं कि रोज़े से जिस्म में कोई नुक़्स या कमज़ोरी वाक़े नहीं होती, क्योंकि रोज़ा रखने से दो खानों का दरमियानी वक़्फ़ा ही मामूल से कुछ ज़्यादा हो जाता है और दर हक़ीक़त 24 घण्टों में मजमूई तौर पर इतने हरारे (गिज़ाईयत) हासिल हो जाते हैं और जिस्म को माइ (पानी) की इतनी मिक़दार मिल जाती है जितनी रोज़े के एलावा दोनों में मिलती है।

मज़ीद बरॉं यह भी एक हक़ीक़त और मुशाहदा है कि लोग रमज़ान में लहमी (प्रोटीनी) और कारबोहाईड्रेट (नशाई) अज्ज़ा आम दिनों के मुक़ाबले में ज़्यादा इसतिमाल करते हैं। इस हक़ीक़त के पेशे नज़र यह भी कहा जा सकता है कि मजमूई गिज़ाईयत (हरारे) आम दिनों के मुक़ाबले में जिस्म को ज़्यादा मिक़दार में मिलते हैं।

इन मुख़तलिफ़ आरा की अपने तौर पर तसदीक़ व तकज़ीब कर सकने या इन के मुतअल्लिक़ किसी सही राय के क़ाइम करने के सिलसिल में रोज़ादारों के जिस्म के असरात का मुशाहदा किया गया। चुनाँचे इस ग़रज़ से 13 रोज़ादारों का एक ग्रूप

Scanned by CamScanner

मुनतख़ब किया गया। उनमें एक हामिला ख़ातून (मुद्दते हमल 6 माह) को भी शामिल किया गया। इसके साथ एक ऐसे 27 साला मर्द को भी शामिल किया गया जिस ने रोज़ा नहीं रखा। इस तरह 14 अफ़राद पर तजरिबा शुरू किया गया। तजरिबे और मुशाहदे के दौरान इन हस्ब ज़ैल उमूर को तफ़सीली तौर पर रिकार्ड किया गया।

(1) वज़न (2) जिसमानी हरारत (3) नब्ज़ (4) ख़ून का दबाव (5) मर्द इसतिहाले की शरह् (B.M.R.) (6) बदनी सैयाल (7) ख़ून और पेशाब का कीमयाई तजज़िया।

तरीक़ा–ए कार और वसाइल

Sources & Way Of Action

इस ग्रूप में (इलावा एक हामिला ख़ातून) के तीन औरतें बित्तर्तीब 17, 27, 40 साल की उमर की थीं। ग्रूप के मर्दों की उमरें 22 से 69 साल तक थीं (औसतन 33 साल)। इन तमाम का तअल्लुक़ मुतवस्सित तब्क़ा से था। इन की मामूलन इसतिमाल की जाने वाली ग़िज़ा में ग़िज़ाईयत का अंदाज़ा ढाई से तीन हज़ार हरारे (कैलोरीज़) यौमिया किया गया था। सरीरियाती इमतिहान में इनको कोई जिसमानी बीमारी या तादिया (छूत) में मिला नहीं पाया गया। रमज़ान से एक हफ़ता क़ब्ल इन सब का तफ़सीली मुआयना कर लिया गया था, ताकि बाद के हालात से इन हालात का मुक़ाबला किया जा सके।

इस वक़्त इमतिहान की ग़रज़ से बदनी मवाद, पेशाब और ख़ून के मुआयने के लिए नाश्ता से क़ब्ल नमूने हासिल कर लिए गए थे। इसी तरह रमज़ान के दौरान मवाद के नमूनों को मग़रिब के ऐन बाद हासिल किया गया रोज़ा सिर्फ़ एक घोंट पानी से खोला गया था।

दौराने रमज़ान मुशाहिदात

The Divinity During Ramzan

यकुम रमज़ान, 10 रमज़ान, आख़िरी रोज़े के दिन और फिर चार हफ़्ते गुज़रने

Scanned by CamScanner

के बाद :

नताइज

Result

वज़न का गोशवारह हस्ब ज़ैल रहा। इस शख़्स के वज़न में कोई बड़ी तबदीली नहीं हुई थी जिसने रोज़ा नहीं रखा था, क्योंकि आम हालात में भी वज़न में मामूली कमी बेशी होती रहती है। आगे हम इस शख़्स को "ला" से ज़ाहिर करेंगे।

(वज़न पोण्ड में) से क़ब्ल	रमज़ान रमज़ान को	यकुम रमज़ान को	10 रोज़े के बाद	आख़िरी हफ़्ते बाद	4
ला	142	140	140	142	142
रोज़ा रखने वालों का औसत	122	122	121	119	121
हामिला ख़ातून	106	106	108	110	117

(वाज़िह रहे कि हमल के दौरान वज़न बढ़ता रहता है)

ऊपर रोज़े दारों के वज़न का औसत बताया गया है, मगर इनमें से दो हज़रात का वज़न 7 पोण्ड कम हो गया। एक साहिब के वज़न में क़तअन कोई तबदीली वाक़े नहीं हुई। हामिला ख़ातून का वज़न रमज़ान के दौरान चार पोण्ड बढ़ गया। सात अशख़ास का वज़न चार हफ़्ते बाद बिल्कुल वही हो गया। जो रमज़ान से पहले था।

नब्ज़ और हरारते जिसमानी पर रोज़े का कोई असर नहीं पढ़ा। ख़ून में हेमोग्लोबीन की मिक़दार रमज़ान में पहले की तरह बरक़रार रही। इसी तरह मजमूई तौर पर ख़ून के दबाव मं कोई फ़र्क़ वाक़े नहीं हुआ।

तबई शरहे इसतिहाला

रमज़ान के दौरान किसी ख़ास तबदीली का मुशाहिदा नहीं किया गया। हामिला ख़ातून में शरह ज़्यादा रही। इस का वज़िह सबब् हमल था।

Scanned by CamScanner

(वज़न पोण्ड में) रमज़ान को	रमज़ान से क़ब्ल	यकुम रमज़ान को	10 रमज़ाान को	आख़िरी रोज़ा	बाद रमज़ान
ला	92	87	90 .	88	93
रोज़ा दार ग्रूप	84	80	80	74	76
हामिला ख़ातून	88	84	72	68	81

ख़ोराक की शक्कर किसी भी शख़्स में कम तरीन तबई मिक़दार (70 मिली ग्राम फ़ी सद) से नीचे नहीं गई। दौराने रमज़ान हर हाल में ख़ून में शक्कर की मिक़दार कम रही।

इसके इलावा ख़ून के कीमयाई अज्ज़ा रमज़ाान भर तबई मिक़दार में बरक़रार रहे और इन में कोई तबदीली नोट नहीं की गयी।

जिस्म की माईयत और इख़राजे बौल

आम तौर पर ग्रूप के अफ़राद ने पानी की इतनी ही मिक़दार रोज़े की हालत में 24 घण्टों के दौरान इसतिमाल की जितनी कि वह मामूलन करते थे पेशाब की मिक़दार चन्द लोगों में कम रही वरना बाक़ी अफ़राद में मजमूई तौर पर इतनी रही जो आम हालात में थी। एक क़ाबिले ज़िक्र बात यह है कि शख़्स "ला" में भी बाज़ औक़ात इख़राजे बौल की सतह कम नोट की गयी। इसलिए इस बात का इमकान है कि पेशाब की मिक़दार में कमी तबई असबाब की बिना पर हुई हो। पेशाब की कसाफ़त नौई (Specific Gravity) में कोई क़ाबिले ज़िक्र तब्दीली वाक़े नहीं हुई। इन तमाम मुशाहिदात से ज़ाहिर होता है कि रोज़ों से अगर जिस्म पर कोई असर होता

है तो यह कोई क़ाबिले लिहाज़ असर नहीं। रमज़ान के दौरान गुर्दों का फेल तबई रहा जैसा कि ऊपर बताया गया है मुतअद्दिद् रोज़ों के बाद बाज़ लोगों के वज़न में और इसी तरह ख़ून की शक्कर की मिक़दार में कुछ कमी आ गई थी, लेकिन यह तबदीली कभी तबई हुदूद से नीचे नहीं गयी। ख़ून की शक्कर की मिक़दार में कमी ख़ास तौर पर उस वक़्त हुई जब दिन का बड़ा हिस्सा गुज़र चुका था।

वाज़ेह रहे कि यह मुशाहदात ऐसे लोगों में किए गये थे जो सरीरियाती इमतिहान में नॉरमल साबित हुए। इसलिए यह तसुव्वुर कर लेना मुनासिब न होगा कि इसतिहालाती और दीगर अमराज़ ख़ास तौर पर गुर्दों के अमराज़ की सूरत में भी ऐसे ही नताइज हासिल होंगे। यह तहक़ीक़ का एक और मौदान होगा कि गुर्दों के मरीज़ और ज़ियाबीत्स में मुबतला अफ़राद पर भी इसी क़िस्म की तहक़ीक़ की जाए।

दिन का कुछ हिस्सा गुज़र जाने के बाद कारकर्दगी और काम से दिलचस्पी में क़दरे कमी बाज़ अफ़राद ने ज़ाहिर की। ग़ालिबन इस की वजह ख़ून में शक्कर की मिक़दार की कमी होगी। क्योंकि रोज़ा खेलने के बाद यह कैफ़ियत थोड़ी देर में जाती रही।

(हमदर्दे सेहत)

रोज़ा क़ियामे सेहत का एक बेनज़ीर तरीक़ा

Fasting An Un Paralleled Way Of Health

अल्लाह तआला ने हर जानदार के जिस्म का ऐसा नज़ाम बनाया है कि जब तक उसे आब व दाना मुनासिब मिक़दार में बर वक़्त हालिस न हो उसकी ज़िंदगी का क़ियाम मुशकिल होता है। जिस निसबत से इस ख़ोराक में कमी बेशी वाक़ेअ होगी इसी निस्बत से इसकी सेहत मुतअस्सिर होगी। अदना हैवानात तो अपनी ख़ोराक में अपने शुऊर के मातिहत इतिदाल के पाबन्द रहते हैं। लेकिन इन्सान

Scanned by CamScanner

अशरफुल मख़लूक़ात और ज़ी अक्ल होते हुए भी अदना हैवानात के तरीक़ के बर अक्स हद्दे इतिदाल से बिलउमूम तजावुज़ कर जाता है। और अपने बदनी नेज़ाम के बिगाड़ने और इस में कई नक़ाइस बअलफ़ाज़े दीगर अमराज़ पैदा करने का ख़ुद बाइस होता है। यही वजह है कि दूसरे हैवानात के अमराज़ इनसानी अमराज़ से कोई निस्बत ही नहीं रखते।

मगर इनसान अपनी खुदा दाद अक़्ल के ज़रिए अपने अमराज़ के मुक़ाबला या बतौरे हिफ़्ज़ मा तक़द्दुम कई ज़राए, तरीक़ और एलाज इख़तयार करता है। उन नक़ाइस व अमराज़ के लिए सबसे बेहतर हिफ़्ज़ मा तक़द्दुम जो अब तक तजवीज़ कर सका है यह है कि कभी कभी कुछ अरसा के वास्ते वह खाना पीना बन्द करके अपने मेदे को जिस पर तमाम बदन की सेहत व सबात का इनहिसार होता है ख़ाली रखे। ताकि भूक से उसके मवादे फ़ासिदा जल कर उसे साफ़ कर दें और फिर वह अपना काम सही तौर पर कर सके।

दुनिया के तक़रीबन तमाम मज़ाहिब और शरीअतों ने अपने पेरोओं के लिए यही तरीक़ तजवीज़ किया है। उसे मज़हबी इसतिलाह में रोज़ा कहते हैं। हिन्दू चौबीस घण्टे का बरत या रोज़ा रखते हैं। अनाज या आग पर पकाई हुई अश्या वह बरत में नहीं ख़ाते। मगर कच्चा दूध, पानी हुक़्क़ा वग़ैरा पीने में कुछ मुज़ायक़ा नहीं समझते। ज़माना हाज़िर का ईसाई तो सिर्फ़ गोश्त मछली या बाज़ और चीजें तर्क करके और दूसरी सब चीज़ें खा पी कर उसे रोज़ा क़रार देता है। इसी तरह यहूदियों में भी बाज़ चीज़ों की रोज़ा में खाने पीने की मुमानिअत नहीं है।

इसलाम में रोज़े मुसलसल एक माहे क़मरी हिसाब से रखे जाते हैं। और क़मरी और शमसी साल में दस दिन के फ़र्क़ के बाइस छत्तीस साल के अरसे में मौसमे गरमा और मौसमे सरमा दोनों में आ जाते हैं। इसी तरह तक़रीबन पचास या ज़्यादा साल की उमर का मुसलमान दोनों मौसमों में रोज़े रखने का तजरिबा कर लेता है।

माहे रमज़ान के रोज़े हर बालिग़, आक़िल और तन्दुरुस्त मुसलमान पर फ़र्ज़ हैं। इनके इलावा और रोज़े भी अपनी मर्ज़ी से रखे जाते हैं जिन्हें नफ़ली रोज़े कहते हैं। इसलामी रोज़ा पो फटने से गुरूबे आफ़ताब तक होता है। और इस अरसा में हर क़िस्म का खाना, पीना, इहतियाते जिन्सी बल्कि इसकी मुबादियात भी मना हैं।

Scanned by CamScanner

पान, बीड़ी, सिग्रेट, हुक्का, हिलास वगैरा से परहेज़ लाज़िमी हैं कोई भी ऐसी चीज इसतिमाल की जाए तो रोज़ा टूट या ख़तम हो जाता है।

इस क़िस्म का रोज़ा ज़ब्ते नफ़्स या अपने आप पर काबू पाने का बे नज़ीर व बेमिसाल तरीक़ा और ज़रिया है। नौ उमर जब गरमियों में पहले रोज़ा रखते हैं जब कि प्यास का मुक़ाबला करना बड़ी हिम्मत की बात होती है। वुज़ू करते हुए कुल्लियाँ करते हैं तो पानी का एक क़तरा भी हलक़ से नीचे उतरने नहीं देते। ख़ास कर ग़ुसल ख़ाने में जब कि कोई उन्हें देखने वाला नहीं होता तो उनका पानी से इजतिनाब हैरत का बाइस होता है।

इलावा रूहानी और अख़लाक़ी फ़वाइद के इसलामी रोज़ा मेदी अमराज़ और बदन के गन्दे मवाद के लिए झाड़ू का काम देता है। ज़ब्ते नफ़्स, भूक और प्यास की शिद्दत के मुक़ाबले की ताक़त पैदा करता है। और रोज़ा खोलते वक़्त खाने पीने से जिस तरह एक रोज़ादार लुत्फ़अंदोज़ होता है वह बयान नहीं किया जा सकता।

अतिब्बा और मौजूदा ज़माने के डॉक्टर इसलामी तरीक़े रोज़ादारी की क़ियामे सेहत के लिए अहमियत व इफ़ादियत का इतिराफ़ करते हैं बल्कि बाज़ अमराज़ में एलाज तजवीज़ करते हुए इसलामी तरीक़ का रोज़ा रखने का मशवरा दिया करते हैं।

इस सिलसिले में यह बात याद रखनी चाहिए कि इसलाम किसी इनसान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बोझ डालने के ख़िलाफ़ है। बहालते सेहत व तन्दुरुस्ती रोज़ा रखना हर बालिग़ मुसलमान पर फ़र्ज़ है। लेकिन बीमारी, सफ़र, बुढ़ापे, हमल और बच्चे को दूध पिलाने के ज़माने में रोज़ा र,खने की क़ैद नहीं। क्योंकि इससे सेहत उल्टा ख़राब होती है। हाँ इससे वह अमराज़ मुसतस्ना होंगी जिनमें मुआलिज रोज़ा बतौरे इलाज तजवीज़ करे। इसी तरह रोज़ाना रोज़ा रखना मना है। क्योंकि यह तरीक़े रोज़ा इख़तियार करने से सेहत बर्बाद हो जाती है।

यहाँ एक सवाल पैदा होता है जो अकसर नौ तालीम याफ़्ता किया करते हैं। क़ुतुबे शुमाली और जुनूबी में जहाँ छः माह का दिन छः माह की रात हुआ करती है। गोया एक दिन वहाँ हमारे एक साल के बराबर होता है। रोज़ा पो फटने से ग़ुरूबे

Scanned by CamScanner

आफ़ताब तक हस्बे क़वाइद मुंदरजा क़ुरआने करीम रखना एक इनसान की ताक़त से बाला बल्कि इसके लिए ना मुमकिन है अव्वल तो हम बता चुके हैं कि इसलाम किसी पर माला युताक़ बोझ नहीं डालता। दूसरे जिस तरह वहाँ के रहने वाले अपने काम काज, खाने, पीने, सोने, जागने के औक़ात तजवीज़ करते हैं उसी तरह नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखने के लिए भी कर सकते हैं। चुनाँचे एक मरतबा हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया :– याजूज् माजूज् के ज़माने में दिन एक साल का होगा। तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम् ने अर्ज़ की। क्या हमें एक दिन की नमाज़ काफ़ी होगी। फ़रमाया नहीं तुम नमाज़ के लिए औक़ात का अंदाज़ा लगा लिया करना।

रूसी माहिरुल्अब्दान प्रोफ़ेसर वी० एन० नेक्सटन ने लम्बी उमर से मुतअल्लिक़ अपनी एक अक्सीर दवा के इनकिशाफ़ के सिलसिले में लंदन में 22 मार्च 1960ई को बयान देते हुए कहा कि अगर ज़ैल के तीन उसूले ज़िन्दगी अपना लिए जाएँ तो बदन के ज़हरीले मवाद ख़ारिज हो कर बुढ़ापा रोक देते हैं। अव्वल ख़ूब मिहनत किया करो। एक ऐसा पेशा जो इनसान को मशग़ूल रखे जिस्म के रग व रेशा में तरोताज़गी पैदा करता है। जिससे ख़लिये पैदा होते हैं। बशर्ते कि ऐसा शुग्ल ज़ेहनी तौर पर भी क़ुव्वत बख़्श हो। अगर तुम्हें अपना काम पसन्द नहीं तो फ़ौरन तर्क कर देना चाहिए।

दोम – काफ़ी वर्ज़िश किया करो। बिल खुसूस ज़्यादा चलना फिरना चाहिए।

सोम– ग़िज़ा जो तुम पसन्द करो खाया करो। लेकिन हर महीने में कम अज़ कम एक मरतबा फ़ाक़ा ज़रुर किया करो।

हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इलावा साल के एक माह मुसलसल रोज़ों के हर माह अज़ ख़ुद तीन नफ़्ली रोज़े रखा करते। और फ़रमाया करते "सूमू तुस्हू" रोज़े रखा करो सेहतमंद रहोगे।

हुज़ूरे अक़दस सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी मरज़ुल मौत् में हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु को जो तीन वसीयतें फ़रमाईं उनमें से एक हर माह में तीन रोज़े रखने की ताकीद थी।

Scanned by CamScanner

खजूर से इफ़्तार और जदीद साइंस

Iftar By Khajoor & Modern Science

जिसे खजूर मुयस्सर हो वह इससे रोज़ा इफ़्तार करे जिसे न मिले वह पानी से खोल ले क्योंकि वह भी पाक है। (अन्नसाई)

क्योंकि दिन भर रोज़े के बाद तवानाई कम हो जाती है इसलिए इफ़्तारी ऐसी चीज़ से होनी चाहिए जो जूद हज़्म और मुक़्वी हो।

खजूर का कीमयाई तजज़िया

Chemical Analysis Of Date-Palm

Protiens.............2.0

Fats ....;.........../

Carbohydrates......24.0

Calories..............2.0

Sodium 4.7

Potassium........75.4.0

Calcium...... 67.9

Magnesium..........58.9

Copper.........................0.21

Iron...............1.61

Phosphorus......................638.0

Sulphur...........................51.6

Chlorine.......290.0

Scanned by CamScanner

इसके इलावा और जौहर (Peroxides) भी पाया जाता है। सुबह सेहरी के बाद शाम तक कुछ खाया नहीं जाता और जिस्म की कैलोरीज़ (Calories) या हरारे मुसलसल कम होते रहते हैं इसके लिए खजूर एक ऐसी मुतदिल और जामे चीज है जिससे हरारत इतिदाल में आ जाती है और जिस्म गूनागूँ अमराज से बच जाता है। अगर जिस्म की हरारत को कण्ट्रोल न किया जाए तो मुदरजा ज़ैल अमराज़ पैदा होने के ख़तरात होते है।

लो बलड प्रेशर (Low Blood Pressure) फ़ालिज (Paralysis) लक़्वा (Facial Paralysis) और सर का चक्कर वग़ैरा।

गि़ज़ाईयत की कमी की वजह से ख़ून की कमी के मरीज़ों के लिए इफ़तार के वक़्त फ़ौलाद (Iron) की अशद्द ज़रूरत है और वह खजूर में कुदरती तौर पर मुयस्सर है।

बाज़ लोगों को खुशकी होती है ऐसे लोग जब रोज़ा रखते हैं तो उनकी खुशकी बढ़ जाती है इसके लिए खजूर चूँकि मुतदिल है इसलिए वह रोज़ारादर के हक़ में मुफ़ीद है।

गरमियों के रोज़े में रोज़ादार को चूँकि प्यास लगी होती है और वह इफ़तार के वक़्त अगर फ़ौरन ठण्डा पानी पी ले तो मेदे में गैस, तबख़ीर और जिगर की वरम (Liver Inflamation) का सख़्त ख़तरा होता है अगरे यही रोज़ादार खजूर खा कर फिर पानी पी ले तो बे शुमार ख़तरात से बच जाता है।

हाजते ज़रूरीया और जदीद साइंस

Answering The Call Of Neture & Modern Science

कज़ाऐ हाजत इनसानी तबई ज़रूरीयात में से है हुज़ूर (स0) ने हर एक अमल में नसले इनसानी को तहफ़्फ़ुज़ और सहूलियत मयस्सर की है अगर नबी करीम

(स0) की ज़िन्दगी को देखा जाये तो आप की ज़िन्दगी कदम-कदम पर आफ़ियत और हिफाज़त देगी ।

आज की दुनिया फिर से उन्हीं तरीकों पर वापिस आ रही है जिस तरीके से हुज़ूर (स0) ने हुक्म फरमाया और जिस तरीके से आपने खुद ज़िन्दगी गुज़ारी।

हाजत के लिये दूर निकल जाना

कुतुबे अहादीस के मुताबिक़ आप (स0) कजाये हाजत के के लिये बहुत दूर निकल जाते थे ।

(उसवए रसूले अकरम (स0)

इस वक्त जदीद साइंस ज़्यादा चलने पर ज़ोर दे रही है हत्ता कि अमरीका के बड़े-बड़े हस्पतालों में यह बात नुमायां है कि पांव पहले पैदा हुआ या पहया। ज़ाहिर है कि पांव पहले पैदा हुआ इस का मुक़दस कौम को पैदल चलाना है । एक बाइयो कमेस्ट्री (Bio-Chemistry) के माहिर ने नुकते की बात यह कही कि जब से शहर फैलाने लगे, आबादी बढ़ने लगी और खेत ख़त्म होने लगे इस वक्त से अब तक अमराज़ की बहतात हो गई है क्योंकि जब से दूर चलके हाजत करना छोड़ा है इस वक्त से अब तक क़ब्ज, गैसें तबख़ीर और जिगर के अमराज़ बढ़ गये हैं ।

हाजत के लिये कच्ची ज़मीन का इन्तेखाब

चलने से आतों की हराकात (Intestine Movements) तेज़ हो जाती है जिस की वजह से हाजत तसल्ली बख़्श होती है जिसकी वजह से बैतुल खुला में ज़्यादा वक्त गुज़ारना पड़ता है ।

आप (स0) हाजत के लिये कच्ची (नरम) ज़मीन का इन्तेखाब फरमाते थे।

Scanned by CamScanner

लीवल पावल (Louval Poul) ने "उसूले सेहत" में लिखा है इन्सानीयत को बक़ा मिट्टी है और फना भी मिट्टी है जब से मिट्टी पर हाजत छोड़कर हम ने सख़्त ज़मीन (फलश वग़ैरह) इस्तेमाल करना शुरु किया है उस वक़्त से अब तक पेशाब के गदूद (Prostate Glands) पर पड़ते हैं ।

दरअसल जब आदमी के जिस्म से फुज़लात निकलते हैं तो मिट्टी उनके जरासीम और तेज़ाबी असरात जज़्ब कर लेती है जबकि सख़्त जगह इस कैफियत से आरी है इसलिये वही तेज़ाबी और जरासीमी असरात जिस्म पर बराहे रास्त पड़ते हैं और जिस्मे इन्सानी सेहत से मरज़ की तरफ़ माइल होती है ।

बैठने के तरीक़े

Way Of Sitting

हाजत के लिये बैठने के तरीक़ों की तफ़सील कुतबे अहादीस में मौजूद है।

(मामूलाते नबवी (स0), रहबरे ज़िन्दगी, उसवए रसूल अकरम (स0)

हुज़ूरे अकदस (स0) के तरीक़े हाजत के मुताबिक बैठने से मुनदरजा जेल फवायद मयस्सर होते हैं ।

❖ इसके फवायद और साइंसी उसूलों के ज़िम्न में जब बन्दा एक फिज़ीयालॉजी के सिनीयर प्रोफेसर से मिला तो फ़रमाने लगे कि मैं मराकश में था, एक यहूदी डाक्टर के पास बूखार की दवाई के लिये जाना पड़ा डाक्टर काफी बूढ़ा था मरीज़ इसके पास कम ही आते थे जब मैंने अपना नाम लिखवाया तो कहने लगा मुसलमान हो, मैंने कहा हाँ मैं मुसलमान हूँ और पाकिस्तानी हूँ कहने लगा तुम्हारे पाकिस्तान में अगर एक तरीक़ा जो खुद तुम्हारे नबी (स0) का जिन्दा हो जाये तो पाकिस्तानी कई अमराज़ से बच जायें तो मैं हैरान हुआ और पूछा वह कौन सा तरीक़ा कहने लगा कि क़ज़ाये हाजत के लिये अगर इसलामी तरीक़े पर बैठा जाये तो अपन्डे साइटिस (Appendesites), दाइमी कब्ज़, बवासीर (Piles) और गुर्दो के अमराज़ नहीं होंगे ।

फिर कहा कि अगर तमाम मुसलमान ये तरीक़ा शुरु कर तो मजकूरा अमराज से बच जायें शरतीया कहता हूं,

पाकिस्तानी प्रोफेसर कहने लगे मुझे इस तरीक़े से शनासाई का इश्तयाक

हुआ, मैंने तो इससे न पूछा इसके लिये वही एक आलिम दीन थे उनसे पूछा और जब उन्होंने मुझे वह तरीक़ा समझाया और मैंने इस पर अमल शुरु किया पहले तो कुछ दिक़्क़त हुइ लेकिन इसके फायदे मेरी समझ में आ गये और उस वक़्त से अब तक मैं हाजत के लिये वही तरीक़ा इस्तेमाल करता हूं ।

जदीद साइंस हुज़ूरे अकदस (स0) के इस कज़ाये हाजत के तरीक़ पर मुसलसल रिसर्च कर रही है और वह इस बात पर आ गई है कि सेहत व ज़िन्दगी के लिये बका व खुशहाली के लिये इस तरीक़े से बढ़ कर कोई तरीक़ा नहीं ।

इस तरीक़े से गैसें, तबख़ीर, हजमी, कब्ज़ और गुर्दो के अमराज़ वाक़ई कम हो जाती है मुसतक़िल करने से यह अमराज ख़त्म हो जाते हैं ।

इस्तिनजे के लिये ढेले का इस्तेमाल

Use Of Slack For Laving

आप (स0) इस्तिंजा के लिये ताक़ अदद में ढेले इस्तेमाल फ़रमाते थे ।

(रहबरे ज़िन्दगी)

साइंस की आख़री रिसर्च के मुताबिक मिटटी में नौशादर (Ammonium Chloride) और आला दर्जा के दाफ़ए तअफ्फुन अजज़ा मौजूद है चूंकि पैख़ाना (Stool) और पैशाम और तमाम फुज़ला है और जरासीमों से लबरेज़ है तो उसका जिल्दे इंसानी को लगाना इन्तेहाई नुकसानदह है और अगर उसके कुछ अजज़ा जिल्द पर चिपक जायें या हाथ पर रह जायें तो बेशुमार अमराज़ के खतरात फैलने का अनदेशा रहता है ।

डा. हलूक ने लिखा है कि ढेले के इस्तेमाल ने साइंसी और तहक़ीक़ी दुनिया को वरत-ए-हैरत में डाल रखा है क्योंकि मिटटी के तमाम अजज़ा जरासीमों के क़ातिल हैं जब ढेले का इस्तेमाल होगा तो पोशिदा आज़ा पर मिटटी लगने की वजह से उन पर बैरुनी तौर पर लगे तमाम जरासीम मर जायेंगे । बल्कि

तहक़ीक़ात ने यह साबित कर दिया है मिट्टी का इस्तेमाल शर्मगाह के कैन्सर (Cancer Of Penis) से बचाता है ।

मैंने ऐसा मरीज़ जिन को शर्मगाह के ज़ख़्म और खराश पड़ गई थी मुसतक़िल मिट्टी इस्तेमाल कराई और उन्हें मिट्टी से इस्तिंजा करने को कहा मरीज़ हैरत अंग्रेज़ तरीके से सेहत मन्द हो गये ।

अलगर्ज यह मिट्टी से बना हुआ इनसान फिर से आफियत पायेगा । चाहे दुनिया के तमाम फारमूले इस्तेमाल करले ।

टाइलट पैपर और जदीद साइंस

Toilet Paper & Modern Science

टाइलट पेपर बनाने वाली फैक्ट्री के एक मुलाज़िम से मुलाक़ात हुई मैंने उस नरम मुलाइम और लतीफ़ कागज़ (टाइलट पेपर) के मुतअल्लिक मालूम किया कि उसकी तरकीब तैयारी में किया कोई खतरनाक कैमिकल इस्तेमाल होता है? मेरे सवाल पर उसने जो जवाब दिया वह क़ारईन की खिदमत में पेश है ।

"इस के बनाने में बेशुमर केमिकल इस्तेमाल होते हैं बाज़ केमिकल तो इन्तेहाई महलिक हैं जिससे जिल्दी अमराज़ (Skin Disesses) ऐगज़िमा (Eczema) और जिल्द में रंगत की तबदीली के अमराज़ पैदा हो सकते हैं" ।

इस वक़्त तमाम यूरप टाइलट पेपर इस्मेताल करता है पिछले दिनों अखबारात ने इस खबर को शाया किया कि इस वक़्त यूरप में शर्मगाह के मुहलिक अमराज़ खास तौर पर कैन्सर तेजी से फैल रहा है । उसके सद्देबाब के लिये जब तहक़ीक़ी बोर्ड बैठा तो उस बोर्ड की रिपोर्ट सिर्फ दो चीज़ें थीं कि टाइलट पेपर का इस्तेमाल करना और पानी का इस्तेमाल न करना ।

यूरप ने हमें जो नैमत इस क़ागज़ की शक्ल में दी है यह हमारे लिये बेहतर या नुक़सान देह ? फ़ैसला आपके हाथ में है ।

नोट :- चूंकि यूरपीयन इस्तिन्जा के लिये सिर्फ टाईलेट पेपर ही पर इकतेफ़ा

Scanned by CamScanner

करते है और पानी का इस्तेमाल नहीं करते इसलिये टाईलेट पेपर उनके लिये मुहलिक साबित होता है लेकिन अगर टाईलेट पेपर के इस्तेमाल के बाद पानी का इस्तेमाल किया जाये तो उसके मुज़िर असरात न होने के बराबर होते हैं।

लीद-हड्डी के इस्तिन्जे से परहेज़

लीद-हड्डी से इस्तिन्जा न किया करो। (ज़ादुल मआद)

लीद में बेशुमार मुहलिक जरासीम होते हैं क्यों के यह एक फुज़ला है और हर फुज़ला जरासीमों से पुर होता है इसमें तशन्नुज़ (Tetnus) और तपे मह्रका (Typhuid) के जरासीम बहुत ज़्यादा होते हैं इससे इस्तिन्जा किया जाएगा तो वह जरासीम जिस्म में मुन्तक़िल हो सकते हैं।

हड्डी जब इस्तेमाल हो जाती है तो उस को जानवर खाते हैं बाज़ जानवरों के लुआब में ख़तरनाक जरासीम होते हैं मसलन कुत्ते के लुआब में एक ख़ास जरसूमा होता है जो उस की खाई हुई हड्डी पर लुआब के साथ ही मुन्तक़िल हो जाता है। मज़ीद यह कि हड्डी पर मिट्टी, गर्द व ग़ुब्बार वग़ैरह जमा रहता है और इस गर्द व ग़ुब्बार में भी गो ना गो जरासीम पाये जाते हैं। अब अगर यह हड्डी इसतिनजे के लिए इस्तेमाल की जायेगी तो दीगर जरासीमों के साथ साथ उस का ख़ास जरसूमा भी जिस्म में मुन्तकिल हो जाता है।

हड्डी की सतह नाहमवार, खुरदुरी और नोकदार होती है इस से जिस्मे इन्सानी के ज़ख़्मी होने के ख़तरात होते हैं।

खड़े हो कर पेशाब करने से मना

हुज़ूरे अक्दस (स०) ने खड़े होकर पेशाब करने से मना फ़रमाया है। (उसव-ए-र ल अकरम)

इसलाम बैठ कर पेशाब करने का हुक्म देता है। अगर खड़े हो कर पेशाब किया जाये तो उस के अन्दरुनी व बैरुनी नुक़सानात बढ़ जाते हैं।

Scanned by CamScanner

चूँकि पेशाब जरासीमों से पुर होता है और बाज़ औक़ात उस में बाज़ अमराज़ (सूज़ाक, आतिश्क, गुर्दो का जरासीमी इन्फ़ेक्शन वग़ैरह) की वजह से पीप (Pus) भी मौजूद होती है। खड़े होकर पेशाब करने से उस के छींटे बदन और लिबास को आलूदा कर देंगे।

इस से ग़दा क़दामिया (Prostatitis) पर बुरा असर पड़ता है और वह मुतवर्रिम होकर बढ़ जाता है जिस से पेशाब का बंद हो जाना, पेशाब का क़तरा क़तरा आना, तकलीफ़ से आना, धार का पतला होने जैसे अमराज़ पैदा हो सकते हैं।

ग़ुस्ल ख़ाने में पेशाब से मना

अहादीस नववी (स0) में गुस्ल की जगह पेशाब से मना फ़रमाया और मना फ़रमाया कि इस से बेशुमार वसवसे पैदा होते हैं इस ज़िम्न में बन्दे ने मुहक़्क़ीन की तरफ़ रजूअ किया तो बाज़ ने कहा एक साईन्स मैगज़ीन साईन्स और सेहत (Science and Health) में पढ़ा है कि!

0 ग़ुस्ल की जगह पेशाब करने से शहवते नफ़ासिया की ज़्यादती होती है और इस से मआशरती मुहलकात पैदा होते हैं।

0 ग़ुस्ल की जगह पेशाब करने से इन्सान नफ़सियाती अमराज़ का शिकार होता है।

0 ग़ुस्ल की जगह पेशाब करने से गुर्दे में पथरी पैदा होती है।

कच्ची ज़मीन और फ़लश में फ़र्क़

हुज़ूरे अक़दस (स०) हमेशा हाजत के लिए नरम ज़मीन तलाश करते थे। (रहबरे ज़िन्दगी)

नरम भुरभुरी ज़मीन हर चीज़ को जज़्ब करती है चूँकि पेशाब और पाख़ाना जरासीमी फ़ुज़ला है इस के लिऐ ऐसी ज़मीन चाहिए जो कि इस को जज़्ब कर

ले और इस के छींटें उड़ कर बदन और कपड़ों को आलूदा न करें।

जबकि यह कैफ़ियत फ़लश में नहीं होती वहां फिर भी छींटों का एहतमाल रहता है और मज़ीद यह कि फ़ुज़ले को जज़्ब करने की सलाहियत इस में नहीं और इस फ़ुज़ले से उठने वाले बुख़ारात सेहत के लिए बहुत मुज़िर होते हैं।

पानी से इसतिन्जा और हारले स्ट्रीट

मेरे दोस्त फ़रमाने लगे मेरा एक क़रीबी रिश्तेदार इंग्लैंड रहता है। वह मिलने आया और कुछ दिन घर रहा, मेरी छोटी बच्ची कहने लगी कि अम्मी अन्कल रंग बिरंगा पाख़ाना करते हैं। हम ने कहा कि बच्ची मासूम है ऐसे ही कुछ कह रही है। उस ने जब यह बात बार बार कही तो हम ने टॉयलेट में जा कर देखा तो पता चला कि मोसूफ़ पानी से इसतिनजा नहीं करते बल्कि रंग बिरंगे टिशू या टॉयलेट पेपर इस्तेमाल करते हैं।

ग़िलाज़त और गन्दगी से लबरेज़ योरोपी ज़िन्दगी में जहां पानी से इसतिनजा नहीं होता हत्ता कि वह ग़िलाज़त और गन्दगी बालों और जिस्म में अटक कर तरह तरह के अमराज़ की पेश ख़ेमा बन जाती है।

हारले स्ट्रीट लन्दन के डाक्टर केनन डेविस ने पूरी यौरोपी क़ौम को इस बात से आगाह किया है कि अगर तुम इस तरह ज़िन्दगी गुज़ारते रहे तो फिर बहुत जल्द मुन्दरजा ज़ैल अमराज़ के लिए तैयार हो जाओ।

शर्म गाह का कैन्सर

भगन्दर या फ़सचूला

जिल्दी इन्फ़ैक्शन (Skin Infections)

फफून्द के अमराज़ (Viral Diseases)

पानी अब काइनात की अज़ीम नैमत है यह हर ग़िलाज़त को तहारत में तब्दील कर देती है।

इसलाम ने निज़ामे तहारत को इतना वाज़िह और पाक बना दिया है कि इस में किसी को क्या, बल्कि हमारे लिए वाज़िह दावते अमल है।

Scanned by CamScanner

एक मुस्तशरिक जॉन मिलन का कहना है कि इसलाम पाकीज़गी और सफ़ाई का मज़हब है।

तमाम मज़ाहिब इस से अपनी पाकीज़गी और सफ़ाई का बाब पूरा करते है, अगर किसी जिस्म पर पानी लगाये बग़ैर उस को साफ़ किया जाये तो तजरिबात से बात साबित है कि जिस्म का वह हिस्सा कभी भी साफ़ नहीं होगा।

(साइंस और सेहत)

फिर पानी के इस्तेमाल से जिस्म के उस हिस्से का दर्जा-ए-हरारत नॉर्मल हो जाता है। अगर पानी इस्तेमाल ना किया जाये तो हाजत के वक्त तमाम आज़ाए जिस्म का दर्जा-ए-हरारत बढ़ जाता है और इन्सान बेशुमार अमराज़ में मुब्तला हो सकता है।

पेशाब से बचें अमराज़ से बचें

अहादीस में कसरत से पेशाब से न बचने पर वईद आई है। (रहबरे ज़िन्दगी)

पेशाब से बचो अकसर अज़ाबे कब्र पेशाब की वजह से होता है। (रहबरे ज़िन्दगी)

मुसतशरिक जान्ट मिलन कहता है कि मेरे पास रानों की ख़ारिश और फुनसियां, पेडू की जिल्द का उधड़ना, सरैनों और उसके एतराफ़ की एलरजी, अज़्वे ख़ास के मरीज़ जब आते हैं तो मेरा उनसे पहला सवाल यही होता है कि क्या वह पेशाब से बचते हैं ? उन में अकसर पेशाब से नही बचते और फिर ला इलाज और मुश्किल अमराज़ लेकर मेरे पास आते है।

(साइंस और सेहत)

जिन्ज़ और पैन्ट की ज़न्जीर और बटन खोल कर पेशाब करने और फिर बग़ैर इस्तिंजे के फौरन बाँध लेने की सूरत में पेशाब के क़तरात आज़ाए जिस्म पर गिरते और लगते रहते हैं जिससे जिल्दी अमराज़ और बेशुमार अमराज़ पैदा होते है। वाह सुबहानल्लाह इसलाम कितना ख़ूबसूरत और पाकिज़ा मज़हब है कि अपने मान ने वालों को इतने अमराज़ से बचाता है।

अब फिर पुरा यूरोप इस पानी के इसतिनजे की तरफ़ मुतवज्जाह हो रहा है।

Scanned by CamScanner

हवा के रुख़ पर

Face On Air

अगर हवा के रुख़ पर पेशाब किया गया तो हवा के दबाव की वजह से वह पेशाब उड़ कर जिस्म और चेहरे पर पड़ेगा। इस तरह जिस्म और लिबास आलूदह हो जायेंगे और यह अलूदगी अमराज़ की इब्तदा है। इस लिये ऐसी जगह का इन्तख़ाब किया जाये जहाँ हवा का रुख़ न बनता हो और कुछ ओट हो।

बिल और सुराख़ में पेशाब करने से मना

हुज़ूरे अक़दस (स०) ने बिल में और सूराख़ में पेशाब करने से मना फ़रमाया। (रहबरे ज़िन्दगी)

अगर किसी ज़हरीले जानवर के बिल में पेशाब किया गया तो उस जानवर से नुक़सान पहुँने का ख़तरा हो सकता है।

बाअज़ ज़मीने कलर ज़दा और शोर ज़दा होती हैं और उनके बिलों और सूराख़ों में तीज़ाब और शोरह (Nitrogen) के माद्दे जमा होते हैं। अगर उनमें पेशाब किया गया तो पैशाब चूँकि खुद एक तिज़ाब (Acid) है और दोनों तिज़बों के मिलने से ज़हरीले बुख़ारात उठ कर जिस्मे इनसानी को नुक़सान पहुँचा सकते है।

नमाज़ से क़ब्ल इसतिनजे से फ़रागत

अगर नमाज़ से क़ब्ल हाजत की ज़ियादती हो तो पहले हाजत से फ़रागत हो फिर नमाज़ पढ़ी जाये। (मामुलाते नबवी (स०)

Scanned by CamScanner

ममनूआते कज़ाए हाजत
Prohibiited of Answering The Call of Nature

बअज़ जगहों पर कज़ाए हाजत करने से उलमाए हदीस ने मना किया है।

खड़ा पानी

कुवाँ, तालाब, जोहड़, झील जैसे खड़े पानी में अगर हाजत की जायेगी तो पानी में जरासीमों के पड़ने से तमाम पानी आलूदा और ख़तरनाक अमराज़ से पुर हो जायेगा। अब अगर कोइ ज़ी रुह इस पानी को पियेगा तो उसके अन्दर मुन्दर्जा ज़ेल अमराज़ दाख़िल हो सकते है। तपेमौहरका, टाई फाईड (Typhiod) जरासीमयिरकान (Viral Jourdice)

आँतों के किड़ों के अन्डे, पैरासाइट या तुफैली कीड़े।

चलता पानी
Blowing Water

क्योंकि यह चलता पानी करिया करिया गुज़र कर जाता है। इन्सान और जानवर इस पानी से नफ़ा लेते है। अगर फ़ुज़ले की वजह से यह आलूदह हो गया तो फिर अमराज़ फैलते ही जायेंगे। जैसा कि हुकूमते हिन्दुस्तान ने गैंगा के अन्दर आलूदह पानी डालने से मना कर दिया है और उस में स्नान करने वालों को भी हाजत करने से मना किया गया है।

सायेदार, फल दार दरख़्त और रास्ते

सायेदार दरख़्त लोगों के क़याम और सकून की जगह है। यहाँ फ़ुज़ला करना इन्तहाई बुरा है। फलदार दरख़्त जहाँ लोगों के क़याम और आराम की जगह

है वहाँ उसके फल नीचे गिरेगें। अगर यह फल गन्दगी पर गिरे तो यह इन्सान के क़ाबिल नही रहेगें। चलते रास्ते पर हर आदमी की आमदो रफ़्त होती है।

अगर रास्ते पर गन्दगी हुई तो हर शख़्स और सफरी मुतनफ़्फ़िर और आलूदह होगा

नमाज़ से क़ब्ल इस्तिंजा

Cleaning After A Natural Evacuation Befor Namaz

दरअसल यह ख़ास नुकता उस मैडिकल उसूल की तरफ है जिस में हाजते ज़रुरिया, पेशाब और पख़ाने को रोकने को मना किया है। क्यों कि हाजत को रोकना गोनागो अमराज़ का पेश ख़िमा बन सकता है। इसमें ज़्यादा नुक़सान दिमाग़ (Brain) मेदा (Stomach) आसाब (Nerves) और गुरदों पर पड़ता है।

बअज़ औक़ात हाजत के रोकने से कै और चक्कर शुरु हो जाते हैं।

क़ज़ा–ए हाजत के बाद मिट्टी से हाथ साफ़ करना

हाजत के बाद आप (स०) का मिट्टी पर हाथ रगड़ कर धोने का मामूल था।

(रहबरए ज़िन्दगी)

चूँके हाथों को जरासीम लगे होते है और वह जरासीम बाज़ ऐसे भी होते है जो आम पानी से ज़ाया नही होते। इसलिए उस हाथ को मिट्टी से साफ़ किया जाता है।

जैसा कि पहले अर्ज़ किया गया है कि मिट्टी आला दर्जे की एन्टीसैप्टिक (Anti Septic) है। हत्ता कि जो कुत्ते के जरासीमों को भी मार डाले तो आम जरासीमों को तो फौरन ख़त्म कर देती है।

Scanned by CamScanner

डबल्यू-सी और कमौड में फ़र्क़

Diffrence Between W.C. & Comode

यूरोपियन डबल्यू-सी (W.C.) जिस पर कुर्सी की तरह बैठ कर हाजत की जाती है। इन्सानी जिस्म कि सैहत और तन्दरुस्ती के लिये बहुत ना मुनासिब है।

०आसाबी तनाव और खिंचाव पैदा होता है।

०हाजत ग़ैर तसल्ली बख़्श होती है।

०बड़ी आँत में फ़ुज़ला अटक कर रह जाता है।

०हाजत के बाद पेशाब के क़तरात गिरने का ख़तरा रहता है।

०चूँके इस तरह बैठने से आँतों और मेदे पर ज़ोर नही पड़ता इस लिए जहाँ बे शुमार मेंदे और आँतो के अमराज़ पैदा होते है वहाँ ये वाजए जस्म की फितरी कैफ़ियत के ख़िलाफ है।

कमौड

Comode

क्योंकि फितरी अन्दाज़ और तरीक़े के क़रीब तर है। इसके लिए उसके नुक़सानात बहुत कम हैं लेकिन जो फाइदे कच्ची ज़मीन और नर्म मिट्टी पर हाजत के हैं वह यहाँ मयस्सर नही हो सकते। लेकिन चूँके मिट्टी और मैदान हर जगह मयस्सर नही इस लिए यह बहरहाल बेहतर है।

तहारत के लिये बाँया हाथ

Left Hand For Cleanliness

तहारत के लिये बाँयें हाथ का इसतेमाल करें। (ज़ादुल मआद)

जैसा कि पहले अर्ज़ किया गया है जिस्म के दाँयें हाथ से मुसबत (Positive)

Scanned by CamScanner

शुआऐ और बाँयें हाथ से मन्फी (Negative) शुआऐ (Rays) निकलती हैं। अगर इसतिनजे के लिए दाँया हाथ इस्तेमाल किया जाएगा तो जिस्म का शुआई निज़ाम बिगड़ जाएगा और उस के असरात दिमाग़ (Brain) और हराम मग़्ज़ (Spinal Cord) पर ज़्यादा पड़ते है।

मज़ीद ये कि चूँके खाने के लिऐ दाँया हाथ इसतेमाल करते हैं इस लिए अगर इसतिनजे के लिये भी दाँया हाथ इस्तेमाल करेंगे तो ख़तरा है कि जरासीम खाने और पीने में मुन्तक़िल हो कर नुक़सान का बाइस बन जायें।

क़िबला की तरफ़ मुँह न करना

अहादीस़ में क़िबला रुख़ मूँह या पीठ करके हाजत के लिये बैठने पर मना फ़रमाया गया है। (मामूलाते नबवी)

डाक्टर डारविन, लेड बेटर और ऐलकज़न्डरा की कासमिक तहक़ीक़ के मुताबिक़ कासमिक वर्लड का निज़ाम इन्सानी ज़िन्दगी पर हावी है। ख़ाना-ए-काबे के चारों ऐतराफ में मुसबत शुआऐं (Positive Rays) पूरी दुनिया तक फैली हुई है।

पेशाब,पाख़ाना और थूक जो कि ख़ालिस मन्फ़ी रंज़ का हिस्सा हैं काबे की तरफ़ डालेगा तो ये उस आदमी के लिए मुसलसल नुक्सान का बाईस बनेगा।

मशहूर पेरासाईकॉलोजिस्ट डाक्टर कामन बीम ने इस बात को अपनी तहक़ीक़ी ज़िन्दगी का हिस्सा बनाया कि मुसलमानों के काबे से मुसलसल मुस्बत शुआयें पूरी काइनात में फैल रही हैं और इस तरह मन्फ़ी शुआओं का रुजहान ज़रर का बाइस है।

Scanned by CamScanner

इस्लामी निज़ामे तहारत और यूरोपी मआशिरा

Islamic System Of Cleanliness & Europian Society

अफ़ादाते फ़ारानी

गो हर मज़हब और मिल्लत में आम सफ़ाई की निसबत हिदायात पायी जाती है। मगर इसलाम ने इन उमूर में इतनी तफ़सीली और वाज़ह हिदायात दी है और ऐसे ऊसूलो क़वायद तज़वीज़ किये है कि उन का कहीं नज़ीर नहीं मिलता और हमारे असलाफ़ ने छोटे छोटे मसाईल पर इतनी तवील और सैर हासिल बहसें की हैं कि उन्हें पढ़ कर इन्सान हैरान रह जाता है। बआज़ लोग उन की हिकमत और फ़लसफ़ा न समझने के बाईस उन्हें ढेले और इसतिनजे के मसाईल कह कर उन्हें हंसी में उड़ा देते हैं। लेकिन अगर उन पर इलमी नुक्ताए नज़र से ग़ौर किया जाये तो उन की अफ़ादियत और अहमियत से इन्कार नहीं हो सकता। हक़ीक़त भी यह है कि हिफ़ज़ाने सेहत के क़वाइद में गो बज़ाहिर ये मामूली बातें हैं लेकिन बुनियादी उमूर की हैसियत रखती है।

दौरे हाज़िर की मुतमद्दन अक़वाम में रफ़ए हाजत के बाद कागज़ कपड़े वगैरह से सफ़ाई की जाती है। बाज़ दफ़ा पानी भी इस्तेमाल किया जाता है और ग़ैर मुतमद्दन अक़वाम में ढेले, पत्थर वग़ैरह या पानी से काम लिया जाता है। लेकिन इसलाम में इस ग़र्ज़ के लिए पानी का इस्तेमाल ज़रुरी क़रार दे कर इतनी मुफ़ीद हिदायात दी गयी हैं कि उन का किसी और क़ौम में मुतमद्दन हो या ग़ैर मुतमद्दन नामो निशान नज़र नहीं आता और एक अक़लमन्द इन्सान अपने क़ौमी और मिल्ली तआस्सुबात से बाला हो कर इस अम्र से इन्कार नहीं कर सकता कि जब तक कोई हकीमो अलीम हस्ती रहनुमाई न कर रही हो कोई इन्सान इस क़िस्म की पुर हिकमत और नोए इन्सान के लिए निहायत ही मुफ़ीद बातें बता नहीं सकता।

Scanned by CamScanner

फ़रागत के बाद बेहतरीन तरीके सफ़ाई ये है कि इसतिनजे के लिए सिर्फ़ बायाँ हाथ काम में लाया जाये और दाहिने हाथ से पानी डाला जाये। इस पाबन्दी में बड़ी हिकमत है।

क़ुदरत ने खुद ही हाथों में तक़सीम कार कर दी है। इसतिसनाइ सूरतें छोड़ कर हर इन्सान का दाहिना हाथ बायें हाथ की निस्बत ज़्यादा मज़बूत और ताक़तवर होता है। अकसर हैवान भी पहले अपना दाँया पाँव ही उठाते हैं। मसलन घोड़ा, इसी लिए अरबी में इसे यमीन या बरकत वाला हाथ कहा गया है। इसी क़ुदरती तक़सीम के मुताबिक़ खाने पीने में दाहिना और तहारत-व-सफ़ाई में बाँया हाथ काम में लाने की इसलाम में हिदायत है।

एक ग़ैर मुसलिम का वाक़िया

An Event Of A Non-Muslim

एक मुसलिम डाक्टर ने मुझे एक वाक़्या बताया। "एक ग़ैर मुसलिम कि पीन्डली पर चोट लगी हुई थी और ख़ून ज़ख़्म से बह रहा था। इलाज के लिये मेरे पास आया। उसने उसे एक वर्तन में ज़ख़्म धोने के लिये पानी दिया। वह दाँयहिने हाथ से पानी ले कर उसी से साफ़ करने लगा और बार बार वही ख़ून आलूदह हाथ बर्तन में डालने से पानी बिलकुल गन्दा हो गया। वह पानी गिरा कर मैंने और साफ़ पानी दिया और उसे कहा कि ज़ख़्म पर दाहिने हाथ से पानी डालो और बाँये से साफ़ करो। ज़ख़्म भी जल्दी साफ़ हो जाएगा और पानी भी ख़राब न होगा और उसे बताया कि इसलाम ने दाँहिने और बाँये हाथ के कामों की तक़सीम में यही हिकमत रखी है"।

हुज़ूर (स०) ने फ़रमया। जब तुम कपड़ा पहनो, गुस्ल करो या वज़ू करो तो दाहिनी जानिब से शुरु किया करो सिवाये तहारत वग़ैरा के जब निजासत साफ़ करनी पड़ती है। हर हर काम में दाहिने हाथ के काम में लाने की हिदायत है। रफ़ए हाजत के बाद पानी से तहारत करने से क़ब्ल, अगर किसी साफ

सुथरी चीज़ मसलन कपड़ा, कागज़, ढेला, पत्थर वगै़रह से मुतअलका हिस्सा-ए-जिस्म पोंछ लिया जाए तो बड़ी अच्छी बात है। गो सिर्फ़ पानी इसतेमाल में भी कोइ हर्ज नही है। मगर दोनों के इसेतमाल से सफ़ाई अच्छी होती है और यही बेहतरीन तरीक़ा है जिसे रसूले क़रीम (स०) ने बहुत पसन्द फरमया।

हाँ इस ग़रज़ के लिए तीन टुकड़े कागज़ के, तीन या ताक़ ढेले या पत्थर काम में लाए जायें तो ज़्यादा मुनासिब होता है। तीन की तादाद सफ़ाई के पेशे नज़र मुक़र्र की गई है। ऐसा करने के बाद पानी से जिस्म के मुतअल्लिक़ा हिस्से धोये जायें तो बहुत ज़्यादा सफ़ाई हो जाती है। इस्लामी इस्तलाह में इसे इसतिनजा कहते हैं। यह है इसतन्जा और ढेले का मसला जिस पर गै़र नावाक़िफ नौ तालीम याफ़्ता मुसलमान हंसी उड़ाया करते हैं। सेहत व सफ़ाई के नुक़तए नज़र से इसमें कौन सी क़बाहत या कौन सा उज्र क़ाबिलए एतराज़ है।

इसतिनजा करने के बाद बाँया हाथ जिससे सफ़ाई का काम लिया जाता है। साफ मिट्टी पर रगड़ कर या बअमरे मजबूरी साबुन से धो लिया जाता है।

हाँ इस सफ़ाई या इसतिनजे के सिलसिले में एक पाबन्दी भी है। जो बज़ाहिर बिलकुल मामूली सी बात होती है मगर दरहक़ीक़त है बड़ी पुर हकिमत। शारए इसलाम आलैहिस्सलाम ने फरमाया "फराग़त के बाद मुतअल्लक़ा हिस्सा-ए-जिस्म की सफाई हड्डी और गोबर से हरगिज़ न करनी चाहिये। क्यों कि उनमें जिन होते हैं।

जिनों के मुतअल्लिक़अवाम को तवाहहुमात व तसव्वुरात के पेशे नज़र यह बात बड़ी मज़ाहिका ख़ेज़ मालूम होती है लेकिन जिन के लुग़वी माएने पर ग़ौर किया जाए तो उस इमतनअ की हक़ीक़त वाज़िह हो जाती है। अरबी में जिन का लफ़्ज़ हर मख़फी चीज़ मूज़ी या गै़र मूज़ी के लिये इसतेमाल होता है। कोई ख़तर्नाक काम करने वाले इन्सान मसलन फलक बोस इमारत तामीर करने वाला मेमार, बिल्ली, शेर वगै़रह भी जिन कहलाते हैं। इसी तरह इस लफ़्ज़ का इतलाक़ गैर मरई जरासीम पर भी होता है।

तहक़ीर और इसका अन्ज़ाम
Contempt & Its Results

मेरे एक बुजुर्ग ने एक वाकिया सुनाया ''एक आज़ाद ख़्याल नौतालियाफ़ता मुसलमान नौजवान ने मुझसे जब यह बात सुनी तो बड़ी तहक़ीर से उसपर हंसी उड़ाई. इत्तेफ़ाक से उसके बाद किसी मौक़ा पर उसने बाद रफ़ा हाजत सफ़ाई के लिये हड्डी इस्तेमाल कर ली । इसके इस्तेमाल करते ही पखाना के मकाम पर उसे शदीद शोज़िश शुरु हो गई और वरम हो गया । बात यह थी कि इस हड्डी में छोटी सूर्ख चीटींयां थी जो सख़्त ज़हरीली होती हैं और जिन पर इसकी नज़र न पड़ी । उन्होंने इसे काट खाया जब इसकी तकलीफ़ बढ़ गई तो मेरे पास आया ग़लती का एतराफ़ किया, इज़हारे निदांमद किया और साथ ही इलाज दरयाफ़्त किया । मैंने कहा जिस मुहसिन हस्ती पर तुमने तमसुख़र किया था । अब इसी पर दरुद भेजो और तौबा करो । चुनांचे इसकी तकलीफ़ जाती रही।''

हड्डी और गोबर में कई किसम के कीड़े और जरासीम होते हैं और खुदगलीज़ होते हुये गलाज़त कैसे दूर कर सकते हैं ।

तरक्क़ी याफ़्ता और मु-तव्विल मुमालिक में भी तहारत के लिये कागज़ और इस किस्म की दिगर अशया काम में लाई जाती है । मिटटी के ढेले का इस्तेमाल इसके लिये अचम्भा है । लेकिन इसलाम आलमगीर मज़हब है और इसके अहकाम अमीर व गरीब, काले-गोरे, शहरी-देहाती, खुश्क़ व मरतूब, सर्द व गर्म ममालिक के रहने वालों के लिये यक्सां है । दुनिया का बेशतर हिस्सा पसामान्दा और अफलास ज़दा है । जिन बेचारों को पेट भर रोटी नसीब नहीं होती वह इस्तनजे के लिये कागज़ कैसे ख़रीद सकते है। उन्हें तो रफ़ा हाजत के लिये खुला जंगल और तहारत के लिये कुदरत के पैदा करदा मामूली सहलुलहुसूल मुफ़्त सामान ही काम दे सकते हैं ।

तहारत के लिये मग़रीबी अक़वाम में पानी का इस्तेमाल कहीं-कहीं किया जाने लगा है । वर्ना अब तक सिर्फ़ कागज़, कपड़ा पर ही गुज़ारा किया जाता

Scanned by CamScanner

था । लेकिन पानी से तहारत न करना नमाज़ पढ़ने वाले मुसलमान के दिल में सख्त इन्क़बाज़ पैदा करता है । फिर इस क़िस्म की नाक़िस तहारत के साथ नहाने के लिये भरे टब में बैठ जाना इस की तबीयत पर और ज़्यादा गिरां गुज़रता है और गुस्ल इसकी निगाह में गुस्ल ही नहीं होता ।इस लिहाज़ से एक मुसलमान का मेयारे सफ़ाई व पाकीज़गी कितना बुलन्द है ।

इसलामी मेयारे पाकिजगी की बुलन्दी एक और अम्र से भी ज़ाहिर है । सिर्फ़ पेशाब करने के बाद भी तहारत करना ज़रुरी होता है पेशाब की नाली में क़तरात रुक जाते है जो कुछ देर तक ग़ैर महसूस तौर पर ख़ारिज होकर लिबास या रानों पर लगकर उन्हें गन्दा करते रहते हैं । इस ग़लाज़त से बचने के लिये दो तरीक़े इख्तियार किये जाते हैं । अव्वल किसी जाज़ीब चीज़ मसलन "मट्टी के खुश्क ढेले, जाज़िब कागज़, कपड़े वगैरह (इन सब में अफज़लियत ढेले में है) से क़तरात खुश्क कर लिये जाते हैं और फिर पानी से तहारत कि जाती है। फिर उसके बाद पानी की खुनकी से पेशाब की नाली सड़ जाती है और इसके बाइस क़तरात फौरन" ख़ारिज हो जाती है और साथ ही पानी से सफ़ाई भी हो जाती है ।

दूसरी तमाम अकवाम में पेशाब के क़तरात से ज़रा परहेज़ नहीं किया जाता पेशाब किया, फौरन खड़े हुये, पतलून के बटन बन्द कर लिये । एज़ार बन्द पाजामा बांध लिया या धोती से मोतालिका जिस्म ढक लिया और बस ऐसे कतरात जिस्म पर लगकर बू और ग़लाज़त पैदा करते हैं बाज़ दफ़ा रानों वग़ैरह पर जिल्दी अमराज़ पैदा करने का मोजब होते है ।

मैंने अक्सर देखा हे हिन्दू पाखाना में पानी का लोटा बजाये ताक़ में रखने के नीचे फर्श पर रख देते हैं । जिस पर पेशाब की छींटे भी पड़ती रहती है और फिर इसी पर आबदस्त किया जाता है । मुसलमान इस गर्ज़ के लिये पाक व साफ पानी इस्तेमाल करते हैं । और इसे ऐसी तगह रखता है जहां वह पेशाब की छींटों से महफूज़ रहे । तहारत सही मानों में पाक व साफ़ पानी से ही हो सकती है । इसके अलावा वज़ू के पानी को पख़ाना में रखना मना है।

एक नमाज़ी मुसलिम का बदन और लिबास बोल व बराज़ की मामूली से

मामूली और दूसरी हर किस्म की ग़लाज़तों से पाक होता है । और बाज़ तो इतनी इहतयात से काम लेते है कि अगर एक क़तरा पेशाब इनके बदन या कपड़े पर लग जाये तो इन्हें चैन नहीं आता जब तक इसको अच्छी तरह धो कर साफ़ न करलें गोया इस गिलाज़त से परहेज़ मुसलमानों की फ़ितरते सानिया बन जाती है ।

एक हदीस में आता है कि हज़रत रसूल (स0) एक मरतबा क़बर के पास से गुज़रे। आप (स0) ने कश्फ़ में देखा कि मदफून पर अज़ाबे इलाहि नाज़िल हो रहा है । इस लिये कि वह अपनी ज़िन्दगी में पेशाब के क़तरात से परहेज़ नहीं किया करता था । बेशक इनसान के अपने जिस्म से निकले हुये फ़ुज़लात बिलखुसूस बोल व बराज़ बदतरीन ग़िलाजत होती है और जिस्म व लिबास को खराब करने के अलावा खुद इंसान को जब वह उससे परहेज न करे कई किस्म के अमराज़ में मुबतला कर देती है । आइन्सा ज़िन्दगी का मामला तो अलग रहा उस निजासत से परहेज़ न करने वाले इसी ज़िन्दगी में कई क़िस्म की जिल्दी अमराज़ खारिश जलन वग़ैरह का शिकार हो कर दोजख़ की आग का मज़ा चख लेते हैं ।

यहाँ ज़िमनन एक बात का बयान कर देना मुनासिब मालूम होता है । बाज़ मुसलमान पेशाब करने के बाद खड़े होकर ढेले से इस्तिनजा करते हुये किसी ऐसी जगह पर दिखाई देते हैं जहाँ से लोग गुज़र रहे होते हैं और अजीब-अजीब हरकात कर रहे होते हैं । यह निहायत नामाकूल और बेहयाई का तरीक़ा है जिसे इसलामन हरगिज़ पसन्द नहीं करता । ऐसी नापसन्दीदा हरकात देखकर नौतालीम याफ़्ता तबक़ा निहायत मुफ़ीद और कारआमद इस्लामी उसूल वकायद हिफ़ज़ाने सेहत ढेले और इस्तिनजे के मसले कह कर टाल दिया करता है और उनका सुनना भी पसन्द नहीं करता सही और मुनासिब तरीक़ा यह है कि बैठे-बैठे दुसरों की नजरों से ओझल ढेले और पानी से इस्तिनजे की जाये जैसे कि हुज़ूर (स0) का मामूल था ।

बोल व बराज़ की मामूली आलाइश से परहेज़ रखने की वजह ज़ाहिर है । अगर किसी छोटी से बुराई सी इजतनाब न किया जाये तो आहिस्ता-आहिस्ता

Scanned by CamScanner

बड़ी बुराई से इनसान गा़फ़िल होता चला जाता है और फिर सफाई व पाकिज़गी बराये नाम की रह जाती है ।

एक और लिहाज से भी इसलामी तरीक़े तहारत बहुत मुफीद है । फिरने और काम काज करने से बिलखुसूस गर्म मरतुब इलाक़ों में रानों के दरमयान पसीना बहुत निकलता रहता है । पानी से बदन के हिस्सों को धोने से मसाम खुल जाते है और मैल कुचैल दूर हो जाती है ।

पाँच वक़्त नमाज़ अदा करना हर मुलमान पर फर्ज़ है । लेकिन जब तक जिस्म और लिबास पाक व साफ न हो नमाज़ नहीं हो सकती बा अलफ़ाज़े दिगर जिस्म पाक व साफ रखना हर मुसलमान पर फर्ज़ है ।

जैसा कि बतलाया जा जुका है । दुनिया के बदतरीन गलाजत जिससे इनसान का हर रोज़ कई मरतबा वासता पड़ता है उसका अपना बोल व बराज़ है और यही गन्दगी ऐसी है जो उसी के लिये सब गन्दगियों से ज़्यादा उसकी सेहत व सबात पर असर अनदाज़ होती है और उसकी जितनी परहेज़ रखी जाये और उसे अपनी कयाम गाहों और काम काज के मकामात से दूर रखा जाये उतना ही ज़्यादा मुफीद होता है । उसका कुर्ब इंसान के लिये हिलाकत और उसकी दूरी राहत व सेहत है ।

लेकिन उसकी ज़रर रसानी और नुकसानात जानने के बावजूद उसकी निस्बत बड़ी ग़फ़लत और लापरवाही बरती जाती है । इसलाम के अलावा और किसी तमद्दुन या शरीयत में उसकी कमा हक़्क़हू परहेज़ व नफ़रत रखने की तलक़ीन नहीं की गई और हम बिला खौफ व तरदीद यह कहने के लिये तैयार हैं कि दुनिया के तमाम मज़ाहब में इसलाम को ही यह इमतयाज हासिल है कि उसने उस गन्दगी से अमली तौर पुर परहेज़, बल्कि यह कहना चाहिये कि उससे इन्तेहाई नफ़रत रखने की पर ज़ोर तलक़ीन की है और उसकी बदअसरात से बचने और महफूज़ रहने के लिये तफ़सीली और निहायत मुफीद हिदायत दी है और बेनज़ीर तरीक़े बताये हैं ।

सेहत व सफ़ाई के नुकता-ए-नजर से कजाये हाजत के तरीक़े और

Scanned by CamScanner

बेतुलखला की तामीर व बनावट भी अहमीयत रखती है ।

रफ़ा हाजत का सीधा सादा कुदरती तरीक़ा वह है जिस का रवाज दुनिया के बेशतर हिस्सा में पाया जाता है और मौजूदा तरक्की याफ़्ता अकवाम में भी गुज़शता सदी तक रहा था । और उनके तमद्दुन के दिलदादा लोग उसपर तमसखर करते हैं और उसे जंगली और वहशियाना तरीक़ा करार देते हैं । लेकिन अगर गौर किया जाये तो तिब्बी लिहाज़ से यही सेहत, सबात के लिये निहायत मुफ़ीद और साफ़ सुथरा तरीक़ा है । हज़रत रसूले करीम (स0) घर में जब क़ज़ाये हाजत के लिये जाते तो दोनों ईंटों पर क़दम रखते ।

इस तरज़े नशिस्त से जिस्म के बालाई हिस्सों का सारा बोझा अमआ-ए-मुसतक़ीम जिन में फुज़ला बदन से ख़ारिज होने के लिये आख़िरी मरहले पर पहुँचता है) पर पड़ता है। इसके साथ मेंदे पर दोनों जानिब से रानों का दबाव होता है। टाँगों के खुला हाने, मेंदे और जिस्म के कुदरती दबाव के बाइस उस आँत का मुँह पूरी तरह खुल जाता है और उसकी हरकते दूदी तेज़ हो जाती है जिससे फुज़ले का इख़राज जल्द और ब सहूलत हो जाता है।

पसमान्दा और नीम तरक्की याफ़्ता अक़वाम में हसबे ज़रुरत और अपने माहौल के मुताबिक़ उसी कुदरती तरिक़े पर अमल किया जाता है। छोटी बस्तियों और देहातों के लोग बिलओमूम जंगल चले जाते हैं और फरागत के बाद जाए फ़रागत से हट कर दूसरी जगह बैठ कर तहारत कर लिया करते हैं और शहरी लोग अपने मकानों में मुख़्तलिफ किस्म की बैतउल ख़ला तामीर कर लेते हैं जिनमें अमूमन दो तीन क़दम्चे हुवा करते हैं। एक या दो क़ज़ाए हाजत के लिये और एक अबदस्त के लिये इसतेमाल किया जाता है। मगर वह इतने बुलन्द हुवा करते हैं बोल व बराज़ या तहारत करते वक्त जिस्म व लिबास पर छींटे नहीं पड़ सकते।

बाज़ दफा याहरी पाख़ाने में एक ही क़दम्चा इस किस्म का बना होता है उसकी सुराख़ अच्छी तरह मुकम्मल और ढलवान हाती है और गिलाज़त खुद बखुद बह कर नीचे गन्दी नाली में चली जाती है और जब उस पर बैठ कर आब दस्त किया जाता है तो उस पानी से उसकी और सुराख़ की मज़ीद सफ़ाई

Scanned by CamScanner

हो जाती है।

इस तरीके के इख़्तयार करने से अगर मामुली एहतयात से काम लिया जाए तो रन और लिबास हर किस्म की आलाइश से बचा रहता है और बदन के मुतअलका हिस्से भी पूरी तरह पाक व साफ हो जाते है। फरागत से इन्सान राहत हासिल करता है तहारत कर के वह अपने आप को हलका महसूस करता है।

इसलाम ने एक पाबन्दी ज़रुर लगाई है। क़ज़ाए हाजत के वक़त शरम व हया का ज़रुर लिहाज़ रखा जाये। पेशाब पाख़ाना करने वाला दूसरों के सामने उरयाँ न हो। जन्गल में किसी ओट में या दूसरों की नज़र से दूर बैठे। बेतउल ख़ला हो तो बा परदा। हुज़ूर (स०) का यही तरीक़ था।

न मालूम इस्लामी माहौल में तरबियत पाने का असर है या बा शऊर इन्सान की यही हालत होती है। क़ज़ाऐ हाजत के वक़्त अगर मुझे मालूम हो जाये तो कोई मुझे देख रहा है तो पूरी तरह फरागत नही होती जो बाज़ दफ़ा मुज़िर सैहत साबित होती है। बाज़ दूसरे मुसलमानों से मालूम हुआ कि उन की भी ऐसी सूरत में यही कैफ़ियत होती है।

एक तरतबा मुझे पटना में एक कॉनफरेन्स में शरीक होने का इत्तफाक़ हुवा। नुमाइन्दगान में मदरासी हिन्दू भी थे। क़याम गाह पर बहुत से बेतउलख़ला दीवार ब दीवार बने हुए थे। मेरे लिये ये बात बाइसे तअज्जुब थी कि वह मदरासी पाख़ाना करते हुए कॉनफरेन्स में पेश होने वाले उमूर पर गरमा गरम बहस भी कर रहे थे। लेकिन हुज़ूर (स०) ने फरमाया बेतउलख़ला में नंगे बात करने वालों पर ख़ुदा सख़्त नाराज़ होता है।

बजाए क़दीम तरज़ की निशस्त और बेतउलख़ला के मोजूदा ज़माने में पाट, कमोड और फलश का रिवाज हो चला है। नई रौशनी के अफरिक़ी और ऐश्याई भी उनहे पसन्द करते है और यह गुसल ख़ाने के अन्दर ही रखे या बनाये जाते है और बज़ाहिर बड़े साफ़ सुथरे मालूम होते है। गुसल ख़ाने और पाख़ाने के यकजा होने की क़बाहतों की निस्बत हम आगे चल कर बयान करेंगे। यहाँ हम सिर्फ़ नई तर्ज़ के पाख़ानों की निस्बत कुछ अर्ज़ करते है।

कमोड पर इन्सान बदन का निचला हिस्सा टेक कर इसतरह बैठता है जैसे

Scanned by CamScanner

कुर्सी पर। एक मरीज़ केलिये ये तर्ज़ निशस्त आरामदेह और मुफ़ीद होती है। लेकिन तन्दरुस्त आदमी के बदन में गोना गों कसल पैदा करती है। इस तरह बैठने से बदन आराम महसूस करता है। जिसके साथ उमआए मुसतक़ीम में भी सकून पैदा होता है। टाँगें भी पूरी तरह नही खुलतीं, रानों का दबाव पहलुओं पर और बलाई हिस्से जिस्म का वज़न उस आँत पर पूरी तरह नही पड़ता जिससे उसका मुँह पूरी तरह नही खुलता और उसकी हरकते दूदी में किसी हद तक रुकावट पैदा हो जाती है और फ़ुज़ले का सही तौर पर और पूरा अख़राज नही होता जो सेहत के लिये मुज़िर होता है।

सफाई और पाकीज़गी के लिहाज़ से भी यह तरीक़ा पसन्द दीदा नही है। वह लोग जो अपने बदन और लिबास पर बोल व बराज़ का एक ज़र्रा भी लगा हुवा पसन्द नही करते लकड़ी या धात के एक ढाँचे पर जिस में हर वक़्त ग़िलाज़त पड़ी रहती हो और उसी ग़र्ज़ से वह बनाया गया हो अपना जिस्म टेक कर बैठना कैसे गवारा कर सकते हैं ख़्वाह वह कितना ही धुला धुलाया और साफ़ सुथरा हो।

कमौड कई क़िस्म के होते हैं। नस्ब शुदह या मुतहर्रिक अव्वलुजज़िक्र वहाँ काम में लाए जाते हैं जहाँ बलदिये ने ख़ास क़िस्म कि ढकी हुई गन्दी नालियों और पानी की काफी और मुसलसल बहम रसाई का इन्तज़ाम किया हुआ हो। या किसी मालिके मकान ने अपने सर्फ़ा से अपने मकान में ऐसा एहतमाम किया हुवा हो।

नस्ब शुदह कमौड का धात की नाली के ज़रिये दीवार में कुछ बुलन्दी पर लगी हुई पानी की हौज़ी से तअल्लुक़ होता है जिसमें एक ज़न्जीर बैठने वाले के ऊपर लटक रही हाती है। बाद फरागत जब वह ज़न्जीर खींचता है तो होज़ी से बड़े ज़ोर से पानी नाली में होकर कमौड में आने लगता है और तमाम ग़िलाज़त बहा कर कमौड की मोरी में से निकाल देता है जो नीचे गन्दी नाली में जा गिरती है। होज़ी की बनावट इस क़िस्म की होती है कि पानी फैंकने के मअनबाद खुद बखुद भरना शुरु हो जाती है। इसमें दस बारह सेर पानी आता है। दोबारह उससे पानी उसके भर जाने के बाद ही छोड़ा जा सकता है।

इस क़िस्म के कमौड में काम लाने के वासते पानी रोज़ाना अगर उसे

इस्तेमाल करने वाले ज़ियादा नफ़ूस हों तो कई मन पानी दरकार होता है। खुश्क इलाकों में जहाँ पीने के लिऐ पानी बहुत कम दसतियाब होता है। इस किस्म का इन्तेज़ाम कैसे मुमकिन हो सकता है और अगर कोई बलदिया या अमीर आदमी इस का एहतमाम कर भी ले तो ऐसे इलाके में नौए इन्सान की एक एहम ज़रुरते ज़िन्दगी का इतना ज़िआ अफसोस नाक अमर है।

इस क़िस्म के कमोड पर बैठ कर तहारत हो ही नही सकती। दूसरी जगह ही बैठ कर करनी पड़ती है। जिस के लिए मज़ीद मिक़दार पानी की ज़रुरत होती है। मुतअल्लिक़ा हिस्सा जिस्म की सफ़ाई के लिए सिर्फ़ एक ख़ास किस्म का रद्दी कागज़ काम में लाना पड़ता है। कपड़ा, रुई या ढैला इस्तेमाल नही किया जा सकता क्यों कि इसके कमौड में गिरने से इसकी निचली मोरी बन्द हो जाती है।

इस क़िस्म के कमौड में कई क़बाहतें हैं। इसके बनवाने और तैयार कराने पर हज़ारों रुपे सर्फ होते हैं जो पसमान्दह दरमियानी लोगों के बसका रोग नही है। फिर कागज़ जिस पर कुछ न कुछ सर्फ़ करना पड़ता है मुहय्या करना पड़ता है। अगर किसी वजह से उसकी निचली मोरी बन्द हो जाए तो जब तक ख़ास औज़ार और कुन्डियों से उसकी सफ़ाई के माहिर आ कर न करें वह काम नही दे सकता। होज़ी में कोई नुक़्स पैदा हो जाए या पानी की बहम रिसाई किसी वजह से रुक जाए तो कमौड ग़िलाज़त से अट जाती है और सारे घर में तअफ़्फ़ुन फैल जाता है।

दूसरे क़िस्म के मुतहार्रक कमौड जो एक जगह से दूसरी जगह उठा कर ले जा सकते हैं और जिनमें से उनके पाट निकाल कर साफ़ किये जाते हैं वह भी इतने मुफ़ीद नही होते। ऐक दफ़ा इसत्माल करने के बाद जब तक साफ़ न किऐ जायें दो माह वह कम में नही लाऐ जा सकते। इसलिऐ या तो घर में मुनासिब और काफ़ी कमौड वी की तादाद होनी चाहिये या इसत्माल के मआ "बाद उनहें साफ़ करने का इन्तज़ाम होना चहिये।

ऐसे कमौड के साथ के पैशाब केलिऐ पाटों या बर्तनों का अलग इन्तज़ाम भी करना पड़ता है। इन का एहतमाम भी बहुत से इख़राजात चाहता है।

Scanned by CamScanner

बाज़ अफ़रीक़ी और ऐशियाई मुलकों में ऐसे नस्ब शुदा कमौड का रिवाज हो चला है जिन पर पुरानी तरज़े नशस्त से पाँव के बल बैठा जाता है। मगर उन के ऊपर फ़िलिश करने की होज़ी भी हुवा करती है और उन पर बैठ कर आंवदस्त भी किया जाता सकता है। गौ ये पहली क़िस्म के कमौड से सफ़ाई के लिहाज़ से बहतर होता है मगर उसके एहतमाम केलिऐ उसी क़िस्म के इख़राजात बरदाशत करने पड़ते हैं और इस तरह ज़ियअ आब होता है और होज़ी, नाली, मौरी और वहम रसानी आब में कोई ख़राबी क़बाहतें पैदा होती हैं और यह सब ख़राबियाँ सैहत व सफ़ाई की मनाफी हैं।

हम यह तोनही कह सकते के इसलाम में कमौड, फ़िलिश या पाट का इसत्माल मना है हमारी ग़र्ज़ इन तफ़सीलात के बयान करने की यह है के इसलामी तालीम सिर्फ़ इतना तक़ाज़ा करती है के कोई तरीक़ इख़तियार किया जाऐ मगर ज़्यादा से ज़्यादा सफ़ाई और पाकीज़गी हासिल कि जाऐ और ऐसा तरिक़ा इख़्त्यार किया जाऐ जो किसी इन्सान पर उसकी ताक़त से ज़्यादा बार न डाले।

मग़रिबी के मुलक फ़ान के मशहूर अन्गरेज़ी अख़बार "गनी टाईमज़" की 7 मार्च 1958ई की अशाअत में उसके ख़सूसीमुक़ाबला निगार पैन फ़ोर्ड ने ऐक शज़रह मज़मून का शाऐ किया के इसलाम की ख़ूबियाँ अपनी जगह मुसलिम व क़ाबिल दाद हैं लेकिन उसमें ये क्या गन्दा और घिनावना तरीक़ा बजाऐ कागज़ के पानी से आवदतस्त लेने का रखा है। मिस्टर पैन फ़ोर्ड ने अपनी तरफ़ से इसलाम को बहुत बड़ा ऐतराज़ करके इन इलाक़ों में अपने तमद्दन की फ़ोक़ियत ज़ाहिर करने की कोशिश की है और इसलाम को ग़ैर मुतमद्दन लोगों का मज़हब साबित करने की सई की है।

हमारे मुन्दर्जा बाला मारुज़ात की रोशनी में इस ऐतराज़ की कोई हक़ीक़ नही है और यूरोपेन तमद्दन के इनहेतात व ज़वाल के निहायत वाज़ेह और बिन आसार के नमूदार होने के वक़्त इसलाम पर इस क़िस्म के बोदे हमले डूबते को तिनके का सहारा हैं।

लेकिन इसी इलाक़े के शहर लीग्स के सी-एम-एस गरॉमर स्कूल के प्रिन्सिपल मिस्टर जे-ई-अयूनज़बी-एस-सी(लन्दन)ने अपनी तसनीफ़ "ट्रॉपिकल

हाईजेन" में लिखा है "आबदस्त के वक़्त कागज़ के बजाए पानी का इसतेमाल बेहतर है। वह यूरपी बाशिन्दे जो मशरिक़ी ममालिक में जा कर आबाद हो जाते है वह बिलउमूम पानी इसतेमाल करने का तरीक़ इख़्तियार कर लेते हैं। जो लोग इस तरीक़ के आदी हो जाते हैं उनहें इसको जारी रखना चाहिये और उसे तर्क नही करना चाहिये। तहारत के वक़्त ख़्वाह पानी इसतेमाल किया जाए या कागज़ दोनों सूरतों में यह ज़रुरी है कि फ़रागत के बाद हाथों को साबुन और पानी से साफ़ किया जाए"।

बावजूद इसलामी तरीके आबदस्त की अफ़ादियत व अहमियत तसलीम कर लेने के बाद मिस्टर अयूनज़बी भी यह नुकता न समझ सके के कागज़ इसतेमाल करने बाद अगर पानी इसतेमाल न किया जाऐ तो मुकम्मल सफ़ाई मुतअल्लिका हिस्सा-ए-जिस्म की नहीं होती।

जैसा कि हम पहले अर्ज़ कर चुके है कि कागज़ इसतेमाल करने के बाद पानी से आबदस्त किये बग़ैर नहाने के लिये टब के पानी में बैठ जाना एक नमाज़ी मुसलमान के लिये बड़ा नागवार होता है क्योंकि अजाबत बलकि सिर्फ़ पेशाब के बाद भी पानी से मुतअल्लिका हिस्सा-ए-जिस्म की सफ़ाई करना उसकी फ़ितरते सानिया बन चुकी होती है और उससे इनकार नही किया जा सकता के ख़्वाह आप सफ़ाई कपड़े से करें या कागज़ से,- मुतअल्लिका हिस्सा-ए-जिस्म पर ज़र्राते गिलाज़त कुछ न कुछ ज़रुर मौजूद रहते है। जो पानी से ही सहीह तौर पर साफ़ हो सकते हैं और ये भी मुसल्लिमा अमर है के दुनिया की कोई चीज़ पानी से बढ़कर सहलुलहुसूल और ज़ूद असर नही है।

पेशाब करने के मुतअल्लिक़ बानी-ए-इसलाम (स०) ने बअज़ और भी हिदायात दी है जो दिलचस्पी से ख़ाली नही हैं। फ़रमाया "जब तुम में से पेशाब करना चाहता हो मुनासिब जगह तलाश करे "यानी ओट हो ऐसी जगह हो जहाँ से छींटें उड़ कर कपड़ों और जिस्म पर न पड़ने पायें। पहले ही गन्दी और ग़लीज़ जगह न हो ताकि कोई मरज़ लाहक़ न हो जाए। ऐसी जगह न हो जहाँ से पेशाब बह कर अपनी ही जानिब न आ जाऐ।

फिर फ़रमाया "खड़े हो कर पेशाब न किया जाऐ। इसमें कई क़बाहतें हैं। अव्वल तो छछोरा पन है। दूसरा कपड़े और जिस्म पर छींटें पड़ने का एहतमाल

Scanned by CamScanner

होता है। तीसरे तहारत जो इसलामी नुक्ता-ए-निगाह से लाज़मी और ज़रूरी है खड़े हो कर नही की जा सकती। लेकिन किसी ऐसे ढेर पर जहाँ छींटे न उड़ें बअमरे मजबूरी पेशाब कर सकते हैं।

फ़रमाया "किसी सुराख़ में पेशाब नही करना चाहिऐ"। वजह उसकी ज़ाहिर है। बअज़ दफ़ा सूराख़ में कोई मूज़ी जानवर होता है। पानी अन्दर जाने से वह बाहर निकल आता है और उसका पेशाब करने वाले को काट खाने का अन्देशा होता है।

इसतिनजा करने का सेहत पर भी अच्छा असर पड़ता है। ग़ैर शादी शुदा नौजवान बिलउमूम एहतलाम का शिकार होते हैं और बअज़ तो इसकी कसरत के बाइस अपनी सेहत खो बैठते हैं। हुज़ूर (स०) से ऐक नौजवान ने इस आरेज़ा की शिकायत की तो हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़माया "सोने से क़ब्ल अपना ज़कर धो लिया करो"। खुद हुज़ूरे अक़्दस (स०) वज़ू कर के इसतराहत फ़रमाया करते थे।

जो लोग रात पेशाब किये बग़ैर सो जाते हैं उनहें एहतलाम का एहतमाल रहता है। इसतिनजा करते हुए पेशाब आ जाता है। ये दोनो अमल एहतलाम के लिये बेहतरीन हिफ़्ज़े मातक़द्दुम हैं क्यों कि पेशाब से मसाना ख़ाली हो जाता है और रगें पानी से ठन्डी हो जाती हैं। किसी के पेशाब या पाख़ाना करते हुए रोक देना उस की सेहत पर बहुत बुरा असर डालता है। एक जंगली मदीना में आया मस्जिदे नबवी (स०) में बैठ गया। सहाबा (रज़०) ने शोर मचा दिया। हुज़ूर (स०) ने उनहें मना फ़रमाया और फ़रमाया इसे फ़ारिग़ हो लेने दो। पानी का डौल मंगवाया और ग़लाज़त को बहा दिया गया।

इस मज़मून में मुन्दरजा ज़ेल अहादीस से मदद लिगई है:

0 मिशकात शरीफ़ जिल्द अव्वल हदीस नम्बर 408-444-310-219-321-325-309

0 तजरीदे बुख़ारी हदीस नम्बर 158-115-159-122-119-120-129-121-155

0 तिरमिज़ी बाबुत्तहारत सफ़ाह 3 जिल्द अव्वल

0 सहीह बुख़ारी किताबुल वज़ू हदीस नम्बर 136-132-146

(इसलामी उसूले सेहत)

एहतियाते नबवी (स0) और जदीद साइंस

Prophet's Care & Modern science

कुतबे अहादीस में हुज़ूरे अक़दस (स0) के हवाले से ऐसी एहतियातें मुरव्वी हैं जिन को मौजोदा साइंस मान रही है बल्कि बाज़ चीज़ों पर नई तहक़ीक़ हो रही हैं जो दीने इसलाम ने सदियों पहले मुसलमानों को बता दी हैं।

डा0 कोसटो का ऐतराफ़

Recognition Of Dr. Costauv

डा० कोसटों वह शख़्स है जिसने समुंद्रों के पानीयों पर तहक़ीक़ की कि ये आपस में क्यों नही मिलते। ये वाक़िया मुन्फ़रिद है जो पहले गुज़र चुका है।

इसलामी मुतअलए से ये बात अयाँ हो जाती है कि इसलाम ने एहकामात के ज़रिऐ अपनें माननें वालों को क़दम क़दम पर एहतियातें, नसीहतें और अख़लाक़ी क़दरें दी है। इस के हर हुक्म पर चलने वाला कभी परेशान न होगा। मानने वाला नाकाम न होगा। मआशी ज़िन्दगी हो या मआशरती ज़िन्दगी हर दोनों पहलूओं में इसलाम एक कामियाब मज़हब है। हुज़ूरे अक़दस (स०) खुराक, लिबास, मआशरत, मआशियत अलग़रज़ तमाम शोबए ज़िन्दगी में एहतियातें और परहेज़ बतायें हैं ताकि ज़िन्दगी के किसी भी हिस्से में किसी क़िस्म की लचक पैदा न हो।

Scanned by CamScanner

प्याल-ए-नबवी (स०) और जदीद साइंस

Prophet's Goblet & Modern Science

हुज़ूरे अक़दस (स०) के चन्द एक "क़दह" यानी प्याले भी थे। हज़रत अनस (रज़ि०) ने (एक प्याले की तरफ़ इशारह कर के) फ़रमाया कि मैंने अपने इस प्याले से रसूलुल्लाह (स०) को पीने की अश्या (यानी शहद, पानी, और दूध पिलाया)। बाज़ कुतुब में है कि वह प्याला झाव की लकड़ी का था। उसका रंग ज़र्दी माइल था। वह प्याला चौड़ी और अच्छी लकड़ी का था। उस पर लोहे का ख़ोल चढ़ा हुआ था।

(रहबर-ए-ज़िन्दगी-उसव-ए-रसूले अकरम (स०)

आप खुले बर्तन में पानी नोश फ़रमाते थे। जो कि दिल के लिये ज़रिये इनबिसात व फ़रहत है और आप (स०) का प्याला झाव की लकड़ी का था।

झाव जिसे अरबी में तरख़ा, फारसी में गज़, पन्जाबी और सराईकी में लाई, महरा, अंग्रेज़ी में टमारिस्क ट्री (Tamarisk Tree) कहते हैं।

डा०कर्नल चौपड़ा ने टमारिस्क ट्री के प्याले के मुन्दरजाज़ेल फ़ायदे बताये हैं। इस में पानी पीने से जिगर के अमराज़ (Liver Diseases) ख़ास तौर पर वरमे जिगर (Liver Inflammation) इसतिस्क़ा (Oedema) ख़त्म हो जाता है। इससे गुर्दों की वरम (Kidneys Infrection)ख़त्म हो जाती है। पेशाब खुल कर आता है। हत्ता कि इसके प्याले में पानी पीने से ख़ून में सफ़रावी कैफ़ियत कम हो कर ख़ून में चर्बीले मवाद कलेसट्राल (Cholesterol) और लिसी थेन कम हो जाती है पित्ते (Gall Bladder) में पथरी बनने वाला मवाद पेशाब के ज़रिए निकल जाता है।

Scanned by CamScanner

खाने की एहतियातें और जदीद साइंस

Care Of Fooding & Modern Science

हुज़ूर अक़दस (स०) ने खाने की बैश बहा एहतियातें बताइ हैं। जो मुन्दरजा ज़ेल हैं:

उल्लामाइब्नि क़य्यिम ने किताबे ज़ादुल मिआद में नक़ल किया है कि।

हज़ूर अकरम (स०) दूध और मच्छली हरगिज़ हरगिज़ जमा न फ़रमाते थे और न ही दूध और किसी तरश शै को जमा न फ़रमाते और न ही दो गर्म गिज़ायें, न दो जुलाब आवर, न दो चिपकने वाली गिज़ायें और न दो ऐसी गिज़ायें जमा फ़रमाते जो एक ही ख़ल्त में हल हो जाने वाली हों और न ही दो मुख़तलिफ़ चीजें जैसे कि ऐक क़ब्ज़ करने वाली और दूसरी जुलाब आवर। यूँही ऐक ज़ूद हज़म और एक देर से हज़म होने वाली और न ही एक भुनी हुई और दूसरी (पानी डाल कर) पकी हुई और न ही एक ताज़ा और एक बासी जमा फ़रमा कर तनावुल फ़रमाते थे।

इस तरह आप (स0) न तो तेज़ गर्म खाना तनावुल फ़रमाते और न रात का पका हुआ बासी खाना दुसरे रोज़ तनावुन फ़रमाते और न ही ऐसा खाना तनावुल फ़रमाते जिस से बू आती हो और न ही चट-पटे खाने जैसे चटनीयां वग़ैरह ।

(ज़ादुल मआद- रहबरे ज़िन्दगी)

ये इहतयातें तफसील तलब हैं उनकी तफ़सील मनदरजा जेल है -:

तेज़ गरम खाने से मना

हुज़ूरे अकदस (स0) ने तेज़ गरम खाने में बे बरकती फ़रमाई है । तेज़ गरम

खाना मुंह के छाले, मेदे में वरम और सोजिश का ज़रीया बन सकता है और बहुत गरम खाना खाने से गले में नुक़्स आ जाता है। जैसे गले आना और अगर गरम-गरम खाने के साथ ठंठा पानी भी पी लिया जाये तो दातों और मेदा में नक़्स पैदा हो जाता है। लेकिन अगर खाने के जोश को ठंठा कर लिया जाये तो इनसान उन अमराज़ से बच जाता है।

यह बात भी नाक़ाबिले तरदीद है कि तेज़ गरम खाने में बे बरकती की अलामत यह है कि बतौरे तजरिबा आप चुलहे या तन्दूर में उतरती गरम-गरम रोटी खाना शुरु करें तो ज़्यादा खा जायेंगे लेकिन अगर कुछ ठंठी हो लेने दें तो कम खाई जा सकेगी। गोया आप (स0) के फ़रमान के मुताबिक बरकत आ जाती हे।

इस जगह कोई यह ख़याल न करे कि जमा हुआ खाना खाया जाये ऐसा हरगिज़ नहीं बल्कि कुछ ठंठा हो लेने दें।

डाक्टर अलबर्ट ने एक किताब "फीड एंड केयर" **(Feed & Care)** लिखी जिसमें तमाम गिज़ाओं को इस्तेमाल करने के तरीक़े, फ़वायद और उनकी इहतयातें बताई हैं। इस के मुताबिक तमाम गिज़ाओं का इल्म एक सेहतमन्द ज़िहन के लिये बहुत ज़रुरी है।

हालांकि हमारे नबी अकरम (स0) ने पहले ही इहतयातें फ़रमा दीं हैं।

दूध और मछली जमा न करना

मुझे कुछ मछेरे मिले जिन की जिल्द सफ़ेद थी। उन को बरस थी। मैनें पूछा कि यह तकलीफ़ कैसे शरु हुई। बताया कि चूँके मच्छली के शिकारी हैं और मछली खाने के बाद बकरी का दूध पी लिया था उसके बाद जिल्द की रगंत तबदील हो गई। तजरिबे में ये बात आई है कि बरस हर दूध और मछली से नहीं होती ये सिर्फ़ मछली खाकर बकरी के दूध से हो जाती है।

(हकीम एस एम इक़बाल-अख़बारे जहाँ)

हुज़ूरे अक़दस (स०) ने दूध और मछली को इकट्ठा खाने से मना फ़रमाया

है क्योंकि ऐसा करने से नुक़सान और ज़रर का अनदेशा है।

मज़कूरा वाक़िया एक अज़ीम तहक़ीक़ी इन्सान का है जिस की सदाक़त में कोइ शक नही। बलकि अब तहक़ीक़ से यह बात साबित हो चुकी है कि दूध अगर बकरी का होतो उससे वाक़ई जिल्द की रंगत बदने का ख़तरा है।

दो गर्म ग़िज़ायें न जमा करना

गर्म ग़िज़ा से जब और गर्म ग़िज़ा मिल जाए तो गर्मी गर्म बन जाती है। जब एक ग़िज़ा में केलौरीज़ (Calories)ज़्यादा हों और फिर साथ ही एक और ऐसी ग़िज़ा ली जाए जिसमें भी केलौरीज़ ज़्यादा हों तो उसका नुक़सान चरबी पर पड़ता है। हत्ता कि बअज़ औक़ात बलड प्रेशर (Blood Pressupe) बहुत हाई हो जाता है। इस लिये मुख़तलिफ़ गर्म (तासीर के लिहाज़ से) अग़ज़िया मुतावातर और एक वक़्त में इसतेमाल न कि जायें।

दो सर्द ग़िज़ायें न जमा करना

ऐसी ग़िज़ायें जिनमें हरारत और केलौरीज़ (Calories)कम हों उनका मुतावातिर और ज़्यादा इसतेमाल जिस्म को नुक़सान देता है और अगर दो सर्द ग़िज़ायें इकट्ठी इसतेमाल की जायें तो फिर उसके नुक़सान का अन्दाज़ा कैसे हो सकता है। ऐसी ग़िज़ायें लो बलड प्रेशर (Low Blood Presssure), फ़ालिज (Hemiplegia), लक़वा, हाथ पाँव का सुन हो जाना और अज़लाती खिंचाव का बाइस बनती है।

दो चिपकने वाली ग़िज़ायें जमा न करना

ऐसी ग़िज़ायें जिन के अन्दर चिपकने की सलाहियत हो वह मेदे की दीवारों और झिल्लियों (Edithilium) से चिपक जाती है और उनके चिपकने से वह सुराख़ बन्द हो जाते हैं जिससे मेदे के जूस, तीज़ाब और हाज़िम रतूबात निकल कर ग़िज़ा में शामिल होती हैं और ग़िज़ा हज़्म हो जाती है। मसलन" अरवी और भिन्डी वग़ैरह।

Scanned by CamScanner

दो क़ाबिज़ ग़िज़ायें जमा न करना

क़ाबिज़ अग़ज़िए आँतों और शिरयानों में (Thrombus) और रुकावट पैदा कर देती है।

अगर यकसर दो क़ाबिज़अग़ज़िए इसतेमाल कराये जायें तो दोनों की क़ाबिज़ कुव्वत बढ़ने की वजह से उन की कुव्वते अमल बढ़ जाती है और कुव्वते अमल बढ़ने की वजह से जिस्म मसाइव का शिकार हो जाता है। मसलन" कच्चे अमरूद वग़ैराह।

दो जुलाब आवर ग़िज़ायें जमा न करना

आँतों की हरकात अगर मुस्तक़िल तेज़ रहें तो आँतों का ज़ख़्म, अलसर और आँतों की सूज़िश शुरु हो जाती है।

जुलाब आवर ग़िज़ायें आँतों की हरकात को तेज़ करती है। जिससे मेदा और आँतों की अन्दरुनी तह कमज़ोर हो कर सूज़िश का बाइस बनती है। मसलन मलक और करेले वग़ैरह (गर्म तवाए) के लिये।

दो ग़लीज़ ग़िज़ायें जमा न करना

मेदे में ग़िलाज़त की वजह से निज़ामे हज़्म मुतअस्सिर होता है। उसकी वजह से मेदे की तीज़ाबियत ख़त्म हो कर उसकी अलकाली (Alkali) ज़्यादा हो जाती है और इन्सान मुसतक़िल तबख़ीर, गैस और फिर दिल का मरीज़ बन जाता है। मसलन अरावी, भिन्डी, दाल माश, दाल चना वग़ैरह।

दो रक़ीक़ ग़िज़ायें जमा न करना

ऐसी ग़िज़ायें जिन से मेदे में नर्मी और कमज़ोरी पैदा हो हमैशा मुन्दरजाज़ेल अमराज़ का बाइस बनेंगी।

इसहाल, मरौड़, कै़, उबकाइ, बदन की सुस्ती कसल वग़ैरह।

एक क़ाबिज़ दूसरी जुलाब आवर ग़िज़ायें जमा न करना

ऐसी ग़िज़ायें जिनसे क़ब्ज़ जमा होती हो और उसी दौरान अगर कोई मसहल या जुलाब आवर ग़िज़ायें इसतेमाल करें तो दो मुख़्तफ़ उलमिज़ाज अग़ज़िऐ के इसतेमाल से मेदे की अन्दरुनी झिल्लियों में शदीद वरम पैदा हो जाती है। इसलिये ऐसी ग़िज़ायें इकट्ठी इसतेमाल न की जायें।

एक ज़ूद हज़्म दूसरी देर हज़्म जमा न करना

ज़ूद हज़्म ग़िज़ायें जल्द हज़्म हो जाती है जबकि देर हज़्म ग़िज़ा मेदे में बहुत अरसे तक पड़ा रहने की वजह से मेदे के निज़ाम को मुतअस्सिर करता है। इस की मिसाल कुछ इस तरह है कि जेसे बकरी और ऊँट के गोश्त को इकट्ठा पकाया जाये तो दोनों एक वक्त में नही गलेंगे इसके लिये ज़्यादा वक्त दरकार होगा।

बिलकुल ऐसी ही ग़िज़ाओं की एहत्यात है। मसलन सेब, मूली वग़ैरह।

Scanned by CamScanner

एक भुनी हुई दूसरी पानी में पकी हुई ग़िज़ायें जमा न करना

अगर भुना हुआ गोश्त इसतेमाल किया जाये और फिर उसके साथ ऐसी ग़िज़ा इसतेमाल की जाये जिस में पानी हो तो ऐसी ग़िज़ा की वजह से मेदे में रतूबत की ज़्यादती कर देगी और भुना हुवा गोश्त मुजफ्फ़िफ़ है वह खुश्की पैदा करेगा उस की वजह से मिज़ाज मुख़तलिफ़ हो जाएंगे।

एक ताज़ा दूसरी बासी ग़िज़ा न जमा करना

रॉजस्ट बोर्न, कनैडा का मशहूर माहिरे ग़िज़ा है। उसका कहना है कि ताज़ा ग़िज़ा चाहिये वह झील का घास ही क्यों न पका हुवा हो उस बासी गोश्त से बेहतर है जिस में अलीवया का ज़ैतून मिला हुवा हो मेंने बासी खाने से लोगों को बीमार और मरते देखा है। मेरी ज़िन्दगी हवादिस और तजुर्बात में गुज़रती हुई ऐक साइंसदाँ के मरतबे तक पहुँची है।

अगर आप ग़िज़ायें इसतेमाल करें तो इस बात को देख लें कि ग़िज़ा ताज़ा है या लज़ीज़ है । क्यों कि असल लज़्ज़त ताज़गी है न कि खाने में मौजूद मसाले जात में।

(सेहत व ज़िन्दगी-रॉजस्ट बोर्न के तजरिबात)

हुज़ूर अकरम (स०) ने ताज़ा खाना पसन्द फरमाया और इसका हुक्म दिया और ऐसा खाना जिससे बू आ रही हो ना पसन्द फ़रमाया है।

चट पटे खानों से मना

रॉस्ट बोर्न कहता है कि सादा और तन्दरुस्त खाना तन्दरुस्ती और ताज़गी का बाइस है क्योंकि इन्सानी जिस्म का निज़ाम उस खाने के मुवाफ़िक़ है जब्कि ऐसा

Scanned by CamScanner

खाना जिस में मिर्च मसाले की वजह से मसनूई लज़्ज़त और लताफ़त पैदा की हुई हो वह क़तई सेहत के लिये मुफ़ीद नही।

रोस्ट, बरोस्ट, चरग़ा, चिकन, सभी वह इसतेलाहात है जो नई और यूरोपी दुनिया ने हमें दी है। हालाँकि यह चीजें क़तई तोर पर सेहत के मुवाफ़िक़ नही हो सकतीं।

इन गिज़ाओं की वजह से अलसर (Ulcer)] मेदे की तीज़ाबियत (Acidity of Stomach), बदहज़मी (Indigestion) और बवासीर (Piles) पैदा हो रही है।

इसलाम ने सादा गिज़ा दी है। जिस में मज़ा भी है और सेहत भी।

मिट्टी खाने से मना

हज़रत अबू हुरेरह (रज़ि०) से रिवायत है कि हज़ूर (स०) ने फ़रमाया जो शख़्स मिट्टी खाता है गोया ख़ुद कशी करता है।

(तिबरानी-तिब्बे नबवी(स०)-रहबरे ज़िन्दगी)

हज़रत आएशा सिद्दीक़ा (रज़ि०) से मुरवी है कि हुज़ूर नबी (स०) ने फ़रमाया कि मिट्टी न खाया करो। क्योंकि इसमें तीन (बड़े) नुक़सानात हैं। एक यह के हमेशा की बीमारी, दूसरा उससे पेट ख़राब हो जाता है और तीसरा इससे इन्सान का रंग ज़र्द हो जाता है।

(जामे कबीर-रहबरे ज़िन्दगी)

डा0 क्योर के तजरिबात

Experience Of Dr. Cure

डा० क्योर (फ़िज़ियालोजिस्ट) ने ऐसे मरीज़ों के मुशाहिदात किये जिन्होंने मुसलसल मिट्टी खाई उस में बच्चे, औरतें और कुछ मर्द शामिल थे। उसकी माहिराना और मुहक़्क़िक़ाना रिपोर्ट के मुताबिक़ मरीज़ों की हालत यह रही।

Scanned by CamScanner

मिट्टी के नुक़सानात

औरतें

0 हामला औरतों में बच्चे माज़ूर पैदा होये।
0 जिगर बड़ने की तकलीफ़ मुसलसल मोजूद रही।
0 रहम में रसोली पाई गई।
0 दाइमी क़ब्ज़ रही।
0 मेदे में सफरावीरतूबत की कमी रही और गिज़ा हज़्म न हुई।
0 इसकातें हमल के वाकि़यअत होऐ।
0 दूध खुश्क हो गया।
0 चेहरे पर भुरभुरा पन और पीलाहट रही।
0 वाअज़ औरतों को यरक़ान हो गया।

बच्चे

0 पैट बढ़ा रहा।
0 दस्त और मरोड़ रहे।
0 दिमाग़ी कमज़ोरी और ग़ोतर की मरज़ हो गई।
0 थाईराइडज़ गलेन्डज़ में नुक़स हो गया जिस की वजह से दीमाग़ी खिंचाव हो गया।
0 मूँह में छाले रहे।
0 मेदे का निज़ाम अकसर मुतअस्सिर रहा।
0 जिगर बढ़ गया और यरक़ान हो गया।
0 माँ के दूध से नफ़रत हो गई।
0 जिसमानी बड़ोहतरी कम हो गई।

मर्द

0 मर्दों में भी मेदे, जिगर,आसाब और दिमाग़ी अलामत औरतों की तरह मुशतरक रहीं।

हुज़ूरे अक़दस (स०) ने मिट्टी खाने से मना फ़रमाया है। सोचने की बात है कि ये कितनी ख़तर्नाक खोराक है।

बाज़ ऐसे मरीज़ मिले हैं जो जिगर और गुर्दो की पथरी में मुबतला है। अगर

एक दफ़ा पथरी निकल गई तो फिर बन गई। ऐसे मरीज़ों के असबाबे मरज़ (Causes of Disease) पर जब गौर किया गया तो मालूम हुआ कि तीस फ़ीसद मरीज़ मिट्टी खाते है। उन में ख़ास तौर पर औरतें और बच्चे शामिल थे।

मिट्टी से गुरदों (Kidneys) को बहुत नुक़सान पहुँता है और जब गुर्दे मुतअस्सिर होंगे तो उनकी कमज़ोरी जिन्सी अमराज़ का बाइस बन जाएगी।

चार फ़ायदे और जदीद साइंस

Four Profit & Modern Science

हज़रत अनस (रज़ि०) से मुरवी है कि चार चीज़ों को चार वजह से बुरा मत जानो।

1-आशूबे चश्म को बुरा मत समझो, क्यों कि वह नाबीनाई की जड़ को काटती है।

2-ज़ुकाम को बुरा मत समझो, वह जुज़ाम की जड़ को क़ता करता है।

3-खाँसी को बुरा मत कहो वह फ़ालिज की जड़ की काते है।

4-दमल (एक फौड़े का नाम) को बुरा जानो क्यों कि वह बरस की जड़ को काटता है।

(नुज़हतूल मजालिस)

साइंसी और मैडिकली वज़ाहत

Scientific and medical Justification

1-आशोबे चश्म आँखें का इनतहाई तकलीफ़ देह मरज़ है। जिस में आँखें सुर्ख़ हो जाती हैं। सख़्त तकलीफ़ होती है आँखों के अन्दर चुभन होती है। चूँकि उससे आँख की फ़ासिद रतूबात जो कि आँख की पुतली और रतूबते चश्म को नुक़सान देती है। आशोबे चश्म की वजह से ख़ारिज हो जाती है। इस लिये वह आँख मोतियया बिन्द और दीगर अमराज़ से महफ़ूज़ रहती है। तिब्बे नबवी

(स०) में हुज़ूर अक़दस (स०) ने अशमद सुरमे की ख़ास क़िस्म फ़रमाई है। सुरमे की ये क़िस्म आँखों को लगती है जिसकी वजह से आँखें बहने लगती हैं और आशोबे चश्म में भी आँखें बहती हैं। इस लिये आँखे किसी बड़ी मरज़ और ख़ास तौर पर अन्धे पन से महफ़ूज़ रहती है।

2-कौढ़ का ख़तर्नाक हमला इन्सानी चेहरे और नाक पर पड़ता है। डा० कयोर के मुशाहिदे के मुताबिक़ जुज़ाम के (छूती जुज़ाम) जरासीम नाक के ज़रिये जिस्म में दाख़िल होते है और नाक उनकी बेहतरीन रिहाइश है। जब जुकाम होता है तो नाक बहती है उस नाक के बहने की वजह से तमाम गर्द-व-गुब्बार और जरासीम जो नाक के अन्दर होते है नाक से बाहर आ जाते हैं। चूँकि जुकाम में छीकें ज़ोरदार आती हैं वह जरासीम और आलूदगी जो कि आम हालात में नही निकल पाती वह छीकों के ज़रिये बाहर निकल आती है इसलिये जुकाम को कौढ़ के हक़ में मुफ़ीद जाना गया है।

तिब में कोढ़ की एक क़िस्म बलग़मी बताइ गई है जिस में बलग़मी और सोदा की ख़ल्त मिल कर कोढ़ का बाइस बनती है। ऐसी हालत में चुँकि जुकाम से बलग़म का इख़राज होता है इस लिये जुकाम कोढ़ के लिये मुफ़ीद है।

3- खाँसी को बुरा मत कहो वह फ़ालिज को क़त्आ करती है।

फ़ालिज ख़ालिस दीमाग़ी और आसाबी मर्ज़ है। लेकिन मौजूदा दौर में ज़्यादा तर फ़ालिज दिल के अमराज़ की वजह से हो रहा है। बलड प्रेशर हाई हो जाना और फिर उसकी ज़्यादती फ़ालिज का बाइस बनती है।

जब खाँसी होती है तो फेफड़ों में ऑक्सीज़न ज़्यादा मिक़दार में जाती है। जिस की वजह से पलमोनरी वैन (Pulmonary Vein) के ज़रिये फेफड़े में आने वाला ख़ून (दिल से आने वाला ख़ून) बहुत ज़्यादा साफ़ होता है और उस ख़ून से ऐसे अजज़ा जो कुछ अरसे के बाद ख़ून को ग़लीज़ करके मरज़ और अवारिज़ात का बाइस बने साफ़ हो जाते है और यूँ दिल तकलीफ़ से बच कर फ़ालिज का ज़रिया नही बनता।

तिब्बी तौर पर फ़ालिज की बे शुमार अक़साम और असबाब है उन में एक सबब और जामे सबब बलग़म है जब दिमाग़ी और अज़लाती बलग़म ज़्यादा हो

Scanned by CamScanner

जाता है तो कुछ ऐसी दवा या सबब चहिये जिससे बलग़म ख़रिज हो, तो खाँसी की वजह से बलग़म ख़रिज होती है और बलग़मी रतूबात की ज्यादती में कमी वाके हो जाती है।

4-दमल को बुरा न कहो क्योंकि वह बरस को काटता है।

दमल ख़ालिस बलग़मी फोड़ा है और जब ये बहता है तो उससे वह बलग़मी रतूबत ख़ारिज हो जाती हैं जोकि बरस का बाइस बनती है।

इस ज़िम्न में बन्दा ने एक फ़िज़्यालोजिस्ट से बात की उनहों ने बताया कि दरअसल ख़ून में मीलानन की कमी बरस का बुनयादी सबब है और मीलानन की कमी का सबब W.B.C. की ज़्यादती है और W.B.C. (दरअसल बलग़म ही है) दमल में ज़्यादा बलग़म ज़ाया (Waste) हो जात है। इस लिये दमल का मरीज़ बरस से बच जाता है।

नाक और कानों के बालों की एहतियात

हुज़ूरें अक़दस (स०) ने फ़रमाया जो बाल, नाक और कान के अन्दर होते हैं वह जुज़ाम से अमन का बाइस है। आप (स०) ने फ़रमाया नाक और कान के बाल (अन्दर से) मत उखाड़ो क्योंकि उससे मरज़ अकला (यानी नाक में ज़ख़्म) पैदा होता है (अलबत्ता ज़्यादा बढ़ते हुए हों तो) काट दिया करो।

(नुज़हतुल मजालिस जुज़सानी)

क़ब्ल अर्ज़ किया है कि डा० क्योर के मुशाहिदात के मुताबिक़ जुज़ाम (छूती कौढ़)के जरासीम (Germs) नाक के ज़रिये दाख़िल होते है और नाक उनकी बेहतरीन रिहाइश गाह है।

अब हुज़ूरे अक़दस (स०) ने नाक और कान के बाल काटने से मना फ़रमाया क्योंकि नाक के बालों की वजह से जरासीम अटक जाते हैं और वज़ू करते हुए, छींकते हुए और नाक साफ़ करते हुए वह जरासीम ज़ाया हो जाते हैं।

Scanned by CamScanner

आप ने बाल उखाड़ने से मना फ़रमाया कि उससे नाक में ज़ख़्म पैदा होता है। अगर नाक में ज़ख़्म पैदा हो जाए तो वह जरासीम ज़ख़्म के ज़रिये बहुत जल्द पूरे जिस्म में फैल जाते हैं और मरज़ के फैलने के ख़तरात बढ़ जाते हैं।

निगाहों की हिफ़ाज़त और जदीद साइंस

Protection Of Eye & Modern Science

अल्लाह तआला ने आँखें देखने के लिए दी हैं। उनके अन्दर बन्द करने और खोलने की सलाहियत इन्सान के इख़्तियार में है और यह इख़्तियार इस लिये दिया कि जब रब का हुक्म हो आँखे खोलो और जब उसका हुक्म हो आखें बन्द कर दो। मैं जहाँ चाहूँ देखो और जहाँ देखने से मना करूँ न देखो।

हुज़ूरे अक्दस (स०) का फ़रमान है जो नज़रों की हिफ़ाज़त करेगा अल्लाह तआला उसको ऐसा ईमान अता फ़रमाएगा जिसकी हिलावत वह दिल में महसूस करेगा।

जदीद फ़रंगी ज़ेहनीयत की सोच यही है कि देखने से क्या होता है। सिर्फ़ देखा हो तो ये कोई ग़लत काम तो नही। तो क्या कभी हमने ये भी सोचा कि!!!

0 शेर अगर सामने आ जाए और इन्सान उसे सिर्फ़ देखले तो सिर्फ़ देखने से जिस्म और जान पर क्या बनती है। सोचें!!

0 बच्चा माँ को सिर्फ़ देखता ही तो है। उसकी मुहब्बत और चाहत के जज़्बात क्या होते है ?

0 सब्ज़ा और फुल सिर्फ़ देखे ही तो जाते हैं तो फिर उनको देखने से दिल मसरुर और मुतमइन क्यों होता है ?

0 किसी को मुसीबत में सिर्फ़ देखते ही तो है दिल बेचैन और बेक़रार क्यों

Scanned by CamScanner

हो जाता है। आख़िर क्यों ?

0 ज़ख़्मी और लहू लुहान को सिर्फ देखते ही तो है परेशान, ग़मगीन और बअज़ बेहोश हो जाते है। आख़िर क्यों ?

0 किसी की बड़ी दुकान, बिल्डिंग, कौठी या कार देखते ही तो है। फौरन दिल के अन्दर हसरत, उम्मीद, हसद, रश्क, बेचैनी और तमआ जैसी मुख़्तलिफ़ केफियात पैदा हो जाती है। आख़िर क्यायें ? सिर्फ़ देखा ही तो था।

0 किसी हसीन जहाँ को देखते ही दिल दे बैठते है। उसे सिर्फ़ देखा ही था।

0 जहाँगीर ने शेहज़ादगी के आलम में मीना बाज़ार में नवाब ख़ाँ बहादुर की बेटी साहिबे जमाल को दिल दिया। मीना बाज़ार के अन्गूरी पार्क से गुज़र रहा था एक ख़ादिमा ने अर्ज़ किया कि साहिबे आलम आप को बादशाह सलामत याद फरमा रहे हैं। शहज़ादे के हाथ में कबूतरों का जोड़ा था। साहिबे जमाल सामने से आ रही थीं उसने कहा लो ज़रा हमारे कबूतर थामना हम अभी वापस आते हैं। वापस आये तो साहिबे जमाल के हाथ में एक ही कबूतर था पूछा। दूसरा कबूतर क्या हुवा ?.

साहिबे आलम वह तो उड़ गया।

कैसे ?

साहिबे जमाल ने दूसरा कबूतर भी छोड़ दिया और कहा कि यूँ!!

इस यूँ पर जहाँगीर लट्टू हो गया और आख़िर कार उससे अक्द कर लिया क्या ये मन्ज़र देखने से हुवा भी कुछ नही। सोचें ? आँखें खोलें ? देखें ? फिर देखें ? शायद दीदा-ए-इबरत मिल जाये।

0 नोट और कागज़ का फर्क़ अगर बच्चे से पूछो कि नोट को देखते ही उसकी कैफ़ियत क्या हाती है और काग़ज़ को देखने से क्या। तो नोट सिर्फ देखा ही तो था।

बक़ौले शख़्स:

तेज़ नज़र का ये असर जिस को लगा शिहार है!!!

अलग़रज़ आँखे चोरी करती है हाथ बढ़ते है और गुनाह हो जाता है इसलाम इसी कैफ़ियत के पेशे नज़र चेहरे को ढाँकने वाले पर्दे का हुक्म देता है। मख़्लूत तालीम पर एक साहिब फ़रमाया करते थे। नंगा गौश्त हो और भूका बिल्ला हो तो क्या भूका बिल्ला गौश्त से मुँह मोड़ कर चला जाएगा। हरगिज़ नही। माहिर की तहक़ीक़ के मुताबिक़ निगाहों का असर बिलवास्ता दिमाग़ और हारमौनरी सिस्टम पर पड़ता है। इस निज़ाम के मुतअस्सिर होने की वजह से जिस्म का तमाम निज़ाम मुतअस्सिर हो जाता है और बेशुमार अमराज़ व इलल में आदमी मुबतला हो जाता है।

डा0 निकुलस डैविज़ का तजरिबा

Analysis Of Dr. Nicolson Dews

मशहूर रुहानियात का महिर है तजरिबात करते हुए कहता है कि:

"निगाहें जिस जगह जाती हैं वहीं जमती हैं फिर उनका अच्छा और बुरा असर आसाब (Nerves), दिमाग़ (Brain) और हारमौन्ज़ (Horjmones) पर पड़ता है।

बीवी, बहन और माँ के अलावा किसी औरत के देखने से और ख़ास तौर पर शहवत की निगाह से देखने से हारमौनज़ के अन्दर ख़राबी मैंने देखी है। शायद कोई देख सके क्योंकि उन निगाहों का असर ज़ेहरीली रतूबत का बाइस बन जाता है और हारमौन्ज़ गिलैन्डज़ ऐसी तेज़, ख़िलाफ़े जिस्म ज़ेहरीली रतूबतें ख़रिज करते है जिससे तमाम जिस्म दरहम बरहम हो जाता है।

कोई इनतिहाई ग़रीब किसी इनतिहाई अमीर आदमी को देखता है तो उसके अन्दर हसद की वजह से हारमौन्ज़ की ऐसी रतूबत पैदा हौती है। जिससे उसका दिल और आसाब मुतअस्सिर हो जाते हैं। मेरा तजरिबा एसी ख़तर्नाक पोज़िशन से बचने के लिये सिर्फ़ और सिर्फ़ इसलामी तालिमात का सहारा लेना पड़ेगा"।

(इसलाम और मुसतशरिक़ीन)

Scanned by CamScanner

वाक़ई तजरिबात के लिहाज़ से ये बात वाज़ेह है कि निगाहों की हिफ़ाज़त न करन से ऐसी डिप्रेशन, बेचैनी और मायूसी का शिकार होता है। जिस का इलाज नामुमकिन है क्यों कि निगाहें इन्सान के ख़यालात को मुन्तशिर करती है। और ये इन्तशार उसकी घरेलू ज़िन्दगी पर ज़्यादा असर होता है। यूँ टनयं कोई लैला होती है और कोई मजनूँ वाक़ई इसलाम एक सकून का मज़हब है। जब यही आदमी किसी की अच्छी पोज़िशन दुनयावि लिहाज़ से देखेगा और अगर उसके अन्दर तक़वे की कमी है तो ये फ़ौरन या तो हसद और बुग़्ज़ की कैफ़ियत में मुबतला हो जाएगा और उस हैसियत के न मिलने की वजह से मायूसी का शिकार हो जाऐगा।

यूँ यह आदमी मुसतक़िल ऐसी नफ़सियाती अमराज़ का शिकार हो गया जिसमें आहिसता आहिसता फंसता चला जाता है।

एक साहिब फ़रमाने लगे में सिर्फ़ तीन दिन निगाहों को ग़ैर महरमात और ख़ूबसूरत इमारतों और मोटरों में लगाये रखता हूँ (आज हमारा दिन रात यही मशग़ला है) तो सिर्फ़ तीन दिन के बाद में जिस्म में दर्द, थकान और बेचैनी महसूस करता हूँ। मेरे जिस्म के अज़लात खिंच जाते हैं, दिमाग़ बोझल बोझल, हाथ पाँव में कमज़ोरी आजाती है।

अगर इस कैफ़ियत को दूर करने के लिये सकून आवर अदवियात इसतेमाल करुँ (जैसा कि आम मुआलिजीन का तरीक़े इलाज है) तो कुछ देर के लिये पुर सकून फिर वही कैफ़ियत आख़िर कार उस का इलाज यही होता है कि अपनी आँखों की हिफ़ाज़त करुँ। हर निगाह पर यही अलफ़ाज़ कहूँ कि "एक पड़ी मिट्टी है और ये खड़ी मिट्टी है"।

कुछ अरसे से यही मश्क़ करता हूँ तो में ख़ुद बख़ुद तन्दरुस्त हो जाता हूँ।

वालिदैन की अताअत और जदीद साइंस

Obidience Of Parents & Modern Science

रुहानियत के मशहूर माहिर डा० निकुलस डैविज़ और नफसियात के माहिर उस्ताद प्रोफेसर मिलन कैम की रिपोर्ट और रिसर्च बग़ैरह देखी जाये दोनों की बातें हम आहंग है उन की रिपोर्ट के मुताबिक़: ·

"वालिदैन जूँ जूँ बूढ़े होते जाते हैं उनकी मुहब्बत बढ़ती रहती है और वालदैन मुहब्बत की निगाहों में एक रोशनी का पेटर्न बन कर औलाद के हक़ में सेहत और तन्दरुस्ती का वाइस बनते हैं।

वालिदैन हज़ारों मील दूर अपनी नेक तमन्नाओं के ज़रिये ग़ैर मरई शुआओं का सिलसिला औलाद तक पहुँचाते रहते हैं। चाहे वालदैन बीमार हों लेकिन उनमें ग़ैर मरई शुआओं की ताक़त हरगिज़ कम नहीं होती वह बढ़ती रहती है।

वालिदैन अगर क़रीब हों तो उन की मुहब्बत भरी शुआऐं जिस्म और आसाब (Nerves) की तक़वियत और लचक का बाइस बनती है वालदैन का लम्स ज़ेहनी अवारज़ात को ख़त्म करता है। नफ़सियाती उलझन को दूर करता है और जिस्म ग़ैर फ़ानी हो जाता है।

मैं जब अपनी माँ से मुहब्बत भरी निगाहें मिलाता हूँ तो मेरे अन्दर क़रार और सकून की लहर दाख़िल हो जाती है"।

(इसलाम और मुस्तशरिक़ीन)

तमाम मग़रिबी माहिरीन मुसलसल तहक़ीक़ के बाद इस बात पर पहुँचे है कि फ़रमाबरदारी वालिदैन की ग़ैर मरई शुआओं के युनीट में हलचल पैदा कर देती है और फिर उनसे मुसबत ग़ैर मरई शुआऐं निकल कर इन्सान के जिस्म में दाख़िल हो कर उसकी सेहत व तन्दररुसती का बाइस बनती है और यही शुआऐं उसके गिर्द एक मज़बूत मरकज़ क़ायम कर के उसे मसाएब, आफ़ात और तकालीफ़

Scanned by CamScanner

से बचाती है।

फिर यही आदमी नाफरमानी करता है तो उस वक़्त भी वालिदैन की गैर मरई शुआओं के युनिट में हलचल पैदा होती है। लेकिन चूँकि वालदैन का गुस्सा, ग़म और फ़रयाद शामिल होती है इस लिये इस युनिट से मनफ़ी शुआएं निकल कर उस को नुक़सान पहुँचाती हैं।

वालिदैन से सलूक और उसका अन्जाम तजरिबात व मुशाहिदाते नूरी

Behave To Parent And Its Result

(अज़ प्रोफेसर डा० नूर एहमद नूर साहिब)

बतौर डाक्टर हम अपने सामने हर क़िस्म के लोग मरते देखते है। बाअज़ अमवात हम सब के लिये एक सबक़ छोड़ जती है। ये देखने में आया है कि जो लोग वालिदैन से नेक सलूक करते हैं अल्लाह तआला उनके इस दुनिया के मसाइल भी हल कर देते हैं। हत्ता कि ऐसे मूज़ी अमराज़ से जिनका हमारे पास कोई इलाज नही। अल्लाह तआला उनको शिफ़ा देते है और अच्छी मौत नसीब होती है और जो लोग अपने वालिदैन के साथ बद सलूकी करते है उनको दुनिया ही में सज़ा मिलती है और बुरी मौत मरते हैं।

बारी तआला हम सब को अपने वालिदैन की क़दरदानी की तौफ़ीक़ इनायत फ़रमाए। चन्द मुशाहिदात जो हक़ीक़त पर मबनी है पैशे ख़िदमत है।

माँ की दुवा

Mother's Prayer

0 मै जब फ़र्स्ट प्रोफ़ेशनल एम बी बी एस का इम्तहान देरहा था तो बुख़ार

Scanned by CamScanner

हो गया। बुख़ार के साथ अनाटोमी का पर्चा दिया। जिस में छः में से एक सवाल बिलकुल ग़लत हो गया। जब घर वापस आया तो वालदा साहिबा ने पर्चे के मुतअल्लिक़ दरयाफ़्त फ़रमाया तो मैंने बताया कि बुख़ार की वजह से एक सवाल बिलकुल ग़लत हो गया। मेरी वालदा साहिबा ने यक़ीन से फ़रमाया कि मैं दुआ करूँगी ग़लत सवाल भी इन्शाअल्लाह ठीक हो जायेगा।

जब मेरा नतीजा निकला तो मैं अपनी क्लास में अव्वल नम्बर पर आया और अव्वल आने की वजह से मुझे तमग़ा भी मिला। माँ की दुआ का असर ऐसा हुआ कि ग़लत सवाल के भी पूरे नम्बर मिले और क्लास में अव्वल पोज़ीशन रही।

0 एक प्रौफ़ेसर साहिब को दिल का दौरा पड़ा। दौरा इतना शदीद था कि बचना मुहाल था। उनकी वालदाह उनके बिस्तर के क़रीब बैठी ये दुआ कर रही थीं जो हम सब ने सुनी "बारी तआला मैं अपने लड़के से राज़ी हूँ तू भी राज़ी हो जा"।

0 हम लोग तो इलाज में मशग़ू थे और वह बीबी दुआऔं में मुस्तग़रक़ थीं। जब प्रौफ़ेसर साहिब का वक़्त आया तो उन्होंने बुलन्द आवाज़ से कलमा पड़ा, मुस्कुराए और फिर अल्ला को प्यारे हो गये।

वालिदैन की दुआओं का असर

Effection Of Parent's Prayers

1967ई का वाक़िया है के मैं असिस्टेन्ट प्रोफ़ेसर मेडीसिन की असामी के लिये पब्लिक सर्विस कमीशन में पेश हुवा। अल्लाह तआला की मेहरबानी और वालदैन की दुआऔं की वजह से मग़रिबी पाकिस्तान में अव्वल नम्बर पर रहा। मगर मुझे चन्द वजूहात की बिना पर नौकरी न दी गई। चुनाँचे मुझे सऊदी अरब जाना पड़ा जिस का मेरे वालदैन को बहुत सदमा हुवा। उनहों ने रात दिन मैरी वापसी और ऐसी ही आसामी पर चुनाव के लिये दुआएं कीं।

मेरा वापस आना और कमीशन के लिये चुना जाना नामुमकिन था। मगर उन

Scanned by CamScanner

बुजुरगों की दुआऔ की बरकत से न सिर्फ़ मुझे हज्जे अकबर की सआदत नसीब हुई बलकि एक साल के अन्दर ही मुझे वही आसामी मिल गई जिस का में अपने आप को एहल समझता था और मेरी सिनयारिटी में फ़र्क़ न आय।

वालिदैन की दुआ की वजह से मोहलिक मरज़ से नजात

मेरे एक दोस्त जो क़राची में बैंक ऑफिसर हैं चन्द साल क़ब्ल एक मुहलिक मरज़ में मुबतला हो गये। उनको यरक़ान के मरज़ ने इतना कमज़ोर कर दिया कि बेहोश हो गये। पेट में पानी पड़ गया और गुर्दो ने भी काम करना छोड़ दिया। उस बैंक ऑफ़िसर की जवान लड़कीयाँ थीं और वालिदैन के लिये सिर्फ़ यही एक सहारा था।

बीमारी लाइलाज हो जाने की वजह से उनहों ने मुझे कराची बुलाया कि उसका आख़री वक्त था। मैं यहाँ से कराची गया अपने दोस्त को अख़री लम्हात में देख कर और उसकी ज़िम्मे दारियाँ देख कर बहुत ही सदमा हुवा।

मेरे जाने से पहले 18 डा० साहिबान उस को देख कर जा चुके थे और सबने बताया कि ये मरज़ लाइलाज है। मै उन्निसवाँ फ़िज़िशियशन था मैंने भी उनकी तशख़ीस और इलाज से इत्तेफ़ाक़ किया। मगर एक चीज़ की कमी पाई वह ये कि तरीके के मुताबिक़ इलाज नही हो रहा।

मैंने उनके वालिदैन को बैठा कर समझाया कि अगर सदक़ा कर के, दो नफ़िल पढ़ कर दुआ पढ़ने के बाद शुरु करें तो मुझे बारी तआला की ज़ात से यक़ीन है कि उसको शिफ़ा होगी। उस के वालदैन को भी बताया कि वालिद की दुआ अपने लड़के के लिये बहुत असर रखती है और बारी तआला उस को रद नही करते। उनहों ने सहीह तरीक़े से वही इलाज शुरु किया और जो पहले जारी था और बारी तआला से शिफ़ा के लिये मुतावातिर तीन दिन तक फ़रयाद करते रहे। वहाँ के सब लोग बताते हैं कि तीसरे दिन अल्ला तआला की रहमत मुतवज्जिह हुई गुर्दो ने काम शुरु कर दिया, यरक़ान और पेट का पानी कम होना शुरु हो गया एक हफ़्ते के अन्दर अन्दर बारी तआला नें उसे मुकम्मल

शिफ़ा दे दी।

मुझे कराची से वापस आए हुए चौदह दिन हुए थे मेरे उस दोस्त का ख़त मिला जो उसने अपने हाथ से लिखा था और तसलीम किया था कि वालिदैन की दुआ ने उसका लाइलाज मरज़ से मुकम्मल तौर पर शिफ़ा नसीब फ़रमाई।

साइंसी इल्म के मुताबिक़ ऐसे मरज़ से बचना बिलकुल ही नामुमकिन है। मगर अल्लाह तआला के नज़दीक तो सब काम मुमकिन हैं।

इन्नाल्ल-ह अला कुल्ली शय्यिनक़दीर

वालिदैन की बद दुआ से बुरी मौत के मुशाहिदात

0 मेरे वालिद साहिब के एक दोस्त के मुतअल्लिक़ मशहूर था कि जब उसकी वालदह क़रीबुलमर्ग थी तो उसने उस के साथ बदतमीज़ी की और वह बेचारी अकेली पड़ी रही और उसी हालत में मर गई। मैं इस जुसतजू में था कि जो वालिदैन के साथ बुरा सलूक रखे उसका ख़ातमा कैसे होता है ? ज़िन्दगी के अय्याम गुज़रते गये। क़रीबन इस वाक़िए से तीस साल बाद ये साहिब जो अपनी वालदह के साथ बद सलूकी से पेश आये थे बीमार हुए और दस्तों की वजह से बहुत कमज़ोर हो गये।

मेरे वालिद साहिब मुझे उनके इलाज के लिये ले गये मैने देखा तो ये बहुत कमज़ोर थे और रो रहे थे मैंने उसको ग़िज़ा बताई तो रोने लग गये और बताया कि उसके तीन लड़के हैं मगर उसकी परवाह नही करते कई दिनों से बीमार पड़ा हूँ मगर एक दफ़ा भी मिलने नही आए।

चुनाँचे उसी हालत में उनकी मौत वाक़े हो गई वह शख़्स रात को तनहाई में इन्तेक़ाल कर गया। सुब्ह के वक़्त जब महल्ले वालों ने देखा तो चीवटियाँ उसको काट रही थीं और ख़ुदा को प्यारा हो चुका था। वाक़ई वालदह से ज़्यादती करने वाले को इसी दुनिया में सज़ा मिल कर रहती है।

0 मेरे वार्ड में एक नौजवान गुर्दे फ़ैल हो जाने की वजह से मरा। तीन दिन

तक हालते नज़ा में रहा। इतनी बुरी मौत मरा कि आज तक ऐसी मौत मैंने पिछले 40 चालिस साल के अरसे में नही देखी। उस का मुँह नीला हो जाता था आँखे निकल आती थीं। और मूँह से दर्द नाक आवाजें निकलती थीं जैसे कोई उसका गला दबा रहा हो।

मरने से कब्ल ये कैफ़ियत ज़्यादा हो गई। आवाज़ और ज़्यादा तेज़ हो गई और वार्ड से दूसरे मरीज़ भागने शुरु हो गये। चुनाँचे उस को एक वार्ड से दूर एक कमरे में मुनतकिल कर दिया गया ताकि आवाज़ कम हो जाए मगर फिर भी यह हालत जारी रही उस का वालिद मुझे ये कहने के लिऐ ये आया कि उसे ज़हर का टीका लगा दें ताकि मर जाऐ हम से ऐसी हालत देखी नही जाती।

मैंने उसके वालिद साहिब से पूछा कि उसने क्या ख़ास ग़लती की है ? उसका वालिंद फ़ौरन बोल उठा कि ये शख़्स अपनी बीवी को ख़ुश करने के लिये माँ को मारा करता था और मै उसको बहुत रोका करता था ये बुरी मैत उसका नतीजा है।

0 मेरा एक दोस्त अपनी बस्ती में रिश्ते दारों से मिलने गया। वहाँ एक वाक़िआ हुआ था जो दर्ज कर रहा हूँ।

उस बस्ती में एक किसान के घर उसकी माँ और उसकी बीवी के दर्मियान झगड़ा रहा करता था। कई दफ़ा उसकी बीवी नाराज़ हो कर चली गई बहुत मिन्नत समाजत से उसे वापस ले आता था। उसकी बीवी ने अख़री बार ये शर्त याद रखी कि तू अपनी माँ को ख़त्म कर दे तो में तुम्हारे घर आऊँगी। उस किसान ने रोज़ाना के झगड़े से तंग आ कर आख़िर अपनी माँ को ख़त्म करने का प्रोग्राम बनाया।

वह किसान रोज़ाना कमाद (गन्ना) खेत से काट कर बाज़ार में बेचा करता था। एक दिन अपनी माँ को खेत इस बहाने ले गया कि वह कमाद का गट्ठा उसके सर पर रखवा दे। चुनाँचे वालदह को साथ खड़ा किया और कमाद काटने शुरु कर दिये और एक दम अपनी कुल्हाड़ी से माँ को ख़त्म करने के इरादे से हमला किया तो ज़मीन ने उसके पाँव पकड़ लिये, कुल्हाड़ि दूर जा पड़ी और उसकी माँ चिल्लाती हुई अपनी जान बचाने के लिये गाँव की तरफ़ भाग गई।

Scanned by CamScanner

उसी दौरान ज़मीन ने आहिस्ता आहिस्ता किसान को निगलना शुरु कर दिया तो किसान ने चिल्लाना शुरु किया। ऊँची आवाज़ से अपनी माँ को पुकारता और माफ़ी माँगता रहा। मगर खेत दूर हाने की वजह से लोगों तक उसकी आवाज़ बहुत देर के बाद पहुँची।

जब लोग वहाँ पहुँचे तो छाती तक ज़मीन उस को निगल चुकी थी और उसका सांस भी बन्द हो रहा था। उसी हालत में आहिस्ता आहिस्ता ज़मीन में दफ़न होता गया। लोगों ने उसको निकालने की बहुत कोशिश की मगर ज़मीन ने उसको न छोड़ा और वही मर गया।

ये चन्द साल का वाक़िया है और तहक़ीक़ शुदा है।

(अज़ डा० नूर एहमद नूर)

यूरोप का वाक़िया

Event of Europe

इन्गलिस्तान के एक तिब्बी जरीदे ने एक इबरत नाक वाक़िया बयान किया है:

एक लड़की मैरी जवान हुई तो माँ ने उसकी अच्छी जगह शादी कर दी। ख़ाविन्द बरसरे रोज़गार और समाजी एहमियत रखता था। फिर उसके यहाँ एक बच्ची हुई। माँ की और कोई औलाद न थी इसलिए वह बेटी के साथ मुक़ीम थी लेकिन वह उसकी मेहमान दारी के अलावा नवासी की परवरिश में भी हाथ बटाती थी।

नवासी जब ज़रा बड़ी हो गई और अपना लिबास ख़ुद तबदील करने के क़ाबिल हो गई तो मैरी ने सोचा के माँ का वजूद घर की ख़ूबसूरती पर असर अन्दाज़ है। इस लिये बुढ़िया से जान छुड़ानी चाहिए। अम्मा को बुढ़ापे में पैन्शन भी मिलती थी इस लिये उसे बूढ़ों के ख़सूसी(Old House) में दाख़िल करवा दिया गया।

माँ ने बहतेरे हीले बहाने किये। घर में अपनी ज़रुरत का एहसास दिलाया। नवासी की परवरिश का उज़्र भी नाकाम हुआ। मैरी का इसरार था कि हमारा चार कमरों का फ़्लैट अब तंग पड़ गया है। उसमें वुसअत की एक ही सूरत है कि अम्मा चली जाए। मैरे की बेटी कि ऐैलिज़ा बिथ कि नानी को उन्स हो गया था। उसका एहतेजाज भी बेकार गया। अलबत्ता अम्मा से ये वादा किया गया कि हम मिलने आया करेंगे। हफ़ता, इतवार तुम्हें घर लायेंगे। भला औल्ड हाऊस जाने से रिशते भी टूटते हैं।

अम्मा को औल्ड हाऊस पहुँचाने के बाद मुलाक़ातों में वक़्फ़ा बढ़ता ही गया। हफ़्ते, इतवार को छुट्टी के बाइस घर में मेहमान आते रहते थे। उन की मौजूदगी में एक लाचार बुढ़या का घर में होना अच्छे तअस्सुर का बाइस न था। इस लिये अम्मा जान के लिये औल्ड हाऊस में क़याम एक मुसतक़िल हक़ीक़त बन गया।

अपनी ही तरह की चन्द माज़ूर और मफ़लूकुल-हाल बुढ़ियों में रह कर वह बेचारी हमेशा उन को याद करती। लम्बे लम्बे मुहब्बत भरे ख़त लिखती। नवासी ऐैलिज़ाबिथ को प्यार लिखती लेकिन वह मुन्तज़िर रहती।

बेटी ने माँ को ख़त में यक़ीन दिलाया कि वह करिसमस पर अपनी प्यारी अम्मा को ज़रुर घर लाऐगी। ताकि सब ख़ान्दान करिसमस की ईद में खुशियाँ पाए।

अम्मा बेचारी ने अपने जेब ख़र्च में से पैसा पैसा बचाकर ऊन ख़रीदी और दिन रात एक कर के अपनी निहायत प्यारी नवासी के लिये टोपी, मफ़लर और स्वैटर बनाया। करिसमस वाले दिन तक कुछ कसर रह गई। इसलिऐ वह 24दिम्बर की बर्फ बारी में बिलडिंग की बालकौनी में कुर्सी डाल कर अपने तौहफाऐ मुहब्बत की तकमील करती रही। शदीद सर्दी में बालकौनी में बैठने की एक ज़रुरत ये भी थी। वह चाहती थी कि जब उसे लेने वालों की कार अए तो वह उनको इन्तज़ार की कूफ़्त में मुबतला किये बग़ैर नीचे चली जाए।

औल्ड हाऊस की एक ख़ादिमा नेनसी बड़ी ख़िदमत गुज़ार थी। उसने बुढ़िया

को हीटर वाले कमरे में लाने की बहुत कोशिश की। मगर वह अपने ख़ान्दान से मिलने के इशतियाक़ में किसी मसलेहत पर आमादा न हुई। नेनसी ने एक कम्बल ला कर उसके ऊपर डाल दिया। बार बार वापसी की तलक़ीन के साथ साथ गर्म चाये भी देती रही। सुब्ह हो गई। मगर लेने वाले न आए।

कमज़ोरी, शब बेदारी और सर्द हवाओं में रात गुज़ारने से उसे शदीद नमूनिया हो गया। बेटी को ख़ुद तो आने की फ़ुर्सत तो न मिल सकी लेकिन उसने माँ के बेहतरीन इलाज के लिए एक बार फोन पर अपनी ख़ुवाहिशात का इज़हार किया। माँ मर गई।

मैरी को चूँकि अपनी माँ से बहुत प्यार था। इसलिए कफ़न दफ़न का बेहतरीन बन्दोबस्त किया गया।

कुछ दिन बाद मैरी माँ का सामान लेने औल्ड हाऊस गई तो उसने वहाँ की ख़दिमा का बहुत शुकरिया अदा किया। क्योंकि वह आख़िरी वक़्त तक ख़िदमत करती रही थी। फिर उसे याद आया कि नेनसी बड़ी ख़िदमत गुज़ार क़िस्म की लड़की है। उसे क्यों न अपने ही घर में मुलाज़िम रख लिया जाऐ।

उसने बेहतर तंख़्वाह की लालच के साथ नेनसी को अपने घर चलने की दावत दी। नेनसी ने हंस कर कहा "मैं आप के घर ज़रुर जाऊँगी। लेकिन ख़ुदा का इन्साफ़ देखने के बाद। जिस दिन आप की बेटी ऐलिज़ाबिथ आप को इस घर में छोड़ कर जाएंगी मैं उस ख़ातून के हमराह उस की ख़िदमत के लिये चली जाऊँगी"।

ये वाक़िआ नही हक़ीक़त है। अब मॉडर्न घरानों में माँ बाप एक फ़ालतू और बदनुमा चीज़ बन गये हैं। उन की ख़िदमत तो दरकिनार नई नस्ल तो उनकी सूरत से बेज़ार होती है।

हज़रत ओवैस क़रनी (रज़ि०) ने इसलाम का पैग़ाम सुना। उसे पसन्द किया और मक्का मुकरमा जाकर बेअत करने का इरादा किया। उनकी वालदह अभी ज़िन्दा थीं नबी (स०) ने उनका इसलाम हाज़री के बग़ैर क़ुबूल किया और उन को हिदायत की कि वालदह की ख़िदमत गुज़ारी करते रहें। क्योंकि जन्नत माँ

के क़दमों तले है। फिर उनको इत्तला मिली कि जंग में हुज़ूर (स०) के दाँत शहीद हो गये है। मुहब्बत का ये आलम था कि पतथ्र मार कर अपने दाँत तोड़ दिये। लेकिन हीजि़री इस लिये मुमकिन न थी कि वालदह को छोड़ कर जाया न जा सकता था। उन की वालदह नबी (स०)के बाद भी ज़िन्दा रही। इस लिये वह ज़ियारत से महरुम रहे।

नबी (स०) का सहाबी होने के लिये ज़रुरी है के उस शख़्स ने बलोग़त की हालत में उनको देखा, उनके हाथ पर इसलाम क़बूल किया और मरते दम तक उस पर क़ायम रहा। हज़रत ओवैस क़रनी (रज़ि०) की हज़ूर (स०) से न तो मुलाक़ात हुई और न ही उनहों ने उनकी दस्ते मुबारक पर बैअत की। उनको माँ की ख़िदमत के हौसले में हाज़री से मुसतसना क़रार दिया गया। बराहे रास हाज़िर न होने के बावजूद उनको फ़ीहे कलाम क़रार दिया गया। नबी अकरम (स०) ने अपने मजलिस में कई बार ओवैस क़रनी (रज़ि०) का ज़िक्र फ़रमाया और हर बार उनको अपने दोस्त का रुतबा दिया।

इसलाम और ख़िदमते वालिदैन

Service To Parents & Islam

सूरत बनी इसराईल में इरशादे रब्बानी है।

"और तुम्हारे रब ने ये फ़ैसला कर दिया है कि तुम उस के अलावा और किसी की इबादत न करो और अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सलूक का मुज़ाहिरा करो"। (इबने माजा)

हज़रत अबी उमाम्ते अलबाहली (रज़ि०) बयान करते है कि एक शख़्स ने नबी-ए-करीम (स०) से पुछा। या रसूलल्लाह माँ बाप का औलाद पर क्या हक़ है?"

इरशाद हुआ "माँ बाप ही तुम्हारे लिये जन्नत है और माँ बाप ही दोज़ख़ है"। (इबने माजा)

ये एक सुनहरी उसूल है।अगर उन की ख़िदमत करोगे तो जन्नत मिलेगी। जैसे कि ओवैस क़रनी को अपने घर ही में रहते हुए जंगो में शरीक हुए बग़ैर सहाबी का दरजा मिला। दुनिया और आख़रत में सरख़रुई पाई। इस के बरअक्स जिसने बद अख़लाकी का इरतकाब किया। जहन्नम का सज़ा वार हुआ। जिस ने अपने माँ बाप की बुढ़ापे में ख़िदमत न की वह अपनी औलाद से बुढ़ापे के दौरान क्या तवक्क़ु कर सकता है?

लाहौर में रंगने वाले रंगों के एक बहुत बड़े ताजिर थे। 1950ई में उनका कारोबार लाखों में था जब दौलत ज़्यादा हो गई तो गुरुर ने आ लिया। लोगों को इन्सान समझना छोड़ दिया। एक बार माँ ने बठा कर नसीहत करना चाही कि लोगों से अच्छा सलूक क्या करो और दूसरों को भी इन्सान समझा करो।

नसीहत उन को इतनी बुरी लगी कि गाली गुलूज के बाद माँ को थप्पड़ मारा। इस वाक़ए के एक साल बाद सारा कारोबार ख़त्म हो गया। और अब दो वक़्त की रोटी के लिये मज़ारों के बाहर बैठे रहते हैं। इबरत, इबरत, इबरत।

ऐसे लोगा मुद्दतो ज़िन्दा रहते हैं। ताकि क़ुरआन मजीद के अलफ़ाज़ में उन को दूसरों के लिये इबरत बनाकर रखा जाये।

क़ुरआन ने वालिदैन से सलूक के बारे में मुत्तअद्दिद मक़ामात पर ताकीद और उनके साथ बेहतरीन तरज़े अमल का रास्ता दिखाया है।

"तुम्हारे रब ने यह फ़ैसला कर दिया है कि तुम उसके सिवा किसी और की इबादत नही करोगे और वालिदैन के साथ हुसने सलूक की ताकीद में फ़रमाया"।

"हमने इन्सान को वसीयत की है कि वह बपने परवर दिगार और वालिदैन का शुकरिया अदा करते रहें"।

जिस तरह हमारे लिये परवर दिगार का शुकरिया ज़रुरी है वालिदैन का भी उसी तरह लाज़मी है।

एक शख़्स ने दरबारे नबवी (स०) में अपने वालदाह की बदअख़लाक़ी की शिकायत की। हुज़ूर (स०) ने पूछा कि क्या तुमने उस औरत के एहसानों का

बदला चुका दिया है? उसने जवाब दिया कि मैंने उसे कंधे पर उठा कर हज करवाया था। हुज़ूरे अक़्दस (स0) ने फ़रमाया कि तुम ने उसकी ख़िदमत का कुछ भी वापस नहीं किया।

जब उसे बार-बार माँ के इहसानात याद दिलाये गये तो उसे इहसास हो गया कि माँ अगर ज़्यादती भी करती है तो उसे बर्दाश्त करना उस पर लाज़िम है।

ये कैफ़ियत क़ुरआन मजीद ही की एक आयत से वाज़ेह हो जाती है।।

"अगर उनमें से एक या दो तुम्हारे सामने बुढ़ापे की उम्र को पहुँच जायें तो उनको हरगिज़ उफ़ तक न कहना और उनको कभी न झिड़कना"

उफ़ की नौबत तो उस वक़्त आती है जब किसी को कोई तकलीफ पहुँचे यानी अगर वह तुमको किसी क़िस्म की तकलीफ भी दें तो तुम्हारा फ़र्ज़ है कि तुम उनके हर अमल को खनदा पेशानी और खुश खलक़ी के साथ क़बूल करो। उनको जवाब में झिड़कना क़ुरआन मजीद ने मना किया है और जिस अमल से क़ुरआन ने मना किया है वह हराम हो जाता है।

नबी-ए करीम (स0) ने फ़रमाया वह आदमी ज़लील हो। फिर ज़लील हो। फिर ज़लील हो। लोगों ने पूछा। ऐ ख़ुदा के रसूले अकरम (स0)) कौन आदमी ? आप (स0) ने फ़रमाया। वह आदमी जिसने अपनी मां या बाप को बुढापे की हालत में पाया और फिर उनकी खिदमत करके जन्नत में दाखिल न हुआ।

मां बाप की ख़िदमत उस इहसान का बदला है जो उन्होंने परवरिश की सूरत में किया। इहसान का इहसान रखना और उनका बदला अदा करने की आदत घर से शुरु की जाती है। जब कोई शख़्स यह महसूस करले कि उसने किसी के इहसान करना और उसका अच्छा बदला अदा करना है तो वह दूसरों की इनायात का भी शुक्र गुज़ार होना सीख लेता है और इस तरह की तरज़े अमल में मशकूरी का इहसास पैदा होताा है। नबी-ए करीम (स0) ने फ़रमाया :-

"जो लोगों का शुकरीया अदा नहीं करता है। वह ख़ुदा का भी शुक्र गुज़ार नहीं होता। किसी इनायत, मेहरबानी और इहसान का मशकूर होना और इसका

बेहतरीन बदला देने की तरबीयत हर मुसलमान को ज़िन्दगी के हर मरहले में मयस्सर आती रहती है ।

लोग अपने वालिदैन पर आने वाले इख़राजात के बारे में भी सवाल करते रहते है। इस सिलसिले में सबसे मोटी बात ये है कि जब तुम किसी पर एहसान करते हो तो फिर वह खुले दिल के साथ करो। कुरआन मजीद ने इस बात को यूँ इरशाद फ़रमाया:

"लोग आप (स०) से पूछते है कि हम क्या ख़र्च करें। उन को जवाब दीजिये कि जो माल भी तुम ख़र्च करो उस के अव्वलीन हक़दार तुम्हारे वालिदैन है"

(अलबक़रह)

एक मुसलमान के नेक आमाल में माँ बाप के लिये मग़फ़िरत की दुआ करना है और जब वह ख़ुदा से दुआ करता है तो उस की बहतरीन तरकीब यूँ सिखाई गई।

"ऐ परवर दिगार उन पर उसी तरह रहम फ़रमा जिस तरह कि वह मेरे बच्पन में मुझ पर फ़रमाया करते थे"।

हज़रत अबू हुरेरह (रज़०) रिवायत फ़रमते थे। कि एक शख़्स बारगाहे नबवी में हाज़िर होकर पूँछने लगा।

"ऐ अल्ला के रसूल (स०) मेरे नेक सलूक का सबसे ज़्यादा मुसतहक़ कौन है?"

आप (स०) ने फ़रमाया कि तेरी माँ उसने पूछा फिर कौन? इरशाद हुआ। तेरी माँ। उसने कहा फिर कौन? तो आप (स०) ने फ़रमाया। तेराबाप।

(अलअदब उलमुफ़रद)

मां बाप की इज़्ज़त करना, उनकी दिलजुई, एहसान का एतराफ़ करना और उसका इहसास रखना एक ऐसी तरबीयत है जो हर शख़्स को हुस्ने खलक़ में मिलती है । मां बाप से बर्दाशत और बुज़ुर्गों की इज़्ज़त का सबक़ ज़िन्दगी के

Scanned by CamScanner

हर मरहले में काम आता है । क़तए नज़र उसके कि मां बाप औलाद के लिये हमेशा दुआ करते है ।

शराब और जदीद साइंस

Alcohol & Modern Science

हज़रत इबने उमर (रज़ि0) ने फ़रमाया कि रसूले करीम (स0) ने फ़रमाया "अल्लाह तआला ने लअनत फरमाई शराब पर, उसके पीने वाले पर, उसके नचोड़ने वाले पर, उसके बेचने वाले पर, उसके ख़रीदने वाले पर, उसके पीलाने वाले पर, उसके उठाने वाले पर और उस शख़्श पर जिस के लिये उठाकर ले जाइ गई" ।

(अबू दाऊद, इबने माजा, मिशकात, उसव-ए रसूले अकरम (स0)

शराब, इनसानियत की बदतरीन दुशमन

Alcohol The Enemy Of Civilization

यसअलू-न-क अनिल ख़म्रे वल मै-स-रि कुल फीहिमा इस्मुन कबीर व मनाफिउ लिन्नास व इस-महुमा व इस-महुम अकबर

तरजुमा :- "पूछते है शराब और जूये का क्या हुक्म है ? कहो उन दोनों चीज़ों में बड़ी बुराई है अगर उन में कुछ लोगों के लिये मनाफा भी है । मगर उन का गुनाह (नुक़सान) उन के फ़ायदे से ज़्यादा है" ।

Scanned by CamScanner

प्रोफेसर हर्श की किताब का तजज़ीया

Analysis of Book of Prof. Harsh

दुनिया में सेहत व सफ़ाई के मशहूर माहिर प्रोफेसर हर्श ने इस मौज़ूअ पर लीखी गई अपनी किताब में कहा है "शराब पर पाबन्दी, जो तहज़ीब याफ़्ता अमरीका पन्द्रह साल तक लागू न कर सका, इसलाम ने पिछली चौदह सदीयों से कामयाबी से लागू कर रखी है । इस तरह तहज़ीब व तमद्दुन और इनसानीयत को बहुत पहले से बचा रखा है" ।

कुरआन में शराब पर पाबन्दी तीन नुमायां सूरतों में आई है उनमें से मौजूदा सुरत जो कि पहली है उसके मुतअल्लिक़ हम तशरीह करेंगे । दूसरी सूरत जो शराब की पाबन्दी से मुतअल्लिक़ है वह सुरतुन निसा आयत 43 है । तीसरी जगह पर पाबन्दी सूरह अलमाइदा की आयात नम्बर 90 और 91 में बयान की गई है चन्द तफ़सीर लिखने वालों के नज़दीक शराब पर पाबन्दी कुरआन में बदतरीज नाफ़िज़ हुई जबकि दूसरे उलमा का ख्याल है कि यह तीनों सुरतें बुनयादीं तौर पर एक दूसरे से मुखतलीफ़ नहीं हैं । अगरचे बज़ाहिर उन के बयानात अलग-अलग महसूस होते हैं लेकिन दरहकीक़त अन्दरुनी और असली मआनी के नुकता-ए नज़र से उन में कोई फ़र्क़ नहीं है ।

मैं खुद भी दूसरे नज़रये का मोतरिफ़ हूँ इसलिये कि शराब की इजाज़त या उन की मौजूदगी की बरदाश्त उन तीनों सुरतों में कहीं नहीं पाई जाती। न ही किसी और जगह कुरआन में इस किस्म की कोई एजाज़त दी गई है। इन तीनों सूरतों ने अपने-अपने अन्दाज़ में शराब पर पाबन्दी ही लगाई है बल्कि शराब से पैदा होने वाले खतरात को अलग-अलग तरीक़ों से बयान किया है। मौजूदा ज़ेर नज़र आयते करीमा बतौरे खास शराब की खराबीयां माददी पहलू से भी बयान करती है चूंकि हम इस मौक़ा पर कुरआनी आयात का साइंसी इल्म के तनाज़ुर

Scanned by CamScanner

में जायज़ा ले रहे हैं । इसलिये हम इस आयत की बतौरे खास तशरीह इसी नुकता-ए नज़र से करेंगे ।

इससे पहले कि शराब के इनसानी सेहत पर ज़हरीले असरात का पूरी तरह से जायज़ा लिया जाये । हमें उस की किमयावी अजज़ा के मुतअल्लिक थोड़ा बहुत इदराक हासिल कर लेना चाहिये ।

इल्म कीमिया **(Chemistry)** की रु से हमें यह मालूम है कि अलकोहल (शराब) गलाने या हल करने के लिये एक ताक़तवर महलूल है बतौरे खास चर्बी के लिये । गिज़ाई इसतलाहात में यह हल करने वाली चीज़ नहीं बल्कि तोड़-फ़ोड़ के अमल पर मुनतज है दुसरे लफ़्ज़ों में बुनयादी खुराक यानी शकर को बेकटेरिया या जरासीम के ज़रीये हज़्म करने के सिलसिले में पैदा होने वाली यह कीमयावी ज़ेली खुराक **(By Product)** है । इन वजूह की बिना पर शराब इनसानी जिस्म के लिये एक नुक़सान देह कैमिकल माना गया है और इनसानी जिगर उसको फ़ौरन तोड़ देता है यानी उसकी ज़हर आलूदगी को खत्म करने में लग जाता है इस अमल को **(Detoxified)** कहते हैं । चुनांचे शराब या अलकोहल की यक़ीनन कोई गिज़ाई अहमीयत नहीं है । जिस का दावा उसके रसया अकसर व बेशतर करते हैं । जब यह जिस्म के अन्दर पहुंचती है तो दूसरी हर क़िस्म की खुराक के बरअक्स कन्ट्रोल से बाहर खामरों की तबदीली **(Metabolized)** या हज़्म हो जाती है । सिर्फ़ यही एक ज़ाहरी फ़ायदा इस आयत करीमा में बताया गया है ।

अब हम शराब या अलकोहल के इनसानी जिस्म पर असर की तरफ आते हैं ।

1. शराब का निज़ामे हज़म पर असर

Effection Of Alcohal On Digestive System

इसका सबसे पहला बुरा असर मुंह से शुरु होता है । आम तौर पर मुंह के अन्दर एक खास क़िस्म का ज़िन्दा माद्दा (Flora) होता है । जो एक लुआब की सुरत में है । मगर चूंकि शराब की वजह से माहौल की कूव्वत बतदरीज कम होती जाती है इसका नतीजा मसूढ़ों में ज़ख़्म और सूजन की शक्ल में ज़ाहिर होता है । चूनांचे शराब के आदी लोगों के दाँत में बहुत तेज़ी से खराब और फ़रसूदा हो जाते हैं । मुंह के बाद गले और खुराक की नाली (Esophagus) की बारी आती है । यह दोनों आज़ा एक दूसरे से मुलहिक़ होते है । यह निहायत मुश्किल काम सर अनजाम देते हैं और उन पर निहायत हस्सास असतर (Mucous membrance) की तह होती है । शराब के असर से इस हस्सास तह पर बुरा असर पड़ता है और जलन का बाइस होती है । नतीजतन उन दोनों आज़ा के अन्दर ज़ोफ़ पैदा होना शुरु हो जाता है इन आज़ा के सरतान (केन्सर) की वजह शराब ही बयान की जाती है । दर हक़ीक़त वह एदारे जो सरतान जैसी मूज़ी मरज़ के खिलाफ़ जंग में मसरुफ़ हैं । सन् 1980 के बाद से शराब के खिलाफ़ दूररस और संजीदा अक़दाम करते रहे हैं ।

यह तो सब को मालूम है कि शराब की वजह से मेदे की ख़तरनाक बीमारियां (Gastritis) पैदा होती है । यह इसलिये होता है कि यह खून में मौजूदा लीपीड (Lipid) जो एक खास क़िस्म की चर्बी होती है इसके इस्तेमाल से तहलील हो जाती है । यानी लीपीड एक तरह की हफ़ाजती तह मुहय्या करता है जिस पर तेज़ाबीयत यानी हाईडरो कलोरिक एसिड का नुकसानदेह असर नहीं होता । इसी तह की वजह से मेदा खूद अपने आप को हजम नहीं कर सकता । अगरचे फ़िलहाल यह पूरी तरह साबित नहीं हुआ कि जिस तरह शराब

Scanned by CamScanner

गले और खुराक की नाली में सरतान का ज़रीया बनती है । मेदे के मामले में भी ऐसा ही है लेकिन इस ख़्याल को तक़वीयत हासिल होती जा रही है कि मेदे के सरतान में भी शराब की कारसतानी होती है ।

शराब का सबसे ज़्यादा नुकसान देह असर बारह अंगुश्ती आन्त (Dudenum) पर होता है । इस जगह निहायत नाज़ुक कीमयाई असरात चकूअ पज़ीर होते है । शराब उसकी इस खासियत को मुतअस्सिर करती है जो मख़सूस हाज़िम लुआब ख़ारिज करने की सलाहियत से मुतअल्लिक रखती है। और उसकी कीमयाई हस्सासित पर असर अन्दाज़ होती है । हाज़्मा के लिये इस अहम रास्ते की तबाही के बाद शराब जिगर से पैदा होने वाले हाज़िम लुआब (Bile) के इखराज पर भी असर अन्दाज़ होती है । तमाम शराबीयों की बारह अंगुश्ती आँत और पित्ता की झिल्ली हमेशा बीमारी का शिकार होती है या उनका काम अकसर सही नहीं होता । यह हालत हर शराबी को गैस और बदहज़्मी के ज़रीये मुसीबत में डाले रखती है । मेदे की यह तकालीफ़ आतों पर भी असर डालती हैं । चूनांचे निज़ामे हज़्म का कम्प्यूटर की तरह काम करने वाले निज़ाम की हुस्ने तरतीब और हम आहंगी भी तहस-नहस हो जाती है । अगरचे एक सेहत मन्द इनसानी जिस्म हर उस चीज़ को हज़्म कर लेता है जिसकी उसे ज़रुरत होती है मगर ये निज़ाम हज़्म को खास किस्म की हिदायात जारी करने से होता है । मगर ज़्यादा और मुसतक़िल तौर पर शराब पीने वालों के मामले में यह कन्ट्रोल ख़त्म हो जाता है और हज़्म करने का अमल बिला रोक टोक बग़ैर किसी तमीज़ के जारी रहता है इसका नतीजा मोटापे की सूरत में ज़ाहिर होता है। इस लिये के यह बे तहाशा हज़्म इस से ज़्यादा और कुछ नहीं कर सकता कि खुलियों की दरमयानी जगह (Interstices) में चर्बी का ज़ख़ीरा करना शुरु कर दे । दरहक़ीक़त चर्बी की कसीर मिक़दार दिल के पट्ठों के निज़ाम पर, मायू कार्डक टीशों (Myocardic Tissue) पर छा जाती है इस तरह दिल की ख़तरनाक क़िस्म की बीमारियां हो जाती है ।

शराब का सबसे ज़्यादा खराब असर वह है जो जिगर पर करती है ।

इनसानी जिगर वह हस्सास लेबारैटोरी है जो शराब के हर एक छोटे से छोटे सालमे को ज़हर की तरह महसूस करता है । जिगर पर शराब का असर दो तरह से होता है ।

1. शराब ख़ोरी की सूरत में जिगर के ख़ुलये अलकोहल ख़त्म करने की ज़िम्मादारी में पूरी तरह मसरुफ़ हो जाते हैं । इस तरह वह अपने दूसरे कामों को नज़र अनदाज़ कर देते हैं ।

2. जिगर के कीमयावी अमल जो एक से एक बढ़कर हस्सास होते हैं। शराब के बिला रोक टोक असर के तहत दरहम बरहम हो जाते हैं । इस का नतीजा यह होता है कि जिगर को एक ही अमल बार-बार दुहराना पड़ता है और इस तरह बेपनाह मुसलसल और बिला ज़रुरत मेहनत और मुशक़्क़त से जिगर की कमज़ोरी वाक़िअ हो जाती है ।

यह असरात जिगर के लिये ख़तरनाक नताईज पैदा करते हैं । उन असरात में ज़्यादा मशहूर जिगर का सूकड़ना (Cyrrhosis) होता है । जो इसका ज़िन्दा सबूत होता है कि जिगर की बरबादी मुकम्मल हो चुकी है । ज़्यादा ख़तरनाक मुमकिनात में से यह भी है कि शराब का इस्तेमाल एक एक करके जिगर के तमाम फ़ैलों को तबाह कर देगा ।

इन फ़ैलों में पहला फ़ेल वह है जिस में जिगर उन अजज़ा को पैदा करता है जिस से खून का अमल ज़हूर पज़ीर होता है । चूंकि जिगर उन अजज़ा को पैदा नहीं कर सकता या इस की पैदावार बहुत ज़्यादा कम हो जाती है, तमाम आदी शराबी अन्दर से कमज़ोर (Anaemic) होते है अगरचे उन के चेहरे खून की नालियों के बढ़ने या खुलने की वजह से तनू मन्द नज़र आते है । लेकिन उन की हड्डीयों के गुदे (Bone Morrow) तबाह हो जाते हैं । यानी दरहक़ीक़त खून की पैदावार का अमल ख़त्म या बेहद कम हो चुका होता है ।

मज़ीद बरआं जिगर की वह इस्तेताअत जिसकी वजह से जिस्मानी तहुफ़्फ़ज़ के आज़ा जैसे मुख़तलिफ़ क़िस्म के गलोबीन बिलखुसूस (Immuno Globulin)

Scanned by CamScanner

बनते है । शराबीयों में ख़तरनाक हद तक कम हो जाती है इसका नतीजा यह होता है कि उन लोगों में बीमारीयों के ख़िलाफ़ मुदाफ़ियत कम से कम हो जाती है ।

शराब बाज़ औक़ात जिगर के फ़ेल के अचानक रुक जाने की वजह भी बन जाती है इस सूरत में एक शराबी बेहोशी के आलम ही में मर जाता है इसे जिगर का दिवालियापन या (Bnkrupthcy) कहते हैं । जिगर के सिलसिले में एक मिसाल भी ऐसी नहीं मिलती जिसमें इसपर शराब के नुक़सान देह असरात का सबूत न मिलता हो । इस नुकता को मैं इस से ज़्यादा शिद्दत से बयान नहीं कर सकता ।

2– शराब का ख़ून के निज़ामे दौरान पर असर

Effection Of Alcohal On Blood Circulation

ख़ून के दौरान पर शराब का असर दो तरह से होता है । एक जिगर पर असर के ज़रीये बिलवास्ता होता है । दूसरा दिल की बाफ़तों जिन्हें मेकारडक टीशू (Myocardic Tissue) कहते है पर बिलावास्ता असर के ज़रीये, जिगर जो ख़ून में चरबी की खुराक को तहलील करने में सब से अहम अमल करता है, इसमें ज़ोफ़ और खराबी पैदा हो जाती है जिसके नतीजे में खून ले जाने वाली नसें सख़्त हो जाती है जिसे (Arteriosclerosis) कहते है । इस से फ़शारे ख़ून बलडप्रेशर (Hypertension) का आरज़ा लाहक़ हो जाता है । दूसरी तरफ़ अलकोहल (शराब) के तेज़ी से जल जाने के अमल से, खून के बहावों के मख़सूस तरीके, जिसे हम ख़ून के बहाव की रफ़्तार कहते है, में गड़बड़ हो जाती है । इसकी वजह से दिल की थकान वाकिअ हो जाती है । मज़ीद बरआं शराब की वजह से दिल में चर्बी के ज़र्रात जमा हो जाते है और आसाबी निज़ाम

पर नुक़सान देह असर के ज़रीये दिल के अमल में खलले अन्दरुनी वाक़अ हो जाती है । यह साबित हो चुका है कि आदी शराबी या तो जिगर के फेल में खलल (Cyrrosis) की वजह से या हार्ट फेल होने की वजह से अपने खातमा को पहुंचते है ।

वह शख़्श जो दिल के आरज़े में मुबतला हो उसके लिये शराब का एक क़तरा भी लेना ऐसा है जैसे उसे अपनी ज़िन्दगी की कोई परवाह नहीं और न ही उसे अपने जिस्म के किसी अज़्व के नुक़सान की परवाह है ।

शराब के रसिया कुछ लोगों के यह भी ख़यालात है कि थोड़ी और मुनासिब मिक़दार में शराब पीने से दिल के तशन्नुज या दौरे में आफ़ाक़ा होता है यह बादीयुन नज़र में शराब के फ़ावायद में से एक नज़र आता है । मगर साइंसी तौर पर इस ख़्याल की कोई कद्र व क़ीमत नहीं है अगरचे तिब्बी तहरीरों में से इस किस्म की कोई तजवीज़ मौजूद नहीं लेकिन बदकिस्मती से बहुत से ऐसे लोग भी मौजूद हैं जो इसके बरअक्स सोचते या महसूस करते हैं ।

इन्सानी गुर्दे जिन्हें दौराने खून के निज़ाम का आख़िरी मुकाम समझा जाये उनको शराब के इस्तेमाल से सख़्त नुकसान पहुंचता है । इसलिये कि गुर्दे इन्तेहाई हस्सास कीमयावी जौहर की मिलाप (Valence) के मुकाम पर छलनी का काम देते हैं । लेकिन शराब (अलकोहल) इस नाज़ुक अमल को भी तह व बाला कर देती है । यह तसलीम शुदह हक़ीक़त है कि वह शराबें जिनमें अलकोहल की मिक़दार कम होती है गुर्दों के लिये ज़्यादा नुकसान देह होतीं हैं। चूंनांचे ज़्यादा मिक़दार में बेयर (Beer) पीने वालों के गुर्दे अकसर खराब होते है ।

लिम्फ वाले (Lymphatic) निज़ाम की इनसानी जिस्म में बेहद अहमीयत है। इस निज़ाम की खून वाली नालियां शराब के हाथों नाक़ाबिले इलाज नुकसान उठाती है । इसलिये कि चर्बी वाले नामयाती मुरक्कब लिपीड (Lipid) का इस निज़ाम में एक बहुत अहम मक़ाम होता है । शराब का नुक़सान देह असर, इस

Scanned by CamScanner

हैरान कुन हद तक हिफ़ाज़त बहम पहुचाने वाले निज़ाम को बरबाद कर देता है।

अगर अल्लाह जल्ले शानहू ने जैसा कि मुखतलिफ आयात में फ़रमाया गया है अपनी एनायात के ज़रीये इनसानी ज़िन्दगी को हिफ़ाज़त के दिगर तरीकों से घेरा हुआ न होता तो हमें मज़ीद सराहत से नज़र आता कि शराब किस कद्र ज़्यादा नुकसान देह हो सकती है ।

3– शराब का आसाबी निज़ाम पर असर

Effcetion Of Alcohal On Nervous System

शराब असबी खुलीयों की एक बारीक झिल्ली में दाख़िल हो जाती है जो नामीयाती चर्बी जैसे मुरक्कब यानी लीपीड (Lipid) की हिफाज़त में होती है। इस तरह इस निज़ाम के बरकी राबता (Electrical Communication) में ख़ुलल अनदाज़ी करती हे । यह खराब असर दो मुखतलिफ ज़रीयों से ज़ाहिर होता है इसका पहले पहल असर नशे के अचानक हमला की सूरत में होता है।

लेकिन इस का देर पा असर बहुत ही खतरनाक होता है । शराब आसाबी निज़ाम को रोज बरोज़ नुकसान पहुंचाती है जिस से कई अक़साम की बीमारीयां लगना शुरु हो जाती हैं । मज़ीद बरां अगर्चे शुरु-शुरु में शराब का ख़राब असर गैर मामूली या गैर वाज़िह भी हो तब भी इसके देरपा ख़राब असरात शुरु ही से मुरत्तब होते रहते हैं । चूनांचे कुछ लोगों के यह दावे कि मुझे तो शराब से नशा नहीं चढ़ता, मुझ पर शराव का असर नहीं होता । महज़ तिफ्ले तसली और खुद फरीबी है ।

शराब के बुरे असरात जवानी और बतौरे खास बचपन में बेहद ज़्यादा होते है । आम तौर पर मालूम बीमारियों जैसे हिज़ान (Deliruium) कपकपी (Tremen) पलाईनोराटिस (Plyneurtis) और कोरा सा कोफ के मजमूआ

Scanned by CamScanner

अलामात (Korsakqe Syndrome) शराब की कारसतानीयां की वजह से होती है । इसका बुरा असर आसाबी निज़ाम के मराकज़ पर नाक़ाबिले इलाज हद तक होता है । अलफाज का भूलना (Amnesia) और हाथों का रेशा इस आसाबी नुक़सान की निशानियां होती है ।

शराब जिसमें चर्बी पिघलाने की सलाहीयत होती है । तख़्लीक़ी बालीदगी (Reproductive Cell) में दाखिल होकर उनको बेहद नुक़सान पहुंचाती है । इसकी आम फहम मिसालों में नई नसल की ज़ेहानत में कमी और नाक़िस बालीदगी (Dystrophy) शामिल है । बहुत से मामले जात और सरवे यह हक़ीक़त ज़हिर करते जा रहे है कि ज़ेहनी तौर पर ग़बी बचों की वालिदैन अकसर व बेशतर शदीद क़िस्म की शराब नोशी करते थे । यह भी देखा गया है कि शराब औरत के तुखम (Ovum) और बैज़ा हयात (Egg) के खुलये को बहुत आसानी से नुकसान पहुंचाती है । इसका नतीजा यह है कि शराबी माओं के बच्चे अकसर मौरूसी तौर पर दिमाग़ी या क़लबी सदमा (Shock) या झटके का शिकार हो जाते है । शराबी बाप की तरफ से ऐसे वाक़ियात की तादाद तीस फीसद से ज़्यादा होती है ।

4— शराब का मआशरती नफ़सीयात पर असर

Effection Of Alcohal On Social Psychology

यह हक़ीक़त बार-बार साबित हो चुकी है कि किस तरह शराब मआशरती तअल्लुकात और इसतहकाम पर असर अनदाज़ होती है । मै हसबे ज़ेल उन चौदह-चौदह असरात का ज़िक्र करूँगा ।

1. शराबीयों में ज़ूद रन्जी या गुस्सा के फौरी हमला, उन को मआशरे में लातादाद तनाज़आत में उलझाये रखते है ।

Scanned by CamScanner

2. लातादाद मुतवातिर तलाकें मआशरे की बुनयादी ढान्चों को हिलाकर रख देती है और नतीजतन मुजरिमाना ज़ेहनीयत की हामिल बच्चों की बढ़ती हुई तादाद की वजह से तमाम मुआशरह ख़तरनाक हद तक मुतअस्सिर होता है ।

3. मुख़तलिफ़ किस्म के काम करने वाले मज़दूरों और कारीगरों पर शराब की वज़ह से बे दिली और काहली का ग़लबा हो जाता है । इस तरह उनकी कार करदगी और महारत पर बुरा असर पड़ता है जिसका आख़िरी नुक़सान मुआशरे को पहुँचता है ।

4. शराब की वजह से इनसानों में एक दूसरे की तरफ ग़ैर हमदर्दी के असरात मुरत्तब होते हैं । इसका नतीजा यह होता है कि कौमी तफ़क्कुर, मआशरयती मसाइल के ख़िलाफ़ जिहाद का जज़्बा मुकम्मल तौर पर ख़त्म हो जाता है ।

ऊपर बयान किये चार क़िस्म के मसाइल ने मग़रीबी मआशरत दानों को इस क़दर फ़िक्र मन्द कर रखा है कि इन्होंने बारहा अपने हकूमतों की तव्वजह इस तरफ मबज़ूल कराई है कि अगर शराब का इस्तेमाल इस तरह बढ़ता रहा तो इन मुल्कों में कौमी जज़्बा बिल्कुल ख़त्म हो जायेगा ।

कुरआने हकीम ने इस मसले की बीखकुनी कर दी है । जिस के लिये किसी मआशरे और किसी फलासफर दानिशवर में इतनी हिम्मत न थी कि इस मसला को इस तरह दो टूक तरीके से हल करता । यानी शराबख़ोरी का यह मसला इन मआशरों की बुनयादों तक को आहिस्ता-आहिस्ता घुन की तरह चाट रहा है जब कि अल्लाह के हुक्म ने हमारे मआशरे को सदीयों से इस मुसीबत से महफ़ूज़ रखा है ।

(तहक़ीक़ डाक्टर हलोक बाकी)

Scanned by CamScanner

नशा, सेहत, इसलाम और जदीद साइंस

Nercotis, Health, Islam & Modern Science

अल्लाहतआला के भेजे हुये दीनों में से दीने इस्लाम ही यह इमतयाज़ रखता है । इसने इनसानी सेहत व सबात के पेशे नज़र अशयाए खुर्द व नोश को हलाल व हराम या जाइज़ व नाजाइज़ में तक़सीम करके नौए इनसान पर इहसाने अज़ीम किया है । शरीयते मूसवी में भीं इस किस्म की तक़सीम पाई जाती है और इस में बतलाया गया है कि फलां चीज़ खाना जाइज़ है और फलां खाना नाजाइज़ है । लेकिन इस की दलील या इसके खाने या न खाने के फ़वाइद या नुक़सानात बयान नहीं किये गये ।

तोरीज में किसी नशा आवर चीज़ की निस्बत कोई खास हुक्म ममानिअत का नहीं पाया जाता । शराब की तो इस किताब में बड़ी तारीफ़ व तौसीफ़ की गई है ।

हिन्दू मज़बह में अफ़यून, भंग चरस वग़ैरह का इस्तेमाल मज़हबी शआइर में दाखिल है । वेदों में मुसक्किरात खासकर सोम रस (भंग) की तारीफ़ के पुल बान्ध दिये गये है ।

ईसाई ममालिक में आज कल मज़हबी तक़ारीब पर शराब की इतनी अफ़ज़ूनी होती है कि ऐसा मालूम होता है कि इसकी नहरें बह रही है । ईशाए रब्बानी की पाक रसम जिस में शराब से भिगोई हुई रोटी इबादत गुज़ार मरदों, औरतों, बुढ़ों और बच्चों में तक़सीम हुआ करती है । ईसाई मज़हब में बड़ी अहमीयत

Scanned by CamScanner

रखती हे । क्योंकि यह रोटी मसीह के गोशत से और इसमें मिली हुई शराब खूने मसीह से तशबीह रखती है ।

दौरे हाज़िर में ग़ैर मुसलिम अक़वाम तरक्की याफ़ता हों या पसमानदह, शराब और बाज दूसरी नाशा आवर अशया और लवाज़मात और ज़रुरीयाते ज़िन्दगी समझती है । यहां तक कि जंगों में भी फौजों के लिये मुतहारिब हुकूमतें उनकी बहम रसाई का इन्तेज़ाम किया करती है और उनके फ़ौजी निज़ाम के बार बरदारी में इन अशया खास कर शराब का मैदाने जंग में पहुंचाना बहुत बड़ा बोझ हुआ करता है ।

इसलाम में तमाम मुससकरात शराब, अफ़यून, चरस, भंग वगैरह हराम क़रार दिये गये है । उनकी मिक़दार ज़्यादा हो या कम़ यही हुक्म रखती है। कुरआने करीम में वाज़ेह अहकाम है । सूरत बक़रह रुकूअ 27 में फरमाया "शराब और जुये में बहुत बुरे नुक़सानात है । गो इनसे बाज़ फ़वाइद भी हासिल होते है । लेकिन इनके फ़वाइद उनकी ज़रर रिसानियाँ बहुत ही ज़्यादा है" ।

फिर मायदा रुकूअ 12 में फ़रमाया "गन्दे काम शैतानी अमल है । पस उनसे बचते रहो ताकि तुम्हारी ज़िंन्दगी अच्छी गुज़रे" । शैतान के मानी जैसा कि पहले बतलाया गया है हिलाक व बरबाद होने वाले के है । गोया यह काम हिलाकत व बरबादी के मोजब होते है । फिर फ़रमाया कि शराब और जुए के ज़रीये शैतान तुम्हारे दरमयान मुनाफ़िक़त और फ़साद पैदा करता है।

बानी-ए इसलाम अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया जो चीज़ बड़ी मिक़दार में नशा पैदा करे उसकी क़लील मिक़दार भी हराम है ।

जैसा कि पहले बताया जा चुका है इसलाम में हलाल व हराम की तक़सीम इनसानी सेहत व सबात के लिहाज से की गई है । शराब और दूसरी नशा आवर चीज़ों के बदअसरात जो इनसान के जिसमानी निज़ाम पर पड़ते है और उनका अनदाज़ा मुसकिरात के आदी लोगों की हालत से शराब खानों, चन्डू खानें और ज़माना हाज़िर काक टील पीर्टीयों में जाकर लगाया जा सकता है ।

Scanned by CamScanner

बाज़ लोग दुनिया में आजकल शराब के आम रिवाज के पेशे नज़रीया कहा करते है कि ताक़त की खातिर और शिद्दत मौसम सुरमा से बचने के लिये अगर थोड़ा बहुत शराब पी ली जाये जो नशा से चूर न करदे और होश व हवास ठिकाने रहने दे तो उसमें क्या हरज है । क़ाबिलेऐतराज़ अमर तो यह कि ज़्यादा पीकर इनसान अक़ल व खरद खो बैठे ।

लेकिन ऐसे लोग यह नज़र अनदाज़ कर देते हैं कि यह एक दलदल होती है जिस में एक दफ़ा फंस कर फिर निकलना मुहाल होता है और उस में फंसा हुआ नीचे ही नीचे धंसता चला जाता है ।

अगर किसी मुज़िर चीज़ की थोड़ी मिक़दार से परहेज़ न की जाये तो उसकी बड़ी मिक़दार से भी इनसान नहीं रुकता । किसी छोटी बदी के करने से बड़ी बदी के करने की जुरअत पैदा होती है ।

हज़रत मुहम्मद (स0) ने हराम अशया को एक सरकारी चारागाह से तशबीह दी है । जिस की हदूद के क़रीब भी मवेशी चराना खतरे से ख़ाली नहीं होता और फ़रमाया कि उन चारागाहों के नज़दीक भी न जाया करो ।

इस मिसाल में हुज़ूर (स0) ने इनसान का नफ़्से अम्मादारह जानवर क़रार दिया है । जो बदी की तरगीब दिलाता है । सरकारी चारागाह के बाहर किनारे पर चरने वाला जानवर उसके अन्दर दिल लुभाने वाला सब्ज़ह देखकर किनारे पर खड़ा ही उस में मुंह मारने की कोशिश करता है । कुछ खा भी लेता हे । फिर एक क़दम अन्दर रखता है । फिर आहिस्ता-आहिस्ता आगे बढ़ता है । हत्ता कि चारागाह के मरकज़ में पहुंचकर फिर उससे निकलना पसन्द नहीं करता जब तक कि कोई उसे वहां से मार न भगाये ।

लेकिन इनसान बाइख़्तियार हस्ती होते हुये खुद ही अपने नफ़्स को रोके तो रोके वरना कोई दुसरा उस पर जबर नहीं कर सकता और उसकी यह आज़ादी व निस्बत ग़ैर ज़ी अक़्ल हैवान के उसके अपने लिये अकसर दफ़ा ज़्यादा खतरनाक साबित होती है ।

Scanned by CamScanner

हिन्दुस्तान के मध्य प्रदेश के जिले रीटवल में चन्द देहातीयों ने एक शराब खाने में शर्त लगाई कि कौन शराब की दस बोतलें कम से कम वक्त में ख़त्म करता है । एक ने बाज़ी जीत ली लेकिन सर उसका चक्रा गया और बेहोश गिर पड़ा और जान दे दी ।

(ऐ. पी. पी. अज़् देहली मोरख 17-1960 ई0)

इनसानी तजरिबा व मशाहदा बताता है कि बहुत ही कम लोग ऐसे होते हैं जो एक मरतबा कोई नशा आवर चीज़ खा या पीकर फिर उससे बच निकले हों और थोड़ा इस्तेमाल करने वाले हदों से बाहर न निकल गये हों और उन्होंने अपनी सेहत बुरी तरह् बरबाद न कर ली हो ।

खबर रसां ऐजेनसी सटार की इनडियाना पुलिस अमरीका से 1958 ई0 की इत्तला के मुताबिक इन्डियाना यूनीवरसीटी के इदारा अदवीया के प्रोफ़ेसर डाक्टर रोलो हारजर ने अपनी रिपोर्ट में जो तिब्बी क़ानूनी मसाइल की कमीटी के किताबचा का एक हिस्सा है बताया है कि शराब के नशा के अक्सर असरात दिमाग पर पड़ते हैं । शराब पीते ही खनू में मिल कर चन्द सैकेन्डों में दिमाग में पहुँच जाती है और उसकी मामूली मिक़दार भी अपने बदअसरात दिखाये बग़ैर नहीं रहती ।

मुसलमानों ने शराब के बदअसरात के बद असरात के पेशे नज़र इसको उम्मुलख़बाइस या बदीयों की मां (जड़) क़रार दिया है । गोया यह नाम बिल्कुल सही है । यानी यह उम्मुलमुस यानी तमाम नशाआवर चीज़ों की मां क़रार दी जानी चाहिये । क्योंकि हर नशाआवर चीज़ की जो भी खासियत और असर होता है और जो नताइज़ इसके इस्तेमाल से पैदा होते हैं । वह बदर्जए अतम उसमें पाये जाते हैं । बअल्फ़ाज़े दिगर तमाम मुसकेरात की मज़रतें और नुकसान इस एक ही नशा में मुजतमा है । अफ़यून, भंग, पोसत बग़ैरह अगर इज़्मेहलाल व इनहेतात पैदा करते हैं और हमारे ख़ून में हिद्दत व जोश पैदा करती है। तो यह इस क़िस्म के तमाम असरात अपने अन्दर रखती हे । शराब में बदमस्त

कभी जोश में आकर गालियों बल्कि मरने मारने पर उतर आता है । कभी रोने लगता है और कभी खौफ़ज़दा होकर कांपने लगता है ।

मखमूर इनसान ऐसी-ऐसी अजीब, नाज़ेबा और इनसानियत सोज़ हरकात का इरतेकाब करता हुआ नज़र आता है कि कोई बावक़ार इनसान उन्हें देखना भी पसन्द नहीं करता ।

हाल ही में जापानी पुलिस ने शराब से बदमस्त होकर बकवास और नामाकूल हरकात करने वालों के साथ एक निहायत ही मज़हका आमेज़ सलूक करना शुरु कर दिया है । जब वह इस हालत में होते हैं तो मुतअल्लिक़ा पुलिस अफसरान उन की तमाम खुराफात टेपरिकार्डर यानी आवाज़ महफूज़ करने के आला में बन्द कर लेते हैं । जब उसके होश ठिकाने लगते हैं तो वह रिकार्डर लगा कर उसे सुनाते हैं । वह बेचारा नदामत और शरमिन्दगी से सर झुका लेता है और पानी-पानी हो जाता है ।

एक और दिलचस्प पहलू गो दूसरों के लिये निहायत मुज़िर और खतरनाक साबित होता है यह है कि एक बदमस्त अपने साथी को ख्वाह वह न पीने वाला हो शराब पीने पर मजबूर करता है । खुमार में वह बड़ा खैर ख्वाह, फराख़ दिल, सखी और शाह मज़ाज बना हुआ होता है और दूसरों को अपने साथ मिलाने के लिये अपनी बसात से कहीं ज़्यादा खर्च करनेके लिये तैयार हो जाता है । बाज़ दफा यह भी देखा गया है कि कोई नावाक़िफ़ पीने वालों में इत्तफ़ाक़ से फंस जाये तो नशे में चूर हो कर वह उसे भी मजबूर करते हैं बल्कि उसे गिराकर उसके मुंह में जबरन शराब उँडेल देते हैं ।

मुम्बई में मैंने खूद देखा कि मिल मज़दूर औरतें और मर्द कारखानों से तनखवाह लेकर सिधे ताड़ी की दुकानों पर बच्चे साथ लिये हुये पहुंच जाते, खूद पीते और छोटे-छोटे बच्चों को मार-मारकर पीलाते । यही वजह है कि इसलाम ने ऐसी मजालिस के क़रीब जाने से भी मना किया है ।

हम यहां दानायाद फरंग की दानायाने पर इज़हारे हैरत इस्तेजाब किये बगैर

Scanned by CamScanner

नहीं रह सकते । वह कोकीन, भंग, चर्स, खवाब आवर मुसकेरात अफ़यून और उसके मुरक्किबात वग़ैरह के मुखतलिफ ममालिक में इस्तेमाल और उनकी बरआमद व दरआमद पर तो कड़ी निगरानी और उनसे मुतअल्लिक़ जराइम के इनसेदाद के लिये इबरत नाक सज़ायें मसलन उमर कै़द तजवीज़ करने के हामी है लेकिन उम्मुल ख़बाइस शराब से जिसने इनके मुलकों में उनके अपने कौ़ल के मुताबिक दूसरे मुसकेरात से कहीं ज़्यादा तबाही मचा रखी है। यह लोग बिलकुल गा़फि़ल है और उसके खिलाफ कोई अमली क़दम या सर्फ़ आवाज़ उठाने की भी जुरअत नहीं करते बल्कि वह उसे अपने मआशरा और रसम व रिवाज का अहम जुज़्व और गि़ज़ा और लिबास की तरह जरुरीयाते ज़िन्दगी में से क़रार देते है ।

यू. एन. ओ. (अक़वामे मुत्तहिदा) के कमीशन मुतअल्लिक़ा मुसकेरात के 1958 ई0 के इजलास में इस अम्र पर इत्तफ़ाक़ किया गया कि अफ़यून और उसके मुरक्कब और दिगर इस कि़स्म की ख्वाबआवर अशाया के ताजिरों को इबरत नाक सज़ायें देना निहायत मुअस्सर अक़ामात में से है और इस सिलसिले में उन ममालिक की खिदमात को सराहा गया है जिनमें ऐसे मुजरमीन को सख़्त से सख़्त सज़ायें मसलन उम्र क़ैद या मौत की सज़ा दी जाती है । चूनांचे तुरकी, ईरान और बाज़ और ममालिक में ऐसे ताजिर फांसरी पर लटकाये जाते है । अमरीका में 1958 ई0 में एक ऐसे ताजिर को दो मुखतलिफ जुरमों में बीस-बीस साल की सज़ा मिली और साथ फैसला में उनके यके बाद दिगरे नाफ़िज़ किये जान को हुक्म था ।

इस मजलिस के इक़तेसादी दी व मआशरती इदारे की कमीशन बराये इनसादाद मुसकेरात व मनशायात ने अपने सालाना इजलास मुनअकिदा जीनवा जो माह मई 1961 ई0 में हुआ यह तसलीम किया गया कि मौजूदा तजवीज़ करदा सज़ा में मुखतलिफ ममालिक में इन अशया की की तिजारत और असमगलिंग में रोक-थाम पैदा करने में नाकाम रही हैं ज़्यादा सख़्त सज़ायें तजवीज़ कर नेकी मुतअल्लिक़ा हुकूमतों से सिफ़ारिश की है ।

Scanned by CamScanner

(पी. पी. ए. ए अज़ जेनवा 5 जून सन् 1961)

लेकिन यह बैनलअक़वामि इदारा जो खिदमतें खल्क़ का मुद्दई है शराब के ख़िलाफ़ कोई अक़दाम करने के लिये तैयार नहीं। क्योंकि वह अक़वाम जिन के हाथों में यू. एन. ओ. की बाग डोर है। ऐसा क़दम उठाना नहीं चाहतीं और उनके नुमाइंदगान राये आम्मा का मुक़ाबला करने की हिम्मत नहीं रखते हालांकि उन दानिशवरों के ममालिक बिलखुसूस चोटी के तरक्की याफ़ता मुल्कों बरतानीया, अमेरिका, रुस वग़ैरह के रहनुमाओं की तक़ारीर, इनके रजीसट्रार जेनरल, पुलिस, अदलीया और इदारा हाये इनसेदादे जराइमे अतफ़ाल की सालाना रिपोर्टो से अयां है कि शराब का इस्तेमाल नौखेज़ लड़कों, लड़कियों में दिन बदिन बढ़ रहा है। जिसके बाइस उनमें जराइम, बदकारी, नाजाइज़ पैदाइश मुहलिक अमराज़, बदमस्त मोटर ड्राइवर के हाथों से इतलाफ़े जान की रफ़्तार तेज़ तर होती जा रही है और हर क़िस्म की इनसेदादी तदाबीर यह ख़तरनाक रौ रोकने में बिल्कुल नाकाम साबित हो रही है।

ए. एफ़. पी की मासको से 5 जूलाई 1958 ई० की ख़बर के मुताबिक़ रुस के वज़ीरे आज़म ख़रोशीफ़ ने लिनिन ग्राड के कारख़ाने करोफ़ में मज़दूरों को मुख़ातिब करते हुये कहा "शराब हमारी मजलिसी ज़िन्दगी में तबाह कुन असरात पैदा कर रही है। उसने मज़दूरों की सेहत की जड़ें ख़ोखली कर दी हैं। आइली ज़िन्दगी बरबाद कर दी है। जराइम की रफ़्तार तेज़ करके इक़तसादी पैदावार को ख़तरनाक नुक़सान पहुंचाया है। हम अब उसके ख़िलाफ़ अनथक जंग लड़ेंगे"।

लेकिन मासकू रेडियो की 15 अक्तूबर 1958 ई० की इत्तलाअ के मुताबिक़ इस अनथक जंग लड़ने वाले लीडर इशतराकीयत ने इस इलाने जंग के सिर्फ़ तीन माह बाद अपने-अपने आबाई गावों कालिनूफ़का में तक़रीर करते हुये इस ख़ूनख़्वार देव के सामने हथियार डाल दिये। वे बसी मुलाहिजा हो "हम सूवीयत युनीयन में इमतना-ए शराब का क़ानून हरगिज़ नाफ़िज़ नहीं करना चाहते। मैनोशी हमारे रस्म व रिवाज का जज़्व है। हमारे लोगों को शराब पीने से कोई नहीं

रोकता मगर उसके बावजूद यह ज़रुरी है कि इनसान इज़्ज़त व वक़ार महफूज़ रखे। नये कानून के मुताबिक जो जीर तजवीज़ है शराब पीने वाले मैखाने से सिर्फ एक जाम हासिल करने का मसतहिक़ होगा''।

इसके साथ मिस्टर खरोशीफ ने यह भी इनबताह किया '' अगर इसे दूसरा जाम पीने की ख्वाहिश होगी तो यक़ीनन वह किसी दूसरे मैकदे का रुख करेगा। मगर मैकदा से मैकदा की सैर उसे जेल की हवा खिलायेगी''।

इस एलाने जंग के पूरे एक साल बाद 10 जुलाई 1959 में रोज़नामा परवदा ने बाल बच्चेदार औरतों की एक जमाअत का मरसला शाया किया। जिसमें उन औरतों ने मतालबा किया कि आदी शराब खोरी को जबरन शफाखानों में इस वक़्त तक ज़ेर इलाज रखा जाये जब तक कि वह मुकम्मल शफायाब न हो जायं और इलाज मआलजा के अखराजात की जज़ोवी जिम्मेदारी उठाने में उन्होंने अपनी आमादगी का इज़हार किया। उन्होंने यह भी बयान किया कि हकूमत के अक़दामात मसलन दौड़ का (रोसी शराब) की क़िमत बढ़ना बदमस्ती पर चालान, मासकू से अखराज वगैरह शराब खोरों पर हसब मिनशा असर पैदा करने के लिये नाकमी और नाकाम साबित हुये हैं। कोई मां या बीवी अपने अपने बेटे या खाविन्द का चालान या शहर बदर किया जाना पसन्द नहीं करती। इन औरतों ने यह मुतालबा भी किया कि ऐसे शराब खोरों की तनखाहें बराह रास्त हमें भेजी जायें क्योंकि इन में से अक्सर अपना सारा रुपया बल्कि कपड़े और असास अलबत्ता की निहायत ज़रुरी ऐशया भी फरोखत करके शराब पर उड़ा देते हैं।

रुसी अखबार अज़वसीया के हवाला से राइटर ने 18 फ़रवरी 1961 ई० को खबर भेजी कि मिस्टर खरोशीफ ने जो तकरीर वीनीज़ में काशत कारों को मुखातिब करते हुये की इसमें कह ''अमरीका को बराबर पैदवार बढ़ाने के लिये हर जमहूरीया को सख्त तरीन क़वानीन बनाने चाहें और बड़ा अहम अमरया है कि तमाम पब्लिक को शराब खोरों, मुनाफा खारों और मखलूक़ का खून चूसने वालों के खिलाफ़ उभरना चाहिये''।

दिगर इशतराकी ममालिक में भी शराब की ज़ियादती और कसरते इस्तेमाल

की नौबत यहां तक पहुंच चुकि है कि उनकी हकूमतों के बाज़ बड़े जिम्मादार हुक्काम भी तमाम अखलाक़ी हुदूद और क़ानूनी पाबन्दीयां तोड़कर अपने लिये मिक़दार से ज़्यादा से ज़्यादा नाजाइज़ तौर पर हासिल करने की कोशश करते हैं । चूनांचे वारसा दाररुलसलतनत पोलैंड से खबर रसां एजेनसीयों पी. पी. ऐ और डी. पी. ए. की 15 जुलाई 1961 ई0 की इत्तलाअ है कि हुकूमत के ममलूका कारखाना शराब साज़ी के निगराने आला के घर पर एक दावत में हुकूमत के वकील आला शरीक हुये । उन्हें प्यास लगी और ठंठा सादा पानी पीने की ख्वाहिश पैदा हुई । वह साहिबे खाना के बावरची खाना में जा पहुंचे । पानी के नल की टोटी खोली तो पानी के बजाये वोड का शराब बह निकली । निगरान साहिब चोरी छपे कारखाने से अपने बंगला तक इस नाली के ज़रीये शराब पहुँचाते थे । सरकारी अमवाल की सरक़ा के इलज़ाम में उन पर मुकद्दमा चलाया गया ।

फ़रांस में शराब के खिलाफ आवाज़ उठती देखकर जुलाई 1959 ई0 को शराब तैयार करने के कारखानों के मालिकों की मजलिस के सदर और उस सनअत के दिगर बरसरे इकतदार लोगों ने ममलकते फ़रांस के सदर से मिलकर मुतालबा किया कि वहां आम एलान का एआदा करे कि शराब हमारी कौमी मुशरुब है ।

यूं तो शराब पीने से सेहत के बरबाद होने के हज़ोरों वाकियात हर मुल्क में पेश आते रहते हैं । लेकिन इन मुल्कों में शराब खोरी के मरकज़ की तबाह कारयां हैरत में डाल देती हैं ।

फ़रांस जहां होटलों में शराब सस्ते दामों में दसतयाब होती है । मगर पीने का सादा पानी क़िमतन भी मुश्किल से मिलता है । इसकी 1956 ई0 की आदादो शुमार की रिपोर्टो से पता चलता है कि इस मुल्क में हर साल सिर्फ शराब खोरी से पैदा होने वाले मुहलिक अमराज़ से पन्द्रह हज़ार नफूस लुक़मए अजल होते है और उससे कई गुना ज़्यादा अफराद ऐसे अमराज में मुबतला होकर ज़िन्दगी और मौत के दरमयान सिसक रहे होते है गोया हर पैंतीस मिनट के बाद एक

Scanned by CamScanner

क़ीमती जान इस खुनख़्वार देवी के भेंट चढ़ती है ।

यू. एस. अमरीका में जैसा कि सदर मजलिसे इमतना शराब अमरीका ने शाह सउद वाली हजाज़ को उनके मुल्क में शराब और दिगर मुसकेरात के इमतनाअ पर तहनीयत पेश करते हुये बयान किया कि "अरसठ हज़ार इनसान शराब खोरी से हर साल हमारे मुल्क में हिलाक होते हैं" ।

इन आदाद व शुमार से तमाम दुनिया सिर्फ़ एक तबाह कुन नशा से हिलाक होने वालों की तादाद का बा आसानी अनदाज़ा लगाया जा सकता है ।

यूरोपियन ममालिक और उनकी नो आबादयात और जेरे असर मुलकों में किरसमस (बड़ा दिन) और न्यू एयर डे पर अवाम तो अलग रहे मज़बही रहनुमा भी शराब बे दरेग़ पीते हैं और ज़बते नफ़्स की तमाम हदूद तोड़कर वह लोग अपनी जो हालत बना लेते हैं नागुफ़्ता होती है और उन तक़ारीब पर नौ ख़ेज़ लड़के और लड़कियां जिन हरकाते नाज़ेबा, शनीअ अफ़आल और संगीन जराइम का इरतकाब करते हैं उन पर उन तमाम ममालिक के इबतदाई अय्याम जनवरी के अखबारात खूब रोशनी डालते है ।

आइली ज़िन्दगी पर शराब खोरी के असरत की निस्बत अमरीका की रियासत आरगीन की अलकोहल एजूकेशन कमीटी मजसिले इसलाह शराब खोरी के डाक्टर ईवार्ड एम सकाट की तहक़ीक़ काबिल गोरे है और इसकी राये से दूसरे इस क़िस्म की तहक़ीक़ करने वाले डाक्टर भी मुत्तफिक़ है वह कहते है कि इस रियासत में शराब खोर मरदों में छप्पन फीसद अपनी आइली ज़िन्दगी तलाक़ दे कर ख़त्म करते हैं और शराब खोर औरतों में अस्सी फीसद।

वटीकन सीटी व ईसाई मज़हब के सब से बड़े फिरक़ा रोमन कैथोलिक का मज़हबी मरकज़ और यूरप का शहर के मशहूर अखबार "ओज़ वीटो रोमानो" ने 20 नवम्बर 1960 ई० नम्बर में बदीन अलफाज़ काक टील व शराब जिस में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के शराब और मसालहा जात मिलाये जाते है, के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाई । इसका गाहे-गाहे पीना तो किसी हद तक पसन्दीदह है लेकिन

इसका रोज़ाना इस्तेमाल जिस्मानी और इखलाकी तबाही का मोजब होता है। इसके बद नताइज में मज़मन शराब खोरी, जिगर व दिल और शरयानों के नक़ाइस, जिल्दी अमराज़ की जानिब रुजहान, दिमाग पर खून का दबाव, आसाबी कमज़ोरीयां, रेशा, बेखाबी जिन के साथ परेशान कुन ख्वाबें आती हैं और बदनी और अखलाकी तबाही आती है इसके साथ उसने एक सवाल उठाया "काक टेल (लफ़्ज़ी मानी मुरग़ की दुम) की जिसे बिच्छू की दुम कहना बजा है। इखलाकी ज़रर रसानी का क्या इलाज किया जाये?"

ईसाई मज़हब में ईशाए रब्बानी की तकरीब बड़ी अहमीयत रखती है और उसका अहम जुज़्व शराब होता है। शराब के खिलाफ़ उसके मरकज़ से आवाज़ उठना मानीदारद।

मासको के अखबार तरऊद 19 जुलाई 1959 ई0 की खबर है। एक बदमस्त शराबी ड्राइवर ने तीन बच्चे जो अपने स्कूल से निले ही थे कार के नीचे कुचल कर हिलाक कर दिये। मातेहत अदालत ने सज़ाये मौत दी जो अदालत आलिया ने भी बहाल रखी।

काश यह ममालिक शराब की ज़रर रिसानियों से सबक़ सीख और इसके इनसदाद के लिये कोई अमली क़दम उठाते।

हज़रत बानीए इसलाम (स0) ने ताकीदी हुक्म दिया। शराब मत पीयो क्योंकि यह तमाम बदियों की चाबी है। हत्ता कि ऐसे बरतनों के इस्तेमाल से भी मना फ़रमाया जो बिलओमूम शराब के पीने के काम में लाये जाते हैं।

अलावा मज़कूरा बाला मुसकेरात के एक और चीज़ भी है जिसे दुनिया नशा आवर नहीं समझती लेकिन दर हक़ीक़त अपने अन्दर वह नशा की खासियत रखती है और हल की क़िस्म का वह भी एक नशा है। इसका इतने वसीअ पैमाने पर सारी दुनिया में रिवाज हो चुका है कि काले गोरे ज़र्द अहमर हर मुल्क के मर्द, औरतें बुढ़े, बच्चे उस का शिकार हो रहे हैं और अब हुकूमतें भी इसे अहम ज़रुरीयाते ज़िन्दगी में से करार देती हैं। मगर बेला खौफे तरदीद यह कहा

जा सकता है कि सेहते इनासनी के लिये पांच ज़रर रसां अशआ में से या ऐसी अशया जो क़यामे ज़िन्दगी के लिये ग़ैर ज़रुरी, बे फायदे और लग़्व है और जिन्हें आज कल दुनिया में इन्तेहाई फ़रोग़ हासिल हो चुका है यह चीज़ अव्वल नम्बर पर है ।

वह अशया बित्तरतीब यह है तम्बाकु, चाये, आइस क्रीम, शराब व दिगर मुसकेराज ।

बलूग़त की शादी और जदीद साइंस

Matured Marraige & Modern Science

बलूग़ के फ़ौरन बाद निकाह मसनून है ।

(उसव-ए रसूले अकरम (स0)

शरीयत की रु से इनसान जब बालिग़ हो तो उसकी शादी कर दी जाये। अगर ऐसा न किया जाये तो किया हुआ और क्या होगा?

डाक्टर वाचर लोहक के इनकशाफात

Discovery Of Dr. Watchar Wahak

डाक्टर वाचर लोहक सिडनी के अज़ीम मुआलिज है । उन्होंने एक इन्टरवीयू में इस बात की वज़ाहत की है कि अगर बलूगत के बाद शादी को देर की जाये तो जिसमानी जिन्सी हार मोनज़ (Sex Hormones) तबई कैफियत ख़त्म हो जाती है । और वह आहिस्ता-आहिस्ता ज़वाल की तरफ माइल होते जाते है।

गदा फौक़ल कुल्या (adrenal Glands) की रतूबात में कमी वाक़अ होकर जिन्सी पहचान में पहले ज़्यादा और फिर अहिस्ता-आहिस्ता कमी वाक़अ हो जाती है।

बलुवग़त में शादी न होने की वजह से मआशरती बुराईयां फैलने के खतरात बढ़ते है । अगर शादी हो भी जाये तो फिर भी वह बुराईयों की आदत ख़त्म नहीं होती । यूं यह मआशरह रोज़-बरोज़ खराब होता जाता है।

इस वक्त मआशरती बुराईयों की बुनयादी वजह नौजवान नसल में जज़्बाती और जिन्सी रुजहान है और शादी इसी रुहजान पर क़ाबू पाने का बेहतरीन नुसखा है लेकिन रिवाज और फैशन की ज़िन्दगी ने शादी को मुश्किल और ज़िना को आसान बना दिया है ।

पूरा यूरप जिन्सी स्केन्डलो में मुबतला है । यूरप के सदर, वज़ीरे आज़म से लेकर हर आखरी आदमी जिन्सी गुमराही में मुबतला नजर आता है । क्या इसलाम मसीहा मज़बह है? इसकी हर एक एक शिक़ राहे मुसतक़ीम है या राहे ज़लालत?!!!

खतना

Circumcision

खतना एक ख़ालिस मुसलमानी उसूल और निशानी है । बाज मज़ाहीब में खतना का उसूल और रिवाज नहीं । जिन-जिन मज़ाहिब में खतना नहीं होता वहां बाज़ ऐसी बीमारीयां है जो उन लोगों में नहीं जिन का खतना होता है।

डाक्टर वाचर ने ख़तने के मुतअल्लिक़ तहक़ीक़ में वज़ाहत की है कि:-

❖ जिन के ख़तने हो गये हों वह शर्मगाह के सरतान (Penis Cancer) से बच जाते है ।

❖ अगर ख़तने न किये जायें तो पेशाब की बंदिश और गुर्दे की पथरी (Kidney Stones) के खतरात मौजूद रहते है बल्कि बेशुमार मरीज़ खतना

न होने की वजह से पथरी के मरीज़ होते हैं ।

❖ खतने से मर्द गैर ज़रुरी शहवत और खयालात के इनतशार से बच जाता है ।

❖ बाज़ ख़तरनाक बीमारीयों के जरासीम अज़्वे खास के चौंघट में फंस कर अन्दर ही अन्दर बढ़ना शुरु हो जाते हैं जिससे अज़्वे ख़ास का अेग्ज़ीमा (Eczema) खारिश और इलरजी हो जाती है ।

❖ औरतों में इसके बुरे असरात पड़ते हैं । क्योंकि यही अमराज़ मरदों के ज़रीये औरतों में मुनतकिल हो जाते हैं ।

❖ आतशक (Syphilis) सुज़ाक (Gonorhea) और खतरनाक इलर्जी के मरीज़ों में मरज़ की पेचीदगी सिर्फ उन मरीज़ों को होती है जो खतने के बग़ैर होते हैं ।

(साइंस और दुनिया)

बाज केस ऐसे देखने में आये है कि खतना न होने की वजह से औलाद से महरुमी हो जाती है । कुव्वत बाह में कमी वाके़ हो जाती है और तुरफ़ैन नशात और सुरुर से महरुम रहते हैं जो उन का इनसानी हक है।

खतना और अक़वाम आलम

Circumcision & Nation Of World

बच्चा व ज़च्चा के क़यामे सेहत के लिये हर मुल्क और क़ौम में माहौल के मुताबिक और हसबे ज़रुरत मुखतलिफ उसूल व तरीक़ इख़्तियार किये जाते है और हमेशा से उनपर अमल होता चला आ रहा है । नाफ़ के काटने के बाद बच्चे को गुसल देना, घुटटी पीलाना वगैरह ऐसे तरीक़ हैं जो सारी दुनिया में राइज है मगर ख़तना का रिवाज सिर्फ़ इब्राहीमी नसलों में पाया जाता है। और वह उसे अहम मज़हबी शआर क़रार देते हैं । गो ईसायइयों ने इसे तर्क कर

Scanned by CamScanner

दिया है। मुसलमान और यहूदी अब तक दस पर सख्ती से अमल करते हैं।

बाज़ मग़रीबी ईसाइयों का ख्याल है कि हज़रत इब्राहीम (अ0) से पहले भी यह रसम दुनिया में मौजूद थी। मुमकिन है ऐसा हो मगर तौरेत से ज़ाहिर है पहले पहल हज़रत इब्राहीम (अ0) ने इरशादे खुदावन्दी के मातहत अस्सी पर इसी बरस की उमर में खूद भी अमल किया और खानदान के तमाम मरदों हत्ता कि गुलामों से भी इस हुक्म पर अमल कराया और अल्लाहतआला से आप के दाइमी अहद की यह एक अहम शर्त थी जिसको आपने अपनी आने वाली नसलों में भी रिवाज देना था। इस अहद के मुताबिक हज़रत मसीह नासरी की विलादत के आठवीं दिन उनके खतने किये गये। जिसे अब उन के मानने वाले ईसायों ने पोलोस के इस क़ौल के मातहत कि शरीयत लानत है और अहद नामा क़दीम ख़त्म हो चुका है और उसकी यह शर्त अब ग़ैर ज़रुरी है। इस मुफीद रसम को बिल्कुल ही तर्क कर दिया है। बल्कि इन्हें इससे इस क़दर नफरत हो गई है कि उनके डरामा न वेस भी इस पर फतवीयां उड़ाते हैं। चूनांचे शैक्सपियर ने अपने डरामे आथोल में हीरो के वाक़या खूकशी का ज़िक्र करते हुये लिखा है कि इस (हिरो) ने अपने पेट में छुरा घोंप दिया और चिल्ला कर कहा "लड़की में ने एक मखतून कुत्ते का पेट यूँ चाक किया था"।

अतिब्बा मग़रिब खतना की अहमियत व अफ़ादीयत खूब समझते हैं। लेकिन ईसाई दुनिया की इससे नफ़रत के बाअस अवाम में उसे रवाज देने या उसका मशवरा देने से कतराते हैं। गो बाज़ अमराज़ में जिन में उसके बग़ैर चारह नहीं होता यही इलाज करने पर मजबूर हो जाते हैं।

मौजूदा ज़माना में तिब्बी मश्वरा के मातहत बाज़ अमराज में मरीज़ या किसी मजरुय के जिस्म में किसी मुनासिब व मोज़ों तन्दुरुस्त आदमी के खून का दाखिल करना निहायत कारगर इलाज साबित हुआ है। लेकिन मरीज़ के जिस्म से किसी मरज़ में या किसी हाजत में खून का अखराज (मासवा फोड़े फुसियों वग़ैरह के) ख्वाह वह फासद ही क्यों न हो इस के लिये मुज़िर खयाल किया जाता है। दौर हाज़िर का डाक्टर माने या न माने हमारा ज़ाती तजरिबा है कि बाज़ अमराज

में यूनानी तरीक़ा फ़सद यानी मरीज़ के जिस्म से एक खास मिक़दार में किसी खास हिस्साए बदन से खून निकलना बड़ा मुफीद और मुअस्सर इलाज साबित होता है । खतना का हुक्म इसी तिब्बी उसूल के मातहत है और इसी उम्र में इसी तरह खून का अखराज बच्चे की सेहत पर बड़ा अच्छा असर डालता है और बहुत से मखसूस मरदाना अमराज़ के लिये हिफ्ज़ मातकदद्दुम होता है ।

जिन अक़वाम में उसका रिवाज नहीं है उनका मावों को बड़ी इहतयात से काम लेना पड़ता है । बच्चे की अगर यह खाल न कटी हुई हो तो उसकी अन्दरुनी जानिब पेशाब पसीने से मैल कुचैल जमकर बाज़ दफ़ा सोज़िश पैदा हो जाती है । इसका बच्चा के दिमाग पर बड़ी उम्र में शौक़ रजूलीयत पर भी पड़ता है ।

तिब्बी और बाज़ डाक्टरों की राय है कि बच्चे के खतने न किये हुये हों और वह मरज उम्मे सिबयान जिस में बच्चा बेहोशी के खतरनाक दौरों में मुबतला हो तो खातने कर देने से जल्द शिफ़ायाब हो जाता है और उससे बेहतर और कोई इलाज ग़ैर मखतून मरीज़ बच्चे का नहीं है ।

इस खाल की मौजूदगी में यह हिस्सा-ए बदन निहायत हस्सास होता है जिसका असर बलूग़त के वक़्त महसूस होता है । इसके कट जाने से नर्मी में कमी आ जाती है ।

बाज़ ग़ैर मखतून मरदों की औलाद नहीं होती या कम उम्र में ही फौत हो जाती है अतिब्बा उसका इलाज खतना तजवीज़ करते है बेऔलादी का यह बड़ा कामयाब इलाज है ।

पैदाइश के बाद सात आठ रोज़ के अन्दर-अन्दर खतना कर देना मुफीद साबित होता है । यही उसूल शरीयतं मोसवी और इसलामी का है । इस उम्र में ज़ख़म बहुत जल्द मुंदमिल हो जाता है । बच्चा कुछ बड़ा हो जाये तो वह ज़ोर से हाथ पावों मारना शुरु कर देता है । ऐसी सूरत में वह अपना जख़्म जल्द ठीक नहीं होने देता । ज़रा होशियार हो जायें और चलने फिरने लगें तो

Scanned by CamScanner

फिर उसके खतने से उसे बहुत ज़्यादा तकलीफ़ होती है । ज़्यादा ताख़ीर हो जाये तो बाज़ अमराज़ के लाहक होने का अन्देशा होता है जो बाज दफा मज़मिन सूरत इख़्तियार कर लेते हैं ।

(इसलामी उसूले सेहत)

हवाला जात :-

(1) पैदाइश 1-14 (2) लोक़ा 21 (3) आमाल 38-30 (4) गमदयूद 31-10

नज़रेबद और जदीद साइंस

Evil Eye & Modern Science

हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि0) से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस (स0) ने अपने घर में एक लड़की देखी उसके चेहरे में सफ़आ (यानी ज़र्दी) थी । हुज़ूरे अकरम (स0) ने फ़रमाया इसको दम करावो क्योंकि इसको नज़र लग गई है ।

(बुखारी व मुस्लिम)

हदीस पाक में हुज़ूरे अक़दस (स0) ने फ़रमाया "अलऐनु हक़" यानी बदनज़र हक़ है ।

(रहबरे ज़िन्दगी)

हज़रत अबू सईद खदरी (रज़ि0) से मरवी है कि रसूले अकरम (स0) जिनों के शर और इनसानों की नज़र लग जाने से अल्लाहतआला की पनाह मांगा करते थे । यहां तक कि मर्उज़तान नाज़िल हुई तो रसूले अकरम (स0) ने इन दोनों को ले लिया और उन दोनों के मासवा को तर्क कर दिया ।

(तिरमज़ी, इबने माजा)

बदनज़री और इसकी कार फ़रमाई नफ़ीउल उम्र में मौजूद है और हक़ तआला ने बाज़ आँखों में ऐसी खासियत पैदा फ़रमाई है कि जब वह नजर भर कर

किसी चीज़ की तरफ दे रखते हैं तो उस चीज़ को नुक़सान पहुंचाती है ।

आप (स0) का इरशाद है कि अगर कोई चीज़ क़ज़ा व क़दर से सबक़त ले जाती तो नज़र होती ।

बाज़ ऐसे लोग देखे गये हैं । जिन की सिर्फ एक निगाह इनसान जानवर हत्ता कि बेजान चीज़ को तबाह करके रख देती है । दीन इस ज़िम्न में क़ुरआन और इसका पढ़ना नफ़ा है । क्या जदीद साइंस नज़रेबद की क़ाइल है? और साइंस ने इस ज़िम्न में क्या इनकशाफात किये हैं?

सटीफेन गोलन की तेज़ धार आँखें ।

फेनकफरट का 21 साला जवान अजीब व गरीब सलाहियतों का मालिक है इसकी आँखों में पुर असररीत पाई जाती है । साइंसदान इस तहक़ीक़ में मशगूल हैं कि इसकी इन सलाहीयतों को मुसबत अन्दाज़ में इस्तेमाल किया जाये ।

सटफीन की आंख से गै़र मरई लहरें निकलकर जिससे भी टकराती हैं वह चीज़ ख़त्म हो जाती है ।

सटफीन ने एक बन्द दरवाज़े को सिर्फ कुछ देर देखा और फिर दरवाज़ा टुकड़े-टुकड़े होकर गिर गया । इस तरह उसने एक मज़बूत सतून को कुछ देर तेज़ नीगाहों से देखा तो उसके अन्दर दराड़ें पड़ गई । अगर वह इस को मज़ीद देखता तो सतून गिर पड़ता ।

यह तो था एक नौजवान का कमाल जिस की आखें काइनात के तमाम इनसानों की आंखों से बिलकुल मुनफ़रिद थीं । उन आखों में क्या कमाल था? यह इतनी तेज़ और गरम क्यों थीं । पेरा साईकोलोजी की रिपोर्ट मुलाहिज़ा हो।

पैरा साईकलोजिस्ट की तहक़ीक़

Research Of Parapsychology

नज़र न आने वाले उलूम यानी मखफी उलूम की तहक़ीक़ का नाम पैरा साईकलाजी है । माहिरीन के मुताबिक हर इनसान की आँख से ग़ैर मरई लहरें निकलती है । जिन में इमोशनल अलरजी (Emotional Energy) की बिजली भरी हुई होती है । यह बिजली जिल्दी मसामात के ज़रीये जिस्म में जज़्ब होकर जिस्म की तामीर या तनज्जुली का बाअस बनती है ।

अगर इमोशनल इलर्जी की बिजली या लहरें मुसबत हों तो उससे इनसान को नफ़ा पहुंचता है और अगर यह लहरें मनफी हों तो मुसलसल नुकसान होता है।

अब बदनजर शख्स की आंख से निकलने वाली लहरें दरअस्ल मनफी होती है और उनके अन्दर इतनी कुव्वत होती है कि वह जिस्म के निज़ाम को दरहम बरहम कर देती हैं ।

एक बद नज़र शख्स ने हसीन मुखड़े को देखकर अपनी ग़ैर मरई लहरें छोड़ी तो दूसरे शख्स का चेहरा सियाह हो गया तो इस बदनज़री की लहरों ने उसके खून में मीलानिन (Melanin) को ज़्यादा कर दिया जिससे जिल्द की रंगत सयाह हो गई ।

अलगरज़ मेरे नबीए करीम (स0) का यह फ़रमान हक़ है ।

इसका रद कुरआन है और उसमें मर्उज़तान मनफ़ी लहरों का रद है।

लाठी की सुन्नत और जदीद साइंस

Sunnah Of Lathi & Modern Science

हुज़ूरे अक़दस (स0) के हाथ में असा होता था ।

(उसवए रसूले अकरम (स0)

ताहिर साहिब फ़रमाने लगे कि हम वाशिंगटन डी. सी में थे एक साहिब को देखा कि पगड़ी बन्धी हुई । हाथ में लाठी और लिबास सुन्नत के मुताबिक़ खरामां-खरामां जा रहे हैं । मैंने अपने मेज़बान से पूछा यह मलंग बाबा कौन है लगते तो कोई मुसलमान है । फ़रमाने लगे कि यह ऐटमी साइंसीदां है और एटमी सैन्टर में डीयूटी पर जा रहे हैं । हम जाकर उनसे मिले । हाल अहवाल पूछा मैंने उनसे सवाल किया कि आप जिस सैन्टर में जा रहे है । वहाँ तमाम यहूदी और ईसाई है और उनका लिबास आप से बिलकुल मुनफ़रिद है तो आपको वहां क्या कैफ़ियत होगी तो उस साइंसदान ने बड़े फ़ख्र से कहा कि :-

"उनको यहूदीयत पे और उस मज़हब के लिबास पर फ़ख्र है मुझे मुहम्मदीयत (स0) और मुहम्मदी लिबास पर फ़ख्र है" ।

पूछा कि हाथ में असा है इसका मक़सद किया है ? बोले

"चूंकि असा दायें हाथ में होता है । इसलिये जिस हाथ में असा होगा वह हाथ मज़बूत होगा । इस में ग़ैर मामूली ताक़त और कुव्वत बढ़ जायेगी। चूंकि ज़िन्दगी में ज़्यादा ज़रुरत दायें हाथ की है इसलिये दायां हाथ मज़बूत होना चाहिये और उसकी ताक़त कुव्वत और मज़बूती असा में मुज़मिर है ।

मज़ीद यह कि असा जिस्म के निज़ाम को मतवाज़न रखने में कुव्वत और मदद देता है । असा की वजह से दायां हाथ चूंकि गिरफ़्त में मसरुफ़ रहता

Scanned by CamScanner

है इस गिरफ़्त का असर फ़िज़यालूजी (Physiology) के मुताबिक दिल और दिल के आसाब और अज़लात पर पड़ता है और उससे दिल मज़बूत होता है और बुज़दिली दूर होती है । लाठी या असा से मूज़ी जानवर का ख़तरा ख़त्म हो जाता है ।

लेपिल ग्रेफिन का इनकशाफ़

The Chiefs of Punjab

सर लेपिस ग्रेफ़िन ने एक मशहूर किताब (सियासत के फ़िरऔन या दी चीफ़्स ऑफ़ पंजाब) है उसके मज़ीद मक़ालात में यह बात वाज़ेह है कि :-

"लाठी जिस्म का सहारा और साथी है इसका जिस्म के आसाबी निज़ाम पर गहरा असर पड़ता है । जिसके हाथ में हमा वक़्त लाठी होगी उस लाठी का ग़ैर मरई असर उसके जिस्म और रुह पर पड़ता रहेगा । यह आदमी बुज़दिल नहीं होगा । मैंने पंजाब के अमीर और रईस लोगों को देखा कि वह हाथ में लाठी या डंडा रखते हैं । जिस-जिस के पास मैंने असा देखा है यक़ीनन उन्हें मैंने दिलादर दूरबीन देखा है" ।

वाक़ई लाठी तमाम अम्बिया की सुन्नत है । इस ज़िम्न में हज़रत मुसा (अ0) का असा मशहूर है ।

कभी कभार नंगे पावों चलने का हुक्म

अहादीस में हुज़ूर (स0) से कभी कभार नंगे पावों चलने का हुक्म मिला है । (मामूलाते नबवी (स0)

Scanned by CamScanner

चूंकि जूता बन्द होता है और हर वक्त बन्द जूता बेशुमार अमराज़ का बाइस बन सकता है । खास तौर पर छूती अमराज़ के जरासीम (Contagious Germs) जूते की तंगी और घुटन की वजह से अन्दर-अन्दर फैलते रहते है । अब अगर इस पावों को ज़मीन पर रखेंगे तो उसको हवा लगेगी जो कि फफूंद नुमा जरासीम वाइरस (Virus) को खत्म करेगी । पावों पर मिटटी मिलेगी और मिटटी में अन्टी सेपटक (Anti-eptic) यानी वाज़अ तअफ्फुन अजज़ा की वजह से जरासीम खत्म हो जायेंगे ।

अगर जूता रबड़, पलास्टिक का हो तो यह हदीस तीर बहदफ है क्योंकि इस जूते की गरमी पावों में आग लगा देती है । (यह और बात है कि इस ज़हरीली गरम के हम सब आदी बन चूके हैं) इसलिये ज़रुरी है कि पावों को जूते से वाहर निकालकर ज़मीन पर चला जाये ।

अकसर माहिरे हिफ्ज़ाने सेहत (Hygiene) इस बात पर ज़ोर देते है कि रोज़ाना सुबह सवेरे मिटटी और घास पर नंगे पावों चला करें । दिमागी कमज़ोरी मुश्किल, खुशकी और असाबी तनाव से बच जाओगे और वाकई यह नुसखा आज़मूदह है ।

बीमार को ज़्यादा खाना पर इसरार न करना

कुतुब अहादीस में बीमार को ज़्यादा खाने पर इसरार न करने का फ़रमान बकसरत मिलता है । (ज़ादूल मआद)

क्योंकि मरीज़ के तमाम आज़ा कमज़ोर होते हैं और कमज़ोर आज़ा ज़्यादा कुव्वत तलब काम नहीं कर सकते और खुराक बर्दाश्त नहीं कर सकते । चूंकि मेदा कमज़ोर होता है और इसमें तमाम अग़ज़या को हज़म करने की हिम्मत नहीं

होती इसलिये मरीज़ को हलकी और जूद हज़म गिज़ा इस्तेमाल कराई जाती है।

अगर मरीज़ को गिज़ा और खुराक ज़्यादा इस्तेमाल कराई गई या खुराक में ज़्यादा इस्तेमाल पर इसरार किया गया तो मरीज़ की मरज़ बढ़ेगी । हत्ता कि मौत का खतरा होता है ।

बन्दा के मुशाहदात में ऐसे कई वाकियात आये है ।

एक साहिब थोड़ा अर्सा मरीज़ रहे । लेकिन कमज़ोर काफी हो गये । घर में मछली पकी मछली पकने की हवा सूंघ कर उनका भी जी ललचाया। घर वालों ने भी इसरार किया कि खालें ताक़त वर है । तो मौसूफ ने रोटी और मछली अच्छी खासी मिक़दार में खाली लेकिन शाम को कै़ शुरु हो गई और मरज़ बढ़ गया और मरीज़ दूसरे दिन राही-ए मुल्के अदम हो गया ।

साइंस और मेडीकल का उसूल है कि मरीज़ की ख्वाहिश का इहतराम करें और उसे किसी चीज़ के खाने पर इसरार न करें बल्कि उस के निज़ामे हज़म को इतना कवी और तन्दुरुस्त करें कि इसका अन्दर खूद ब खूद चाहे यही अस्ल इलाज है ।

गाली और जदीद साइंस

Abuse & Modern Science

इसलाम ने जगह-जगह गाली और दुशनाम से मना फ़रमाया है । बन्दा इन अहादीस को रक़म नहीं कर रहा है कि वह आप को कुतुबे अहादीस में आसानी से मिल जायेंगी । ज़ेल में गाली की साइंसी वज़ाहत पेश है ।

पैरा साईकलोजी की तहक़ीक़

(Research Of Parapsychology)

यूरप का एक मशहूर दानिशवर लीड बेड़ा अपनी किताब (The Masters &

Scanned by CamScanner

the path) में लिखते है । कि

Each word as it is uttered makes little form in etheric matter. The word "hate" for instance Produces a horrible form so much so that having seen its shape, I never use the word when I saw the form discomfort.

तरजुमा :- हर लफ़्ज़ ऐथर (आलमे मलकूत) में एक खास शकल इख़्तियार कर लेता है । मसलन नफ़रत इस कदर भयानक तसव्वुर में बदल जाता है कि एक मरतबा मैंने यह सूरत देख ली और इसके बाद मुझे यह लफ़्ज़ इस्तेमाल करने की कभी जुर्अत न हुई इस मन्ज़र से मुझे इन्तेहाई कुफ़्त हुई थी।

हर लफ़्ज़ एक यूनिट या ऐटम है जिसे अन्दरुनी जज़्बात की बिजलियां बरक़ाती हैं और इसके असरात इस आलमे खाकी और आलमे लतीफ़ (कास्मिक या असटल वर्लड) दोनों में नमूदार होते हैं ।

एक हल्की सी मसल गाली है गाली किसी तलवार या तोप का नाम नहीं बल्कि यह चन्द अलफाज़ का मजमूआ है लेकिन मुंह से निकलते ही मुखातिब के तन बदन में आग लगा देती है । यह आग कहां से आती है अलफ़ाज़ से मजमूआ से और यह अलफ़ाज़ में आग उस सीने और दिल में होती है जिस से गाली निकलती हे और वह आग गाली के ज़रीये दूसरे के अन्दर मुनतकिल हो जाती है ।

लसीड बेड़ कहता है कि मैं आपको कहूंगा कि कभी गाली न दें । यह आपकी सूरत को मसख़ कर देती है ।

इसलाम ने जिस चीज़ से मना किया है मार्डन साइंस ने इसको तहकीक के बाद मना किया है । इसलिये कहा जाता है कि गाली से नफ़रत फैलती है । दरअस्ल गाली मनफ़ी शोआओं की ताक़त है और ज़ाहिर है वह मनफ़ी असरात ही पैदा करेगी ।

मुसकुराहट और जदीद साइंस

Smile & Modern Science

जिस तरह गाली एक लफ़्ज़ है और इसके अन्दर मनफी कुव्वत आग लगा देती है और वह आग दरअस्ल सीना में होती है ।

इसी तरह मखुलूस और मुहब्बत ही एक रोशनी है जो सीने में होती है। मुसकुराहट इसी रोशनी और लहरों का हिस्सा है । मुसकुराहट से मुसबत लहरें कस्मिक वर्लड में इनक़लाब बरपा कर देती है । और यही लहरें दूसरे के दिल और सीना में ठंडक का बाइस बन जाती है । इसे खूशी और मुसर्रत होती है।

आप (स0) ने फ़रमाया कि मुसकुराकर मिलना भी सदक़ा है । यह दरअस्ल मुहब्बत और उलफ़त को बढ़ाने का खास अन्दाज़ है ।

माहिरे नफ़सियात फ़राईड कहता है कि :-

मआशरे का बुनयादी उसूल मुसकुराहट से ताबीर पाते है । अगर मुसकुराहट बाक़ी है तो खूशहाल मआशरह बाक़ी है और जब मुसकुराहट ख़त्म हो जायेगी तो मुहब्ब्त, उन्स, मुख्वत और हमदर्दी के जज़्बात खुद-ब-खुद ख़त्म हो जाते है । मुसकराहट की लहरें दूसरे के दिल में मुहब्बत और हमदर्दी के जज़्बात पैदा करती है ।

सुब्ह सवेरे जल्द काम शुरु करना

To Work Beging In the Early Morning

हुज़ूर अकदस (स0) की तरफ से सुब्ह सवेरे जल्द काम शुरु करने की ताकीद मिलती है ।

Scanned by CamScanner

(उसवए रसूले अकरम (स०)

कितनी क़ीमती नसीहत है और क़ौमों की तरक्की की राज़ है । जिन क़ौमों ने इस राज़ को पा लिया आज वही क़ौमें हुक्मरान और ग़ालिब है।

विल्लियम थराप (अकानोमिस्ट) का तजरिबा

Analysis Of William Thrap (Economist)

विल्लियम थराप अकानोमी का बहुत बड़ा माहिर गुज़ारा है । अपने मुशाहिदात बयान करता है कि जापान और जर्मनी की तरक्की का राज़ मेहनत, दिल लगी, खलूस और सुब्ह जल्द काम शुरु करना और रात तक काम ख़त्म होने तक काम करते रहने में है ।

मैंने एक आदमी की नफ़सियात का गहरा मुतालिया किया है । जो आदमी अलस्सबाह काम शुरु करते है और कारोबार ज़िन्दगी में क़दम बढ़ाते है वह सारा दिन तरो ताज़ा और मसरुर रहते है और यही लोग वक़्त के धाने के साथ चल सकते है और जो उसके बरअकस ज़िन्दगी की गाड़ी खींचते है वह न तो खुद कामयाब होते हैं और न दूसरों को कामयाबी तक पहुँचाते है । आज अगर हम चल सकते हैं और जो दूसरों को कामयाबी तक पहुंचतो है। आज अगर हम यही कामयाबी का नुसखा इस्तेमाल करें तो दूसरी क़ौमों से कभी पीछे नही रह सकते ।

राज जल्द सोने और सुबह सवेरे बेदार होने की अहमीयत व अफ़ादियत से इनकार नहीं किया सकता । तमाम अतिब्बा और माहिरीने हिफज़ाने सेहत उस पर ज़ोर देते है । मशहूर अंग्रेज़ी मसल है । रात जल्द सोना और सुब्ह सवेरे जागना इनसान को सेहतमन्द, अक़्ल मन्द और दौलत मन्द बनाता है ।

इसलाम में हर मुस्लिम पर रोज़ाना पांच नमाज़ें बरवक़्त फ़र्ज़ है । मगर उनमें

Scanned by CamScanner

से तीन का तो दिन के काम धंधों के दरमियान वक्त आता है और एक रात सोने से पहले एक सुबह पौ फटते ही । रात और सुब्ह की दो नमाज़ें सबसे ज़्यादा अहम क़रार दी गई हैं । इसके साथ अव्वल वक़्त पर नमाज़ें अदा करने की भी हिदायत है ' इशा या सोने से पहले नमाज़ की निस्बत भी हुक्म है कि इसके फौरन बाद सो जाना चाहिये और बिला ज़रुरत रात गये तक फ़ज़ूल बातों या कामों से वक़्त ज़ाये नहीं करना चाहिये सुबह पौ फूटते ही उठ खड़ा होना चाहिये ।

इन दो नमाज़ों की अहमीयत का अन्दाज़ा इससे होता है कि बानीये इसलाम हज़रत रसूले करीम (स0) जैसा रहीम व करीम इनसान बाज़ दफ़ा इशा और सुबह की नमाज़ में फ़रमाया करते ''ऐ लोगों ! मेरा जी चाहता है कि तुम तो नमाज़ पढ़ो और मैं जंगल जाकर खुश्क लकड़ीयां जमा कर लाऊँ और उन लोगों के घर फोंक दूँ जो रात इशा की नमाज़ में नहीं आते और सुबह की नमाज़ के वक़्त बिसतरों में पड़े सोते हैं'' ।

मुनाफ़िक़ पर सुबह और इशा की नमाज़ गरां गुज़रती है । इन नमाज़ों में शामिल होने के लिये घुटनों के बल चलकर आना पड़े तो भी आओ । इसके अलावा एक और वाज़ेह इरशाद हुज़ूर (स0) का है । सवेरे उठा करो क्योंकि इसका बड़ा अजर है ।

फिर हुज़ूर (स0) ने मरज़ मरजुलमौत में अपने खास सहाबी हज़रत अबू हुरेरा (रज़ि0) को जो तीन खास वसीयतें कीं । इनमें से एक यह थी कि ख्वाह सारी रात इबादत में गुज़ार दो सुबह सवेरे की नमाज़ बेदार होकर ज़रुर पढ़ना । नीज़ फ़रमाया सुबह की नमाज़ उस वक़्त पढ़ो जब सितारों में अभी रोशनी हो । रसूले पाक (स0) के ज़माने में मसतूरात नमाज़ फ़जर अदा करने के बाद जब घरों को लौटती तो शनाख्त न की जा सकती थीं क्योंकि अभी काफी तारीकी होती थी ।

हज़रत बानीये इसलाम ने नमाज़ों के बरवक़्त और अव्वल वक़्त पर पढ़ने

की खास कर ईशा और सुब्ह की दो नमाज़ों की बड़ी अहमीयत ज़ाहिर फ़रमा कर दुनिया के सामने ज़ररीं उसूल पाबन्दी-ए-वक़्त और सेहत पेश किये हैं और नौ-ए इनसान पर भारी इहसान किया है ।

हमने तो सुबह सवेरे बेदारी की आदत से जहा तक सेहत व सबात का तअल्लुक है बहुत फ़ायदा उठाया है ।

बेदारी से मुतअल्लिक़ बाज़ इबतेदाई हिदायात

कुदरत ने साँस लेने के लिये नाक बनाई है । लेकिन बेदारी में बाज़ दफ़ा इनसान ग़लती से मुंह से भी सांस लेता है । रात सोते वक़्त मुंह बन्द होने के बाइस व सिर्फ़ नाक से सांस लेता है और उसके साथ अन्दर से निकलने वाले ग़लीज़ मवाद और कसाफतें थोड़ी बहुत नाक के अन्दर जम जाती हैं। सांस के अच्छी तरह निकलने और सेहत के लिये गिलाज़त की इस तह का बिस्तर से उठते ही हटाना ज़रुरी होता है । इसलिये बेदार होते ही इनसान का पहला काम इसलाम ने यह बताया कि वह अपनी नाक को अच्छी तरह साफ करे । चुनांचे हदीस में आता है बिस्तर से उठते ही सबसे पहले नाक साफ करो । क्योंकि रात भर उस में शैतान घुसा रहता है ।

शैतान अरबी लोग़त के रु से न सिर्फ उस हस्ती को कहते हैं जो इनसान को गुमराह करती है । बल्कि हर एज़ा देने वाली ज़रर रसाँ चीज़ या जानदार को भी शैतान कहते हैं । मसलन ज़क़्क़ूम या थोहर के पौदे जो दूर से फन दार सांप मालूम होते हैं कुरआने करमी उन्हें रउसुशशियतीन यानी साँपों के सरों से तशबीह देता है । नीज़ शैतान से मुराद गिलाजत और ज़रर पहुँचाने वाले जरासीम भी है । पस हदीस का मतलब ये है कि सोते वक़्त नथनों में ग़िलाज़त और जरासीम वग़ैरह जमा हो जाते हैं । दिन के वक़्त तो इनसान होशियार होता है । हर वक़्त नथने साफ रखने की कोशिश करता रहता है और रात ग़फ़लत

Scanned by CamScanner

से कुछ नही करता इसलिये अन्दर मवाद ज़्यादा जमा हो जाते हैं । लेहाज़ा उठते ही उन्हें साफ करना मुनासिब होता है । इसके साथ हथेलियों से आखों को मलना चाहिये । इससे आंखें अच्छी तरह खुल जाती है ।

यह दोनों अमल ऐसे हैं कि इनसान पर नींद के बाअस गफ़लत और सुस्ती तारी होती है बहुत हद तक ज़ाइल हो जाती है ।

इसके बाद जूता झार कर पहना जाये । मुमकिन है कोई मूज़ी जानवर उसमें घुसा हुआ हो । गरम मरतुब मुलकों के देहात में यह अन्देशा ज़्यादा होता है।

इसी तरह अगर सोने के कपड़े और हों औ दिन के इस्तेमाल के और तो इन्हें खूब झाड़ कर पहना जाये । मुबादा इनमें रात के अन्धेरे में कोइ मूज़ी जानवर छुप गया हो ।

पानी के किसी बर्तन में हाथ बगै़र धोये नहीं डालना चाहिये क्योंकि न मालूम रात गफ़लत में कहाँ-कहाँ लगता रहा हो ।

हवाला जात :-

तजरीदे बुखारी हिस्सा अव्वल हदीस नम्बर- 34, 3, 7, 31, 324, 325, 26, 367, 215, 133, 127, मिशकात जिल्द अव्व्ल हदीस नम्बर-3, 542, तिर्मिजी जिल्द अव्व्ल बाब

मौरुसियत अमराज़ और साइंस

फ़रांस के फ़िज़ीयालॉजीस्ट (Richet) ने अपनी किताब (Thirty Years Psychical Research) में लिखा है ।

"गुनाहों की वजह से इसकी रुह नापाक होकर आइन्दा आने वाले अजसाम को भी नापाक कर देती है और यह गुनाहों का अज़ाब ही दरअस्ल मरज़ की मोरूसीयत कहलाता है" ।

एक साहिब ज़िना की बुराई की वजह से आतिशक में मुब्तला हो जाते हैं। फिज़ीयालॉजी या पथलोजी के माहिर इस बात पर मत्तफ़िक़ हैं कि यह जरासीमी कैफ़ियत जैनज़ (Genes) के ज़रीये रहम मादर में मुनतक़िल होती है और यूं अमराज़ की मोरदसी सिलसिला शुरु हो जाता है ।

गुनाह सिर्फ़ फरदे वाहिद को नुक़सान नहीं पहुंचता बल्कि इसके असरात आने वाली नसलों तक जाते हैं ।

जमाई को हाथ से रोकना

हुज़ूरे अक़दस (स0) ने जमाई को हाथ से रोकने का हुक्म फ़रमाया (ज़ादुल मआद)

बाज़ रवायत के मुताबिक़ आप (स0) जमाई को नापसन्द फ़रमाते थे और अहादीस में जमाई के लिये बायां हाथ इस्तेमाल करने का हुक्म है ।

जमाई आते वक़्त तमाम जबड़े के जोड़ खुल जाते हैं और हाथ देने से वह मिक़दार से ज़्यादा नहीं खुलते । अगर वह ज़्यादा खुल जायें तो जोड़ जुदा होने का खतरा होता है ।

जमाई लेते हुये चूंकि इनसान गहरा साँस लेता है । इसलिये हवा में गर्द व गुबार जरासीम बड़ी तादाद में मौजूद होते हैं और हाथ देने से वह जरासीम और गर्द व गुबार अटक जाते है । अगर यही जरासीम अन्दर चले जायें तो सेहत और तवानाई को नुक़सान देते हैं ।

जमाई में बायां हाथ इसलिये इस्तेमाल करते है कि वह जरासीम बायें हाथ को लग जायेंगे । अगर इसी काम के लिये दायां हाथ इस्तेमाल किया जाता

तो चूंकि दायें हाथ खाने के लिये इस्तमाल होता है और जमाई लेते वक्त इसको जरासीम लग जाते और यही जरासीम खाने के ज़रीये जिस्म में मरज़ का बाइस बन जाते ।

आपने जमाई को नापसन्द इसलिये फ़रमाया कि ये कसलमनदी, सुस्ती और खुमार की अलामत है और सुस्त आदमी न दीन का और न ही दुनिया का।

कुत्ते के जूठे को मिटटी से धोना

पैगम्बरे (स0) इसलाम से एक ज़र्मन डाक्टर की अक़ीदत

जर्मनी के मशहूर डाक्टर करख ने एक मज़मून अखबार में लिखा था जिसका इक़तबास हम यहां नक़ल करते हैं । ताकि यह ज़ाहिर हो जाये कि हदीस शरीफ़ की तालीम ऐसी माकूल है कि हर एक सलीमुल फितरत इनसान खवाह वह किसी मज़हब व मिल्लत का हो इसको क़बूल करेगा ।

डाक्टर मज़कूर लिखता है कि जिस वक्त से मुझको नौशादर का दाईलुकलब के लिये तीर बहदफ इलाज होना दरयाफ़्त हो गया है उस वक्त से मैं अज़ीमुश्शान नबी (यानी) मुहम्मद (स0) की खास तौर पर कद्र व मनज़िलत करता हूं । इस अन्कशाफ की राह में मुझको इन्हें मुबारक कौल की शम-ए-नूर ने रोशनी दिखाई मैंने उन की वह हदीस पढ़ी जिसका मफहूम यह है कि जिस बर्तन में कुत्ता मुह डाले उसको सात बार धो डोला छः मरतबा मिटटी से यह हदीस देखकर मुझे ख्याल आया मुहम्मद (स0) जैसा अज़ीममुश्शान पैगम्बर की शान में फ़ज़ूल गोई नहीं हो सकती । ज़रुर इस में कोई मुफीद राज़ है और मैंने मिटटी के उनसुरों की कीमयाई तहलील करके हर एक उनसुर का दाउलकलबै में अलग इस्तेमाल शुरु किया । आखिर में नौशाद के तजरिबा की नौबत आते ही मुझपर मुनकशिफ़ हो गया कि मरज़ का इलाज है आंहज़रत (स0) ने मिटटी से बर्तन धोने की रग़बत क्यों दिलाई इसकी वजह यह है कि नौशाद हमेशा

मिटटी में मौजूद रहता है और अगर आपने महज़ नोशाद से बर्तन धोने की हिदायत फ़रमाई होती तो बसा ओक़ात इस का मिलना ग़ैर मुमकिन होता इसलिये मिटटी जो हर वक़्त और हर जगह पाई जाती है बर्तनों की सफ़ाई के लिये बेतरीन ज़रीया सफ़ाइ था और इसी तरह आंहज़रत (स0) की हदीस (मफहूम) के उन अलफाज़ पर कि "कि बुखार जहन्नम का हिस्सा है इसे पानी से बुझाओ अतिब्बा हँसा हनसा करते थे हालांकि आप (स0) की ग़रज यह थी कि बुखार का इलाज सफ़रावी अब तहक़ीक़ात ने वाज़ह कर दिया है कि बुख़ार का इलाज आप सर्द से करो चूनांचे सिर्फ ठंठा पानी ही नहीं है बल्कि बरक़ाब है गर्ज कि आंहज़रत (स0) की बहुत सी अहादीस फ़न्नेतिब की जान और असलुल ओसूल है और तहक़ीक़ व तफतीश उनकी सदाक़ते कालमा का इज़हार करती है । मै उस पैग़म्बर (स0) का अदब व इहतराम करता और कहता हूँ कि इबतदाये आफ़रीनश आदम से अब तक कोई भी तबीब व हकीम दुनिया में आपका हम पल्ला पैदा नहीं हुआ ।

(अहकाम इसलाम अक़ल की नज़र में)

मक्खी डुबोने की हिकमत

अहादीस में हुज़ूरे अक़दस (स0) के फ़रमान के मुताबिक़ सुनन इबने माजा में हज़रत अबू सईद खदरी (रज़ि0) से मरवी है रसूल (स0) ने फ़रमाया मक्खी के एक पर में ज़हर होता है और दूसरे में शिफ़ा होती है । इसलिये जब वह खाने में गिर जाये तो उसे गोता दो क्योंकि वह ज़हर (वाला पर) पहले डुबोती और शिफ़ा वाला मुअख्ख़र रखती है ।

दरअस्ल साइंस की रु से मक्खी के एक पर में खतरनाक वाईरस होते है और यह फौरी असर पज़ीर होते है जब मक्खी किसी खाने पीने की चीज़ मे गिरती है तो वह पर जिस में वाईरस होता है खाने की चीज़ में डाल देती है जबकि इसके दूसरे पर में दाफ़अ वाईरस में एंटी वाईरस (Anti Virus) जरासीम होते है । अगर मक्खी को डूबो दें तो बअज़ वाईरस जरासीम खाने में मिलकर

फ़ौरन खतरनाक जरासीमों को ख़त्म कर देते है और गिज़ाई सेहत और तन्दुरुस्ती का ज़रीया बन जाते है । वरना यही गिज़ा जरासीमी अमराज़ का ज़रीया बन कर इनसानीयत की हिलाकत का ज़रीया बन जायेगी।

शैव के नुक़सानात मैडिकल की रोशनी में

Harm Of Shave In Light Of Medical

दाढ़ी सुन्नत है और सुन्नत से इजतनाब दरअस्ल सेहत से अजतनाब है । दाढ़ी के फ़वाइद व महासिन शरई लिहाज़ से अज़हर मिनशशम्स हैं लेकिन इसके साइंसी और मैडिकली फ़वायद तहरीर किये जा चुके हैं । ज़ेल में साइंसी लिहाज़ से शैव के नुक़सानात बयान किये जा रहे हैं ।

डाक्टर मोर के मुशाहिदात

Observation Of Dr. Mor

बरलिन यूनवरसीटी के डाक्टर मोरने शैव, बलैड और साबुन पर बर्सो तजरिबात के बाद जो नताइज अखज़ किये है । उनको माहनामा सेहत (देहली) ने कुछ यूं बयान किये हैं ।

जिल्दी अमराज़

Skin Diseases

शैव से जितना ज़्यादा नुक़सान जिल्द को पहुंचता है शायद जिस्म के किसी और हिस्से को पहुंचता हो । दरअस्ल शैव का नशतर जिल्द को मुसलसल

रगड़ता रहता है और हर आदमी की ख्वाहिश यह होती है कि चेहरे पर एक भी बाल मौजूद न हो ताकि चेहरे के हुस्न और निखार में कमी वाक़िअ न हो। अब बार-बार एक तेज़ उसतरे या बलेड से जिल्द को छिला जाता है। जिससे चेरे की जिल्द हस्सास (Sensitive) हो जाती है और तरह-तरह की अमराज़ की क़बूल और हसूल की सलाहियत पैदा कर लेती है ।

कुन्द उस्तरा या बलेड चेहरे पर फेरने में ज़्यादा ताक़त इस्तेमाल करनी पड़ती है । जिसमें जिल्द मजरुह होती है । यह ज़ख़म आंखों से नज़र नहीं आते । लेकिन उनकी जलन का इहसास होता रहता है । जब जिल्द पर कोई ख़राश आ जाये तो जरासीम को दाखले का ज़रीया मिल जाता है । इस तरह दाढ़ी मुंडवाने वाला तरह-तरह के अमराज़ में मुबतला हो जाता है ।

चेहरे पर पहले मामूली फुंसीया निकल सकती हैं । फिर (Impeigo) के अलावा एक खसूसी जिल्द सोज़िश जिसे हजाम के नाम से मौसूम किया जाता है यानी (Sycosis Barbac) जैसी खतरनाक जिल्दी मरज़ लग सकती है ।

इसके अलावा बाज़ ऐसी ख़तरनाक छूती अमराज़ चेहरे पर और फिर उसके ज़रीये पूरे जिस्म को अपनी लपेट में ले सकती है ।

वह अमराज़ मुन्दरजा ज़ेल है !

- चेहरे के मुहासे Acne Vulgaris
- चेहरे की जिल्द की खुश्की Dandruf Seborrhoes
- कील और छाइयाँ Acne Rosacea
- नाक पर दाने कील Rhinophyma
- आम फोड़े फुंसिया Boils
- इग्ज़ीमा Eczema
- पती उछलता- इलर्जी Urticaria, Allergy

अलटरावाईलेट शुआओं का नुक़सान

Harm Of Altravilet Rays

अलटरावाईलेट शुआएं (Ultraviolet Rayd) हस्सास जिल्द को बहुत ज़्यादा नुक़सान पहुंचाती है । क्योंकि यह शुआएं धूप में होती हैं और धूप से बचना मुमकिन नहीं इसलिये यह फौरी जिल्द पर बुरे असरात डालती है । जिससे जिल्द की रंगत सयाह हो जाती है । जिल्द की रेग़नी ग़दूद का निज़ाम बहुत मुतअस्सिर होता है और तरह-तरह के अमराज़ घेर लेते हैं ।

एक ख़ास असर

A Special Effection

शैव का मुसलसल इस्तेमाल ग़दह नखामया (Pituatary Gland) पर बुरे असरात डालता है। फिर इस गलैन्डज़ के नक़्स की वजह से आसाबी निज़ाम (Nervous System) और जिनसी निज़ाम बहुत मुतअस्सिर होते हैं ।

मुशाहिदात और तजरिबात की रु से ऐसे मरीज़ देखे गये हैं जिन्होंने जब इस अमल को तर्क किया तो वह मज़कूरा अमराज़ से बच गये या फिर वह अमराज़ कम हो गये ।

शरई परदा और उसके इख़्लाक़ी असरात

क्या घर में रिश्तेदार बग़ैर इजाज़त आ सकते है । क़रीबी रिशतेदारों से इसलाम ने परदा का हुक्म क्यों दिया है ? परदा हुक्मे रब्बी है और इसलाम

के बुनयादी अहकामात में इसका शुमार होता है । इसलाम ने मुसलमानों को परदे का हुक्म दिया है जब तक परदा होता है तो घर अमन, सकून और हया को पैकर होता है । जिस घर और कौम से परदा निकल जाता है वह घर बेहयाई और बेसकूनी से लबरेज़ होते हैं ।

बन्दा के पास बेशुमर वाक़ियात ऐसे हैं जिनकी बुनयाद परदा की कमी या परदे का न होना है । परदा न होने की वजह से जो इखलाक़ी बुराईयां फैलती है वह अहाता से बाहर हैं । बन्दा यहां सिर्फ एक युरोपी माहिरे नफ़सीयात का ज़िक्र मुनासिब समझता है ।

डाक्टर सटीफन कलारक
Dr. Stephen Clark

सिसली का माहिरे नफ़सियात है । अपने मुशाहिदात बयान करते हुये कहता है कि :-

"औरतों मरदों का इखतलात, कज़न को घर में बिला रोक टोक आना जाना आम रिश्तेदरों का घर में बग़ैर इजाज़त के क़याम और चाये पीना । यह तमाम मेरी निगाह में नुक़सान देह है और उसका असर नसलों तक जाता है । मैंने इस इखतलात से औरतों को दूसरे मरदों की तरफ माइल देखा । मैंने इस इखतलात से तलाक़ों की कसरत देखी, ज़िना और फहहाशी को बढ़ते देखा । घर अजड़ते देखा, खुदकशी देखी, औरतों और मरदों को जेल जाते देखा । इस सब की वजह घरों में बिला रोक-टोक आना है और बस ।

(वीकली "मन")

एक काफ़िर ने शरई परदे के तोड़ने पर इतने नुक़सान गिनाये । जब्कि मेरे हबीब (स0) ने शरई परदे का हुक्म देकर तमाम नुक़सानात से बचा दिया है । आजिज़ की मुखतसर ज़िन्दगी में बेशुमार वाक़ियात सामने आये हैं । जिन से इहसास होता है कि दीन में शरई परदे को बहुत ज़्यादा अहमीयत हासिल है ।

Scanned by CamScanner

इसलाम में औरतों के आज़ादाना इख़्तलात पर मना और जदीद साइंस

इसलाम ने औरतों को इ़ज़्ज़त, राहत और सकून दिया । जितनी इ़ज़्ज़त इसलाम और इलामी हदूद और क़वानीन ने दी है इतना शायद किसी मज़हब ने दिया हो ।

- क्या इसलाम ने औरत को नंगा किया है या पुरवक़ार लिबास दिया है?
- क्या इसलाम ने औरत को मन्डी का माल बनाया है या घर का चिराग ?
- क्या इसलाम ने औरत को महफिल की नुमाइश बनाया है या घर की चांदनी ?
- क्या औरत सिर्फ सलातीन की महफिल आराई के लिये है ?
- क्या औरत सिर्फ तौंडी बनने के लिये है?
- क्या औरत सिर्फ लौन्डी बनने के लिये है ?
- क्या यूरप में औरत बाज़ारी माल है जिसकी बोली ज़्यादा वही ब्यापारी ?
- क्या औरत को यूरप ने इ़ज़्ज़त दी या इसलाम ने ?
- क्या यूरपी औरत सड़कों की सफ़ाई करती हुई बा इ़ज़्ज़त नज़र आती है ?
- क्या यूरपी औरत की हज़ारों मील ट्रक ड्राइविंग करते हुये इ़ज़्ज़त

महफ़ूज़ है ?

मैं एक तरफ मुसलमान औरत की इज़्ज़त असमत और किरदार को देखता हूँ दूसरी तरफ यूरपी औरत के वक़ार और क़द्र को देखता हूं। तो यह बात अयां होती है कि :-

इसलाम ने औरत को घरदारी में इज़्ज़त दी है और जब भी यही औरत घरदारी को छोड़कर बाग़याना मिज़ाज अपनायेगी ज़िल्लत और ख्वारी उसका मुक़द्दर बन जायेगा। उसकी इज़्ज़त खाक व पा में मिल जायेगी। फिर यह मआशरे का खिलौना बन जायेगी। क्या यूरपी औरत बावक़ार है ?

❖ क्या वह पुरसकून है ?

❖ आखि़र वह तलाक़ और खुदकशी पर मजबूर क्यों हो जाती है ?

उसकी कुछ झलक मुलाहिज़ा फ़रमायें।

सवाल :- बाज लोग पूछते हैं कि ज़न व मर्द की आज़ादाना मिलाप में हरज किया है?

जवाब :- इस सवाल के कई जवाब हैं :-

अव्वल :- इससे बे ग़ैरती बढ़ती है और मुल्क का दफ़ाअ कमज़ोर होता है।

दोम :- घरों का सकून ख़त्म हो जाता है विल्लियम लाख बे गैरत सही लेकिन वह इस बात को कब तक गवारा करेगा कि उसकी बीवी कई-कई रातें घर से गायब रहे वह आज टाम से हम आगोश हो और कल साम से। खाये विल्लियम से और गरमाये टम और जम को। इतनी ग़ैरत तो जानवरों में भी होती है कि वह किसी को अपनी मादे के करीब नहीं भटकने देता। अगर बीवी यूं आवारा हो जाये तो घर को कौन संभालेगा ? बच्चों की देख-भाल कौन करेगा और शौहर सकून की तलाश में कहाँ जायेगा? ज़न व शौहर में से एक आवारा हो जाये या दोनों, दोनों घर की लज़्ज़तों से महरुम होकर इज़्तराब का

शिकार हो जाते है । जहां वह मुलाजिम हों, जो मर्द इस गम में घुल रहा हो कि उसकी बीवी पे कोई और काबिज़ हो गया है और जो बीवीं शौहर की बे नयाज़ी व बदसलूकी की दाइमन शाकी रहती हो वह दोनों काम किया करेंगे। खाक ?

सोम :- लड़कियों की तालीम रुक जाती है फर्ज़ कीजिये कि कालिज की एक लड़की हामला हो जाती है ज़ाहिर है कि अब वह खेलों में शामिल नहीं हो सकेगी । कालिज की बालाई मन्ज़िल पे नहीं चढ़ सकेगी और जब छः सात माह के बाद बोझ बढ़ जायेगा तो वह तालीम से किनारहकश होकर घर बैठ जायेगी । अमरीका में ये वाकियात इस कसरत से हो रहे हैं कि अगर किसी दरस गाह में दाखले के वक्त तालिबात की तादाद एक सौ हो तो साल के आख़िरी में सिर्फ़ बीस रह जाती है ।

(मुलाहिज़ा हो माहनामा "लक")

चहारुम :- तलाक़ के मुक़द्देमात बढ़ जाते हैं । हम सफ़हाते गुज़िश्ता में लिख चूके है कि सिर्फ़ एक साल में अमरीका के बीस लाख जोड़े तलाक़ का शिकर हुये । तलाक़ के बाद जो कुछ औलाद पे गुज़रती है वह मुहताजे बयान नहीं ।

पंजुम :- लड़कियों की बहुत बड़ी तादाद शादी से महरुम रहकर बदकारी फैलाती है । उस दोशिज़ा से भला कौन शादी करेगा जिसके साथ दो चार बच्चे भी हों ।

शशुम :- नाजाइज़ बच्चों की तादाद बढ़ जाती है । अमरीका में 1963 ई0 के दौरान में अन्दाज़न बीस लाख नाखलफ बच्चे पैदा हुये (टाइम, अशाअत 24 जनवरी 1963 ई0) और साढ़े 23 लाख पिछले साल के मौजूदा थे । बच्चों की परवरिश उस गहरी मुहब्बत का नतीजा है जो वालिदैन को औलाद से होती है । जिन बच्चों का कोई बाप ही न हो । उनकी तरबीयत कौन करेगा? हुकूमत? बहुत अच्छा । इन्हें अखलाक़, सलीक़ा और तहज़ीब कौन सिखायेगा ? ज़ाहिर

है कि यह बदतुख़्म बड़े होकर मआशरे के लिये लानत बन जायेंगे। वालिदैन ही का ख़ौफ है और खानदानी शराफत का पास जो बच्चे को आवरगी व बद किरदारी से बचाता है। लेकिन जहां न बाप हो और न खानदान वहां किसी इसलाह व तरबीयत का तसव्वुर ही नहीं हो सकता।

हफतुम :- एक बीमारी से दूसरी पैदा होती है। फर्ज़ कीजिए कि एक नौजवान अपनी जवानी की बुनयादें अपने हाथों से खोने लगता है। इसे सबसे पहले क़ब्ज़ की शिकायत होगी। फिर सर दर्द, फिर बे ख़्वाबी, साथ किल्लते खून और सिल। यही हाल इख़लाक़ का है अगर एक नौजवान आवारों में शामिल हो जाये तो वह सबसे पहले लड़कियों का शिकार खेलेगा। इस काम के लिये पैसे की ज़रुरत पड़ती है। अगर घर से न मिले तो कुमार बाज़ी, चोरी, जेब तराशी और डाका ज़नी पे उतर आयेगा। अमरीका दुनिया का मुतमव्वल तरीन मुल्क है। वहां हर शख़्स की सालाना आमदनी हज़ारों डालर है। बरतानियां में भी फ़ी किस आमदनी हज़ारों पोंन्ड और पाकिस्तान में भी हज़ारों रुपये सालाना है। लेकिन बदकारी का यह आलम कि वहां एक मिनट में एक क़त्ल, आठ चोरीयां, और दो जबरी असमत दरी की वारदातें होती है। सिर्फ न्यूयारक में हर माह पच्चास हज़ार कारें चुराई जाती है। यह अफरातफरी नतीजा है सिर्फ़ एक जुर्म यानी मर्द व ज़न के आज़ादाना इख्तिलात का। एक लड़की के साथ एक शाम बसर करने के लिये शराब, नाच, सिनेमा, डिनर पर हज़ारों खर्च उठता है। इतनी रक़म कहां से आयेगी? अगर आज कहीं से मिल भी गई तो कल क्या होगा? इसका वाहिद नतीजा कारें चुराना और बैंक लूटना है। यह काम अमरीका में ज़ोरों पर है और पाकिस्तान के बाज़ शहरों में भी शुरु हो चूका है। अगर अंग्रेज़ी फिल्मों की दर आमद बन्द न हुई, शराब व रक़्स को फ़ौरन ख़त्म न किया गया और हमारे निसाबे तालीम में मोअस्सर इख़लाक़ी मवाद दाखिल न हुआ तो यहां भी बहुत जल्द वही क़यामत बपा हो जायेगी।

अमरीका की चन्द ताज़ा कहाँनीया सुनये :-

Scanned by CamScanner

1. आज से तीन माह पहले अमेरिका के एक शहर मे एक बरात इस हालत मे बाज़ारो से गुज़री कि तमाम बाराती अज सर ता पा बरहेना थे ।

2. कैलीफोरनिया के एक कलब में लड़कियाँ कमर तक तो छै इन्च चौड़ा कपड़ा लटका लेतीं हैं लेकिन ऊपर बिल्कुल नंगी होती हैं । ऐसी लड़कियाँ पाकिस्तान मे भी मौजूद हैं जो नाच मे बालाइ धड़ के कपड़े उतार देती हैं। और ये कसबेयां बड़े-बड़े घरानो के चश्म व चिराग़ हैं ।

3. एक आदमी न्युर्याक की एक दुकान में दाख़िल हुआ । जहाँ फ़रोख़्त का फ़र्ज़ एक अठारह साला लड़की सरअन्जाम दे रही थी । उस लड़की को पकड़ा उसके कपड़े उतारे और असमत दरी करने लगा । लड़की शोर मचाती रही लेकिन किसी ने परवाह न की इस दौरान लड़की का कोई दाव चल गया और वह नंगी बाज़ार में भाग निकली । वह शख़्स पीछे भागा । ज़रा दूर जाकर उसे पकड़ लिया । पहले उस पर एक कोट फेंका फिर उसे मारने और दूकान की तरफ घसीटने लगा । वहाँ तमाशाइयों का एक हुजूम जमा हो गया । लेकिन वह इस कद्र बेग़ैरत थे कि किसी ने भी लड़की की मदद न की । वहां पुलिस आ गई और उसने लड़की को इस देव की गिरफ़्त से आज़ाद कराया ।

इस वाक़िया से चन्द रोज़ पहले इसी क़िस्म का एक दरिन्दा एक लड़की के फ्लैट में जा घुसा । पहले उससे बदकारी की फिर चाकू मारकर उसे हलाक कर दिया । तमाम हमसाये यह तमाशा देखते रहे और किसी ने कोई मदद न की । (पाकिस्तान टाइम्ज़)

4. न्यूयार्क की अदालतो आलिया ने 29 साला वानिसटन मोसले को इस बिना पर मौत की सज़ा दी कि वह नौख़ीज़ लड़कियों को हिलाक करने के बाद उनकी लाशों से बदकारी किया करता था । एक लड़की को उसने पहले बरहना किया उसके कपड़ों को गैन्द बनाकर उसकी लातों में फंसाया । उस पर पैट्रोल डाला और फिर आग लगा दी । यह मूज़ी लड़कियों को हलाक करने के लिये पेचकश और शिकारी चाकू से भी काम लिया करता था । गिरफ़्तारी से एक

शाम पहले वह हस्बे मामूल अपनी सफ़ेद कार से अपने घर से निकला। राह में उसे एक ऐसी कार नज़र आई। जिसमें एक लड़की तन्हा सफ़र कर रही थी। जब उस लड़की ने अपने घर के पास कार रोकी तो मोसले भी अपनी कार से निकल आया। लड़की उसके तेवर भांप गई और फौरन अपने घर में दाखिल हो गई मोसले भी अन्दर चला गया व तन्हा थी। उसने शोर मचाया लेकिन उसने आगे बढ़कर उसे दबोच लिया और चाकूओं से छलनी कर डाला। उसे वहीं फेंक कर वापस कार में आया और नये शिकार के लिये सड़कों का चक्कर लगाने लगा। कुछ देर बाद वापस गया। लड़की अभी तक तड़प रही थी। उस पर चन्द और वार किये। जब वह बिलकुल ठंठी हो गई तो उससे लुत्फ अन्दोज़ होने के बाद आराम से घर चला गया। चाकू धोकर संदूक में रखा। कपड़े बदले और सो गया। दूसरे रोज़ वह एक घर में नक़ब लगा रहा था कि गिरफ़्तार हो गया और पुलिस को अपने तमाम जराईम की सरगुज़श्त सुनाई। (हफत रोज़ा तामीर)

5. फरांस की पुलिस ने एक ऐसे नौजवान को पकड़ा जो एक हस्पताल में मुलाज़िम था और फालतू वक़्त कारें चुराने और नाबालिग़ बच्चों को क़त्ल करने में गुज़ारता था। नौ बच्चे क़त्ल कर चुका था कि गिरफ़्तार हो गया। (तामीर)

6. अमरीका में खूदकुशी एक मशग़ला बन गया है। 1963 ई० के आखरी 6 माह में वहां के एक शहर लास इनजिलिस में पचहत्तर हज़ार इनसानों ने खुदकुशी की। (पाकिस्तान टाईम्ज़)

9 मई 64 ई० का वाक़िया है कि एक मुसाफ़िर ने जो पैसीफेक एयर लाइन्ज़ के एक तय्यारे में चौवालीस मुसाफ़िरों के साथ सफ़र कर रहा था और ज़िन्दगी से बहुत बेज़ार था पिस्तौल निकाल कर पाइलट को छः गोलियां मारीं। तय्यारा गिर कर तबाह हो गया और तमाम मुसाफ़िर हलाक हो गये। बाद में मालूम हुआ कि सफ़र से पहले इसने पच्चास हज़ार का बीमा करा लिया था। जिस की रक़म उसकी बीवी को मिलना था।

(पाकिस्तान टाईम्ज़ 10 मई 64 ई०)

Scanned by CamScanner

एक फ़िज़ा एक ज़मीर

An Atmosphere One Heart

इत्तहादे अक़ाइद यानी एक ख़ुदा, एक रसूल, एक कुरआन, एक काबा, और ज़ाबत-ए हियात की वजह से इन्डोनेशिया से लेकर मराकश तक तमाम आलमे इसलामी की फ़िज़ा और ज़मीर एक है । एक इसी ज़मीर का करिश्मा है कि करोड़ों इनसान नीम गरसना व नीम बरहना होने के बावजूद ज़ाबता, मज़हब और क़ानून की सीधी राहों पे चल रहे हैं । अगर किसी वक्त मज़हब की गिरफ़्त ढिली पड़ गई और पाकिस्तान में सिर्फ दस हज़ार डाकू, चोर, खूनी और इनक़लाबी पैदा हो गये तो हुकूमत की सारी पुलिस और फौज बेकार हो जायेगी । अमन व सकून दरहम-बरहम हो जायेगा और तमाम तामीरी काम रुक जायेंगे । मज़हब वह वाहिद कुव्वत है जो बड़े-बड़े सरकशों, गर्दन फ़राज़ों और शह ज़ोर पहलवानों को कमज़ोर के क़दमों पे झुका देती है और शेरों की गर्दन में बकरी का तौक़े गुलामी डाल सकती है । भूके बाज़ारों को महज़ इसलिये नहीं लूटते कि यह गुनाह है । ज़बरदस्त-जबरदस्त को सिर्फ इसलिये नहीं सताता कि यह अल्लाह को पसन्द नहीं । दौलत मन्द मसाकीन व यतामा को सिर्फ रज़ाये इलाही के लिये पालते हैं और जब कोई मुसीबत बन जाती है तो लाखों नौजवान महज़ अल्लाह के लिये सर दे देते हैं । जो लोग बेहयाई व बदकारी से इस मुक़द्दस फ़िज़ा को मुकद्दर कर रहे हैं । क़ौम इन्हें कभी माफ नहीं करेगी और खसूसन इन को जो अवाम के खज़ाने से बड़ी-बड़ी तन्ख्वाहें ले कर अवाम के सामने इन के नज़रीयात, ज़ाबत-ए हयात और अक़ाइद की तौहीन करते हैं और उनके ज़मीर पर जिस का दूसरा नाम इस्लाम है ज़रब पे ज़रब लागते हैं ।

इस हक़ीक़त से हर शख़्स आगाह है कि ऊँचें तबक़े के लोग हर शाम होटलों और कलबों में दूसरों की बेटियों के साथ नाचते, शराब पीते, नमाज़, खुदा, रसूल और कुरआन से मीलों दूर भागते हैं । अगर इन्हें देखकर हमारे लाखों नौजवान और करोड़ों अवाम मज़हब की बाड़ को फलांग कर बाहर

Scanned by CamScanner

निकल जायें तो क्या होगा ?

कुरआने हकीम का फ़ैसला है कि यह अय्याश बड़े ख़तरनाक होते है। हर रसूल का मुक़ाबला इन्हीं लोगों ने क्या था और हर क़ौम इन्हीं की वजह से तबाह हुई थी।

तरजुमा :- ''जब किसी बस्ती के खुशहाल लोग फिस्क़ व फजूर में डूब जाते हैं तो वह हमारे ग़ज़ब को आवाज़ देते हैं और हम उस बस्ती को तबाह कर देते हैं'' ।

(सबा 340-35)

तरजुमा :- ''जब हम ने आसूदा हालों को अज़ाब में पकड़ा । तो वह चीख़ उठे चीख़ों मत आज तुम्हें हमारी गिरफ़्त से कोई नहीं छोड़ा सकता । हमारे अहकाम तुम्हें सुनाये गये थे । लेकिन तुम ऐंन्ठते, बकवास करते और बातें बनाते हुये पीछे को लौट गये थे'' ।

(मूमिनून 64, 67)

आज इसलाम का मद्दे मुक़ाबिल सिर्फ एक है । यानी यूरप और उसकी उरयां तहज़ीब । यूरप का कमाल देखिये कि उरयानी व बेहयाई जैसे बातिल अक़दार की अशाअत पर करोड़ों रुपये सर्फ कर रहा है । लेकिन दुनिया की सबसे बड़ी इसलामी सलतनत के उमरा व रहनुमा अपने ताबिन्दा व महकम अक़दार के तसव्वुर तक से लरज़ां है । जब सच्चाई मैदान से भाग जाये तो बातिल छा जाता है और इनसानियत की चीखें निकल जाती हैं ।

(इसलाम और असरेरवां)

म-र-जल बहरैन का राज़

कोसटो एक बहुत बड़ा साइंस दान है ईसाई मज़हब से गहरा लगाव था। उसने समुन्द्र के पानीयों पर गहरी तहक़ीक़ की कि दो समुन्द्र आपस में क्यों नहीं मिलते । अगर एक समुन्द्र का रंग मुखतलिफ है और दूसरे समुन्द्र का रंग इससे

Scanned by CamScanner

मुख़तलिफ लेकिन यह दोनों आपस में मिलते क्यों नहीं ?

हत्ता कि उसने दरयाओं के पानी को देखा कि यह आपस में नहीं मिलते फिर उसने पानीयों पर तहक़ीक़ करते करते अपनी जिन्दगी ज़ाया कर दी और एक नज़रिया क़ायम किया जिसे कोसटो की थियूरी का नाम दिया ।

कुछ अर्सा बाद उसे एक मुसलमान साइंसदां मिला उसके सामने जब कोसटो की थीवरी का तज़किरह आया तो उसने कोसटो से कहा कि आप ने तो अब रिसर्च की है मैं आप को सदीयों क़ब्ल की तहक़ीक़ दिखा सकता हूँ और जब उस मुसलमान साइंसदां ने कोस्टो को कुरआन दिखाया तो कोसटो हैरान रह गया और मुसलमान हो गया ।

कुरआनी आयत जिसने कोसटो को सही राह दिखाई

The Verse That Showed Coursteau The Right Way

म-र-जल बहरैनि यल-तक़ियान । बै-न हुमा बरज़खुल ला यबग़ियान (अर्रहमान 55) अलकुरआन

"दो समुन्द्रों को उस (अल्लाह) ने छोड़ रखा है कि बाहम मिल जायें। फिर भी उनके दरमयान परदा हाइल है । जिससे वह तजावज़ नहीं करते"।

"He has let two seas that should meet togather There is a barrier between them which they do not overpass"

(1) आयत में दो अहम नुकात को बयान किया गया है ।

(2) दो समुन्द्रों का तन्क अबनाए **strait** के ज़रीये आपस मे मिलना।

बहैरहाल ये एक माअमूल की हालत है ।

(3) ये हक़ीक़त के दो समुन्द्र इन के दरमीयान एक खास किस्म की रुकावट की वजह से मुकम्मल तौर पर आपस मे नहीं मिल जाते ।

आइये इस सिलसिले में सबसे पहले साइंसी मखसूसात का मुतालिया करें। फ़रानसीसी साइंसदांन जेल वी कोसटू **Cousteau** ने, जो समुद्र के अन्दर पानी में तहक़ीक़ात के लिये मशहूर है । यह दरयाफ़्त किया कि बहरए रोम **Mediterranean** और बहरे उकयानूस **Atlantic** किमयावी और हयातयाती लिहाज़ से एक दूसरे से मुखतलिफ है । मोसूफ ने इस हक़ीक़त को बयान करने के लिये आबनाए जिबरालटर के नज़दीक ज़ेरे समुंद्र तहक़ीक़ात को बयान करने के लिये आबनाए जिबरालटर के नज़दीक ज़ेरे समुन्द्र तहक़ीक़ात ये बताया कि जिबरालटर जूनूबी साहिलों (मराकश) और शुमाली साहिलों (इसपेन) से बाहर ग़ैर मुतवक़्क़ा तौर पर मिठे पानी के चरश्मे उबलते हैं । यह समुद्री पानीयों में होते हैं । यह बहुत बड़े चश्मे एक दूसरे की तरफ 45 डिग्री के ज़ावया पर तेज़ी से बढ़ते हुये एक डेम की तरह कंधी के दंदोकी शकल इख़्तेयार कर लेते है इस अमल की वजह से बहरए रोम और बहरे ओक्रयानूस अन्दर से एक दूसरे में खलत मलत नहीं होते ।

दरहक़ीक़त, उस तशख़ीस के बाद कोसटो को ये आयात दिखाई गई तो बेहद हैरान हुआ और कुरआन की अज़मत की तारीफ़ करते हुये मुसलमान हो गया।

इस हैरान कुन आयते करीमा में जबलुत तारिक़ (जिबरालटर) की बाड़ को बिकुल सही तौर पर बयान किया गया है । आइये अब दोबारह उन आयात को सूरह रहमान के अवामी तनाज़ुर में देखें । यह हक़ीक़त है कि इस सूरत का मोज़ूअ अल्लाह की खूबसूरत अनायत और तखलीक़ के लिये ला महदूद दानाई, हिकमत और फन है ।

इस आबनाये में दो समुद्रों की रुकावट के अन्दरुनी माइने भी है वह किया है ? समुद्र में ज़िन्दा मखलूक़ की तादाद ज़मीन की निस्बत ज़्यादा है इसमें

लामहदूद जिस्मीया Organism है । इसमें बेतहाशा अक्साम के पौदे और झारियाँ है । अलग़र्ज़ अल्लाह की कुदरत के अज़ीम शाहकार उसमें मौजूद है । यह ज़ाहिर है कि मुखतलिफ़ किस्म के जिस्मये (जान्दार अशाया) मुखतलिफ़ माहौल में पाये जाते है । यह भी एक वजह है अल्लाह की कुदरत समुद्रों को गड-मड नहीं होने देती ।

यह मानी हमें आयत नम्बर 22 की तरफ भी तवज्जुह दिलाते है । खास तौर पर समुंन्द्र की साख्त की तरफ़ और समुंद्रों नबातात और मछलीयों की तक़सीम की तरफ जो दरजा-ए-हरारत में तददीली की वजह से तग़य्युर पज़ीर होती हैं । यह आयत दोनों समुद्रों में मोती और खुबसूरत समुद्री पथरों की मौजूदगी का इलान करती है । इस तरह यह इलाहदगी सिर्फ कीमयाई अजज़ा के नुकता-ए-नजर की वजह से ही नहीं बल्कि मोती और मोंगे और कीमयाई अजज़ा की वजह से कहीं पर होते हैं और कहीं पर नहीं होते इस सूरत में दो समुद्र के खल्त-मंल्त मित न होने की वजह से समुद्र के अन्दर इस क़दर नाक़िस यक़ीन हद तक बाग़ात हैं और इतनी अनवाअ व अक़साम की मछरलीयां हैं कि उनको अपने कुदरती माहौल में देखकर ला महदूद खुशी और हैरत का इहसास होात है ।

समूद्र में मखसूस क़िस्म के फूल पाये जाते हैं जो कई मुखातलिफ पोध ों से ढके हुये हैं जिन की मिसाल खुश्की पर नहीं मिलती । इसी क़िस्म के बहुत से मखसूस फूल होते हैं जिन का ज़मीन पर तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता । समुद्र की तह ही में ऐसे फूल भी है जिसे गुले लाला (Lepasfasiclaris) जो ज़मीनी लाला से बहुत खूबसूरत हैं । समुद्र की तह ही मे ऐसे मुज़य्यन और आरास्ता हशरात और मकोड़े जिन की खुबसूरती देखने से तअल्लुक रखती है और यह अपने वजूद को हज़ारों मीटर नीचे राडार (Radar) जैसी सलाहियत की बदौलत क़ायम रखे हुये है ।

(Acan Thurus Triostegus) एक ऐसी मछली है जिसके सुर्ख जिस्म पर फलोरीत के गोल निशान होते हैं जिनसे खूबसूरत रोशनी निकलती और अपने

ईर्द-गिर्द के माहौल को चमका देती है । समुद्र की अथाह गहराईयों के अन्धेरों में तक़रीबन तीस मुखतलिफ रंगों की रोशनी देती हुई लातादाद मछलीयां पाई गई है । यह मखलूक़ अल्लाह की खूबसूरत और अज़ीम सन्नाई का खास नमूना है और समुद्रों के खल्त मिल्त न होने के अन्दरुनी मानों को ज़ाहिर करती है । जैसा कि आयत करीमा से ज़ाहिर होता है । और जैसा कि साइंसी तहकीक़ से मालूम होता है कि आबनाये जबरालटर के दोनों तरफ इस क़द्र कसीर तादाद में समुद्री चटटानों और तह में ऐसी खुबसूरत और मूखलफ मुखतलित और हशरात मौजूद है कि आज के दौर में भी उनका शुमार मुमकिन नहीं है ।

इस तरह हर रंग और शैड के फूल दोनों समुद्रों में हैं मसलन ऐसे जेसे नाग फनी थोहर और दूसरे जिन के रंग नीले, पलाइट वाले सुर्ख वग़ैरह है मगर देनों समुद्रों में अलग-अलग अक़साम हैं । इसी तरह समुद्र की अथाह में रोशनी देती हुई नीले रंग की मकड़ीयों (Spiders) ने तिलिसमाती समां पैदा किया होता है।

इन समुद्री मखलूक़ात के बयान करने से हमारा एक मक़सद हल होता है। समुद्र की अथाह गहराईयों में जहां आँख कुछ नहीं दे सकती उन खुबसूरत हशरात और मनाज़िर के वजूद की क्या वजह है? सूरत अर्रहमान की आयात 19, 25 तक हमारे माबूद हक़ीक़ी की ला महदूद खूबसरती का बयान है । फिर चौदह सदीयों के बाद उन समुद्र मखलुक़ात के मुतअल्लिक़ एटलस और किताबें छपी हैं । इसी तरह जब हम उन में दी गई हज़ारों खूबसूरत मखलूक़ात के खिल्त-मिल्त न होने की मसलेंहत में दोनों तरफ़ मुखतलिफ़ मखलूक़ात का मुशाहेदा करते हैं जिनमें से एक वह मछली भी है जिसके दहाने के किनारों पर रोशनी इस तरह चमकती है जैसे तिलिसमाती दुनिया एक राह दिखाने वाला गाईड हो ।

आजके लिये इल्म की रोशनी में हम कुछ और ऐसी तफसीलात देखेंगे कि करर ए अर्ज़ पर ज़िन्दगी का ज़हूर कैसे हुआ । और मुखतलिफ आयात में खुद ज़िन्दगी का वजूद किसी तरह ज़ाहिर क्या गया है । उनीसवीसदी के शुरु से ज़मीन पर ज़िन्दगी का सवाल साइंसदानों के लिये सबसे बड़ी दिलचस्पी बन गया

Scanned by CamScanner

है । इबतदा में नामयाती ढांचों (Organic Structures) पर तहक़ीक़ात की गई ताकि यह मालूम हो सके कि जानदार और ग़ैर जानदार चीज़ों में क्या कीमयावी फ़र्क़ है । इस इल्म कीमया की एक शाख़ के तौर पर नामयाती कीमया (Organic Chemistry) के इल्म का अहया हुआ ।

इबतेदाई नताइज में यह पता चला कि नामयाती ढाचों (Organic Structurers) में खास बात यह भी कि उनमें जौहर कॉरबन (Carbon Atoms) मनफी बरक़ी बार यानी (Negative Charge) के हामिल थे । अगर क़ुदरत के निज़ाम में कारबन 4 के हिसाब से पाया जाता है लेकिन नामयाती या ज़िन्दा चीज़ों में यह 4, (मनफ़ी चार) का रुप धार लेता है । और इस तरह हाईड्रोजन के साथ मिलकर मुरक्किबात की एक ज़नजीर जैसी बन जाती है। बाद में जानदार खुलियों में नाइट्रोजन की अहमीयत भी दरयाफ़्त हुई । इसके अलावत ऐसी चीज़ें जैसे:-

(Anino Acid) अमवीनवा सेड (नामयाती मरकब) की दरयाफत हुई जो यक़ीनन गैर जानदार अशाया में मौजूद थीं ।

यह तमाम मालूमात आख़िर जेम्सवास्टन (D. James Watson) की ज़िन्दा चीज़ों में वहुत बड़े DNA की मौजूदगी की दरयाफ़्त पर मुनतज हूवीं । ये मालूम हुआ कि ज़िन्दा चीज़ों में नसलियाती ख्वास के हामिल जरसूमे इअज़ीम DNA की वजह से पैदा होते हैं । बहरहाल ज़िन्दगी के बुनयादी ढाँचे की दरयाफ़्त हो गई । 1950 ई0 से नामयाती ढाचों (Organic Structures) के मुतालेया पर तवज्जा वढ़ गई जिससे यह दरयाफ़्त सामने आई कि DNA में हाइड्रोजन बर्क पारे (Ions) आपस में ग़ैर मुसतकिल पलों की सूरत में जुड़े होते हैं । अब सिर्फ़ एक सवाल रह जाता है । अगर तमाम आज़ा (Organisms) यानी घास से ले कर दिमाग़ असबाती (Neurons) और हज़ारों दूसरे जरसोमे (Beacteria) एक ही सालमा (Molecule) से तशकील पाते हैं तो फिर ज़िन्दगी में इतनी गौनागौं तनवअ क्यों है ? इस सवाल का जवाब मालूम करने के लिये पहले पहल सालमा और उन जोड़ों के दरमयान तअल्लुक़ की तरफ तवज्जह दी गई । मगर यह तमाम कोशिश यह मालूम करने के लिये नाकाम हो गई कि इस फर्क़ की

Scanned by CamScanner

क्या वजह हो सकती है जिसकी रु से एक खुलये (Cell) एक तरफ़ तो सफ़रा (Bile) बनाता है और वही खलया आंख की पुश्त पर रोशनी को बर्क़ में तबदील करता है ।

आख़िर मे साइंस इस नतीजा पर पहुंची है कि खलया, दुसरे लफ़्ज़ों में ज़िन्दगी एक पैचिदा रयाज़याती प्रोग्राम का मामला है । यानी हर क़िस्म के आज़ा में हर एक तरह के कम्प्यूटर वाले निज़ाम के तहत बनाया गाय है । जैसे एक छोटे जेबी कैल्क्यूलेटर, यही वजह है कि कुरआन की बहुत सी आयात में अल्लाह तआला ने एलान किया है कि हम ने तखलीक़ किया और पहले ही तरतीब दिया ।

इन साइंसी नज़रीयात को सामने रखते हुये अब हम किसी हद तक इस क़ाबिल हो सकते है कि तख़लीक़ के सिलसिले में जोहड़ के किनारे वाली मिट्टी (Soil Of Quickening) को समझ सकें । अल्लाहतआला ने ज़मीन को मौजूदा शकल में पैदा करने के बाद मिटटी ओर पानी में ज़िन्दगी पैदा करने के लिये हुक्म दिया और ज़िन्दगी के सालमा (Molecule) को एक प्रोग्रान (नज़्म) अता किया ।

(डाक्टर हलो बार्ती)

छींक में अल्हमदु लिल्लाह कहना और जदीद साइंस

To Say Alhamdu Lillah (Praise be to Allah) In Aneeze & Modern Science

हज़रत अबू हूरैरा (रज़ि0) रवायत करते है कि हुज़ूरे अक़दस (स0) ने फ़रमया अल्लाहतआला को छींक पसन्द और जमाई नापसन्द है । जब कोई शख़्स छींके और अल्हमदु लिल्लाह कहे तो जो मुसलमान सुने उसके ज़िम्मे हक़

है कि वह उसके छींकने वाले मुसलमान को यरहमकल्लाह कहे और जमाई शैतान की तरफ से है जब किसी को जमाई आये तो जहां तक हो सके जमाई को दफ़ा करे क्योंकि जब इनसान जमाई लेता है तो शैतान हंसता है । इसलिये कि यह कसलमन्दी और ग़फ़लत की दलील है और ऐसी चीज़ को शैतान पसन्द करता है ।

(बुखारी शरीफ़)

प्रोफेसर नसरुल्लाह ख़ान सद्र शोब-ए-इसलामियात इसलामिया कालिज लाहौर फ़रमाते है कि एक अंग्रेज़ डाक्टर ने जब यह हदीस पढ़ी कि मुसलमानों के पैग़म्बर (स0) ने फ़रमाया जो मुसलमान छींके वह अल्हमदो लिल्लाह कहे जो मुसलमान पास बैठा हो वह यरहमकल्लाह कहे और फिर छींकने वाला जवाब में यहदीकुमुल्लाह कहे तो उसने सोचा कि एक मामूली से काम पर इतनी दुआऐं पढ़ना क्या वजह है ? तो उसने तहक़ीक़ की और पता चला कि इतनी दुआऐं पढ़ना फजूल नहीं बल्कि यह अल्लाह तआला का शुक्र है क्योंकि तहक़ीक़ से यह बात सामने आई कि दिमाग की रगों में हवा रुक जाती है और कुदरत ने उसको निकालने के लिये एक प्रेशर का इन्तेज़ाम किया है। इस तरह छींक के पेशतर के ज़रीये हवा नाक के रास्ते खारिज हो जाती है। अगर यह हवा रुकी रहे तो फालिज का खतरा पैद हो जाता है, इसलिये छींकने वाले के लिये अल्हमदुलिल्लाह पढ़ना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की उस नैमत का शुक्र अदा करना है ।

तमाम दिन की मसरुफ ज़िन्दगी में इनसान मुखतलिफ उमूर सर अनजाम देता है । बाज़ हज़रात का पेशा ऐसा है इन्हें गर्दो गुबार में काम करना पड़ता है। इस ज़रीये गर्दो व गुबार नाक तक पहुंचता रहता है । कुदरत ने नाम के बालों को दरअस्ल यही ज़र्रात और गर्दो व गुबार जिसमें मौजूदा जरासीमों के रोकने का अहम काम अता फरमाया है । छिंकने से यह गुबार और जरासीम (Germs) बाहर निकल जाते हैं हत्ताकि छींक की हवा इतनी ज़ोरदार होती है कि किसी जरासीम को वहां रुकने की मुहलत ही नहीं मिलती । अगर यही जरासीम, गर्दो

गुबार अन्दर चले जाते तो बेशुमार अमराज़ का बाअस बन सकते थे। कितनी ही ऐसी बीमारियां है जो सिर्फ सांस के ज़रीये फैलती है और फिर खतरनाक सूरत इख़्तियार कर लेती है।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने छींक के निज़ाम को उन तमाम अमराज़ के दफ़ीये के लिये तिरयाक़ बना दिया है।

इसलिये हुज़ूरे अक़दस (स0) ने छींक को पसन्द फ़रमाया है।

अच्छा नाम और जदीद साइंस

Best Name & Modern Science

लोगो तुम क़यामत में अपने और बापों के नाम से पुकारे जाओगे पस तुम अपना नाम अच्छा रखा करो।

(अबू दाऊद)

जिस नाम में अबदीयत और खुदा की तारीफ़ का ज़हूर होता है वह नाम अल्लाह को बहुत प्यारा है।

(बुखारी)

हज़रत अबू वहीब से रवायत है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया कि तुम पैगम्बरों के नाम पर नाम रखा करो और अल्लाहतआला के नज़दीक ज़्यादा प्यारे नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान है और सब से सच्चा नाम हारिस और हमाम है।

(अबू दाऊद व नसाई)

Scanned by CamScanner

नाम और साइंसी इनकेशाफ़ात

Name And Scientific Disclousure

जदीद साइंस ने अच्छे नामों को पसन्द किया है । उनकी पसन्द दरअस्ल नामों के अलफ़ाज़ और फिर उन के असरात की वजह से है ।

पैरासाइकोलोजी के मारिह प्रोफ़ेसर पैरल मास्टर ने अपनी हालिया तहक़ीक़ में अनकेशाफ किया है कि नाम ज़िन्दगी पर असर अनदाज़ होते है हत्ता के नाम के अलफ़ाज का तरजुमा भी अपने फवायद और असरात बदल देता है । प्रोफ़ेसर के मुताबिक "मैंने रहीम और परवेज़ का मवाज़ना किया तो रहीम से सब्ज और सफ़ेद रोशनी निकलती हुई नज़र आई और परवेज़ से सयाह और नसवारी रंग की रोशनी मुतरश्शिह हो रही थी" ।

यह कैफियत तावीज़ के फ़वायद और उसके अलफ़ाज़ की है । ताक़त दरअस्ल अलफ़ाज़ में है चाहे वह नाम की शकल में हो या नाम तावीज़ की शकल में हो ।

और आमाल नामों को मुबारक या बद बना देते हैं । फिरऔन या नमरुद कुछ अल्फ़ाज़ का मजमूआ है लेकिन उनकी तारीक लहरें सुनने वाले को अन्दर नफ़रत और ज़ुलमत पैदाकर देते है और अजीब व ग़रीब असरात छोड़ते हैं।

अलफ़ाज़ की ताक़त का एक हैरत अंगेज़ वाक़िया

A Wonder Event Of Words Power

बन्दा के पास एक साहिब इलाज की गरज़ से आये । गुफ़तगू के दौरान

उन्होंने अपना ज़ाती वाक़िया बयान किया कि मेरे गधे के पेट के क़रीब गहरा ज़ख़्म हो गया, बहुत इलाज कराया लेकिन अफ़ाक़ा न हुआ। हत्ता कि इसमें कीड़े पड़ गये। एक साहिब ने अपना तजरिबा बयान करते हुए बताया कि अगर तुम चाहते हो के तुम्हारा गधा तन्दरुस्त हो जाए, कीड़े ख़त्म हो जाए और ज़ख़्म मुन्दमिल हो जाए तो तीन पक्के सूद ख़ोरो के नाम काग़ज़ पर लिख कर तावीज़ की तरह गधे के गले में बाँध दो।

पहले तो मुझे हैरानगी हुई कि इससे क्या होगा लेकिन इस के इसरार पर मैंने अपने इलाक़े के तीन सूद ख़ोरों के नाम काग़ज़ पर लिख कर गधे के गले में लटका दिये ।

आप हैरान होंगे कि सिर्फ तीन दिन के अन्दर मेरा गधा हर लिहाज़ से तन्दरुस्त हो गया, किड़े मर गये और जख़्म भर गये।

क्या बदआमाली इनसान को ज़हरीला बना देती है ?

क्या बदआमाली से बक़ौल कुरआन पाक कि इनसान जानवरों से बदतर हो जाता है ?

क्या सूद खोरी ने उनको इतना मकरुह बना दिया है कि उनका नाम भी ज़हर आलूद है ?

किया इसकी मिसाल वैसी तो नहीं कि ज़हर को ज़हर मारती है ?

क्या आप को मालूम है कि कैन्सर, नासूर, गले सड़े ज़ख़्मों के लिये ज़हरीली अदवीयात, सपरे या मरहम इस्तेमाल करने से यह बीमारियाँ ख़त्म हो जाती हैं । तो फिर इस तावीज़ से क्या नतीजा अखज़ा करेंगे ।

सलाये आम से है यारान नुकतादां के लिये अलफ़ाज़ की ताक़त के ज़िम्न में मग़रीबी मारिहन ने बहुत तहक़ीक़ की है । उन की तहक़ीक़ का बग़ौर मुताला फ़रमायें ।

मग़रिबी माहिरीन की रुहानी तहक़ीक़ात

Spiritual Research & European Expert

मग़रीबी सुफ़ियों का ख्याल है कि इनसान के जि़स्म से मुखतलिफ रंग की शुआऐं निकलती है जो जिस्म के इर्द–गिर्द एक बाला सा बनाती है। यह शुआऐं हर आदमी खारिज करता है खुराह वह नेक हो या बद, फर्क़ यह है कि नेक व बद की शुआओं का रंग हस्ब किरदार मुखतलिफ होता है। मौत से ऐन पहले यह और नेकियों माइल ब सयाही हो जाता है। एक नज़रया यह है कि हर इनसान अपने आमाल के मुताबिक़ एक माहौल या Atmoshere अपने इर्द-गिर्द जा सकती है और यह कासिक वर्लड के ऊमदा असरात अन्दर आ सकते हैं। ऐसा आदमी खुफिया ताक़तों की इमदाद से मरहूम हो जाता है। मुमकिन है कि कुरआन हकीम के "हबाब, गुशादा (परदा) सत्तर (दीवार) और खुल्फ़ (गि़लाफ़) से मरदा यही माहौल हो"। डाक्टर नगटन का ख्याल यह है :-

Aura is an invisible magnetic radiation from the human body which either attracts or repels.

तर्जुमा :- औरा वह गै़र मरई मक़फ़ा तसी रोशनी है जो इनसान जिस्म से खारिज होती है। यह या तो दूसरों को अपनी तरफ खिन्चती है और या परे ढकेल देती है।

इस कि़स्म के शुआओं से इनकार ना मुमकिन है क्योंकि बाज़ अफ़राद की तरफ खीचा और बाज़ से दूद भागना हमारा रोज़ाना का तर्जुबा है। यह शुआऐं जिस्म खाकी और जिस्म लतीफ़ दानों से खारिज होती है। नेक किरदार लोगों वरसमलटी यानी जिस्म लतिफ़ीफ के शुआओं से दुनिया को खिंचती है और दुनिया को ख्कक़ीदत, बयान और तनज़ीम के तहाइफ लेकर उनके बां जाती है। दूसरी तरफ जिस्मानी शुआऐं बाज़ सफली जज़बात में हैजान पैदा कर सकती है। लेकिन उससे ज़्यादा कुछ नहीं कर सकती।

Scanned by CamScanner

कासमिक वर्ल्ड

Casmic World

कसमिक वर्ल्ड एक ऐसी दुनिया है जहाँ से रुहें आती और वापिस जाती है, जिन और फ़रिश्ते यही रहते है । इसके तीन तबके बताये जाते है। नीचले तबके में गुनहगार अपने आमाल की सज़ा भुगत रहे है । दूसरे तबके में बुलन्द मरतबा अंम्बिया और औलिया रहते हैं ।

फलसफ़–ए–दुआ व इबादत

Philosophy Of Prayers

दुआ व इबादत की हकीकत को समझने के लिये दो चीज़ों की तशरीह ज़रुरी है ।

अव्वल : अलफ़ाज़ :-

माहिरीन रुहानीयात के यहाँ हर हर्फ़ का एक खास रंग, और इसमें एक ख़ास ताक़त होती है । गै़ब बीनों (Clairvoyants) ने हरुफ़ को लिखकर तीसरी आंख से दिखा तो इन्हें ''अल्लिफ़'' का रंग सुर्ख ''बे'' का नीला ''दाल'' का सब्ज़ और ''सीन'' का रंग ज़र्द नज़र आया । फिर उनके असरात का जाइज़ा लिया तो बाज़ अलफ़ाज़ के पढ़ने से बीमारियाँ जाती रहीं । बाज़ से बिच्छू डंग की तकलिफ़ ग़ायब हो गई और बाज़ से सांप तक पकड़ लिये गये । अम्बिया और औलिया की रुहानी कुव्वत बहुत ज़्यादा होती है । इनके कलमात में हैरत अंगेज़ ताक़त पाई जाती है, इतनी ताक़त कि एक साहिबे दिल उनसे खतरनाक अमराज़ व आलाम तक दूर कर सकता है । आसमानों में खुदा के बाद सबसे बड़ी ताक़त हज़रत जिबरईल (अ0) हैं । वही जिबरईल के ज़रीये कलामे इलाही है और इसी लिये सहाइफ इलहामी का हर लफ़्ज़ कुवत का एक ख़ज़ाना होता है, यूं कह लीजिए कि इलहामी अलफ़ाज़ है।

Scanned by CamScanner

तावीज़ की ताक़त का राज़ भी यही है ।

A talisman or an amulet strongly charged with magnatism for a particular purpose by some one who posscesse strong magnetic power may be of invaluable help.

तर्जुमा :- एक तावीज़ या टोटका, जिसमें कोई ज़बरदस्त मक़्नातीसी शख़्सीयत किसी खास मक़्दस के लिये मक़्नातसीसी ताक़त भर दे, बहुत मुफ़ीद साबित होता है ।

पादरी लमीडीटर यूरप के मशहूर सूफ़िया में से थे । उनकी वफात ग़लिबन 1935 ई० में हुई । यह जिस्म लतीफ में दूर-दूर तक परवाज़ करते और मख़्फ़ी अशया को देख सकते थे, वह अपनी किताब **The Msters and the path** में लिखते हैं :-

Each word as it is uttered makes a little form in etheric matter. The word hate for instance produces a horrible form so much so that having seen it shape I never usr the word. When I saw the form it gave me a feeling of acute discomfort (P-136)

तर्जुमा :- हर लफ़्ज़ इथरी में एक खास शकल इख़्तियार कर लेता है मसलन लफ़्ज़ नफ़रत इस क़द्र भयानक सूरत में बदल जाता है कि एक मरतबा मैंने यह सूरत देखी और इसके बाद मुझे यह लफ़्ज़ इस्तेमाल करने की कभी जुरअत न हुई । इस मन्ज़र से मुझे इन्तेहाई ज़ेहनी कूफ़्त हुई थी।

इस किताब में इसी क़िस्म के दो और वाक़ियात भी दरज हैं :-

(1) एक महफ़िल में चन्द अहबाब गुफतगू में मसरुफ़ थे और मैं ज़रा दूर बैठकर उनके अजसामे लतीफ़ा का मुशाहिदा कर रहा था । एक ने किसी बात पर ज़ोर से क़हक़ा लगाया, साथ ही कोई फबती किसदी, और मअन उसके जिस्मे लतीफ़ पर गहरे नसवार रंगी का एक ऐसा जाला तन गया, जिसे देखकर इन्तेहाई कराहत पैदा हुई ।

Scanned by CamScanner

(2) पादरी लमीडीटर ने एक आदमी के जिस्मे लतीफ़ पर बेशुमार फोड़े और नासूर देखे जिनसे पीप के चशमेरवां थे। पादरी उस आदमी को अपने हां ले गया। ज़बूर की चन्द आयात उसे पढ़ने को दी और तकरीबन दो माह के बाद उसके जिस्मे लतीफ़ बिलकुल साफ़ हो गया। इलहामी अलफाज़ और असमाये इलाही में इतनी ताक़त है कि उनके विर्द से हमारी परेशानीयाँ और बीमारियां दूर हो जाती है। मुसलमान इस लिहाज़ से खूश क़िस्मत हैं कि उनके पास अल्लाह के नीनान्वे सफाती नाम, मसलन रहीम, करमी, ग़फूर, खबीर वग़ैरा मौजूद है। जिन्हें हस्बे हाजत पुकारा जा सकता है। लेकिन यह सहूलियत दिगर मज़ाहिब में मौजूद नहीं। ईसाइयों के पास सिर्फ़ गाड है और हिन्दूओं के पास सिर्फ "ओम या राम"। अलफ़ाज़ की यह ताक़त असल हरुफ़ में होती है अगर किसी लफ्ज़ का तर्जुमा कर दिया जाये तो वह बात नहीं रहती और असर बदल जाता है जो ताक़त "या रहीम" में है वह "या मेहरबान" में नहीं। यही वजह है कि मैं ज़ाती तौर पर नमाज़ को उर्दू में पढ़ने के ख़िलाफ़ हूँ क्योंकि कुव्वत का जो खज़ाना इलहामी अलफ़ाज़ और हुज़ूर (स0) की तजवीज़ करदा दुआओं में है। वह हमारे अलफ़ाज़ में नहीं हो सकता।

हर लफ्ज़ एक यूनिट या आइटम है जिसे अन्दरुनी जज़बात की बिजलीयां बरक़ाती हैं और उसके असरात इस आलमे खाकी और आलमे लतीफ़ (कासमक या आसटल वर्ल्ड) देनों में नमूदार होते हैं। इसकी हलकी सी एक मिसाल गाली है। गाली किसी तलवार या तोप का नाम नहीं बल्कि यह चन्द अलफ़ाज़ का मजमूआ है लेकिन मुँह से निकलते ही मुखातिब के तन बदन में आग लगा देती है, यह आग कहाँ से आती है ? अलफ़ाज़ के इस मजमूआ से :-

इसकी एक और मिसाल वह कराह या चीख़ है, जो किसी दुखिया के मुंह से निकलकर, तमाम माहौल को बेचैन कर देती है, या वह तक़दीर है जो कोई आतिश बयान जरनल, बे हिम्मत फौज के सामने झाड़ता है और हर सिपाही में इस क़द्र आग भर देता है कि वह मौत के सैलाबों और तूफानों से भी नहीं बुझ सकती।

Scanned by CamScanner

बाइबल में दर्ज है :-

By the word of the Lord were the heavens made.

तर्जुमा :- खुदा के एक लफ़्ज़ से आसमान पैदा हुये ।

बाईबल में आग़ाज़े आपरीनश का बयान यूं दर्ज है :-

"शुरु में अल्लाह ने ज़मीन व आसमान पैदा किये इस वक़्त ज़मीन वीरान और सुनसान थी, समुद्रों पे अन्धेरा छिपा हुआ था, और अल्लाह का तख़्त पानीयों पर तैर रहा था, फिर

God said let there be light and there was light.

तर्जुमा :- खुदा ने कहा कि उजाला हो जाये और फौरन उजाला हो गया"।

(पैदाइश 1:3)

तो यह थे अल्लाह के वह अलफ़ाज़ जिन से करोड़ों आफताब व महताब वजूद में आये और काईनात के दरो दीवार तजलीयों से चमक उठे ।

(इसलाम और असंरवां, अमन की दुनिया)

ज़िना उम्मुल अमराज़

Adultery Is Mother Of Diseases

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से रवायत है कि हुज़ूरे अकदस (स0) ने इरशाद फ़रमाया कि दोनों आंखों का ज़िना (शहवत से) निगाह करना है और दोनों कानों का ज़िना (शहवत से) बातें सुनना है और ज़बान का ज़िना (शहवत से) बातें करना है से किसी का हाथ पकड़ना हैं और पावों ज़िना (शहवत से) क़दम उठा कर चलना और दिल का ज़िना है कि (शहवत से) वह ख्वाहिश करता है और तमा करता है (हत्ता कि ज़िना हो जता है जो कि हराम है) ।

(मुस्लिम, हयातुलमुसलिमीन) (उसवए रसूले अक़रम (स0)

Scanned by CamScanner

सुन्नते नबवी और जदीद साइंस 318

इसलाम दीने फ़ितरत है उसके पैरो कार यानी मुसलमान इसलाम के फ़रमान पर हमेशा सकून, अमन और चैन से रहता है और जब यही मुसलमान यहूदी कुफ़्फ़ार के तरीके़ पर चलते हुये इसलाम की हदें और सरहदें तोड़ता हुआ आगे बढ़ा है तो तनज्जुल और गुमराही के घड़े है में गिरता चला गया । निकाह और शादी और फिर बलूग़ का निकाह दरअस्ल इनसानी जज़्बात और ख्वाहिशात की तकमील है । लेकिन अगर यह निकाह और शदी नहीं तो फिर इसलाम ने निगाहों की हिफ़ाज़त, रोज़ा बुराये ज़ब्ते नफ़स, शर्मगाह की हिफ़ाज़त के अहकाम जारी फ़रमाये है । मक़सद यह है कि यह इनसान ज़िना से बचा रहे ।

फितरत इस बात से बखूबी आगाह है कि जब यह उसूले फितरत से हटेगा तो यह तरह-तरह के मसाइब व आलाम का शिकार हो जायेगा बीमारियां, परेशानियां, मआशरती ज़िल्लतें उसका मुक़द्दर बन जागेगी ।

मशहूर यूरपी समाजी राहनुमा पावल स्टेफिन ने अज़ीम बात कही

"अगर यूरप सिर्फ़ ज़िना से बच जाये तो उसके तमाम मसाइल में हल कर दूंगा" ।

मुसलमान पुर अम्न क़ौम का नाम है । आज यह बदामन क़ौम क्यों है? इसका जवाब सिर्फ़ यही है इसने इसलामी शआर को मज़ाक़ समझा और उसने क़वानीने फ़ितरत को उछाला और रुसवाकिया और फिर क्या हुआ .... फ़ितरत ने उसको उछाला और रुसवा किया फिर कहीं के न रहे । आज जिन क़ौमों को अपना मुरशीद और बादी बनाये हुये है जब वह फ़ितरत से बाग़ी हुये उनका हाल हुआ कुछ उनकी खबर लेकर अपने अहवाल की इसलाह करें। पढ़ें लेकिन दीदह इबरत के साथ ।

Scanned by CamScanner

यूरप में ज़िना की तबाहकारियाँ

Ruined of Adultery in Europe

फ़ितरत का बाग़ी यूरप परेशान है तबाह हाल है । शोरीदा है क्या हुआ? किस तरह हुआ? फिर क्या हुगा? कुछ इन अल्फ़ाज़ में !!!

अमरिका

America

जज बिन लेन्डसे से **(Ben Lindsey)** जिस को डिनोर **(Denver)** की अदालत जराईमे अतफाल **(Juvenile Court)** का सद्र होने की हैसियत से अमरीका के नौजवानों की इखलाक़ी हालत से वाक़िफ होने का बहुत ज़्यादा मौका मिला है । अपनी किताब **"Revolt of Modern Youth"** में लिखता है कि अमरीका में बच्चे क़ब्ल अज़ वक़्त बालिग़ होने लगे है और बहुत कच्ची उम्र में उनके अन्दर मनफ़ी इहसासात पैदा हो जाते है । उसने नमूना के तौर पर 312 लड़कियों के हालात की तहक़ीक़ की तो मालूम हुआ कि उनमें 255 ऐसी थीं जो ग्यारह और तेरह बरस के दरमयान उम्र में बालिग़ हो चुकी थीं और उनके अन्दर ऐसी मनफ़ी ख्वाहिशात और ऐसे जिस्मानी मुतालिबात के आसार पाये जाते थे जो एक 18 बरस और उससे भी ज़्यादा उम्र की लड़की में होने चाहियें ।

(सफ़हा 82 ता सफ़हा 86)

डाक्टर ऐथ होकर **(Edith Hooker)** अपनी किताब में **"Law of Sex"** लिखती है कि "निहायत मज़हब और दौलतमन्द तबक़ो में भी यह कोई ग़ैर मामूली बात नहीं कि सात-आठ बरस की लड़कियाँ अपने हम उम्र लड़कों से इश्क़ व मुहब्बत के तअल्लुकात रखती हैं जिनके साथ बसा औक़ात मुबाशरत भी हो जाती है" ।

Scanned by CamScanner

इसका बयान है कि :-

"एक सात बरस की छोटी सी लड़की एक निहायत शरीफ़ खानदान की चशम व चिराग़ थी ख़ूद अपने बड़े भाई और उसके चन्द दोस्तों से मुलव्विस हुई । एक दूसरा वाक़िया यह है कि पांच बच्चों का एक गरोह जो दो लड़कियों और तीन लड़कों पर मुशतमिल था और जिनके घर पास पास वाक़अ हुये थे बाहम शाहवानी तअल्लुकात में वाबिस्ता पाये गये और उन्होंने दूसरे हम सिन बच्चों को भी इसकी तरग़ीब दी । उनमें सबसे बड़े बच्चे की उम्र सिर्फ दस साल की थी । एक और वाक़िया एक 9 साल की बच्ची का है जो बज़ाहिर बहुत हिफ़ाज़त से रखती जाती थी । इस बच्ची के मुतअद्दिद "उश्शाक़" की मनज़ूरे नज़र होने का फ़ख़र हासिल था" । (सफ़हा 328)

हाल्टीमूर (Haltimore) के एक डाक्टर की रिपोर्ट है कि एक साल के अन्दर इसके शहर में एक हज़ार से ज़्यादा ऐसे मुक़द्दमात पेश हुये जिन में बारह बरस से कम उम्र की लड़कियों के साथ मुबाशरत की गई थी । (सफ़हा 177)

यह पहला समरह है इस हैजान अंगेज़ माहौल का जिसमें हर तरफ जज़बात को बरअंगेख़्ता करने वाले असबाब फ़राहम हो गये हों । अमरीका का एक मुसन्निफ़ लिखता है कि हमारी आबादी का अकसर व बेशतर हिस्सा आज कल जिन हालतों में ज़िन्दगी बसर कर रहा है वह इस क़द्र ग़ैर फितरी है कि लड़के और लड़कियों को इस पंद्रह बरस की उम्री में ख्याल पैदा हो जाता है कि वह एक दूसरे की साथ इश्क़ रखते हैं । उसका नतीजा निहायत अफसोस नाक है । इस क़िस्म की क़ब्ल अज़ वक़्त सिनफ़ी दिलचसपियों से बहुत बुरे नताइज रुनमा हो सकते हैं और हुआ करते हैं उनका कम से कम नतीजा यह हैं कि नौ उरम लड़कियां अपने दोस्त के साथ भाग जाती हैं या कम सिन में शादियाँ कर लेती हैं और अगर मुहब्बत में नाकामी का मुंह देखना पड़ता है तो खुदकुशी कर लेती हैं ।

तालीम का मरहला

Stage Of Education

इस तरह जिन बच्चों में क़ब्ल अज़ वक़्त सिनफ़ी इहसासात बेदार हो जाते है। उनके लिये पहली तजरिबा गाह मदारां है। मदारिस है मदरसे दो क़िस्म के है। एक क़िस्म उन मदरसों का है जिनमें एक ही सिन्फ़ के बच्चे दाख़िल होते है। दूसरी क़िस्म उन मदरसों की है जिन में तालीम मखलूत है।

पहली क़िस्म के मदरसों में "सोहबत हम जिन्स" (Homo-Sexuality) और खुदकारी (Masturbation) की वबा फ़ैल रही है क्योंकि जिन जज़्बात को बचपन ही में भड़काया जा चुका है और जिनको मुसतक़िल करने के सामान फ़िज़ा में हर तरफ फैले हुये हैं वह अपनी तसकीन के लिये कोई न कोई सूरत निकालने पर मजबूर हैं। डाक्टर लूरी लिखती है कि इस क़िस्म की तालीम गाहों, कालेजों, नर्सो के टरेनींग स्कूलों और मज़हबी मदरसों में हमेशा इस क़िस्म के वाक़ियात पेश आते रहते हैं जिन में एक ही सिन्फ़ के दो फ़र्द आपस में शहवानी तअल्लुक रखते हैं और सन्फ़ मुक़ाबिल से उनकी दिलचस्पी फ़ना हो चूकी है। इस सिलसिले में इसने बकसरत वाक़ियात ऐसे बयान किये हैं जिन में लड़कियां लड़कियों के साथ मुलव्विस हुयीं और दर्दनाक अन्जाम से दो चार हुई। बाज़ दूसरी किताबें से भी मालूम होता है कि यह "सोहबत हम जिन्स" की वबा किस क़द्र कसरत से फैली हुई है। डाक्टर लारी (Dr. Lowry) अपनी किताब "Herself" में लिखता है कि एक मर्तबा एक मदरसे के हैड मास्टर ने चासिल खानदोनों को खुफिया इत्तलाअ दी कि उनके लड़के अब मदरसा में नहीं रखे जा सकते क्योंकि उनमें "बद इखलाक़ी की एक खौफ़नाक हालत" का पता चला है। (सफ़हा 179)

अब दूसरी क़िस्म की मदारिस को लीजिए जिनमें लड़कियां और लड़के साथ मिलकर पढ़ते है। यहां इशतआल के असबाब भी मौजूद है और उनको तसकीन देने के असबाब भी। जिस हैजानी जज़्बात की इबतदाइ बचपन में हुई थी, यहा

Scanned by CamScanner

पहुचकर उसकी तकमील हो जाती है । बदतरीन फहश लिटरेयर लड़कों और लड़कियों के ज़ेर मुताइला रहता है । इशक़िया अफ़साने, नाम नहाद "आर्ट" के रिसाले, जिनसी मसाइल पर निहायत गन्दी किताबें और मान-ए-हमल की मालूमात फ़राहम करने वाले मज़ामीन । यह हैं वह चीज़ें जो उनफ़वाने शबाब में मदरसों और कालिजों के तालीबा और तालीबात के लिये सबसे ज़्यादा जाज़िब नज़र होती हैं । मशहूर अमरीकन मुसन्निफ़ हैंडरच फानलून (**Hendrich Von Loain**) कहता है कि

"यह लिट्रेचर जिसकी सबसे ज़्यादा मांग अमरकीन यूनीवरसीटों में है, गन्दगी, फहश और बेहूदगी का बदतरीन मजमूआ है जो किसी ज़माना में इस क़द्र आज़ादी के साथ पब्लिक में पेश नहीं किया गया" ।

इस लिट्रेचर से जो मालूमात हासिल होती हैं दोनों सिन्फ़ो के जवान अफ़राद उन पर निहायत आज़ादी और बैबाकी से मुबाह से करते है और उसके बाद अमली तजरिबात की तरफ क़दम बढ़ाया जाता है । लड़के और लड़कियां मिलकर (**Petting Parties**) के लिये निकलते हैं जिसमें शराब और सिग्रेट का इस्तेमाल खूब आज़ादी से होता है और नाच रंग से पुरा लुत्फ़ उठाया जाता है ।

लिन्डसे का अन्दाज़ा है कि हाई स्कूल की कम अज़ कम 45 फ़ीसद लड़कियां मदरसा छोड़ने से पहले खराब हो चूकी होती हैं और बाद के तालीमी मदारिज में अवसत इससे बहुत ज़्यादा है । वह लिखता है :-

"हाई स्कूल का लड़का मुक़ाबला हाई स्कूल की लड़की के जज़बात की शिद्दत में बहुत पीछे रह जाता है । उमूमन लड़की ही किसीन किसी तरह पेश क़दमी करती है और लड़का इसके इशारों पर नाचता है" ।

Scanned by CamScanner

तीन ज़बरदस्त महरिकात

Three Great Proposer

मदरसा और कालिज में फिर भी एक क़िस्म का डीसीपलीन होता है जो इस हद तक आज़ादी-ए-अमल मे रुकावट पैदा करता है । लेकिन यह नौजवान जब तालीम गाहों से मुशतइल जज़्बात और बिगड़ी हुई आदात लिय हुये ज़िन्दगी के मैदान में क़दम रखते हैं तो उनकी शोरिश तमाम हदूद व क़ुयूद से आज़ाद हो जाती है । यहां उनके जज़्बात को भड़काने के लिये एक पूरा आतिश ख़ाना मौजूद रहता है और उनके भड़कते हुये जज़्बात की तसकीन के लिये हर क़िस्म का सामान भी किसी दिक़्क़त के बग़ैर फ़राहम हो जाता है ।

एक अमरीकन रिसाला में उन असबाब को जिन की वजह से वहां बद इख़लाक़ी की ग़ैर मामूली अशाअत हो रही है इस तरह बयान किया गया है।

"तीन शैतानी क़ुव्वतें हैं निजका तसलीस आज हमारी दुनिया पर छा गई है। और यह तीनों एक जहन्नम तैयार करने में मशग़ूल हैं । फहश लिट्रेचर, जो जंगे अज़ीम के बाद हैरत अंगेज़ रफ़्तार से अपनी बे शरमी और कसरते अशाअत में बढ़ता चला जा रहा है । मुतहर्रिक तसवीरें जो शहवानी मुहब्बत के जज़्बात को न सिर्फ़ भड़काती हैं बल्कि अमली सबक़ भी देती हैं । औरतों का गिरा हुआ इख़्लाक़ी मैयार जो उनके लिबास और बसा अवक़ात उन की बरहंगी और सिग्रेट के रोज़ अफ़ज़ों इस्तेमाल और मर्दों के साथ उनके हर क़ैद इमतयाज़ से नाआशना इख़्तिलात की सूरत में ज़ाहिर होता है ' यह तीन चीज़ें हमारे हां बढ़ती चली जा रही हैं और उनका नतीजा मसीही तहज़ीब व मआशरत का ज़वाल और आख़िरकार तबाही है । अगर उनको न रोका गया तो हमारी तारिख़ भी रुम और उन दूसरी क़ौमों के ममासिल हो जायेगी जिन को यही नफ़्स प्रस्ती और शहवानीयत शराब और औरतों और नाच रंग समेत फ़ना के घाट उतार चूकी है'' ।

यह तीन असबाब जो तमद्दुन व मआशरत की पूरी फ़िज़ा पर छांयें हुये है

हर उस जवान मर्द और जवान औरत के जज़्बात में एक दाईमी तहरीक पैदा करते रहते है जिसके जिस्म में थोड़ा सा भी गरम खून मौजूद है । फ़वाहश की कसरत इस तहरीक का लाज़मी नतीजा है ।

फ़वाहिश की कसरत

Excess Of Obscenity

अमरीका में जिन औरतें ने ज़िना कारी को मुसतक़िल पेशा बना लिया है उन की तादाद अनदाज़न कम से कम चार-पाँच लाख के दरमयान है । मगर अमरीका की बेसवा को हिन्दुस्तान की बेसवा पर क़यास न कर लीजिए। वह खानदानी बेसवा नहीं है बल्कि एक ऐसी औरत जो कल तक कोई आज़ाद पेशा करती थी । बुरी सुहबत में खराब हो गई और क़हबा खाने में आ बैठी। चन्द साल यहा गुज़ारगी । फिर इस काम को छोड़कर किसी दफ़तर या कारखाने में मुलाज़िम हो जायगी ।

तहक़ीक़ात से मालूम हुआ है कि अमरिका की 50 फ़ीसदी बेसवायें खानगी मुलाज़िमों **(Domestic Servant)** में से भरती होती हैं और बाक़ी 50 फ़ीसद हस्पतालों, दफतरों और दुकानों की मुलाज़मतें छोड़ कर आती हैं । अमूमन पन्द्रह और बीस साल की उम्र में यह पेशा शुरु किया जाता है और पचीस तीस साल की उम्र को पहुंचे के बाद वह औरत जो कल बेसवा थी क़हबा खाने से मुनतक़िल होकर किसी दूसरे से आज़ाद पेशे में चली जाती है । इस से अन्दाज़ा किया जा सकता है कि अमरकी में चार पाँच लाख की बेशवाओं की मौजूदगी दरहक़ीक़त क्या मानी रखती है ।

जैसा कि पीछले बाब में बयान किया जा चुका है, मग़रीबी ममालिक में फाहशगी एक मुनज़्ज़म बैनुलअक़वामी कारोबार की हैसीयत रखती है । अमरीका में न्यूयारक, रवडी और बोनस आइरस इस कारोबार की बड़ी मनड़ियां हैं । न्यूयारक की दो सबसे बड़ी "तिजारती कोठियों" में से हर एक की एक-एक

इनतज़ामी कोनसल है जिसके सदर और सिकरेटरी बाक़ायदा इनतख़ाब किये जाते है। हर एक ने क़ानूनी मशीर मुक़र्रर कर रखे है ताकि किसी अदालती क़ज़िया में फंस जाने की सूरत में उनकी मफाद की हिफ़ाज़त करें। जवान लड़कियों को बहकाने और उड़ाकर लाने के लिये हज़ार दलाल मुक़र्रर हैं जो हर जगह शिकार की तलाश में फिरते रहते हैं। उन शिकारों की दसतबुर्द का अन्दाज़ा इससे किया जा सकता है कि शकागो आने वाले मुहाजरीन की लैक के सदर ने एक मरतबा 15 महीने के आदाद व शुमार जमा किये थे तो मालूम हुआ कि इस मुद्दत में 7200 लड़कियों के खतूत लैग के दफ़तर को मौसूल हुये जिन में लिखा था वह शिकागो पहुंचने वाली हैं उनमें से सिर्फ 1700 अपनी मनज़िले मक़सूद को पहुंच सकीं। बाक़ी का कुछ पता न चल सका कि कहां गई।

क़हबा ख़ानों के अलावह बकसरत मुलाक़ात खाने (Assignation Houses) और (Call Houses) में जो इस ग़रज़ के लिये आरास्ता रखे जाते हैं कि "शरीफ़" असहाब और खवातीन जब बाहम मुलाक़ात फ़रमाना चाहें तो वहां उनकी मुलाक़ात का इन्तेज़ाम कर दिया जाये। तहक़ीक़ात से मालूम हुआ कि एक शहर में ऐसे 78 मकान थे। एक दूसरे शहर में 43 एक और शहर में 33। उन मकानों में सिर्फ़ बिन बियाही खवातीन ही नहीं तीं बल्कि बहुत सी बियाही हुई खवातीन की भी वहां आमद रहती है। एक मशहूर रीफ़ार मर का बयान है कि :-

"न्यूयार्क की शादी शुदह आबादी का पूरा एक तन्हाई हिस्सा ऐसा है जो इखलाक़ी और जिस्मानी हैसियत से अपनी अज़दोअजी ज़िम्मा दीवारों में दफादार नहीं है और न्यूयार्क की हालत मुल्क के दुसरे हिस्सो से कुछ ज़्यादा मुखतलिफ नहीं"।

अमरीका के मुसलिहीने इखलाक़ की एक मजलिस

(Committed Of Fourteen) के नाम से मशहूर है। इस मजलिस की तरफ से बद बदइख़लाक़ी के मरकज़ों की तलाश और मुल्क की इख़लाक़ी हालत की तहक़ीक़ और इसलाह इखलाक़ की अमली तदबीर का काम बड़े पैमाने पर किया

Scanned by CamScanner

जाता है । इसकी रिपोरटों में बयान किया गया है कि अमरीका के जितने रक्स खाने, नाइट कलब, हुस्न गाहें (Beauty Saloons) मालिश गद्दे (Massage Rooms) और बाल सवांरने की दुकानें (Hair Dressings) हैं क़रीब-क़रीब सब बाक़ाइदा क़हबा खाने बन चुके है बल्कि उनसे भी बदतर क्योंकि वहाँ नाक़ाबिले बयान अफ़आल का इरतकाब किया जाता है ।

अमराज़ खबीसा

Malignant Diseases

फ़्वाहिश की इस कसरत का लाज़मी नतीजा अमराज़ खबसा की कसरत है । अन्दाज़ा किया गया है कि अमरीका की करीब-करीब 90 फ़ीसद आबादी उन अमराज़ से मुतअस्सिर है । इनसाईकीलो पैडया बरतानिका से मालूम होता है कि वहाँ के सरकारी दवाखानों में अवसतन हर साल आतशक के दो लाख और सुज़ाक के एक लाख 60 हज़ार मरीज़ों का इलाज किया जाता है । 65 दवाखाने सिर्फ इन्हीं अमराज़ के लिये मखसूस हैं । मगर सरकारी दवाखानों से ज़्यादा तादाद उन अमवात की है जो सिर्फ आतशक की बदौलत होती हैं । सुज़ाक के माहिरीन का कम से कम तखमीना है कि 60 फीसद जो उन अशखास इस मरज़ में मुबतला हैं, जिन में शादी शुदा भी है और गै़र शादी शुदा औरतों के आज़ा जिन्सी पर जितने आपरेशन किये जाते हैं, उनमें से 75 फीसद ऐसी निकलती हैं जिनमें सुज़ाक का असर पाया जाता है।

तलाक़ और तफ़रीक़

Divorce & Differentiation

ऐसे हालात में ज़ाहिर है कि खानदान का नज़्म और अज़दवाज का मुक़द्दस राबता कहाँ क़ायम रह सकता है । आज़ादी के साथ अपनी रोज़ी कमाने वाली औरतें जिनको शहवानी ज़रुरीयात के सिवा अपनी ज़िन्दगी के किसी शुअबा में भी मर्द की ज़रुरत नहीं है । और जिन को शादी के बग़ैर आसानी के साथ

Scanned by CamScanner

मर्द मिल सकते है और शादी को एक फ़ज़ूल चीज़ समझती है । जदीद फ़लसफ़ा और माददह प्रस्ताना ख़यालात ने उनके विजदान से यह एहसास भी दूर कर दिया है कि शादी के बग़ैर किसी शख़्स से तअल्लुकात रखना कोई ऐब या गुनाह नहीं । सोसाईटी को भी इस माहौल ने इस क़द्र बेहस बना दिया है कि वह ऐसी ओरतों को क़ाबिले नफ़रत या क़ाबिले मलामत नहीं समझती । जज लन्डं से अमरीका की आम लड़कियों के खयालात की तरजुमानी इस अलफ़ाज़ में गिरता है :-

"मै शादी क्यों करुं? मेरे साथ की जिन लड़कियों ने गुज़शता दो साल में शादियां की है हर दस में से पाँच की शादी का अन्जाम तलाक़ पर हुआ। यह समझती हूं कि इस ज़माना की हर लड़की मुहब्वत के मआमले में आज़ादी-ए-अमल का फितरती हक़ रखती है । हमें मानअ जमल की काफी तदबीरें मालूम हैं । इस ज़रीये से यह खतरा भी दूर किया जा सकता है कि एक हरामी बच्चे की पैदाईश कोई पेचीदह सूरते हाल पैदा कर देगी । हमें यक़ीन है कि रवायती तरीक़ों को इस जदीद तरीक़ा से बदल देना अक़ल का मुक़तज़ा है" ।

इन खयालात की बेशरम औरतों को अगर कोई चीज़ शादी पर आमादा करती है तो सिर्फ़ जज़्ब-ए-मुहब्वत है । लेकिन अकसर यह जज़्बा भी दिल और रुह की गहराई में नहीं होता, बल्कि महज़ एक आरज़ी कशिश का नतीजा होता है । ख्वाहिशात का नशा उतर जाने के बाद ज़ौजैन में कोई उलफ़त बाक़ी नहीं रहती मिज़ाज और आदात की अदना नामवाफक़त उनके दरमयान मुनाफिरत पैदा कर देती है । आख़िरकार अदालत में तलाक़ या तफ़रीक़ का दावा पेश हो जाता है । लन्डसे लिखता है :-

"1922 ई० में डनॉर में हर शादी के साथ एक वाक़िया तफ़रीक़ का पेश आया और दो शादियों के मुक़ाबला में एक मुक़दमा तलाक़ का पेश हुआ। यह हालत महज़ डनॉर ही की नहीं है । अमरीका के तक़रीबन तमाम शहरों की क़रीब-क़रीब यही हालत है" ।

Scanned by CamScanner

फिर लिखता है :-

तलाक़ और तफ़रीक़ के वाक़ियात बढ़ते जा रहे हैं और अगर यही हालत रही जैसी कि उम्मीद है तो ग़ालिबन मुल्क के अकसर हिस्सों में जितने शादी के लाइसंस देते जायेंगे इतने ही तलाक़ के मुक़द्दमे पेश होंगे'' ।

कुछ अरसा हुआ कि डीटराये (Detroit) के अखबार ''फ़री प्रेस'' में उन हालता पर एक मज़मून शाया हुआ था जिसका एक फ़िक़रा यह है :-

''निकाहों की कमी, तलाक़ों की ज़्यादती और निकाह के बग़ैर मुसतक़िल या अरज़ी नाजाईज़ तअल्लुकात की कसरत ये मानी रखती है कि हम हैवानीयत की तरफ वापस जा रहे हैं । बच्चे पैदा करने की फितरी ख्वाहिश मिट रही है, पैदा शुदा बच्चों से ग़फ़लत बरती जा रही है और इस अम्र का इहसास रुख़्सत हो रहा है कि खानदान और घर की तामीर तहज़ीब और आज़ाद हकूमत की बक़ा के लिये ज़रुरी है । इसके बरअक्स तहज़ीब और हुकूमत के अन्जाम से एक बे दर्दाना बे एतनाई पैदा हो रही है'' ।

तलाक़ और तफ़रीक़ की इस कसरत का इलाज अब यह निकाला गया है कि (Compassionate Marriage) यानी ''आज़माइशी निकाह'' को रिवाज दिया जाये । मगर यह इलाज असल मरज़ से भी बदतर है । अज़माइशी निकाह के मानी यह है कि मर्द और औरत ''पुराने फ़ैशन की शादी'' किये बग़ैर कुछ अर्सा तक बाहम मिल कर रहें । अगर इस यकजाई में दिल से दिल मिल जाये तो शादी कर ली वर्ना दोनों अलग होकर कहीं और क़िस्मत आज़माई करे। दौराने आज़माइश में दोनों को औलाद पैदा करेन से परहेज़ करना लाज़मी है, क्योंकि बच्चे की पैदाइश के बाद उन के बाज़ाबता निकाह करना पड़ेगा । यह वही चीज़ है जिसका नाम रुस में आज़ाद मुहब्बत (Free Love) है ।

Scanned by CamScanner

क़ौमी ख़ुदकशी

National Suicide

नफ़स परसती, अज़्दवाजी जिम्मादारीयों से नफ़रत, खान्दानी ज़िन्दगी से बेज़ारी और अज़्दवाजी ताअल्लुकात की नापाइदारी ने औरत के इस फ़ितरी जज़्बा-ए-मादरी को क़रीब-क़रीब फ़ना कर दिया है जो निसवानी जज़्बात में सबसे ज़्यादा अशराफ़ व आला रुहानी जज़्बा है और जिसकी बक़ा पर न सिर्फ तमद्दुन व तहज़ीब बल्कि इनसानीयत की बक़ा का इनहसार है । मना-ए-हमल, इसक़ाते हमल और क़त्ले अतफ़ाल इसी जज़्बा की मौत से पैदा हुये हैं । मना-ए-हमल की मालूमत हर क़िस्म की क़ानून पाबन्दीयों के बावजूद ममालिक मुत्तहिदा अमरीका में हर नौजवान लड़की और लड़के को हासलि है । मान-ए-हमल दवाएं और आलात भी आज़ादी के साथ दुकानों पर फरोख़्त होते है । आम आज़ाद औरतें तो दरकिनार मदरसों और कालिजों की लड़कियां भी इस सामान को हमेशा अपने पास रखती हैं ताकि अगर उनका दोस्त इत्तफाक़न अपना सामान भूल आते तो एक पुर लुत्फ़ शाम ज़ाया न होने पाये । जज लन्डसे लिखता है :-

"हाई स्कूल की कम उम्र वाली 495 लड़कियां जिन्होंने खुद मुझसे क़रार किये ताकि उनको लड़कों की सिन्फ़ी तअल्लुक़ात का तजरिबा हो चुका है, उनमें से सिर्फ़ 125 ऐसी थीं जिनको हमल ठहर गया था । बाक़ियों में से बाज़ तो इत्तफाकन बच गई लेकिन अकसर को मान-ए-हमल की मुअस्सर तदाबीर का काफ़ी इल्म था ।

कुवारी लड़कियां इन तदावीर को इस लिए इस्तेमाल करती है कि इन की आजादी मे फ़र्क़ ना आये । शादी शुदा औरते इसलिए इन से इसतफादा करती है कि बच्चे की पैदाइश से ना सिर्फ़ इन पर तरबीयत और तालीम का बार पड़ जाता है, बल्कि शौहर को तलाक़ देने की आज़ादी में भी रुकावट पैदा हो जाती है और तमाम औरतें इसलिये मां बनने से नफ़रत करने लगी है कि ज़िन्दगी का

पूरा-पूरा लुत्फ़ उठाने के लिये उनको इस झंझाल से बचने की ज़रुरत है। नीज़ इसलिये भी कि उनके नज़दीक बच्चे जनने से उनके हुस्न में फ़र्क़ आ जाता है।

बहर हाल असबाब ख्वाह कुछ भी हों, 65 फ़ीसदी तअल्लुक़ मर्द व ज़न ऐसे है जिन में इस तअल्लुक़ के फितरती नतीजा को मान-ए-हमल की तदबीरों से रोक दिया जाता है बाक़ी मान्दह पाँच फ़ीसद हवादिस जिन में इत्तफ़ाक़न हमल क़रार पा जाता है उनके लिये इसक़ात और क़त्ले अतफ़ाल की तदबीरें है और हज़ारहा बच्चे पैदा होते ही क़त्ल कर दिये जाते है। (सफ़हा नम्बर 220)

इंगलिस्तान की हालत

Condition Of Britain

मैं उन अफसोसनाक तफसीलात को ज़्यादा तूल नहीं देना चाहता। मगर नमुनासिब है कि इस हिस्सा बहस को जारज राईली अस्काट की तारीखुल "A History of Prostitution के चन्द इक़तबासात नक़ल किये बग़ैर ख़त्म जाये। की इस किताब का मुसन्निफ़ एक अंग्रेज़ है और इसने ज़्यादातर अपने ही मुल्क की इखलाक़ी हालत का नक़शा इन अलफ़ाज़ में खींचा है :-

''जिन औरतों की बसर औक़ात का वाहिद ज़रीया यही है कि अपने जिस्म को किराये पर चला कर रोज़ी कमाये उनके एलावह एक बहुत बड़ी तादाद उन औरतों की भी है (और वह रोज़ बरोज़ बढ़ रही है) जो अपनी ज़रुरीयातें ज़िन्दगी हासिल करने के लिये दूसरे ज़राई रखती हैं। और ज़िम्नी तौर पर उसको फ़ाहशा गरी भी कहते हैं ताकि आमदनी में कुछ और इज़ाफ़ा हो जाये। यह पेशा वर फ़ाहेशात से कुछ भी मुखतलिफ नहीं है मगर इस नाम का इत्तलाक़ उनपर नहीं किया जाता हम उनको ग़ैर पेशा वर फ़ाहिशात (Amateur Prostnutes) कह सकते हैं''।

''उन शौक़ीन या ग़ैर पेशा फ़ाहशात की कसरत आजकल जितनी है उतनी

Scanned by CamScanner

कभी न थी । सूसाईटी के नीचे से लेकर ऊपर तक हर तबक़ा में यह पाई जाती है । अगर उन मुअज्ज़ज़ खवातीन को कहीं इशारे किनाया में भी "फ़ाहशाह" कह दिया जाये तो यह अग बगवला हो जायेंगी । मगर उनकी नाराज़गी से हक़ीक़त नहीं बदल सकती । हक़ीक़ात बहरहाल यही है कहाँ में और पकार्डकी की किसी बड़ी से बड़ी बेशरम बेसवा में भी इखलाक़ी हैसियत से कोई वजहे इमतयाज़ नहीं है से .... अब जवान लड़की के लिये बदचलनी और बेबाकी, बल्कि सूक़याना अतवार तक फ़ैशन में दाखिल हो गये है और सिग्रेट पीना, तल्ख़ शराबें इस्तेमाल करना, होंटों पर सुरखी लगाना, सिनफ़ियात और मान-ए-हमल के मुतअल्लिक़ अपनी वाक़फ़ीयत का इज़हार करना, फ़हश लिट्रेचर पर गुफ़्तगू करना, यह सब चीज़ें भी उनके लिये फ़ैशन बनी हुई है..........ऐसी लड़कियों और औरतों की तादाद रोज़-बरोज़ बढ़ रही है जो शादी से पहले सिन्फ़ी तअल्लूक़ात बिला तकल्लुफ़ क़ायम कर लेती है और वह लड़कियां अब शाज़ के हुक्म में हैं जो कलीसा की कुर्बानगाह गाह के सामने निकाह का पैमाने वफ़ा बाधंते वक्त सही मानों में दोशीज़ा होती है" ।

आगे चलकर यह मुसन्निफ़ उन असबाब का तजज़ीया करता है जो हालात को इस हद तक पहुंचा देने के मोजिब हुये हैं और मुनासिब तो यह है कि इस तजज़ीया को भी इसीकें अलफ़ाज़ में तहरीर किया जायें :-

"सवसे पहले इस शौक़े आराइश को लीजिए जिसकी वजह से हर लड़की में नये फ़ैशन के क़िमती लिबासों और हुस्न अफ़ज़ाई के मुखतलिफ़ुन्नौ सामानों की वेपनाह हिर्स पैदा हो गइ है । ये इस बेज़ापता फाहशा गर्मी के असबाब में से एक बड़ा सब्ब है । हर शख़्स जो देखेने वाली आँखें रखता है इस के सामने रोजाना गुज़रती हैं अमूमन इतने कीमती कपड़े पहने हुए होती है इन की जाइज़ कमाइ किसी तरह भी ऐसे लीवासो की मुतहम्मिल नहीं हो सकती। लिहाज़ा आज भी यह कहना इतना ही सही है जितना निस्फ़ सदी पहले सही था कि मर्द ही उनके लिये कपड़े खरीदते हैं । फ़र्क़ सिर्फ यह है कि पहले

Scanned by CamScanner

मर्द अपने लिये कपड़े खरीदते थे वह उनके शौहर या बाप भाई होते थे और अब उनके बजाये कुछ दूसरे लोग होते हैं'' ।

''औरतों की आज़ादी का भी इन हालात की पैदाइश में बहुत कुछ दख़ल है गुज़शता चन्द सालों में लड़कियों पर से वालिदैन की हिफ़ाज़त व निगरानी इस हद तक कम हो गई है कि तीस चालीस साल कब्ल लड़कों को भी इतनी आज़ादी हासिल न थी जितनी अब लड़कियों को हासिल है'' ।

''एक और अहम सबब, सूसाईटी में वसीअ पैमाना पर सिन्फ़ी आवरगी फैलने का मोजब हुआ है कि औरतें रोज़ अफ़ज़ूँ तादाद में तजारी कारोबार दफ़तरी मुलाज़मतों और मुखतलिफ़ पेशों में दाखिल हो रही हैं जहाँ शब व रोज़ उन को मरदों के साथ खिल्त-मिल्त होने का मोक़ा मिलता है। इस चीज़ ने औरतों और मरदों के इखलाक़ी मय्यार को बहुत गिरा दिया है, मरदाना अक़दामात के मुक़ाबले में औरतों की कुव्वते मुज़ाहिमत को बहुत कम कर दिया है और दोनों सिन्फ़ों के शहवानी तअल्लुक़ को तमाम इखलाक़ी बन्दीशों से आज़ाद करके रख दिया है । अब जवान लड़कों के ज़ेहन में शादी और बाइसमत ज़िन्दगी का ख़्याल आता ही नहीं । आज़ादाना ''खुश वक़्ती'' जैसे पहले कभी आवारह क़िस्म के मर्द ढूंढते फिरते थे आज हर लड़की इसकी जुस्तजू करती फिरती है दोशीज़गी और बुकारत को एक दक़यानोसी चीज़ समझा जाता है और दूर जदीद की लड़की इसको एक मुसीबत ख़्याल करती है और इसके नज़दीक ज़िन्दगी का लुत्फ़ यह है कि अहदे शबाब में लज़्ज़ाते नफ़्स का जाम खूब जी भर कर पीया जाये । इसी चीज़ की तलाश में वह रक़्स खानों, नाईट कल्बों और होटलों और कहवा खानों के चक्कर लगाती है और उसी की जूस्तजु में वह बिल्कुल अजनबी मरदों के साथ मोटर की सैर के लिये भी जाने पर आमादा हो जाती है । दूसरे अलफ़ाज़ में वह जान बूझकर खुद अपनी ख्वाहिश से अपने आप को ऐसे माहौल में और ऐसे हालात में पहुंचा देती है और पहूँचाती रहती है जो सिन्फ़ी जज़्बात को मुशतइल करने वाले है और फिर इसके जो कुदरती नताइज हैं उनसे वह घबराती नहीं है बल्कि उनका खैर मक़दम करती हैं''।

(परदा) (मुसलमान औरत) (औरत और अज़्मत)

कलफ़ और काटन और जदीद साइंस

Cluff, Cotton & Modern Science

हुज़ूरे अक़दस (स0) ने सूती लिबास ज़ेब तन फ़रमाया सूती लिबास की अफ़ादीयत पहले गुज़र चूकी है । लेकिन फ़ैशन की दुनिया ने इस सूती लिबास की अफ़ादीयत को बिगाड़ दिया है और मतलूबा फ़वायद से ख़ाली कर दिया है ।

❖ कलफ़ लगे लिबास जिस्म के लिये किस हद तक मुफीद है पहले कुछ कलफ़ का ज़िक्र । यह दरअस्ल स्टारच मकइ या गन्दुम का मैदा होता है जिस को पानी में उबाल और पका कर फिर पानी में घोलकर कपड़ों पर लगाया जाता है ।

❖ चूंकि कलफ़ लगा लिबास अकड़ जाता है लिहाज़ा जिस्म को अकड़ाकर मु-तकब्बिर बना देता है और फ़राईड माहिरे नफ़सीयात के मुताबिक तकब्बुर आसाब और दिमाग़ का घुन है और इनसान बेशुमार आसाबी अमराज़ का शिकार हो जाता है ।

❖ कलफ़दार लिबास से जिल्द पर रगड़ पहुंचती है । जिल्द रगड़ बरदाश्त नहीं कर सकती जिससे तरह--तरह के जिलदी अमराज़ जन्म पाते हैं।

❖ कलफ़दार लिबास से हवा का गुज़र न होने की वजह से पसीना खुश्क नहीं होता मज़ीद यह कि कपड़ा पसीना जज़्ब नहीं करता ।

❖ इस की वजह से स्टारच या कलफ़ का मवाद बदन को लगता रहता है और जिल्द पर चिपकता रहता है । जिससे जिल्दी मसाम बन्द होकर फफन्दे

Scanned by CamScanner

का ख़तरा लाहक़ रहता है ।

बीरीज़ईयर का ख़तरनाक इस्तेमाल

फ़ैशन की दुनिया ने ज़माने के अतवार बदल कर लोगों के मिज़ाज बदल दिये है । हुस्ने निसवां के लिये पिसतानों को बहुत अहमीयत हासिल है पीस्तानों को तहफ़्फ़ुज़ और हुस्न फ़राहम करने के लिये फ़ैशन ने बीरीज़ईयर का इस्तेमाल करना सिखाया है । हुज़ूरे अक़दस (स0) के ज़माने में इसका इस्तेमाल नहीं था । लेकिन अब इसका इस्तेमाल खातून की ज़रुरत है ।

साख़्त :-

बन्दा ने होज़री के माहिरीन से मुलाक़ातें कीं और बीरीज़ीयर के मटेरीयल का बग़ौर मुताला किया तो इस नतीजे पर पहुंचा

1. फ़ूम :—

Foam

बीरीज़ीयर में फ़ौम की तह उसको उभारदार और नरम बनाने के लिये होती है । फूम जिल्दी ग़दूद खास तौर पर रोग़नी गलैन्ड्ज़ को बहुत मुतअस्सिर करता हैं । इस फूम की तह की वजह से हवा का दाख़ला बन्द होकर घट जाते हैं । चूंकि पिस्तान बहुत हस्सास और ज़ूद असर होते हैं । इसलिये यह थोड़ी सी सख़्ती भी बरदाश्त नहीं कर सकते ।

Scanned by CamScanner

2. पोलिस्टर या नाईलून का कपड़ा :—

Cloth Of Polister Of Nylone

तमाम बीरीज़ीयर में इस्तेमाल होने वाला कपड़ा पोस्टर या नाईलून का होता है तो जो न तो पसीना जज़्ब करता है और न हवा को दाखि़ल या ख़ारिज होने देता है ।

3. शिकनजा :—

चूंकि बीरीज़ीयर का मक़सद पिस्तानों को ढलकने से बचाना है । इसलिये बीरीज़ीयर इस अन्दाज़ से बनाया जाता है कि यह पीस्तानों को खींचकर रखें। बीरीज़ीयर बज़ाते खूद एक शिकन्जानुमा चढ़ावा बनके बेशुमार अमराज़ का बाइस बन जाता है । इसकी सख़्ती को मज़ीद सख़्त करने के लिये इसके तसमे जलती पर तेल का काम करते हैं ।

4 :— बीरीज़ीयर और ब्रेस्ट कैन्सर

डाक्टर खालदा उसमानी कैन्सर स्पेशलीस्ट लाहौर ने इनकशाफ किया है कि मेरे पास पीस्तानों के कैन्सर में मुबतला अकसर मरीज़ औरतें ऐसी हैं जिनको सिर्फ़ बीरीज़ीयर की वजह से कैन्सर हुआ और जब इस अमर की तहक़ीक़ की गई तो मालूम हुआ कि उनके कैन्सर की वजह बरीज़ीयर का इस्तेमाल है ।

Scanned by CamScanner

माओं में दूध की कमी

Shortfall Of Mother's Milk

सफ़ैद ज़हर यानी खुश्क दूध की मांग तीसरी दुनिया के ममालिक में बढ़ गई है हत्ता कि वह दूध जो यूरपीयन ममालिक में नाजाइज़ और खिलाफ़े सेहत क़रार दे दिया गया है इन पर पाबन्दी आइद कर दी गई है वही दूध तीसरी दुनिया के ममालिक में खुले आम फ़रोखत होता है :-

अब से कुछ अर्सा क़ब्ल क्या यह दूध बच्चों के लिये था ?

क्या मायें उन चीज़ों से वाक़िफ़ थीं ?

क्या डाक्टर अल्लामा इक़बाल डिब्बे के दूध से पले थे ?

क्या क़ाइदे आज़म डिब्बे के दूध से पले थे ?

क्या मौलाना ज़फ़र अली खान डिब्बे के दूध से पले थे ?

क्या नीपोलीयन डिब्बे के दूध से पले थे ?

क्या इब्राहीम लिन्कन डिब्बे के दूध से पले थे ?

मादर मलका आफ बरमिंघम इंगलैन्ड़ ने कौन सी कम्पनी के डिब्बे का दूध पीया था ?

बन्दा के पास इलाज की गर्ज़ से बेशुमार खवातीन आती है । उनमें से अकसर यही शिकायत करती है कि हमारा दूध खुश्क हो गया है और हमें डाक्टने डिब्बे का दूध इस्तेमाल करने को कहा है ।

1. मौजूदा दौलत की हिर्स ने बाज़ मफाद परस्तों की आंखों पर जुल्म की ऐनक चढा दी है । कम्पनीयां बाज़ मफ़ाद परस्त मुआलिजीन को टी. वी. डिश, फरीज, ए, सी वग़ैरह दे कर उनको कहते है कि सिर्फ हमारी कम्पनी की दवाई रखें और यही हाल डिब्बे वाले दूध का हो रहा है और बाज़ मुआलिज दानिस्ता औरतों को मशवरा देते है कि वह बच्चों को डिब्बा का दूध

। इस्तेमाल करायें ।

2. बाज़ औरतें पिस्तानों के हुस्न को बरक़रार रखने के लिये दूध नही पिलातीं कि शायद वह ढलक न जायें ।

3. अक्सर ख्वातीन को किसी मरज़ या बैरुनी असर मसलन बीरीज़ीयर की वजह से दूध खुश्क हो जाता है जिसकी वजह से वह दूध से महरुम होती है ।

लिहाज़ा याद रखें कि बीरीज़ीयर का इस्तेमाल औरतों के दूध को कम और ख़त्म करता है ।

जिल्दी हस्सासीयत

Sensitivity Of Skin

बीरीज़ीयर के इस्तेमाल से चूंकि पिस्तान ढके और घटे रहते हैं इसलिये उनके अन्दर हस्सासीयत पैदा हो जाती है । मज़ीद यह कि दिन भर के काम काज़ औरतों को ऊपर नीचे होने पर मजबूर करते हैं जिसकी वजह से पिस्तान बीरीज़ीयर से रगड़ खाते रहते हैं और यही रगड़ मरीज़ के लिये इलर्जी का बाइस बन जाती है । जिस से वाईरस और बेकटीरया के जरासीम हमला आवर होते हैं हत्ता कि इग्ज़िमा, जिल्दी खारिश, फ़ुंसिया और सोज़िश के मरीज़ तो अक्सर प्रेक्टिस में मिलते हैं ।

तवज्जुह तलब मिसाल

Example Of Worthnoting

आप अपने हाथ को एक ऐसी हथीली में जिसके ऊपर और नीचे पोलिस्टर का कपड़ा और दरमयान में फ़ूम हो छः घंटे उसमें हाथ बिल्कुल बन्द रखें तो छः घंटे के बाद हाथ की कैफ़ियत किया होगी बल्कि पूरे जिस्म की कैफ़ियत क्या होगी?

Scanned by CamScanner

तो फिर सोचे हाथ कैसी सख़्त चीज़ है जब्कि पीस्तान एक नरम, हस्सास और नाजुक अज्व है । तो इसके साथ क्या कैफ़ियत होगी । एक फ़ज़ीयू थरापिस्ट के मुताबिक़ बीरीज़ीयर औरत के जिन्सी ख्वाहिश को ज़रूरत से ज़्यादा कर देता है जिससे ज़िना के ख़तरात बढ़ जाते हैं ।

आसाबी अमराज़

Nurvous Diseases

तहक़ीक़ात से यह साबित हो गया है कि पिस्तानों पर बीरीज़ीयर के दबाओ का असर जिस्म के तमाम आसाबी निज़ाम को मुतअस्सिर करता है । ऐसी खवातीन हमा वक़्त मुनदरजा ज़ेल कैफ़ियत का शिकार हो सकती है।

❖ ऐसी खवातीन बहुत हस्सास हो जाती हैं और छोटी-मोटी बातें ज़्यादा महसूस करती हैं ।

❖ खवातीन में चीड़-चीड़ा पन होकर हिस्टीरियाइ कैफ़ियत बन जाती है।

❖ कमर और शानों के दर्द की मुसतक़िल मरीज़ बन जाती हैं ।

❖ सर बोझल और दिल पर घुटन के असरात होते हैं ।

नोट

Note

बन्दा ने कुतुबे हदीस और उलमा-ए हदीस से तहक़ीक़ की है कि हुज़ूरे अक़दस (स0) के ज़माने में खवातीन में बीरीज़ीयर का इस्तेमाल कतई नहीं था । अगर आप वाक़ई बीरीज़ीयर के इस्तेमाल पर मुसिर है तो बारीक काटन के कपड़े की बीरीज़ीयर इस्तेमाल कर सकती है ।

Scanned by CamScanner

नाख़ुन पालिश और जदीद साइंस

Nail Polish & Modern Science

नाखुन भी जिस्मे इनसानी की तरह ज़िन्दा है । इन्हें भी ऑक्सीजन और हवा की ज़रुरत होती है । यह पानी के तलबगार रहते हैं । अगर इन्हें कोई तकलीफ पहुंचे तो तमाम जिस्म इनसे मुतअस्सिर होता है । एक खातून को हाथों पर दाने, खारीश और पीप दार फुंसीयां थीं बहुत इलाज कराये लेकिन अफ़ाका न हुआ । एक माहिरे अमराज़ जिल्द के पास गई मौसूफ उमर रसीदा और बहुत माहिर माने जाते थे । डाक्टर साहिब मरीज़ा का मुआईना करके फ़रमाने लगे । आप नाखुन पालिश कितने अर्से से इस्तेमाल कर रही हैं । मरीज़ा कहने लगी गुज़श्ता साढे पाँच सालों से और मरज़ को कितना अर्सा हुआ है। मरीज़ा ने जवाब दिया पाँच सालों से मुसलसल मरज़ मौजूद है । डाक्टर साहिब ने फ़रमाया आप नाखुन पालिश लगाना छोड़ कर फिर मुनासिब मुखतसर इलाज करें मरीज़ा का कहना है सिर्फ़ सीरे हफ़्ते में मुकम्मल सेहत याब हो गई ।

करोमोपैथी का उसूल

Principle Of Cropopathy

करेमांपैथी के माहिरीन के मुताबिक़ रंग इनसानी ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ होते हैं और इनसान जिस रंग को बार-बार देखता है । इसका असर इसकी ज़िन्दगी पर ग़ालिब होता है । चूंकि अकसर नाखुन पालिश सुर्ख रंग की होती है और यह रंग इशतआल, गुस्सा और बलड प्रेशर हाइ करता है । इसलिए वो लोग जो पहले से इस मरज़ मे मूबतला हों इन के अमराज मे फौरी इज़ाफा हो जाता है और सेहतमन्द आदमी भी आहिस्ता-आहिस्ता इन अमराज़ की तरफ माइल हो जाता है ।

Scanned by CamScanner

इनसानी सेहत और तन्दरुस्ती के लिये हर रंग का एक मुनफ़रिद मिज़ाज होता है । मौजूदा फ़ैशन ने मुखतलिफ नाखुन पालिश के इस्तेमाल की तरग़ीब दी है । इन मुखतलिफ रंगों की अलरजी आम आदमी के लिये भी नाक़ाबिले बरदाश्त है तो क्या एक मरीज़ बरदाश्त कर सकेगा ।

नाखुन पालिश नाखुन के मसामात को बन्द कर देती है । मज़ीद चूंकि नाखुन पालिश में रंगदार कैमिकल होते हैं इसलिये यह कैमिकल बेशुमार अमराज़ का बाअस बनते हैं । खास तौर पर इस का असर जिस्म के हामोनरी सिस्टम पर बहुत बुरा पड़ता है । जिससे खतरनाक ज़नाना अमराज़ पैदा होते हैं ।

मैक अप और जदीद साइंस

Make-up & Modern Science

हुज़ूरे अक़्दस (स0) के ज़माना में मौजूदा तरज़ के मैकअप हरगिज़ नहीं थे । अरबों रुपये खर्च करने के बाद फ़ितरत की तरफ़ लौटना सिर्फ नाकामी है इस फ़ैशन की जिस की चकाचोंद आलमी को घेरे हुये थी । इस ज़िम्न में मशहूर मग़रीबी मुफ़क्किर और माहिर हिफ़ज़ान सेहत क्या कहता है इसकी ज़बानी ग़ौर से सुनयें !

डील कारनेगी के इनकशाफ़ात

Discovery Of Dail Carnigi

''मेरी जिन्दगी फ़ितरत के मुसलसल मुतालया में गुज़री है । इस बात को ग़ौर से देखा कि हम फितरत के क़रीब रहते हुये फितरत से दूर नहीं जा रहे।

फ़ैशन और रिवाज की दुनिया ने हमें सिर्फ़ धूका और फरेब दिया है । मैकअप अब हुस्ने निसवाँ के लिए था । लेकिन जितना नुक़सान उसने हुस्ने

Scanned by CamScanner

निसवाँ को दिया है शायद ही किसी चीज़ ने दिया हो । जंगों ने माहौल और हालता बदले । बारुद ने तबाह कारियों की इन्तहा कर दी लेकिन मैं समझता हूँ उनका नुक़सान कम है जितना नुक़सान मैकअप से हुआ है'' ।

(ज़िन्दा रहना सीखियें)

क्या आपने कभी ग़ौर किया कि मैकअप के सामान में कितना खतरनाक कैमिकल इस्तेमाल होता है इससे क्या-क्या नुक़सानात हो रहे हैं । जो दरज ज़ेल हैं :-

चेहरे के मुहासे **Acne Vaugaris**

सयाह दाने चेहरे पर **Black Head**

लेसदार थैली नुमा मुहासे **Cyst**

कील और छाइयाँ **Acne Rosacea**

नाक पर दानों का बिग़ाड़ **Rhinophyma**

आम फोड़े फुंसीयाँ **Folliculitis**

दाद **Rinzworm Tinea Corporis**

फफुंदे से पैदा होने वाले अमराज़ **Fungal Infection**

यह वह अमराज़ हैं जो जदीद साइंस ने दरयाफ़्त कीं (यानी मैकअप की वजह से यह अमराज़ होती हैं) ।

बेशुमार ऐसे वाक़ियात मआशरती तौर पर मिलते हैं जिससे खवातीन के खुबसुरत चेहरे बदसूरती में बदल जाते हैं ।

एक खातून नई नीवली दुल्हन इलाज की ग़र्ज़ से लाई गई । मोसूफा के चेहरे पर सयाह दाग़ और हल्के दाने थे तमाम घर वाले परेशान थे । मालूम हुआ कि तमाम मैकअप के कारनामे हैं । इस तरह एक ग़ैर शादी शुदह खातून

ने अपने भाई की शादी पर मैकअप किया कुछ अर्से के बाद चेहरे पर सयाह दाग धब्बे और लकीरें पड़ गई । हत्ता कि मूंछों और दाड़ी के बाल निकल आये।

इसलाम ने खवातीन के लिये घर में आराइशो हुस्न (सिर्फ अपने खाविन्द के लिये) से मना नहीं फ़रमाया लेकिन इसके लिये मसलूई और ज़हरीली अदवियात मैकअप की शक्ल में हमेशा नुक़सान दह हैं और अब तो जदीद और पढ़ा लिखा तबक़ा मैकअप से दिलबरशता होकर फिर से सादगी की तरफ़ लौट रहा है ।

पहूँची वहीं यह खाक जहां का ख़मीर थी ।,

अय्यामे हैज़ और नफ़ास में तरके जमाअ

शरीयत में क़ैद नहीं पाबन्दी ज़रुर है लेकिन एक वक्त में यही हलाल खाना हराम बन जाता है यानी रोज़ा की हालत में, बिल्कुल इसी तरह मर्द के लिये बीवी से जमाअ जाइज़ है लेकिन अय्यामे हीज़ और नफ़ास में इससे सख्ती से मना फ़रमााया । आखिर क्यों ?

जदीद साइंसी तहक़ीक़ के मुताबिक़ अय्यामे हैज़ में निकलने वाला खून इन्तेहाई ज़हरीला, तेज़ाबी और मुतअफ़्फ़िन होता है क्योंकि यह औरत के जिस्म का हिस्सा नहीं इसलिये इसका निकनला भी ज़रुरी है ।

एक साहिब को कसरत से बेहोशी के दौरे पड़ते थे । बहुत इलाज कराये लेकिन अफ़ाक़ा न हुआ इलाज की ग़र्ज़ से तशरीफ़ लाये तशखीस और मालूमात के बाद पता चला कि मौसूफ अय्यामे हैज़ में हमबिस्तरी में मसरुफ़ रहे और उस दिन से यह कैफ़ियत मुसलसल है ।

एक खातून को गर्दन के इर्द-गिर्द दाने, फुंसीयां और ज़ोरदार जलन थी। मोसूफ़ा की तशखीस पर उनके खावीन्द ने मज़कूरा केस की नवीयत बताई।

एक साहिब की पेशाब की नाली बन्द हो गई । क़ासातीर के ज़रीये पेशाब

Scanned by CamScanner

निकलते तो पेशाब खारिज हो जाता वरना पेशाब खुद-ब-खुद नहीं आता था। तहक़ीक़ पर पता चला कि मौसूफ अय्यामे हैज़ में जमाअ करते रहे हैं ।

इसलाम अमन, सकून और सेहत का मज़हब है । इससे बग़ावत सरासर मरज़ और बे सकूनी है । अय्यामे हैज़ और नफ़ास में जमाअ से कौन से अमराज़ जन्म लेते है, उनकी तफ़सील कुछ यूँ है ।

आशतक **Syphilis**

सूज़ाक **Gonorrhoea**

नार फ़ारमी **Ghancroid**

पिंटा **Pinta**

राईटर की बीमारी **Reiters Disease**

पेशाब की जलन

पेशाब की रुकावट

पेशाब के ग़दूद का वरम और शोज़िश

पथरी के अमराज़

खवातीन में अय्याम की रुकावट

खवातीन में शरमंगाह की खारिश

खवातीन में रेहम की वरम

यह तमाम अमराज़ जो कि मैडिकली तौर पर मुसतनद कुतुब में मौजूद हैं। उस वक्त होती हैं जब इनसान फितरती क़वानीन को तोड़कर ख्वाहिशे नफ्स की तरफ़ गामज़न होता है ।

जूते और मोज़े झाड़ना

अहादीस में जूते और मोज़े झार कर पहन्ने का हुक्म फ़रमाा है ।

सुन्नते नबवी और जदीद साइंस 344

(ज़ादूल मआद)

❖ बाज़ औक़ात जूतों में कोई ज़हरीला जानवर घुस जाता है । अगर बग़ैर झारे उसको इस्तेमाल किया तो वह डस सकता है । हत्ता कि ज़िन्दगी को ख़तरा होता है ।

❖ एक साहिब एक खाने की मजलिस से उठे । जूता पहना तो चीख़ निकल गई पावों लहूसहान हो गया । दरअस्ल खाना खाते हुये नौकदार हड्डी किसी ने फेंकी और वह जूते में चली गई और यूं पावों ज़ख़मी हो गया ।

❖ चूंकि जूता झारते वक़्त निगाह जूते की तरफ जायेगी तो इससे एक और फ़ायदा यह होगा कि जूते की अन्दरुनी कैफियत का अन्दाज़ा हो जायेगा क्योंकि बाज़ मुतआफ़्फ़िन जूते जहां माहौल को आलूदा और बदबूदार करते है वहाँ पावों का भी सतयानास कर देते हैं । जब तूते पर निगाह पड़ेगी तो फिर इसकी सफ़ाई की तरफ़ भी धयान ज़रुर जायेगा ।

यह बदबूदार और तअफ़्फ़ुन जूते की बन्दिश और हवा की कमी की वजह से, ज़्यादा हो जाये तो बेशुमार जिल्दी और इर्लजी की बीमारियां शुरु हो जाती हैं ।

तवक्कल और जदीद साइंस

Trust In God & Modern Science

तवक्कुल एक ऐसी इसलामी हालत का नाम है जिसमें हर काम में अल्लाहतआला के सामने अपना सर तसलीमे खम करके रज़ाये इलाही पर साबिर व शाकिर हो जाये ।

इस सबर, शुक्र और क़नाअत की ज़िन्दगी में कैसी ताक़त और कुव्वत है इसका इहसास आज के मुसलमानों को हरगिज़ नहीं ।

इस वक़्त यूरपी बरदारी बेशुमार नफ़सानियाती अमराज़ से दो-चार है । इसकी बुनयादी वजह तवक्कली ज़िन्दगी का फुक़दान है अगर उनसे कोई नुक़सान होता

Scanned by CamScanner

है तो वह इस नुक़सान के अवामिल तलाश करते है । अगर वह अवामिल मिल जाते है तो अपने आपको मलामत करते हैं और अगर अवामिल नहीं मिलते तो भी अपने आपको मलामत करते है हत्ता कि बाज़ औक़ात दिलबरदाशता होकर खुदकुशी कर लेते है ।

बिल्कुल यही कैफियत एक घरदार खातून की है क्योंकि घर में रहते हुये बहरहाल उसे घरैलू मसाइल से दो चार होना पड़ता है । अब यहाँ इसलाम सब्र और तवक्कुल का दर्स देता है लेकिन यूरुपी ज़िन्दगी के अशग़ाल में सब्र और तवक्कुल नाम की चीज़ हरगिज़ नहीं इसलिये वहाँ तलाक़ की ज़्यादती है ।

इसलाम ज़ब्ते नफ़्स का दरस देता है और निगाहों की हिफ़ाज़त, कानों की हिफ़ाज़त, पावों की हिफ़ाज़त और दिल की हिफ़ाज़त भी ज़ब्ते नफ़्स का हिस्सा हैं । लेकिन इसके बरअक्स यूरपी मआशरा ज़ब्ते नफ़्स की हदें तोड़कर ज़िना की तरफ माईल होता है और ज़िन्दगी में बेइज़्ज़त और ख्वार हो जाता है ।

नफ़सीयाती माहिरीन के मुताबिक़ तवक्कुल आदमी को बेशुमार नफ़सीयाती ख़तरनाक अमराज़ से नजात देता है और इस तव्क्कुल की वजह से इनसान मआशरा का अच्छा शहरी और फ़र्द बन सकता है ।

पैदाइश के वक़्त बच्चे को खजूर चबाकर चटाना

हज़रत इसमाये बिन्नते अबूबकर (रज़ि0) रवायत फ़रमाती है कि मक्का मुनव्वरा में अब्दुल्लाह बिन ज़ेबर पैदा होने वाले थे और क़ुबा में आकर पैदा हुये । मै बच्चे को लेकर रसूले अकरम (स0) के पास ले गई और उनकी गोद में डाल दिया । उन्होंने खजूर मंगवाइ उसे अपने मुंह में चबाया फिर अपना लुआब और खजूर बच्चे के मुंह में डालकर उसके तालू से लगा दिया । फिर बच्चे के लिये बरकत की दुआ की । यह वह पहला बच्चा था जो मुसलमानों

Scanned by CamScanner

में पैदा हुआ।

(बुख़ारी व मुस्लिम)

हज़रत अबू मूसा अशअरी (रज़ि0) बयान करते हैं कि मेरे घर लड़का पैदा हुआ मै उसे लेकर नबीये करीम (स0) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ आप (स0) ने उसके मुंह में खजूर चबाकर डाली । (बुखारी)

मां के पेट में बच्चे को जो खुराक मिलती है उसका और खजूर का मिज़ाज बिल्कुल यकसां है हत्ता कि माहिरीन के मुताबिक जो आज़ा बच्चे को मां के पेट की खुराक में मिलते हैं बिल्कुल वही अजज़ा खजूर का हिस्सा हैं।

अकसर विलादात के बाद बच्चे को घुटटी या फिर जदीद क़िस्म का ऐसा मुरक्कब दिया जाता है जिससे बच्चे का मेदा और आतों साफ़ हो जायें । इसके लिये खजूर का बच्चे के मेदे में पहुंचाना तमाम मुरक्किबात से आला और मुफ़ीद है ।

अकसर बच्चे पैदाईशी कमज़ोरी में मुबतला होते हैं अगर उनको पैदाईश के फौरन बाद दूध, पानी या कोई और चीज़ दी जायेगी तो बच्चों में दस्त की हालत शुरु हो जाती है ।

लिहाज़ा हुज़ूरे अक़दस (स0) का अमल आखिरत और क़यामत तक मुफीद और मसल्लम है ।

खुशबू और जदीद साइंस

Perfume & Modern Science

हज़रत अनस (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़दस (स0) खुशबू को रद न फ़रमाते थे ।

Scanned by CamScanner

(तिरमज़ी शरीफ़)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़दस (स0) ने इरशाद फ़रमाया कि मरदाना खुशबू वह है जिसकी खुशबू फैलती हो और रंग ग़ैर महसूस हो और ज़नाना खुशबू वह है जिसके रंग ज़ाहिर हों और खुशबू ग़ैर महसूस हो ।

(सुनन नसाई, तिमीज़ी)

रैहान की खुशबू को बहुत पसन्द फ़रमाते थे । इसको रद करने से मना फ़रमाते थे ।

(शिमाइले तिरमज़ी)

हुज़ूरे अक़दस (स0) मुशक और उर्द की खुशबू क़ो तमाम खुशबूओं में ज़्यादा महबूब रखते । (ज़ादूल मआज)

नेचरल थरापी

Natural Therapy

केमीकल और ज़हरीले मुरक्किबात के बाद साइंस फिर से फितरत की तरफ़ लौट रही है । इन फितरी क़वानीन में सादा तरीक़ा-ए-इलाज को रिवाज देना है और खालिस फितरत से इस्तेफ़ादा करना है । इसकी कई अक़साम हैं जिनमें से एक प्रफीयूम थरापी है ।

परफ़्यूम थरापी

Perfume Therapy

जर्मनी के डाक्टर एलेफ़ ने इस तरीक़-ए इलाज को आम किया और हज़ारों लोग इससे सेहतयाब हुये । डाक्टर एलेफ़ के मुताबिक़ चूंकि खुशबू एक जुज़्वे

Scanned by CamScanner

लतीफ़ है और रुह भी लतीफ़ है । इसलिये जब कोई शख्स खुशबू लगाता है तो इसके असरात फ़ौरन रुह पर पड़ेंगे और रुह की वजह से जिस्म सेहत और ताज़गी की तरफ़ माइल होगा ।

बादशाहों के महल्लात में बाज़ खुशबूदार लकड़ीयों की धूनी दी जाती थी और जब महल में कोई बीमार होता तो भी खुशबूदार लकड़ीयों की धूवनी दी जाती यह इस बात की अलामत होती है कि इस खूशबू के असर में मरीज़ जल्द सेहतयाब हो जायेगा ।

हुज़ूरे अक़दस (स0) ने रैहान की खुशबू को पसन्द फ़रमाया । रैहान की खुशबू पुराने मलेरिया का कतई इलाज है । ऐसे मरीज़ जिनका बलड प्रेशर हमेशा हाई रहता हो । उनके लिये बहुत मुफ़ीद है । जज़्बात की तेज़ी को नारमल करती है जिन लोगों को मेदे का अलसर और तीज़ाबीयत हो उनके लिये इसका लगाना फ़ायदामन्द है ।

याद रखें खूशबू ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ होती है आप एक ऐसी जगह जायें जहां हर तरफ़ खुशबू और महकार हो तो आप की तबीयत और मिज़ाज की कैफियत क्या होंगी वह आप बेहतर समझते हैं ।

इसके बरअक्स एक ऐसी जगह जायें जहां बदबू हो तो इनसान की तबीयत में, बेचैनी, नफ़रत हत्ता कि बाज़ हज़रात को कै़ आ जाती है ।

मालूम हुआ कि खुशबू और बदबू का असर तमाम ज़िन्दगी पर पड़ता है इसलिये हुज़ूरे अक़दस (स0) ने जुमा के लिये दूर-दूर से लोग इकट्ठे होते हैं और खुशबू उन हाज़रीन की तबीयत में खुशगवारी और मुसर्रत पैदा कर देती है ।

इस तरह उंद और मुश्क की खुशबू भी आसाब में निशात और तहरीक पैदा करती है । इन खुशबूओं को लगाने वाला हमेशा चुस्त और हाज़िर दिमाग रहेगा।

(फितरी इलाज)

सुन्नते नबवी और जदीद साइंस 349

नालैने नबवी (स0) और जदीद साइंस

Prophet's Shoes & Modern Science

हज़रत इब्ने बरीदा (रज़ि0) अपने वालिद से रावी हैं कि नजाशी ने हुज़ूरे अक्दस (स0) की ख़िदमत में दो सियाह रंग के सादा मोज़े आपने उनको पहन लिया (इबने माजा) हज़रत इब्ने उमर (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (स0) को ऐसे नालैने को अपने नीलमन मुबारक पहने दखा जिन पर बाल नहीं थे (यानी धुले हुये चमड़े के थे) ।

(बुखारी)

एक सहाबी (रज़ि0) कहते हैं कि मैंने हज़रत अनस (रज़ि0) से हुज़ूरे अक्दस (स0) के जूता मुबारक के बारे में दरयाफ़्त किया तो उन्होंने फ़रमाया कि हर जूता शरीफ़ में दो-दो तसमे थे । (तीरमज़ी)

हुज़ूरे अक्दस (स0) के जूते मुबारक चमड़े के थे और बिल्कुल हमवार थे । आज के दौर में ऐड़ी के जूते और रबड़ पलास्टीक के जूते किया नुक्सान दे रहे हैं उसका अन्दाज़ा अहाता से बाहर है । एक फ़ज़ीयोथरापीस्ट से बात हुई कहने लगे कि ऐड़ी का जूता यहूदी साज़िश है यह मरदों और औरतों में ग़ैर ज़रुरी जिन्सी तहरीकात को बढ़ा कर ज़िना की तरफ़ माईल करता है ।

अगर हम आज ही हुज़ूरे अक्दस (स0) के जूते मुबारक के मुताबिक अपने जूते बनवायें और सिर्फ चमड़े का धयान रखकर जूता पहनें तो बेशुमार अमराज़ से बच सकते हैं ।

Scanned by CamScanner

क्या आप सेहत के उसूलों के खिलाफ़ जूता इस्तेमाल करते हैं ?

Are You Use Shoes Irrigular Of Health ?

चौंका देने वाले तजरिबात व मुशाहिदात

हुज़ूरे अक़्दस (स0) चमड़े का जूता इस्तेमाल फ़रमाते थे जब से उस जूते को छोड़ा है मुसलसल परेशानी ही है तो फ़ैशन और सुन्नत का फैसला आप करें ।

सिरिश्ते इन्सानी दिल रुबाई व दिलकशी की तरफ़ माइल रही है । इब्तेदाये आफ़रीनश से इनसान अपने जिस्म और नफ़्स को सहूलत की तरफ माईल करता चला आ रहा है । मुखतलिफ अदवार में बनी नौए इनसान ने अपनी जिसमानी सहूलियत के लिये बदनी आराईश हुस्नकी ज़ेबाईश के लिये मुखतलिफ हीले और तरीके इख़्तियार किये हैं पत्थर के ज़माने के लोग कैसी ज़िन्दगी गुज़ारते थे वह सभी जानते हैं कि उनके बदन पर लिबास नहीं था पावों में जूता नहीं था जिन्दगी के शब व रोज़ यूं ही गुज़र रहे थे ।

सवाल यह पैदा होता है कि मौजूदा दौर ने क्या हमें राहे तरक्क़ी की तरफ़ गामज़न किया है? ऐसे दौर में जब हर तरफ़ फैशन की यलगार है तो अपनी सेहत व तन्दरुस्ती के लिये जूता के इन्तेखाब पर भी ग़ौर किया जाये यह दुरुस्त है कि जूता नरम हो, खुबसूरत हो, शख़्सीयत के निखार के लिये सोने पर सुहागा है लेकिन क्या यही जूता सेहत पर बक़ाये हयात के लिये भी मआविन है? यह ऐसा सवाल है जिसकी तरफ़ बहुत कम लोग तवज्जुह करते हैं ।

Scanned by CamScanner

एक साहिब फ़रमाने लगे मुझे पेशाब की ज़्यादती की तकलीफ़ शुरु हो गई। खूब इलाज किया मगर मरज़ बढ़ता गया। एक दफ़ा एक तकरीब में जाने का मौक़ा मिला एक साहिब मिले और मिलते ही फ़रमाने लगे यूसुफ साहिब आप इतने अक़लमन्द हैं ऐसा जूता क्यों इस्तेमाल करते हैं जिससे बेशुमार आसाबी और मशाने की तकलीफ़ होने का ख़तरा रहता है। उनकी बात सुनते ही मेरा ख्याल यकायक अपने मरज़ की तरफ़ गया मैंने जूता तबदील किया और चमड़े का खालिस जूता इस्तेमाल किया क्योंकि साबक़ा जूता रबड़ का था। मौजूदा जूते के इस्तेमाल से मेरी मरज़ कम होती गई आखिर मैं तन्दरुस्त हो गया।

एक जवान मतब में आरज़ा लेकर हाज़िर हुआ कि सख़्त आसाबी तनाओ ज़ेहनी थकान और मुसलसल परेशानी रहती है. और यह परेशानी, बोझ मेरे लिये अज़ाब से कम नहीं इसकी वजह से मैं कई साल से अपने इमतेहान में कामयाबी से रह जाता हूँ। अलग़रज़ मरीज़ की परेशानी नाकाबिले बयान थी और वह बेशुमार माहिरीने नफ़सियात और डाक्टरज़ के ज़ेरे इलाज रहा था। इसकी मरज़ तशखीस हुई तो उसकी वजह वह बन्द जूते जोगर थे क्योंकि दरअस्ल ये जूते उन ममालिक के लिये है जहाँ बर्फ़ पड़ती है ऐसे बन्द इंगलिश जूते हमारे मिज़ाज, मौसम के ऐन खिलाफ़ हैं। यूँ जब इसके जूते तबदील कराये गये और मुख़तसर सा इलाज दिया गया तो मरीज़ अल्हम्दो लिल्लाह तन्दरुस्त हो गया।

दिमाग़ पर जूते के असरात

Effections of Shoes on Brain

जब पावँ को चोट लगती है जहां पावँ मुतअस्सिर होता है इससे कहीं ज़्यादा दिमाग़ और दिमाग़ी कैफ़ियत इसका गहरा असर लेती है बाज़ औक़ात दिमाग़ी अमराज़ की वजह से पावँ के ज़ख़्म जल्द अच्छे नहीं होते तो मालूम हुआ कि दिमाग़ का पावँ के आराम और पावँ के दिमाग़ी सकून से गहरा रब्त है। न्यूटन मशहूर साइंसदान है जब दिमाग़ी दबावों और डीपरेशन का शिकार हुआ तो उसने फ़ौरन जूते की तरफ़ निगाह की वह हर हफ़ते नया जूता बदलता आखिर उसे एक जूते ने सकून दिया और हमेशा उसी जूते को इस्तेमाल करता। जर्मनी के

Scanned by CamScanner

माहिरीन ने इनकशाफ किया है "जूता बेहतर तो दिमाग बेहतर जूता सख़्त तो दिमाग सख़्त । जूता नर्म तो दिमाग़ नर्म" बज़ाहिर ये अलफाज़ आम है लेकिन फिकर और मदबीर के बाद इनसान उन लफ़ज़ों से कुछ हासिल कर सकता है।

आसाबी तनाव

Nervous Cramps

ज़्यादा अर्सा नहीं हुआ सिर्फ़ बुढ़े ही आसाबी तनाव का शिकार होते थे इसकी वजह कुछ हो लेकिन मौजूदा तहक़ीक़ ने यह साबित कर दिया है कि नई नस्ल नफ़सीयाती अमराज़ का ज़्यादा शिकार है । इसके बेशुमार असबाब है । लेकिन यह बात मुसल्लम है कि जूता सेहत व तन्दरुस्ती में मुमिद व मआविन है और इसका ग़लत इस्तेमाल आसाबी अमराज़ का बाअस है ।

शाहाने हिन्द का इन्तेख़ाब

Choice Of Indian Kings

सलातीने हिन्द सलीम शाही जूता पसन्द करते थे और खान्दान दर खान्दान यही जूता इस्तेमाल करते चले आते थे । जब इस जूते की वज़अ क़तअ का ग़ाईर मुतालिआ किया गया तो यह बात वाज़ह हो गई कि वह लोग के जूते ज़रीये अपनी हिफ़ाज़ते सेहत करना जानते थे । शहनशाह बाबर कहता है मैंने जब हिन्दुस्तान की सरज़मीन पर क़दम रखा चूंकि यहाँ कि सरज़मीन, माहौल और मौसम मुखतलिफ था इसलिये मेरा इन्तेखाब सलीम शाही जूता ही था।

मतब में एक खातून तशरीफ़ लाई जो कि गुज़शता अठारह बरस से दाईमी दर्दे सर में मुबतला थीं पता चला कि वह हमेशा ऊँचीं ऐड़ी का जूता इस्तेमाल करती हैं । जब उनका जूता तबदील किया गया तो कैफियत बदल गई ।

एक देहाती आदमी अपने चमड़े के बने हुये देसी जूते को हर वक़्त तेल में तर रखता था कहने लगा मेरी उम्र अस्सी साल से कहीं ज़्यादा है निगाह

Scanned by CamScanner

कमज़ोर नहीं, दांत नहीं गिरे, आसाबी कमज़ोरी नहीं, मैं समझता हूँ इसकी वजह मेरे तेल से तर जूते है ।

अलग़रज़ अगर आप मौज़ूँ जूते का इन्तेखाब करें हमेशा चमड़े का जूता इस्तेमाल करें ज़्यादा बन्द और तंग जूते से बचें तो आप अमराज़ से बच गये।

मौजूदा जदीद जोगर, लाँग शूज़ हमारे इलाक़ाई मिज़ाज मौसम के ऐन खिलाफ़ है । हर वक़्त पाँव में जूता न रखें कभी कभी जूते के बग़ैर भी चला करें ऊँची एड़ी और ग़ैर लचकदार जूता मौज़ूँ पहनें । जब हम चलते है तो जूते और पाँव की रगड़ से एक हरारत पैदा होती है वह अगर चमड़ा है तो हरारत ख़त्म हो जाती है और अगर रबड़, पलास्टिक वग़ैरा का जूता है तो फौरन गर्मी और जलन बेशुमार अमराज़ का पेश ख़ीमा बन जाती है

कैनविस के जूते बच्चों के लिये नुक़सान देह हो सकते हैं

Harmfull for Children Of Canvas Shoes

बच्चों के पैरों के लिये आम जूतों के बजाये टेनिस या कैनविस के जूतों का रिवाज आम होता जा रहा है । मुमकिन है कुछ मुआलिज भी वालिदैन को ये मशवरा देते हो कि अपने बच्चे के आम जूते पहनने के बजाये ये जूते पहनायें। ऐसे मशवरों से बच्चों के पैरों को नुक़सान पहुँचाने का एहतमाल बढ़ जाता है । अमरिका मे तबी एतबार से जूते तजवीज़ करने वालो की अन्जुमन ने इस सिलसिले में एक अलामिये के ज़रीये से हक़ीक़ी सूरत हाल वाज़ए किये है । इस अन्जुमन का कहना है के बच्चों को कैनविस शूज़ इस्तेमाल कराने का मशवरा खास तौर पर तिब्बे अतफ़ाल के माहिरीन की तरफ़ से दिया जाता है लेकिन आसाबी जरोही के कुछ माहिरीन और चन्द माहिरी ने अमराज़ भी इस

नोइयत के मशवरे दे देते है । इन मे बहुत कम ऐसे होते है जो बच्चे को मुस्तकि़ल तौर पर ये जूते इस्तेमाल कराने के नताइज के बारे मे तहकी़का़त कराते है । हकी़क़त ये है कि इन के इस्तेमाल से आम जूतो के मूकाबले मे बच्चो के पैरों मे गर्मी ज़्यादा लगती है और पसीना ज़्यादा आता है । जिसका बड़ा सबब यह होता है कि आम जूते की निस्बत और जूतों के अन्दर पैरो को रगड़ ज़्यादा लगती है । रबड़ सोल में खीचाव ज़्यादा होता है और यह अन्दर से चिप-चिपा भी होता है । जिसकी वजह से रबड़ सोल ज़मीन की सतह से चिपक जाता है । हर क़दम पर कैनविस सूज़ ज़मीन से चीपकता है लेकिन इसके अन्दर पैर आगे की तरफ़ खिसकता है । यह अगर क़द्रे ढिले हों तो यह अमल मज़ीद तेज़ हो जाता है । दूसरी तरफ पाँच से छः साल की उम्र का बच्चा दिन भर में बीस क़दम उठाता है और रखता है । बच्चे के इस उम्र के नतीजे में इन जूतों के अन्दर इसके पैरों में ज़्यादा गर्मी पैदा होती है और पसीना भी ज़्यादा निकलता है । यानी पसीना का इखराज अपनी इन्तेहा को पहुंच जाता है । इसी वजह से कैनविस के जूते पहनने वाले बच्चों के मोजे़ खोलने के बाद पसीना से गीले हो जाते हैं । दोनों पैरों में तक़रीबन दो लाख मसाम और गदूद होते हैं जो दिन भर तक़रीबन 2/1 फिट रतूबत खारीज करते है । यह रतूबत पैरों के लिये नुक़सानदह साबित होती है । इससे सोज़िश और इहतराक़ पैदा होता हे । पसीने में शामिल नमक और तेज़ाबी माद्दे गला देने या खा जाने की सलाहियत भी रखते हैं । चूनांचे पहने हुये कैनविस शोज़ के बालाई हिस्सों में सुराख और घिस जाने के निशानात आम तौर पर नज़र आते है ।

टेनिस या कैनविस शोज़ के अन्दर पैरों के रगड़ खाने का एक और सबब हदत में अज़ाफ़ा होता है । जिल्द का आम दर्जा हरारत 90 दर्जा फ़ारन हाईट होता है । तजरिबात से साबित हुआ है कि गर्मीयों के मौसम में सख़्त मेहनत करने वाले पैरों का दर्जा-ए-हरारत चमड़े के जूतों में 95 से 100 दर्जा फ़ारन हाईट तक बढ़ जाता है, लेकिन कैनविस के जूतों में यह दर्जा-ए हरारत 125 दर्जा फ़ारन हाईट तक पहुंच जाता है ।

पंजों की ख़राश या चोट

कैनविस शूज़ पहनने के आदी बच्चों को यह शिकायत आम तौर पर होती है। इसका सबब भी चिप-चिपाहट और रबड़ सोल की सतह का खिंचाव होता है। इसके अन्दर जब बच्चे का पैर आगे की तरफ फिसलता है तो दिन भर में हज़ारों बार इसके अगले हिस्से से टकराता है। चमड़े के जूतों में यह खराबी निसबतन कम होती है। क्योंकि चमड़े के तले ज़मीन पर चिपकने के बजाये फिसलते हैं।

तले की लचक

आम तौर पर यह ख्याल किया जाता है कि कैनविस शूज़ के तले जूतों की निस्बत ज़्यादा लचक दार होते हैं लेकिन यह ख्याल दुरुस्त नहीं है क्योंकि छोटे बच्चों के कैनविस शूज़ के तले आम तौर पर 2/1 इन्च मोटे, ठोस रबर से बने हुये होते हैं। छोटे बच्चों का वज़्न इतना ज़्यादा नहीं होता कि चलते वक़्त इतने मोटे सोल को मोड़े या पैरों में लचक पैदा कर सके, चूनांचे पैरों में लचक पैदा करने के बजये सपाट अन्दाज़ में पैर आगे बढ़ता है। इस तरह जूते का सोल मुड़ने नहीं पाता।

साईज़ और मूज़ूनीयत

Size & Suitability

बच्चों के कैनविस शूज़ की चोड़ाई आम तौर पर एक ही होती है। यह ज़्यादातर सिर्फ पूरे साईज़ों में भी मिलते हैं और आठ मुखतलिफ़ चौड़ाईयों में दस्तेयाब होते हैं। कैनविस शूज़ आम तौर पर मुनससिब साईज़ में नहीं मिलते। यह या तो ढीले होते हैं या फिर तंग, लेकिन चूंकि उनमें नर्मी और लचक होती है इसलिये इन्हें बच्चों के लिये खरीद लिया जाता है। ऐसे जूतों से बच्चों को नुक़सान पहुंच सकता है। इन दिनों यह जो गरज़ क नमा सो भी फ़रोख़्त हो रहे है। इनके इस्तेमाल में भी इहतेयात का लिहाज़ रखना बेहद ज़रुरी है।

Scanned by CamScanner

ऊँची ऐड़ी के जूते

High Hill Shoes

औरतों को ऊँची ऐड़ी के सैन्डल पहनने का शौक़ है और वह नहीं जानती कि इससे उन के पावों, टांगों और पूरे जिस्म की साख़्त को कैसे नुक़सान पहुंचते है । आजकल फैशन की खातिर ऊँची ऐड़ीयों के तंग जूते आम तौर पर पहने जा रहे है । इसतरह के जूतों और सैन्डलों से पाँव और टागों में बारीक रगें सूज जाती है । तवील अर्सा तक ऐसे जूते पहनने से हड्डीयों में दर्द होने लगता है और मुस्तक़िल थकन रहती है तंग जूतों से पाँव और टागों के बाज़ हिस्सों में दौराने खून में रुकावट पड़ती है और पावों, पिन्डलियां, टांगें और कभी-कभी कमर में दर्द होता है । इसके नतीजे में वरम वरीद और दलमा रग के आरज़े भी हो जाते हैं यानी टांगों या पैरों की रगों में खून के लोथड़े हो जाते है । अगर खवातीन ऐसी जूतियां पहन्ना छोड़ देती हैं तो जल्द ही उनकी ऐसी शिकायात के खतरात कम हो जाते हैं । ऊँची ऐड़ी वाले जूतों की बनावट ऐसी होती है कि उनमें पैर फितरी हालत में नहीं होते चलने में ख़ासा तकल्लुफ़ करना पड़ता है जिससे दबाव और तनाव की कैफ़ियत पैदा हो सकती है ।

आप (स0) के चलने का अन्दाज़ और जदीद साइंस

Prophet's Style Of Walk & Modern Science

हज़रत हसन (रज़ि0) से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़्दस (स0) चलने के लिये क़दम उठाते तो कुव्वत से पाँव अख़ता से क़दम इस तरह रखते कि आगे झुक पड़ता और तवाज़ो के साथ क़दम बढ़ा कर चलते । चलने से मालूम होता कि गोया किसी बुलन्दी से पस्ती में उतर रहे हैं ।

Scanned by CamScanner

सुन्नते नबवी और जदीद साइंस 357
(नशरत तिब)

आप (स0) के चलने के अन्दाज़ में पाँव के पंजों में वज़्न ज़्यादा पड़ता है। इसके बेशुमार फ़ायदे हैं ।

डाक्टर कलीम खान ने इस मौज़ूअ पर वसीअ रीसर्च की है उन के मुताबिक़ :-

- जो शख्स इस अन्दाज़ से चलेगा वह कभी भी जोड़ों का मरीज़ नहीं बन सकता ।
- पहले इस अन्दाज़ से चलने की मश्क़ करे फिर चलना शुरु करे लम्बे सफ़र में थकेगा नहीं ।
- यूरेपीयन सय्याहों की मालूमाती किताबों में यह बात वाज़ह है कि अगर आप का सफर लम्बा और तवील है तो पाँव के पंजों पर वज़्न दो। क़द्रे झुक कर चलो सफ़र तै हो जायेगा ।
- अन्दाज़ से चलने वाले की निगाह तेज़ होती है ।
- आसाबी खिचाव और बेचैनी खत्म हो जाती है ।
- हत्ता कि मेरे तजरिबात में यह बात सामने आई जिन खिलाड़ियों को मैंने इस अन्दाज़ से चलने और दोड़ने की तरबीतयत दी है वह हर मैदान में कामयाब लौटे हैं ।
- मज़ीद यह कि हुज़ूरे अक़दस (स0) पैदल चला करते थे और घोड़े की सवारी भी की लेकिन उलमा-ए हदीस लिखतें हैं कि कभीसवारी की लगाम थाम कर पैदल चलना चाहिये यानी मक़सद आदमी को पैदल चलना है । आज इस नैमत को छोड़कर हम परेशान हैं तमाम यूरप पैदल चलता है और मज़ीद पैदल चलने की तरग़ीब देता है ।

Scanned by CamScanner

पाँव पहले पैदा हुआ या पहिया ?

Was Born First Foot or Wheel

पैदल चलना सुन्नत है । एक सुन्नत छोड़ने से क्या-क्या नुक़सानात हुये इस सिलसिले में जदीद साइंस क्या कहती है ? मुहतरम वालिद साहिब पैदल चलने को तरजीह देते हैं एक साहिब इन्हें देखकर कहने लगे हकीम साहिब मैं आप को पैदल ही देखता हूं और अब आप इतनी दूर से पैदल चल कर आ रहे हैं आखिर वजह ? वालिद साहिब फ़रमाने लगे कि पैदल चलना सेहत है । वह साहिब बोले हाँ हमारे एक दोस्त दिल की बीमारि में मुबतला हो गये । लाहौर के हस्पताल में दाखि़ल हुये वहाँ के माहिरीने क़लब ने कहा कि आप कराची तशरीफ़ ले जायें वह वहाँ पहुँचे कुछ अर्सा इलाज किया लेकिन वहां के माहिरीन से मरज़ कन्ट्रोल न हुआ उन्होंने भी मशवरा दिया कि आप लन्दन इलाज के लिये तशरीफ़ ले जायें वह जब लन्दन पहुंचे तो उन्होंने मुकम्मल चैक-अप के बाद फ़रमाया कि इस मरज़ का इलाज अमरीका का एक कार्डक हस्पताल है वहाँ होगा मरते क्या न करते वहा पहुंचे फ़रमाते हैं कि जब इस हस्पताल के मैनगेट पर पहुँचे तो इस गेट पर लिखा हुआ देखा कि पाँव पहले पैदा हुआ या पहिया ? वह वहाँ इलाज कराते रहे खातिर ख्वाह अफ़ाक़ा हुआ माहिरीने क़लब ने उन्हेंाने आखिरी और अहम मशविरा यही दिया कि आप पैदल चलें यही आपका इलाज है ।

ज़ाहिर है कि पाँव पहले पैदा हुआ है पहिया तो बाद की इजाद है और आज हर जगह व्हील या पहिया ही ज़रुरत है । ज़रुरत इस अम्र की है कि आज इलाज मआलजे की तरफ हमारी तवज्जह खुदा की तरफ़ तवज्जह करने से भी ज़्यादा है लेकिन कभी यह भी ग़ौर किया कि हमारे अमराज़ का सबब क्या है ऐसे कौन से अवामिल हैं जिन के बाइस हम अनवाअ व अक़साम के अमराज़ में मुबतला हो रहे हैं और यह बात हर आदमी तसलीम करेगा कि

Scanned by CamScanner

उसकी बुनयादी वजह बे अमल ज़िन्दगी ऐसी ज़िन्दगी जिसके अन्दर पाँव की हरकत कम और व्हील की हरकत ज़्यादा है व्हील में साइकिल से लेकर कार तक हत्ता कि हवाई जहाज़ तक की मिसाल दी जा सकती है ।

एक बादशाह हर वक़्त तन्दरुस्त और तवाना रहता था । एक दिन किसी दूसरे मुल्क के बादशाह से जब इसकी मुलाक़ात हुई तो इस बादशाह ने उसकी सेहत का राज़ दरयाफ़्त किया तो बादशाह ने कहा कि दो हकीम हर वक़्त मेरा इलाज करते रहते हैं और वह मेरे पाँव हैं मैं जब भी पैदल चलता हूं तो मेरे पाँव ही हरकत में आते हैं इसलिये जब उनमें हरकत पैदा होती है तो तमाम जिस्म आराम और सकून का महवर बन जाता है ।

बेख़्वाबी

Sleeplessness

हर आदमी बेख़्वाबी का शिकार है डाक्टरों के किलीनिक और अतिब्बा के मतब ऐसे मरीज़ों का मरकज़ हैं लेकिन ज़ितनी अदवियात में अज़ाफ़ा, मरज़ उतना ही बढ़ता जा रहा है । अगर आप अपने माहौल पर ग़ौर करें तो आप को फ़ौरन इस बात से आगाही होगी कि इसकी अस्ल वजह बे हरकत ज़िन्दगी है मैंने देखा कि जब इस मरज़ की शिकायत करने वाले मरीज़ रो-रो कर अपना हाल बयान करते हैं तो इन्हें मैं नव्वे फ़ीसद लोग ऐसे होते हैं जो किसी ऐसे शुबे या पेशे से मुनसलिक होते हैं जिसमें हरकत कम और दिमाग सूज़ी ज़्यादा होती है । अब जब ऐसे लोगों को रोज़ाना पैदल चलने का मशविरा दिया जाता है तो जो मरीज़ इस पर सख़्ती से अमल करते है तो हैरान कुन तरीके से सेहत की तरफ गामज़न होते हैं और बेखवाबी उन से कोसों दूर भागती है हत्ता कि ऐसे मरीज़ जिन पर नशा आवर गोलियां असर करना छोड़ जाती हैं वही मरीज़ जब मुसलसल पैदल चलना अपना शआर बनाते है तो फिर उनको तबई नींद का मज़ा मिलता है ।

Scanned by CamScanner

तबख़ीर, गैस

Gass

बस, ट्रेन इस्टेशन, बाज़ार, गली हर जगह आपको हाज़मे की दवाई का इशतहार मिल जायेगा या कोई गोलियां सफूफ या मिकसचर बेचने वाला मिल जायेगा हर किसी का यह दावा होगा कि हर क़िस्म की बादी गैस तबख़ीर वग़ैरह का आख़िरी इलाज उसका यह नुसख़ा है । इस वक़्त मुल्क के अन्दर जितनी अदवायात अमराज़ मेदे के लिये बन्ती है इतनी शायद किसी और मरज़ के लिये तैयार होती हों हालांकि तबख़ीर गैस का इलाज सिर्फ़ पैदल चलना है । जब हम मुरग़्ग़न अग़ज़या खा कर कुर्सी पर बैठ जात हैं और चलत-फिरत होती नहीं तो खाई हुई ग़िज़ा मुतअफ़्फ़िन हो जाती है और फिर वही ग़िज़ा बजाये शिफ़ा और ख़ुराक बनने के बीमारिी बन जाती है ।

दाईमी क़ब्ज़

Permanent Constipation

दाइमी क़ब्ज़ एक संगीन मसला है । दवाई गोली खाइ तो अजाबत साफ़ वरना फिर क़ब्ज़ लेकिन अगर मरीज़ क़ब्ज़ इलाज के साथ-साथ मुसलसल पैदल चलना शुरु कर दे तो दाईमी क़ब्ज़ से नजात मिल जाती है ।

दिल के अमराज़

Heart Diseases

दिल चूंकि ख़ुद एक मुतहर्रिक अज़्व है इदसलिये यह हरकत को पसन्द करता है लेकिन दिल रखने वाले इनसान को ग़फ़लत और सुस्ती ग़लबा करती है और वही इनसान दिल की तरह मुतहर्रिक नहीं होता तो फिर यही दिल रुठ जाता है । फिर उसको मनाने के लिये तरह-तरह के तरीक़े अदवियात की सुरत

Scanned by CamScanner

में इख़्तियार किये जाते है । लेकिन यह रुठ कर मान जाये कुछ मुश्किल होता है । फिर इसका इलाज, बचाव हिफ़ज़ मातक़दम ही पैदल चलना है । सिर्फ पैदल !!!

मोटापा

Stout

क्या मोटापा ला इलाज है एक पुलिस आफ़ीसर मेरे पास पेट कम कराने के लिये आया मैंने अदवियात दीं और रोज़ाना 5 किलो मिटर पैदल को कहा उस ने तवज्जह की सिर्फ चालिस यौम के बाद उसका जिस्म और पेट नारमल होगया । हत्ता कि उन साहिब को अपनी पतलून तंग करानी पड़ी ।

बवासीर

Piles

बवासीर बाज़ ज़बानों में बैठने के मरज़ को कहते है क्योंकि बवासीर पैदल चलने वाले को बहुत ही कम होती है और इसका इलाज अगर पैदल चलने से क्या जाये तो बहुत कारगर हो । हत्ता कि बादी बवासीर के मरीज़ बज़ाहिर चल नहीं सकते लेकिन जब उन्होंने पैदल चलन शुरु किया और मुसलसल मतावीतर मुसतक़िल मज़ाजी से चलते रहे तो मरज़ ने हमेशा के लिये सलाम कर दिया और सबसे बड़ी चीज़ यह है कि यह सुन्नत समझ कर किया जाये तो सवाब कम न होगा और दुनिया के फ़वायद मुफ़्त मिलेगें ।

Scanned by CamScanner

आखों में सुरमा डालना और जदीद साइंस

Stain (Eyes) with Antimony & Modern Science

हज़रत इब्ने अब्बसा (रज़ि0) कि हुज़ूरे अक़दस (स0) के पास एक सुरमादानी थी जिसमें हर रात तीन-तीन सलाई सुरमा दोनों आखों में डाला करते थे ।

(तिरमीज़ी, रहबरे ज़िन्दगी)

सुरमा जहाँ सुन्नते नबी (स0) है वहां इसके फ़वायद दीनवी लिहाज़ से भी बाला तर है ।

❖ सुरमा आला दर्जा का दाफ़-ए-तअफ़फ़ुन यानी एन्टी सेप्टीक (**Anti Septic**) है ।

❖ जदीद तहक़ीक़ के मुताबिक जब आँखों में सुरमा लगाया जाता है तो सूरज की तेज़ शुआएं (अलटरावीलट) आँखों की पुतली (**Retina**) को नुक़सान नहीं पहुँचा सकती हैं जिन आँखों में सुरमा न हो ।

❖ सुरमा से आखों के ऊपर फुंसी लीड इनफेकशन (**Lead Infection**) और ककरे बिल्कुल नहीं होते ।

❖ आशोबे चश्म के मरीज़ के लिये सुरमा बहुत मुफीद है । हत्ता कि जो आदमी सुरमा मुस्तक़िल इस्तेमाल करता है उसे आशोबे चश्म का मरज़ कम होगा ।

❖ माहिरीने चश्म के मुताबिक़ आँखों के उन अमराज़ से बचाता है जिन अमराज़ का जदीद साइंस में इलाज नामुमकिन है ।

❖ आँखों के ज़ख़्म, खराश औ सोज़िश के लिये सुरमा बहुत मुफीद है । यह हर किस्म के छूती जरासीम (**Contagious Germs**) खत्म कर देता है ।

Scanned by CamScanner

हिफ़ाज़ते बसारत

Protection Of Eye Sight

वज़ू करते हुये आँख खोलकर चेहरे पर पानी की छींटे देने चाहिये । आँखें साफ़ रखने और अमराज़े चश्म के लिये यह निहायत सहल और बेहतरीन हिफ़्ज़े मातक़द्दुम है । इसके अलावा हुज़ूरे करीम (स0) बसारत के लिये एक निहायत मुफ़ीद और कार आमद हिदायत फ़रमाई है । फ़रमाया जब सोने लगो तो सुरमा लगया करो ।

(तिरमज़ी)

फिर फ़रमाया "सुरमा असमद का लगया करो क्योंकि इससे बाल पैदा होते है और आँखों की रोशनी ज़्यादा होती है" । आप (स0) का यही मामूल था इसलिये आखिरी दम तक आप (स0) की बीनाइ में ज़रा फ़र्क़ नहीं आया था । बहुत से ऐसे उम्र रसीदा लोग देखने में आये हैं जो उस इरशाद नबवी (स0) पर अमल करके अपनी नज़र कायम रखते हैं और सत्तर, अस्सी बल्कि इस से भी ज़्यादा उम्र में कड़वे तेल के चिराग़ की रेशनी में रात को लिखते पढ़ते या कोई और बारीक काम मसलन कशीदा कारी वग़ैरह करते हैं ।

रात को सुरमा लगाने का यह फ़ायदा होता है कि दिन भर का गर्द व गुबार सुरमा लगाने के साथ पानी के हमराह गोशा-ए-चश्म से बाहर निकल आता है और सुब्ह आँखें धो देने से चेहरे पर सुरमा की सयाही का कोई निशान नहीं रहता ।

लिखने पढ़ने और बारीक काम करने वालों के लिये तो सुरमा अज़बस ज़रुरी है इससे आँखों की थकावट और ज़ोफ़, बशरतिकि इसका इस्तेमाल बा क़ायदा किया जाये दूर हो जाता है । मामूली सुरमा खरल किया हुआ बड़ा मुफ़ीद रहता है ।

मौजूदा यूरपी तमद्दुन में सुरमा लगाने का रिवाज कम है । कुदरत की अता करदह कुव्वत बेनाई में अगर कमी वाक़ेअ हो जाये तो इसे मसूनवी ज़राइ यानी

Scanned by CamScanner

चशमा बलोरी के इस्तेमाल से पूरा करने की कोशिश की जाती है। मगर सहल, कम खर्च और मुफ़ीद तरीक़ा इख़्तियार नहीं किया जाता।

बैनुल अक़वामी मजलिस (यू. एन. ओ) के इदारा यून्सीको के फ़राहम करदह आदाद व शुमार से पता चलता है कि दुनिया में अस्सी लाख नाबीना हैं और उनमें से अस्सी फ़िसद ऐशिया और अफ़्रीका में पाये जाते हैं। हिफ़ज़ाने बसारत से लापरवाही भी इन दोनों बर्रे आज़मों में बहुत ज़्यादा होती जाती है।

औरतों और मरदों के आंसू बहाना

Weap Have Tears In The Eyes for Men & Women

क्या आंसू बहना सेहत है या मरज़ इस ज़िम्न में फिर तहक़ीक़ हुई।

हालया तहक़ीक़ के मुताबिक आंसू के फ़वायद भी हैं और नुक़सान भी अगर जज़बात, ज़िद, गुस्से, इन्तेक़ाम और जनून के आँसू बहाये जायं तो वह आँसू क़तई नुक़सानदह हैं। अगर मुहब्बत, उलफ़त और हमदर्दी के आँसू बहाये जायें तो वह आँसू फ़ायदामन्द हैं।

सरजरी के बड़े प्रोफ़ेसर ने आँखों की सरजरी के बाद इस नतीजा पर पहुँचे हैं कि जज़बात का आंसू पर बहुत असर पड़ता है।

अगर यही आंसू जज़बात, मुहब्बत और हमदर्दी के हों और उनसे जो आंसू निकलें वह मरदों और औरतों को चेहरे के दाने, धब्बे, कील, मुहासे और इलर्जी से बचाते हैं।

अगर यही आंसू नफ़रत और इनतक़ाम के हों तो उन आंसूओं से दिमाग़ी और आसाबी अमराज़ पैदा होते हैं। बल्कि मेरे तजरिबे में यह बात आई है कि जिनकी आंखों में लाइलाज मरज़ देखने में आई है उन लोगों को मैंने बहुत जज़बाती और इनतज़ाम परवर पाया है।

Scanned by CamScanner

(ला मशाअअल्लाह)

मूछें तरशवाना

Moustach Shaving

मूछें तरशवाओ दाढ़ी बढ़ाओ । (अलहदीस)

मूछें बढ़ रही हैं और दाढ़ी का निशान बाकी नहीं लेकिन उसका नुकसान कितना है और किन-किन अमराज़ से सामना होता है इस ज़िम्न में एक खसूसी रिपार्ट दरज ज़ेल है ।

कीवल फादर एक पर पुतगाली साइंसदान है उसकी तहकीक के मुताबिक "इनसानी होंटों में बड़े हसास और तेज़ गलेन्डज़ होते हैं जिसका बिलवास्ता दिमाग़ से तअल्लुक़ है और यही गलेन्डज़ मर्द और औरत के इनफ़रादी तअल्लुक़ में रुझाान बढ़ाते हैं । ऊपर के होंट के गलैन्ड में ऐसे हारमोन्ज़ पैदा होते हैं जिनके लिये बैरुनी असरात और पानी बहुत ज़रुरी है जबकि यह काम अगर मूछें न हों तो ऊपर के होंट पर पानी भी लगेगा और बैरुनी हवाई असरात से भी वह मुतअस्सिर होगा वरना मूछें पानी और हवा को राके रखती है ।

अगर उन गलैन्डज़ को पानी और हवा न लगे तो उससे दाइमी नज़ला, मसूढ़ों की वरम और आसाबी खिंचाव पैदा हो जाते हैं । मज़ीद यह कि अगर मूछें बड़ी हों तो जरासीम उनमें अटक जाते हैं और यही जरासीम उस वक्त अन्दर चले जाते हैं जब हम गिज़ा खाते हैं ।

नीचले होंट की कैफियत ऊपर के होंट से बिल्कुल बरअक्स है । इसलिये इसलाम में मूछें तरशवाने और दाढी बढाने का हुक्म है ।

(हाईजीन एन्ड हयूमन)

Scanned by CamScanner

वज़ाइफ और अज़कार के साइंसी असरात

Scientific Effection Of Recitals

एक अच्छा बोल दिल को तसकीन और मुहब्बत का ज़रीया बन जाता है बिल्कुल इसी तरह एक बुरा बोल नफ़रत और कराहत का ज़रीया बन जाता है ।

एक मुलहिद ने एक बुजुर्ग से पूछा कि आप के वज़ीफे और आयात क्या असर करती हैं यह सिर्फ अल्फ़ाज़ ही तो हैं तो उन्होंने इस मुलहिद को गाली दी उसे बहुत गुस्सा आया कहने लगा मैंने आप से सवाल किया है और आने मुझे गाली दी है तो उस बुजुर्ग ने फ़रमाया गाली के अल्फ़ाज़ ही तो हैं उसका असर इतना हुआ कि तेरे तन बदन में आग लग गई है । बिल्कुल यही कैफ़ियत, एक वज़ीफे के असरात की है ।

औरद व ज़ाईफ के अल्फ़ाज़ में क्या ताक़त है । इसका तज़किरा इसी किताब के उनवान "नाम और जदीद साइंस" में गुज़रा है उसे गौर से पढ़ें।

बाज़ वज़ाइफ़ इनसान को ऐसी ताक़त और कुव्वत अता कर देते हैं कि इनसान माफ़ौकुल फ़ितरत बन जाता है ।

डाक्टर लीवल पावल आस्टरालोजिस्ट **(Astrologist)** हालांकि (वह मुसलमान नहीं था) कहता है कि "कुरआन अल्फ़ाज़ का मजमूआ नहीं बल्कि एक खास असरजी और ताक़त का पैटन है । यह ताक़त जहाँ पढ़ने वाले के अन्दर मुनतकिल होती है बल्कि यंही ताक़त उसके क़रीब बैठने वलों को भी घेर लेती है ।

मैंने चन्द कुरआनी अल्फाज़ को 3 माह पढ़ा मैंने आंखें बन्द करके जब इन्हें अलफ़ाज़ को पढ़ा तो उससे मुझ बेशुमार मनाज़िर का मुतालिया हुआ और मैंने अपने मरीज़ों को भी इन्हीं आयात का मुतालिया कराया और वह शिफ़ायाब हुये।

मौजूदा साइंस कुरआनी आयात का साइंसी तजज़ीया करने के बाद इसी नतीजा पर पहुंची है कि अल्फ़ाज़ की ताक़त का सर चश्मा कुरआन के अल्फ़ाज़ है हता कि अगर वही अल्फ़ाज़ आम इस्तेमाल मे इतनी कुव्वत नही रखते जितना कुरान मे रखते है ।

(डाक्टर लेवल पावल और ज़िन्दगी)

ज़ेल मे कुरानी आयत और अल्फाज़ के हेरत अंगेज़ चश्मे दीद करश्मात पेश है ।

दिल का दौरा और दम्मा

Have a fit of Heart & Asthma

दिल को जाने वाली खुन की रगो मे रुकावट आने से दौरा पड़ता है सांस की नली बन्द हो जाए तो सांस लेने मे तकलिफ होती है यह दोनो बिमारिया छाती में घुटन से पैदा होती है कुरआन मजिद ने इस बाब मे अपनी अफादीयत का बड़ा अहम तज़किरा फरमाया है ।

तर्जुमा :- "तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हिदायत का सरचश्मा आया है । जो कि सीने के अन्दर के मसाइल के लिये शिफ़ा है" ।

इस आयत मुरका को सुबह-शाम तीन मरतबा बढ़कर मरीज़ अपने ऊपर फूंक ले तो उन मसाइल से निजात हो जाती है ।

एक बुजुर्ग के साहिज़ादी को दिल का दौरा पड़ा उन्होंने ने किसी डाक्टर से रुजुअ करने की बचाये अपने बेटे पर कुरआन मजीद की यह आयत पढ़कर सुबह शाम दम किया । यह नौजवान चन्द दिनों में तन्दरुस्त हो गया।

तर्जुमा :- "हम को इल्म है कि उन लोगों की बातें तुम्हारे सीना में घुटन पैदा करती है । तुम उनसे बे नियाज़ होकर अल्लाहतआला की तारीफ़ बयान करो और नमाज़ पढ़ते रहो । अल्लाह की इबादत इस यक़ीन और खलूस से करो कि तुम को यक़ीने कामिल रहे" ।

Scanned by CamScanner

उन बुजुर्ग का मालूम होने पर हम अपने दिल और दमा के मरीज़ों को पीछले दस सालों से यह मुबारक आयत पढ़ने की तलक़ीन करते आये है । दरुद शरीफ़ के साथ यह आयत मुबारक सुबह साम तीन मरतबा पढ़ने और नमाज़ पढ़ने से उन बीमारियों का एक भी मरीज़ ज़ाया नहीं हुआ । यह अल्लाह का फ़ज़ल और कुरआन मजीद की बरकत ही है ।

एक दो साला बच्चा शदीद दम्मा में मुबतला था । इसको दवायें देने की बजाये कुरआन मजीद की यह आयत सुबह शाम तीन-तीन बार पढ़कर फुंकने की हिदायत की और गरम पानी में शहद देने की हिदायत की ।

इस बच्चे को पीछले दो माह से दम्मा का एक भी दौरा नहीं पड़ा । अल्हमदोलिल्लाह कुरआन मजीद हर हाल में शिफ़ा है ।

एक पाईलिट का इमान

Faith Of a Pilot

पाकिस्तानी फ़िज़ाय्या के एक बमबार पाईलट को गरदे में अकसर दर्द रहा करता था । डाक्टरों ने बार-बार आपरेशन का मशवरा दिया मगर वह मुल्क पर जंग के बादल देखकर अपरेशन से बचता रहा कि 6 सितम्बर 65 ई0 को दुश्मन ने हमला कर दिया ।

फ़िज़ाइया के अमले को मालूम था कि फलां पाईलट दर्द गुदी से बेहाल हो जाता है । ऐसे गैर यक़ीनी पाईलट के साथ जंग के दौरान कोई भी शख़्स Navigator बननें को तैयार न था । उसके जज़्बा को देखकर एक नौजवान तैयार हो गया और यह भारती ठिकानों पर बम्बारीन करने जाता रहा । दर्द गुदी से बचने के लिये परवाज़ से पहले और दौराने और वापसी पर वह कुरआन की यह आयत पढ़ता रहा ।

अल्लाहु नूरुस्समावाति वल अर्ज़्

सतरह रोज़ा जंग के दौरान इसे एक मर्तबा भी गुदी में तकलीफ़ न हुई

Scanned by CamScanner

और जब अमन चैन हो गया तो इस का आपरेशन हुआ । दोनों गुर्दों में 19 पथरीयां निकाली गई ।

डाक्टरों का ख्याल था कि 19 पथरीयों वाले गुर्दे नाकारा हो जाते है और उसके लिये कोई भी जिस्मानी मुशक्क़त करना नामुम्किन होता है । अल्लाह के कलाम की शिफ़ा की बरकत से यह शख्स दूसरों से ज़्यादा सरगरम रहा और दुशमन के ठिकानों को तबाह करने में उसकी कारगुज़ारी तन्दुरुस्त साथियों से कम न रही ।

दुआओं के असरात और मेरे तजरिबात

Effection Of Prayers & My Experience

अज़ डाक्टर नूर अहमद नूर साहिब

मेरे लड़के का ज़ख़्मी हो जाना

मेरा एक लड़का सड़क के हादसे में शदीद ज़ख़्मी हो गया इसका आध ा सर कुच्ला गया और उसको मीर्गी के दौरे शुरु हो गये । डाक्टरों ने दिमाग़ का बड़ा आप्रेशन तजवीज़ किया । मै थोड़ी देर के लिये हस्पताल से निकला सदका क्या दो रिकात नमाज़ पढ़ी और दुआ की ।

इस अमल में तक़रीबन आधा घन्टा लगा गया जिस वक़्त मै वापिस हस्पताल पहुंचा तो मीर्गी के दौरे ख़त्म हो चुके थे, आपरेशन मुलतूई कर दिया गया और अल्लाहतआला ने बग़ैर आपरेशन के मेरे लड़के को शिफ़ायाब कर दिया ।

Scanned by CamScanner

आयते करीमा का असर

Effection Of Qurnic Verses

हमारे एक प्रोफेसर की हमशीरा को छः माह से बुखार था। दुनिया के हर किस्म के टेस्ट और अदवियात पीछले छः माह से हो रहे थे। मगर बुखार से अफ़ाक़ा नहीं हो रहा था। बीबी मेरे वार्ड में दाखिल हुई, मैंने इसे आयते करीमा पढ़ने को कहा और बीवी को बताया कि दवा जब तक असर नहीं करेगी जब तक अल्लाहतआला का हुक्म न होगा और अल्लाहतआला की रहमत को मतवज्जह करने का यही तरीक़ा है। पहले तो बीवी ने पढ़ने से पस व पेश किया मगर जब बुखार ने तंग किया तो दिन रात आयते करीमा

लाइला-ह इल्ला अन-त सुबहानक इन्नी कुन-तु मिनज्ज़ालिमीन

का वर शुरु। अल्लाहतआला ने अपने उस कलाम की बरकत से बीबी को सात दिन के अन्दर शिफ़ा दे दी।

एक प्रोफेसर की मुहलिक मरज़ से शिफ़ायाबी

हमारे एक एसूसी ऐट प्रोफेसर को खतरनाक किस्म का यरक़ान का मरज़ लाहक़ हो गया और वह मेरे ज़ेरे इलाज थे। एक दिन ऐसा आया कि उनको मेडिकल बोर्ड ने ला इलाज क़रार दे दिया।

यह बात किसी ने उस डाक्टर साहिब तक पहुंचा दी तो उन्होंने बआवाज़े बुलन्द रोना शुरु कर दिया। अस्र के वक्त वार्ड की नर्स ने बताया कि डाक्टर साहिब बहुत रो रहे हैं। मै उनके पास गया तो क्योंकि वह हाफ़िज़े कुरआन भी थे तो मैंने उनको सूरह यासीन और आयते करीमा के फ़ज़ाइल सुनाये और बताया कि अगर आप इस कलाम को यक़ीन से पढें तो मुझे अल्लाह की ज़ात

से यक़ीन है कि आप को शिफ़ा होगी ।

डाक्टर साहिब ने मेरी बात मान ली और रात दिन सूरह यासीन और आयते करिमा का विर्द करते रहे । नर्सों ने बताया कि नींद में भी डाक्टर साहिब कुरआन पढ़ते रहते हैं । अल्लाहतआला की शान डाक्टर साहिब को दो हफ्तों के अन्दर मुकम्मल शिफ़ा हो गई । इस किस्म के यरकान का इलाज दुनिया भर में नहीं है ।

सूर-ए-यासीन के अमली फ़ायदे (चन्द हक़ाइक़)

किताबों में तो कई बार पढ़ा कि जो सूरते यासीन को पढ़ता है उस की मग़फिरत की जाती है जो भूख की हालत में पढ़ता है वह सीर हो जाता है, जो रास्ता गुम हो जाने की वजह से पढ़ता है वह रास्ता पा लेता है जो ऐसी हालत में पढ़े कि खाना कम हो जाये का खौफ़ हो तो वह खाना काफ़ी हो जाता है, जो ऐसी औरत पर पढ़े जिसके बच्चे होने में दुशवारी हो तो उसको बच्चा जनने में सहूलत हो जाती है मैंने तक़रीबन तमाम पर यासीन पढ़ी और ऐसे ही पाया जैसा लिखा है । अल्लाहतआला हमें अपने कलाम की बरकात का यक़ीन नसीब फ़रमाये ।

एक मरीज़ नज़ा की हालत में

मेरा एक मरीज़ नज़ा की हालत में था, उस के चेहरे का रंग पीला हो जाता, आखे तन जातें और बहुत ही इज़्तराब मे था । चुनाँचे मे ने आहिस्ता-आहिस्ता सूरह यासीन पढ़नी शुरु की और डाक्टरो के इलाज के बारे मे हिदायत देता रहा । जब मैंने यासीन ख़त्म कर ली तो इस के चेहरे का रंग बदल गया सांस बन्द हो गया और वो अल्लाह को प्यारा हो गया ।

Scanned by CamScanner

आख़िर मैंने देखा कि दोनों आँखों के आँसू इस के रुख़सारों पर गिरे और हल्की सी मुस्कराहट चेहरे पर आई । यासीन पढ़ने से पहले वह बेचारा बहुत ही मुश्किल में था और फिर अल्लाहतआला ने अपने कलाम की बरकत से नज़ा की सख़्ती इस पर आसान कर दी ।

हवाई सफ़र के दौरान असरात

Effection Of During Air Travelling

चंद साल क़ब्ल मुलतान से कराची फोकर तैयारे पर रवांगी हुई निस्फ़ घन्टे बाद एक सख़्त तूफ़ान ने हमारे तैयारे को घेर लीया । फोकर तैयारा हलका होने की वजह से हचकोले खा रहा था और हर मुसाफिर परेशान था । चूनांचे मैंने यासीन पढ़नी शुरु की । सख़्त आंधी हमारे तैयारे को हिन्दुस्तान ले गई। वहाँ वारनिंग सिंगल मिलने पर पाईलेट ने वापसी का रुख किया और हम वापस बख़ैर मुलमतान पहुंच गये ।

अल्लाहतआला ने अपने कलाम की बरकत से हमें वापस अपने घरों को पहुंचा दिया वर्ना कोई भी हादसा पेश आ सकता था ।

तकलीफ़दह सफ़र

Harmfull Journey

एक दफ़ा हम पहाड़ों पर सफ़र कर रहे थे कि गाड़ी खराब हो गई और इफ़तारी का वक़्त क़रीब हो रहा था साथ पानी का क़तरा भी न था । सब घबरा गये क्योंकि जंगल और पहाड़ों के अलावह कुछ नज़र नहीं आ रहा था।

हमारे डाक्टर साहिब ने यासीन पढ़ने को कहा भूख, प्यास और डर ने हमें काफी परेशान कर रखा था । सब दोस्तों ने यासीन पढ़ने में हिस्सा लिया अभी

Scanned by CamScanner

चन्द मिन्ट गुज़रे होंगे कि एक खाली गाड़ी आकर हमारे क़रीब रुक गई और हमें गाड़ी में सवार होने के लिये कहा गया ।

हम सब हैरान थे कि जंग लबयाबान में अल्लाहतआला ने हमारे लिये आसानी पैदा करदी । गाड़ी के ड्राइवर से दरयाफ़्त किया सो उसने भी अजीब बात बताई कि वह किसी और तरफ़ जा रहा था मगर रास्ता भूल कर इस तरफ आ गया । चूंनाचे सारे दोस्त अल्लाह के फ़ज़ल से बख़ैरीयत मंज़िल पर पहुंच गये ।

एक वली अल्लाह का वाक़िया

1952 ई में एम बी बी एस का तालिबे इल्म थां । मुलतान के एक बाग़ में सय्यद अताउल्लाह शाह बुखारी मरहूम की रात को तक़रीर थी । मेरे वालिद साहिब मुझे साथ ले गये बुखारी मरहूम ने इशा की नमाज़ के बाद तफरीर शुरु आजानें ख़त्म होए तो ख़त्म की ।

रात के तकरीबन एक बजे अक्सर लोग सोने लगे तो बुखारी साहब ने सूरे यासीन की तिलावत शूरु की अल्लाह ने बुखारी मरहूम की ज़बान मे इतना असर रखा था के सारे मजमअ के ऊपर एक सफ़ेद रोशनियाँ नज़र आ रही थीं । मैंने वालिद सहिब से इस बादल के मुताल्लिक पूछा तो वो भी ये नज़ारा देखा कर हैरान हो गए । चुनाँचे सारे मजमे ने ये नज़ारा देखा ।क़रीबन एक घन्टा तक ये बादल लोगो पर छाया रहा । जब बुखारी सहिब ने यासीन खत्म की तो बादल यकदम गायब हो गया, इस के बाद बुखारी सहिब ने बताया कि दूसरी मखलूक अल्लाह का कलाम सुनने आइ थी यानी फरिश्ते।

मेरे वालिद सहिब ने बताया कि 1942 मे राजन पुर मे शुधी तहरीक ज़ोर पकड़ गई । हिन्दू मूस्लमानो को जबरन हिन्दू बना रहे था चूनाचे छ या सात खानदान हिन्दू बन गये , सिर पर चोटियाा रखा ली और मन्दिरो मे जा कर पूजा शुरु कर दी ।

Scanned by CamScanner

मुस्लमानो में बहूत इज़्तराब फैल गया ।राजन पुर का डाक्टर सिख था। A. C. हिन्दू था और पुलिस भी हिन्दू थी । मुस्लमान कुछ नही कर सकते थे । मुस्लमानो की मिटिंग हुई और मेरे वालिद सहिब को सययद अताउल्लाह शाह बुख़ारी को लाने के लिए भेजा गया ।

चूनाँचे शाह जी मरहूम जब राजन पुर तशरीफ लाए तो लोग उन की तक़रीर सुनने के लिए बड़ी तअदाद मे इक्टठे हुये । शाह जी मरहूम ने जब हस्बे मामूल सूरह यासीन पढ़ी । अल्लाह के इस कलाम का असर हुआ कि न सिर्फ़ मुरतिद मुसलमान खानदान वापिस इसलाम में दाखिल हुये बल्कि कुछ हिन्दु भी अल्लाह का कलाम सुनकर मुसलमान हो गये । हिन्दुओं पर शाह जी मरहूम का रुअब छा गया और शुधी की तहरीक ख़त्म हो गई ।

1945 ई0 में फिर इस तहरीक ने सर उठाया । राजन पूर के मुसलमानों ने फिर शाह जी मरहूम को बुलाने का प्रोग्राम बनाया तो हिन्दु गोशा नशीन हो गये और शधी ।

बच्चा पैदा होने में दुशवारी के मुशाहिदात

यासीन शरीफ़ को इस मौक़ा पर कई बार आज़माया । चन्द साल क़ब्ल मेरी एक अज़ीज़ा वज़्अे हमल के लिये लेबर रुम में दाखिल हुई लेडी डाक्टर ने बताया कि बच्चा उलटा है और तक़रीबन 12 घंटे में फ़रागत होगी अभी काफी देर है मैंने यासीन शरीफ़ पढ़कर बीबी को पीला दी । तो आधा घंटे में बीबी फ़ारिग़ होकर घर चली गई ।

इसके बाद लेडी डाक्टर ने जब लेबर रुम में आने के लिये नर्स को फ़ोन किया तो नर्स ने बताया कि वह बीबी तो फ़ारिग होकर घर भी चली गई और कोई भी दिक्क़त पेश नहीं आई । यह सुनकर लेडी डाक्टर ने मुझे

Scanned by CamScanner

फ़ोन किया कि यह कैसे हुआ ? मैंने उसको यासीन शरीफ़ वाली बात बताई तो वह मुहतरमा हैरान रह गई ।

चन्द माह बाद इसी तरह मेरी एक अज़ीज़ा का वज़अे हमल होना था । लेडी डाक्टर ने 12 घंटे का प्रोग्राम बताया मगर बारी तआला ने यासीन शरीफ़ की बरकत से बखैरियत एक घंटा के प्रोग्राम के अन्दर-अन्दर फ़ारिग़ कर दिया और लेबर रुम वाले सारे हज़रात हैरान रह गये मैंने उनको यासीन शरीफ़ बताई तो वह बहुत हैरान हुये ।

असल बात दीन से दूरी है अल्लाह तआला हमें अपने कलाम का यक़ीन अता फ़रमाये, आमीन ।

मौलाना मुहम्मद अस्लम मरहूम नशतर कालिज के ख़तीब रहे हैं । एक दिन उनकी ज़ियारत के लिये गया तो वहाँ एक ग़रीब आदमी बैठा रो रहा था और मौलाना मरहूम को बता रहा था कि उसकी बीवी दो दिन से लेबर रुम में दाखिल है उसका वज़अे हमल होना था बच्चा टेढ़ा होने की वजह से बहुत देर हो गई । अब डाक्टरों ने बड़ा आपरेशन तजवीज़ किया था इलाज पर काफ़ी रक़म खर्च कर चुका था और खून की दो बोतलें भी फ़राहम करना थीं ।

मौलाना मरहूम ने थोड़ा सा पानी मेरे सामने मंगाया यासीन शरीफ़ पढ़ी और मरीज़ा को पलाने के लिये रवाना कर दिया । अल्लाह की शान पानी पिलाना के फ़ौरन बाद वज़अे हमल हो गया और आपरेशन के तमाम प्रोग्राम ख़त्म हो गये ।

Scanned by CamScanner

हुज़ूर (स0) के तरीक़ा पर सफ़र के चन्द वाक़ियात

Some Events of Journey of Prophet

हुज़ूरे अकरम (स0) ने हम मुसलमानों के लिये दीन पर चलना आसान फ़रमा दिया है । आप (स0) का एक-एक तरीक़ा यानी सुन्नत इस सारी काईनात से ज़्यादा क़ीमती है । सफ़र तो तक़रीबन हर शख़्स करता है अगर हम हुज़ूर (स0) के तरीक़े पर सफ़र करें तो हर क़िस्म के हादसात से बच जायें ।

चन्द साल क़ब्ल **PIA** के काफी हादसात हुये तो **PIA** की इन्तज़ामया को सुन्नत के मुताबिक़ सफ़र करने की हिदायात दी गई और जब से सफ़र की दुआ पढ़ी जाने लगी है अल्लाह तआला ने **PIA** को बड़े हादसात से महफ़ूज़ फ़रमा लिया । चन्द मुशाहिदात पेशे ख़िदमत हैं ।

मेरे दोस्त का हादसे में महफ़ूज़ रहना

My Friend to Safe in Accident

एक दफ़ा मेरे एक दोस्त राजन पूर से टेरा ग़ाज़ी खान बज़रीया बस सफ़र कर रहे थे । सफ़र शुरु करते वक़्त दुआओं का इहतमाम किया । दौराने सफ़र बैठे-बैठे नींद आ गई रास्ते में बस को हादसा पेश आ गया, बस उलट गई हर मुसाफ़िर ज़ख़्मी हो गया और दर्द की वजह से चीख़ व पूकार सुनकर जाग उठे तो सवाये मेरे दोस्त के तमाम मुसाफिर ज़ख़्मी थे । उन्होंने ने उल्टी हुई बससे निकल कर दूसरे लोगों की मदद से मुसाफ़िर की मदद की और हस्पताल तक ज़ख़्मीयों को पहुँचाया ।

अगर हम ड्राइवरों और कन्डेक्टर साहिबान को सुन्नत तरीक़े पर चलने की

Scanned by CamScanner

ताक़ीद करें और यह तरीक़ा ट्रेनिंग कोर्स में शामिल कर लें तो रोज़ाना के हादसे से नजात मिल सकती हे । अस्ल में हमें हुज़ूर (स0) के बताये हुये तरीक़े की क़द्र नहीं वरना हम लोग अपनी जान व माल और इज़्ज़त बचाने के लिये उन तरीक़ों पर मर मिटते ।

फ़ैसल आबाद का सफ़र

Journey of Faisal Abad

एक दफ़ा मुलतान से फ़ैसल आबाद बज़रीया कार एक मरीज़ को देखने के लिये जाना पड़ा । मुझे अगली सीट पर ड्राइवरों के साथ बैठा दिया गया और हम सब रवाना हो गये । झंग के क़रीब बहुत बारिश थी कीचड़ की वजह से कई हादसात हो चूके थे । वहाँ पर एक पुल था उसके इर्द-गिर्द पानी बहुत जमा था एक बस पुल से फीसल कर पानी में गिरी हुई थी जूंही हमारी कार पुल के क़रीब पहुँची तो फिसलना शुरु कर दिया । ड्राइवर से मैंने पूछा यह क्या हो रहा है । उसने कहा गाड़ी फीसल रही है मैं कुछ नहीं कर सकता।

सामने वाले दुकानदार शोर मचा रहे थे मर गये, मर गये । गाड़ी एक गड्ढे की तरफ जो पानी से भरा हुआ था जा रही थी जब गाड़ी गड्ढे के क़रीब पहुँची तो एक दम वापस होकर पुल पर चढ़ गई और वहाँ बन्द हो गई।

हम सब अल्लाह के फ़ज़्ल से मआ गाड़ी महफ़ूज़ थे । बहुत से लोग वहाँ एकट्ठे हो गये और समझ में न आता था कि गाड़ी को किस ने वापस किया है और ऊपर पुल पर कौन ले गया । हम सबको इस बात का यक़ीन था कि सुन्नत के तरीक़े पर सफ़र करने की वजह से हम लोग इस बड़े हादसे से बच गये । अल्लाहतआला हमें हुज़ूर (स0) की सुन्नत पर चलकर दोनों जहानों की कामयाबी का यक़ीन अता फ़रमाये । आमीन ।

Scanned by CamScanner

रात का सफ़र

Night Journey

1980 ई0 में बहादूरपुर में सरवीस कर रहा था । एक रात इत्तलाअ मिली कि मेरे वालिद साहिब राजन पुर में सख़्त बीमार हो गये हैं फ़ौरन पहुँचें । चूनांचे मैं रात के वक़्त मआ अहल व अयाल रवाना हो गया । सफ़र के वक़्त तमाम दुआएं पढीं । जब खान पुर के क़रीब पहुँचे तो सड़क टूटी हुई थी और तंग थी, गाड़ियों दिक़्क़त से गुज़र रही थीं ।

एक जगह ऐसी आई कि मेरी कार ट्रक और बस के दरमयान फंस गई मैंने ड्राइवर की बहुत मिन्नत समाजत की मगर कौन सुनता है । ट्रक वाले ने आकर मेरी गाड़ी पर एक तरफ़ से दबाव डाला तो एक ज़बरदस्त धमाका हुआ, बच्चों ने ज़ोर-ज़ोर से रोना शुरु कर दिया । यह हालत देखकर बस वाला और ट्रक वाला भाग गया ।

जब मैं गाड़ी से नीचे उतरा और हालात का जाइज़ा लिया तो सिवाये थोड़ी सी खराश के और गाड़ी को कुछ नहीं हुआ था । मैंने गाड़ी को चलाया तो चल पड़ी और हम सब बखैरीयत मंज़िले मक़सूद पर पहुँच गये ।

इतने बड़े हादसे से अल्लाह तआला ने हमें रसूल (स0) की सुन्नत पर अमल करने की वजह से बचा लिया ।

पहाड़ी सफ़र

Mountain Journey

चन्द साल क़ब्ल एक सफ़र में एक पहाड़ी पर चढ़ रहे थे और हर क़दम पर (हुज़ूर (स0) के बताये हुये तरीक़े के मुताबिक़) अल्लाहु अक्बर कहते जा रहे थे । यह ख़तरनाक सफ़र था क्योंकि पहाड़ी के नीचे दरयाए सिन्ध गुज़र रहा था । रास्ते में बारिश की वजह से फीस्लन थी । हमारे साथ एक बूढ़ा

पटठान था जो सब से आगे था और ऊँची आवाज़ से अल्लाहु अक्बर कहता जा रहा था ।

यकदम बूढ़े पटठान का पावों फीसला और उसने पहाड़ी के साथ नीचे लुढकना शुरु कर दिया । इसके गिरने को हम सब देख रहे थे और दरयाए सिन्ध में गिरने से सिवाये बारी तआला के और कोई नहीं बचा सकता था। यकदम हमने देखा कि वह एक पत्थर पर खड़ा हो गया और झाड़ी पकड़ रखा है । हमने रस्सीयाँ नीचे फेंकीं और उसको आराम से ऊपर खींच लिया नीचे दरया-ए सिन्ध साफ नज़र आ रहा था ।

जब यह बूढ़ा पटठान बापिस आ गया तो मैंने उसके सारे जिस्म का मुआईना किया तो सिवा-ए दो जगह मामूली खराश के बाक़ी उसका जिस्म सही सलामत था और हमारी तरह चल फिर रहा था मैंने उससे बच जाने की वजह पूछी तो फौरन बोला मैं सुन्नत के मुताबिक़ बुलन्दी पर चढ़ रहा था इसलिये अल्लाहतआला ने मुझे बचा लिया ।

मस्जिद में आने और जाने के आदाब

मस्जिद चूंकि अल्लाह का घर है इसलिये आदाब के साथ मस्जिद में दाख़िल होना चाहिये और जब तक मस्जिद में रहे आदाब का ख़्याले रखे और मस्जिद से निकले वक़्त भी सुन्नत तरीक़े के मुताबिक़ निकले ।

गर्मी के मौसम में एक दफ़ा मस्जिद से निकल रहा था बायां पाँव जूते पर रखा । जूंही जूते पर ज़ोर पड़ा तो मालूम हुआ कि कोइ चीज़ अन्दर थी जो मर गई है । जब जूता देखा तो उसमें एक बड़ा बिच्छू मरा पड़ा था । अगर मैं पहले बायां पाँव खिलाफ़े सुन्नत जूते में डालता तो बिच्छू मुझे काट डालता। सुन्नत की बरकत से अल्लाहतआला ने एक हादसे से बचा लिया ।

Scanned by CamScanner

कपड़ों के पहनने का तरीक़ा

बुजुर्गो से सुना था जब कपड़े पहनने लगें तो उसको झाड़ लें इसी तरह सोने से पहले बिस्तर झाड़ लें ।

एक दिन गर्मी के मौसम में कपड़े बदलने में मशगूल था, ख़्याल आया कि कपड़ों को पहले झाड़ दूं । जूंही मैंने शलवार को झाड़ा उसमें से एक बिच्छू नीचे गिरा और उसके गिरने की आवाज़ ने मुझे मुतवज्जह किया तो मैंने फौरी बिच्छू को मार दिया । अल्लाहतआला ने मुसिबत से बचा लिया।

एक और सुन्नत की बरकात

पहले ज़माने में दाढी रखना एक बहुत बड़ा मुजाहिदा था, खासकर सरकारी मुलाज़मत में । 1957 ई0 में मैं कमीशन के सामने गज़टीड पोस्ट मेडिकल आफ़िसर के लिये पेश हुआ । एम बी बी एस रिकार्ड के मुताबिक़ तो मैं पहले नम्बर पर था । क्योंकि मेरे पास बहुत से तमगे थे, इमतयाज़ी पोज़िशन भी थी मगर दाढी सुन्नत के मुताबिक़ होने की वजह से मुझे बताया गया कि हमें आफ़िसर चाहिये इमाम मस्जिद नहीं और इस तरह मेरा चुनाव न हो सका। मैंने इस पर सब्र किया दूसरा चुनाव हो गया मगर 150 आफ़िसरों से जुनियर हो गया ।

बाद में अल्लाहतआला ने अपने हबीब (स0) की सुन्नत पर अमल करने की वह से नवाज़ा । मैंने दो डिग्रीयाँ मज़ीद हासिल कीं और जल्द प्रोफ़ेसर बन जाने की वजह से 150 आफ़िसरों से काफ़ी सिनीयर हो गया ।

सुन्नते रसूल (स0) पर अमल करने से बाज़ औक़ात आज़माइश आती हैं उनपर सब्र करके बर्दाशत किया जाये तो अल्लाहतआला ज़रुर उसका बदला अनायत फ़रमाते हैं । अल्लाहतआला हम सबको इमाने कामिल और इतबादते सुन्नत की तौफ़ीक अता फ़रमाये, आमीन ।

Scanned by CamScanner

रोग़ने ज़ैतून की मालिश और जदीद इन्कशाफ़ात

The Massage Of Olive Oil & Modern Disclosure

हज़रत उमर व अबू असीद (रज़ि0) से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस (स0) ने इरशाद फ़रमाया ज़ैतून का तेल खाओ और मालिश में इस्तेमाल करो इसलिये कि वह मुबारक दरख़्त से पैदा होता है ।

(शमाइल तिमीज़ी, मिशकात, दरामी, रहबरे ज़िन्दगी)

हज़रत अलक़मा बिन आमीर रवायत करते हैं कि हुज़ूरे अक़दस (स0) ने फ़रमाया कि तुम्हारे लिये ज़ैतून का तेल मौजूद है इसे खाओ और बदन पर मालिश करो क्योंकि यह बवासीर में फ़ायदा देता है ।

(इबने अनसी, अबू नईम)

जैतून के तेल से इलाज करो, इसे लगाओ क्योंकि यह एक मुबारक दरख़्त है ।

(कन्ज़ुलअमाल)

ज़ैतून का तेल खाओ और लगाओ क्योंकि इसमें सत्तर बीमारियों से शिफ़ा है जिस में एक कोढ भी है । (इबने माज़ा, अलहकम)

मसाज या मालिश की तारीख खुद नबे नौ इनसान की तारीख जितनी पुरानी है । तीन हज़ार साल क़ब्ल मसीह चीन के एक बादशाह "फू" की तहरीरों में इसका ज़िक्र मिलता है । क़दीम यूनान में भी मसाज इलाज मुलाहिजे के लिये इस्तेमाल होता रहा है । इसके बाद हाईलैन्ड, आस्ट्रलीया और अमरीका में बाक़ाइदा मसाज सैन्टर क़ायम हैं और अमरीकन हैल्थ एकैडमी ने मसाज की

Scanned by CamScanner

साइंसी अहमीयत को बहुत उजागर किया ।

नैश्नल स्टाईल रेस्लीग एसोसीएशन ऑफ पाकिस्तान के बानी मसऊदे हयात बट का कहना है कि पहलवानी और मालिश लाज़िम व मलज़ूम है । आज के जदीद दौर में भी मालिश का कोई मुतबादल तरीक़ा-ए कार सामने नहीं आया । उन्होंने कहा कि चन्द माह क़ब्ल मेरी मुलाक़ात पाकिस्तान क्रिकेट टीम के साबिक़ फ़ीज़योथरापीस्ट से हुई । उन्होंने बताया कि पूरी टीम उनसे मसाज करवाती थी इससे पता चलता है कि सिर्फ पहलवान ही नहीं बल्कि जदीद पहलवानों यानी खिलाड़ी भी मालिश पर इंहसार करते हैं ।

बाज़ औक़ात ऐसे मरीज़ भी आते हैं जिन का इलाज सिर्फ मसाज या मालिश से ही मुमकिन है मिसाल के तौर पर किसी को हाई बलड प्रेशर हुआ और उसे कोई चोट लग जाये या कोई और आरज़ा हो जाये तो उसे गर्म दवाई नहीं दी जा सकती उसका मुतबादल मालिश है ।

मालिश हमेशा साफ सुथरे शख़्स से करानी चाहिये जिसके हाथ साबुन से धुले हुये हों और उसके हाथ नरम हों । हल्के हाथों से मालिश की जाये। पूरे जिस्म की मालिश की जाये । ख़ास तौर पर कमर, पीन्डलियां, गर्दन, बाज़ू और पुश्त की मालिश ज़रुरी है ।

एक साहिब बिस्तरे मर्ग पर पड़े हुये थे । बहुत नेक और दीनदार आदमी थे । मुझे पता चला मैं एयादत के लिये उनके पास गया । बिल्कुल कमज़ोर और क़रीब अलमर्ग थे । मैंने मालिश करने को कहा और मालिश का तरीक़ा बता दिया । उन्होंने एक माह मुस्तक़िल मालिश की ऐसे तन्दरुस्त हुये कि लोग हैरान हैं और अभी तक मालिश कर रहे हैं ताकि मज़ीद कुव्वत और ताक़त हो । मेरे पास असाबी कमज़ोरी, अज़लाती खिचाओ दिमागी थकान नफ़सियाती उलझनो के शिकार जितने भी मरीज़ आते हैं, मे ने जिस को भी मालिश बताई और उसने मालिश कि तो बहुत हैरान कुन आफ़ाका हुआ। खिलाड़ीयो के लिए खास तोर पर अफ़ादियत मुस्सलम है, पहलवानो कि गिज़ा कम और तेल ख़ास तोर पर ज़ेतुन कि ज़्यादा मालिश होती एक साहब घुड़ दौड़ के शौकिन थे उन

का तरीका कार यह था के वो पहले घोड़े को हलका जैतुन का तेल लगाकर खूब मालिश करते थे खुश्क कपड़े की मालिश करते उन के घोड़े की सेहत क़ाबिले रश्क़ थी । लोग हैरान थे कि यह कोन सी दवाई घोड़े को खिलाता है हालांकि उस घोड़े कि सेहत का राज़ सिर्फ़ और सिर्फ मालिश था । अगर आप मालिश के राज़ को पा ले तो तमाम दुनिया जहान की दवाओं को भुल कर मालिश इख़्तियार कर लेगे एक सहिब कहने लगे कि मेरी आसाबी बिमारी इतनी सख़्त और तकलिफ दह थी कि मेने 4 हज़ार रुपये का एक टिका लगवाया लेकिन अफ़ाका मुझे मालिश ने दिया है।

हुज़ूरे (अक़दस स0) का फरमान है कि तेल लगाओ दर्द जो किसी दवा से ना जाते हो (खास तोर पर चोट का दर्द) उस के लिए जैतुन का तेल बहुत मुफ़िद है फ़िज़ियो थिरापिस्ट फालिज,पोलियो और अज़लाती खिचाओ के मरिज़ को जैतुन के तेल की मालिश कराते है ।

मालिश और माहिरीन

"जिस्म की मालिश से ताक़त और कुव्वत बढ़ती है" यह एक ऐसा खुला हुआ राज़ है जो हमारे मुल्क के जुहला को भी मालुम है, कुश्ती लड़ने वाले पहलवानो का घंटो अपने बदन पर तेल मलवाना और घर की बड़ी बूढ़ियो का ताकीद करके नन्हे बच्चों के बदन पर मैदा और घी या सिर्फ़ तेल की मालिश कराना इस बात का सबुत है कि अवाम मालिश के फायदो से अच्छी तरह वाकिफ़ है ।

बच्चो के कमज़ोर सीने मालिश से बहुत जल्द ताक़तवर हो जाते है कमज़ोर बच्चों के लिए मालिश एक नेमत है जिन बच्चों का सीना कमज़ोर हो उन के लिए सीनो की मालिश रोज़ाना की जाए मालिश हाथ की हथेलियों से अहिस्ता-अहिस्ता की जाए और बच्चे के सीने पर ज़्यादा बोझ न दिया जाए, कमज़ोर बच्चों के लिए मछली का तेल या रौग़ने जैतुन की मालिश बहुत मुफ़िद है मालिश से खुश्की दूर होती है जिस्म मज़बूत और खूबसुरत होता है ।

Scanned by CamScanner

सर में तेल की मालिश से बाल बढ़ते है आँख और दिमाग़ को तक़वीयत हासिल होती है पांव और हाथ के मालिश करने से बीनाई तेज़ होती है । मालिश के लिए गाय का घी या रौग़ने बादाम, रौग़ने जैतुन और सरसो का तेल खसुसन, कच्ची घानी का तेल मुफ़ीद है ।

मालिश से खुश्की रफ़ा होती है, बलग़म, खुन और गरमी मे एतेदाल पैदा होता है और थकान दूर होती है जिस्म खूबसुरत बनता है और ताक़त हासिल होती है । सर मे तेल की मालिश से दिमाग़ और आँखो में तरावट आती है बीनाई में इज़ाफा होता है । बाल बढ़ते हैं और नींद अच्छी तरह आती है हाथो और तलवों की मालिश से भी निगाह तेज़ होती है और कम ख्वाबी की शिकायत रफ़ा होती है ।

मालिश सारे जिस्म पर करनी चाहिए खसुसन, सर, नाफ, हाथो और पांव के तलवों पर तेल की मालिश नाक और कान में डालना बेहद मुफ़ीद है।

अलबत्ता बुखार, खांसी, दम्मा और कै़ के मरीज़ों को मालिश की ममानियत है मालिश के फ़ौरन बाद गुस्ल न करना चाहिए कम-अज़-कम एक घन्टे का वक़फा ज़रुर होना चाहिए ।

डाक्टर लेकर के ख़्यालात

Opinion of Dr. Laxer

डाक्टर लेकर मयुनिख युनिवर्सिटी मे प्लास्टिक सर्जरी डिपार्टमेन्ट के इन्चार्ज है । उन्होंने बरलिन युनिवर्सिटी के मेडिकल कॉलेज के सालाना इजलास में दौराने तक़रीर कहा, दुनिया में बद सुरत शख़्स को जिन्दा रहने का हक़ नही जहाँ तख़लीक़ी कमी होती है उस कमी इसलाह करना साइंस का शोबा है।

प्लास्टिक सर्जरी के ज़रीए से लोगो के जिस्मानी नुकाइस दूर किए जा सकते है और मालिश से खुबसुरती बढ़ती है । यह कहना सही है कि सर्जरी मालिश की हक़ीक़ी बहन है ।

Scanned by CamScanner

डाक्टर लेकर ने प्लास्टिक सर्जरी के ज़रीए बेशुमार औरतों एक्ट्रेसों और बदसूरत लोगों को खूबसुरत बना दिया है । डाक्टर मौसूफ़ ने मालिश के मुतअल्लिक़ अपने तजरिबात बयान कर के सांइसदानों को हैरान कर दिया है।

डाक्टर सर विल्लियम ओलसर के मुशाहिदात

Observation of Dr. Sir willam Olcer

वर्लड मेडिकल कान्फ़रेन्स के सदर राइट ऑनरेबुल डाक्टर सर विल्लियम ओलसर ने अपनी तक़रीर में मालिश के मुतअल्लिक़ कहा, मालिश इल्मे हिकमत की एक जुदा शाख़ है यह तरीक़-ए इलाज, कानूने कुदरत के ऐन मुताबिक़ है । दूसरे इलाजो की तरह इसमें कोई बनावट नहीं इसलिए इसमें नुक़सान का कोई अन्देशा ही नहीं । मालिश से यक़ीनन तन्दरुस्त इन्सान को खूबसुरती और जवानी और मरीज़ को तन्दुरुस्ती हासिल होती है ।

कुव्वत बढ़ाने के लिए मालिश के मोजज़े

[illegible]

सोज़िश, चोट और मोच वग़ैरह का इलाज मालिश ही के ज़रीए से किया जाता है । युनानी तरीक़-ए इलाज आर्युवेदिक और अंग्रेज़ी तिब मे भी मालिश को बहुत अहमीयत दी गई है । मुख़तलिफ़ अमराज़ मे मुखतलिफ़ तरीक़े से मालिश की जाती है । मालिश का असर ख़ून, रगों और पट्ठों पर बहुत गहरा असर पड़ता है । जिस्म की कमज़ोरी और बेहिस आज़ा पर मालिश करने से चुस्ती और हिस पैदा हो जाती है ।

जिस्म के जिस हिस्से पर मुतवातिर तेल की मालिश की जाये । इसमें तरो

Scanned by CamScanner

ताज़गी और कुव्वत पैदा हो जाती है । मगर ये हकीकत बहुत कम लोगों को मालूम है कि जिस मालिश से आज़ा-ए मख़सूसा में भी ख़ून की गर्दिश तेज़ हो जाती है और कुव्वते बाह बढ़ाने के लिये तो मालिश हैरत अन्गेज़ असर रखती है ।

1-रानों की अन्दरुनी जानिब । 2-नाफ़ की पीछली तरफ़ का हिस्सा । 3-सर के ऊपर का हिस्सा । 4-कानों के ऊपर की तरफ़ का हिस्सा ।

जिस्म कें इन चारों हिस्सों का अज़्वे मख़सूस के साथ बहुत गहरा ताअल्लुक़ है । इसलिये इन चारों हिस्सों की मालिश ख़ास तौर पर और अच्छी तरह करनी चाहिए । अगर कान के ऊपर की रगें काट दी जायें तो इन्सान नामर्द हो जाता है । इससे ज़ाहिर है कि इस हिस्से की रगों का तअल्लुक़ बराहे रास्त अज़्वे मख़सूस से है । चुनांचे इस हिस्से की मालिश कुव्वत के लिये बहुत मुफ़ीद है । कानों के ऊपर के हिस्से को वैसे भी दिन में दो चार दफ़ा आहिस्ता-आहिस्ता मलना कुव्वत के लिये मुफ़ीद है ।

हुस्न व सेहत बढ़ाने का बेहतरीन तरीक़ा

Best Sources for Growing of Beauty and Heat

युनान और रोम की क़दीम तारीख़ के मुतालए से मालूम होता है कि उस खित्ते की औरतें मालिश से अपने बदन को खूबसुरत बनाती थी-शादी के वक़्त लड़की वालो की तरफ़ से जो ख़िदमतगार लौंडिया भेजी जाती थी वो मालिश करने मे माहिर होती थी--युनानी औरतों का यह ख़्याल सही है, कि जिस्म की मालिश ख़सुसन कान, रान और कमर की मालिश से हुस्न व शबाब क़ायम रहता है । आज भी युनान की औरते मालिश से अपने बदन को खूबसुरत और तन्दुरुस्त रखती है । यह क़दीम ज़माने मे रोम के हर मुअज़्ज़ज़ घराने में मालिश

कराने वाली माहिर लौंडिया होती थी जो हर रोज़ औरतों की मालिश करती थी।

आज भी तुर्की, इटली, युनान, फ्रांस, अरब और रोम वगैरह ममालिक में मालिश के लिए हमाम का रिवाज है । जहा से साइंटिफ़िक तरीके से बदन के हर हिस्से की मालिश की जाती है ।

अहदे मुग़लिया में सन्तरे का छिलका, आटा, बेसन, सन्दल, और दुध की बालाई को हल करके औरतें चेहरे पर मालिश करती थी । दौलत मन्द ख़्वातीन पिस्ता, बादाम, ज़अफ़रान, मोम, कुसुम के फूल दूध में घिसकर चेहरे पर मालिश करतीं । मिस्र की औरतें दूध से मालिश करती थी । मिस्र की मशहूर हसीना कलूपतरा का दूध से गुस्ल करना मशहूर है । इसकी कनीज़े दूध में खुश्बूदार तेल मिलाकर उसके जिस्म की मालिश करती थी । जिस से उसका जिस्म हमेशा बारौनक रहता । मिस्री ख़्वातीन अब भी गुस्ल से पेशतर पाम और रोग़ने ज़ैतून से जिस्म पर मालिश करती हैं । बादशाहे रोम की महबूबा भी दूध से गुस्ल किया करती और अपने हाथों और चेहरे को रोग़ने बनफ़्शा की मालिश के ज़रीये से मुलायम रखती थी । मैरी ऑफ अस्काऊटलैन्ड की पोती रौग़ने बादाम में खूशबू मिलाकर जिस्म पर मालिश कराया करती थी । मशहूर रक्क़ासा सार बरनाडे ने फिटकीरी, रोग़ने बादाम और अर्क़ गुलाब की मालिश से अपना हुस्न व जमाल बरक़रार रखा ।

क़दीम ज़माने में अफ़्रीका के जंगली हबशीयों में दस्तूर था कि शादी से एक माह पहले दुल्हन को रोज़ाना मालिश की जाती थी । उनका ख़्याल था कि इस तरह मालिश करने से जिस्म में खूबसूरती और जवानी ऊद कर आती है । इसमें शक़ नहीं कि जिस्म को तन्दरुस्त, खूबसूरत और जवान रखने के लिये मालिश बहुत ज़रुरी है । मालिश से खून की रग़ों में रगड़ और गर्मी पैदा होती है । जिससे खून का दौरा तेज़ हो जाता है । और खून के ज़हरीले मादे साफ़ खून से अलग हो जाते हैं । जो मसामों के ज़रीये से पसीने की शकल में बह जाते है । मालिश से जिस्म में ताज़गी, ताक़त और गर्मी पैदा होती है । जिससे जिस्म तन्दरुस्त और खूबसूरत हो जाता है ।

(मेडिकल सरवे ऑफ़ किंग)

Scanned by CamScanner

अंगूठी का पत्थर और जदीद साइंस

Ring Stone & Modern Science

हज़रत अनस (रज़ि0) फ़रमाते हैं कि हुज़ूरे अक़दस (स0) की अंगूठी चाँदी की थी और उसका नगीना हबशी था । (तिर्मीज़ी, शमाइले तिर्मीज़ी)

आप (स0) ने चाँदी की अंगूठी पहनी जिसका नगीना चाँदी ही का था। अक़िक़ के नगीने वाली भी पहनी । कभी दायें हाथ में और कभी बायें हाथ में लेकिन ज़्यादा दायें हाथ में पहनते और नगीना हथेली की तरफ़ रखते ।

(तनवीरुलअज़हार, रहबरे ज़िन्दगी)

हुज़ूरे अक़दस (स0) ने अक़ीक़ का नगीना इसलिये इस्तेमाल नहीं किया कि इससे तमाम मुश्किलात आसान होंगी । उलमा-ए हदीस के मुताबिक़ आप (स0) ने ज़ीनत के लिये यह नगीना इस्तेमाल फ़रमाया ।

साइंस के मुताबिक़ हर पत्थर पर जब सूरज की रोशनी पड़ती है तो रोशनी इस पत्थर पर पड़कर एक और रोशनी का लूह इख़्तियार कर लेती है और यही दूसरी रोशनी सेहत या बीमारी का बाइस बनती है क्योंकि यह दूसरी रोशनी निज़ामे आसाबी (Nervous System) को बहुत मुताअस्सिर करती है । अगर यह रोशनी ठंडी होती है तो उसके मुस्बत असरात पड़ते हैं वर्ना बुरे असरात जिस्म पर मुन्तक़िल होते हैं ।

पत्थरों के मुतअल्लिक़ आम लोग क्या कहते हैं एक दास्तानवी बातें हैं। लेकिन जदीद साइंस उनके फ़वायद (लेकिन सिर्फ सेहत और मरज़ की हद तक वह भी रेज़ की वजह से क़िस्मत, तक़दीर, फ़ना, वफ़ा वग़ैरा का इससे कोई ताअल्लुक नहीं) से आगाह है ।

Scanned by CamScanner

पन्डित अमर नाथ ने अपने अक़ीदे के मुताबिक़ अक़िक़ की वज़ाहत कुछ यूँ की है । (इसे इस्लामी अक़ीदा तसव्वुर न करें)

अक़ीक़

(Agate)

अक़ीक़ एक खूश शक्ल और मशहूर जवाहर है उसे अंग्रज़ी में अगै़ट और पलीसन कहते हैं जब कि फ़ारसी में अक़िक़, अरबी में अक़ीके़ यमनी और संस्कृत में हलीक कहते हैं। यह सुर्ख़, सफ़ेद, दूधीया, भौरा, ज़र्द और कलेजी रंग का चमकदार पत्थर है इस पत्थर का शुमार मज़हबी पत्थरों में होता है दुनिया में बेहतरीन अक़ीक़ यमनी माना जाता है उसकी रंगत कलेजी की तरह होती है ।

मक़ामे पैदाइश

Birth Place

अक़ीक़ चटटानों के अन्दर पाये जाते हैं और दरयाओं की तहों में भी मिलते हैं अक़ीक़ चटटान की सब्ज़ मिटटी की एक पतली तह से चिमटे हुये होते हैं इसलिये इससे आसानी के साथ जुदा हो जाते हैं यह मिक़दार में एक ज्वार के दाने से लेकर एक फिट क़ुतुर तक होते हैं । आम तौर पर दो या तीन इन्च क़ुतुर के बकसरत पाये जाते हैं । दुनिया के कई ममालिक में अक़ीक़ की कानें पाई जाती हैं । जिन में से जर्मनी, अरब, बराज़ील, योरो गोए, यमन, अमरीका और हिन्दुस्तान में गुजरात और हैदराबाद दक्कन क़ाबिले ज़िक्र है ।

Scanned by CamScanner

अक़ीक़ की शनाख़्त

Ricognition of Agate

अक़ीक़ की चमक बिल्लौरी रंग भूरा, ज़र्द, सुर्ख़ और सयाह होता है अक़ीक़ के रंगों की धारियाँ या तो मुतवाज़ी एक दूसरे के मुख़ालिफ़ होती है या सब मरकज़ गोल होती है और या उसके रंग के दाग़ और धब्बों की तरह बिखरे हुये होते हैं उसको रगड़ने से बरक़ी कुव्वत पैदा होती है ।

अक़ीक़ की अक़साम

Kind of Agate

माहिरीने जवाहिरात ने रंगों के लिहाज़ से अक़ीक़ की मुन्दरजा ज़ेल अक़साम बयान की है :-

1. रबीन्ड अगेट :- यानी रेशमी फ़ीता सा अक़ीक़ जिसमें मुख़्तलिफ़ रंग की तहें हो और यह तहें एक दूसरे को क़ता करें ।

2. ओगा अगेट :- ये संग सुलेमानी अक़ीक़ कहलाता है इसमें तहू के रंग शोख़ होते हैं और तह की सतह के मुतावाज़ी होते हैं ।

3. बैंड अगेट :- इसको डोरी दार अक़ीक़ कहा जाता है इसपर तरह-तरह की धारियाँ होती हैं ।

4. सरकुलर अगेट जिसमे धारिया गोल हों उसे गोल अक़ीक़ कहते हैं ।

5. आई अगेट जो अक़ीक़ आँख की मानिन्द हो यानी इस क़िस्म के अक़ीक़ की धारिया मरकज़ मे और रंग के नुकते हों ।

6. क़ोस क़ज़ाही :- जिस अक़ीक़ की धारियाँ मिलकर क़ोस की शक्ल बन जायें और सूरज के सामने करने से मनशूरी रंग ज़ाहिर हों जिस क़द्र पत्थर ज़्यादा पतला हो उसी क़द्र यह वस्फ़ ज़्यादा होता है ।

Scanned by CamScanner

7. रिबन अगेट :- इस अक़ीक़ में संग यशम और कालसडोनी के तबक़ा मुतवाज़ी क़तारों में होते हैं यह क़िस्म साईबैरिया और सिसली में पाई जाती है ।

8. बीर शीडा अगेट :- इस अक़ीक़ में रीबन अगेट के टुकड़े मुरक्कब होते हैं ।

9. फारटी फीक्शन अगेट :- यह कई शक्ल का होता है इसको काटने के वक़्त इसके मुतवाज़ी सतरें इमारत की सूरत दिखाई देती हैं इस में ईलस्ट और भेहकम गेट के टुकड़े दिखाई देते हैं ।

10. मास अगेट :- यह नबाताती अक़ीक़ कहलाता है इसमें कालसडोनी और सुर्ख़ संग यशम की धारियाँ होती हैं इसका रंग भूरा और ज़र्द रंग होता है।

11. प्लासमा :- यह सब्ज़ गयाही रंग का नीम शफ़्फ़ाफ़ ज़र्ददार सफ़ेद दाग़ वाला अक़ीक़ ही होता है ।

12. सरो आंकस ।

मुनदर्जा बाला अक़साम के अलावा फारस के माहिरीने जवाहिरात ने अक़ीक़ की मुन्दरजा ज़ेल अक़साम बयान की है ।

1. सुर्ख़ व जिगरी :- जिस अक़ीक़ की अन्दरुनी रंगत बैरुनी रंगत की निस्बत ज़्यादा सुर्ख़ हो ।

2. बाबा गरी :- अक़ीक़ की इस क़िस्म को सुलैमानी भी कहा जाता है । इसमें गोल निशान होते हैं ।

3. अबलक़ी :- जो क़द्रे सफ़ेद और क़द्रे सयाह हो ।

4. हक़ाक़ :- जो बिल्कुल शफ़्फ़ाफ़श न हों और आईने की तरह इनएकास की ताक़त न रखते हों ।

5. शजरी :- जो शकल में दरख़्त या पहाड़ी के मुशाबा हों यानी जिस में दरख़्त की शाखों जैसे रेंशे हों ।

Scanned by CamScanner

6. ज़ू तबक़ाती :- इसको जवाज़ भी कहते है इसमें अबरक़ की तरह परत होते है ।

7. साफ शफ़्फ़ाफ़ :- जो शफ़्फ़ाफ़ हों और आईने की तरह इनएकास रखते हों।

इस के अलावा तमाम अच्छे और उमदा क़िस्म के अक़ीक़ मशरक़ी अक़ीक़ और कम दरजे वाले मग़रबी अक़ीक़ कहलाते है जब कि मिस्र में सब्ज़ रंग के अक़ीक़ को अनटास सयाह रंग को सुलेमानी और खाकी रंग को गोरी कहते है। सबसे आला और उम्दा क़िस्म को अक़ीक़ यमनी कहा जाता है।

अक़ीक़ के तिलीस्माती ख़्वास

Magical Peculiarities of Agate

जो शख़्स अक़ीक़ पहने उसका गुस्सा जाता रहता है और दुशमनों के दिलों पर उसका रौब जम जाता है उसकी तमाम हाजात जल्द पूरी हो जाती है। उसके सीने में कभी दर्द नहीं होता जिस शख़्स ने अक़ीक़ पहना हो ज़हरीले क़िस्म कीड़े उसके नज़दीक नहीं आते दिल को तक़वीयत पहुँचाता है । जिस शख़्स ने अक़ीक़ पहना हुआ हो यह पत्थर शुआएं अपने अन्दर जज़्ब कर के उस शख़्स के जिस्म मे मुनतक़िल करता है उस से जिस्म पर अच्छे असरात मुरत्तब होते है । और सेहत व तन्दुरुस्ती बरक़रार रहती है ।

इस पत्थर का पहना मिज़ाज मे चिड़चिड़े पन की कैफ़ियत को दुर करता है । दिल की धड़कन को एतदाल पर रखता है और इख़तेलाजे क़लब की शिकायत को रफ़ा करता है । अक़ीक़ के तिलस्मी ख़्वास में से यह भी है कि यह पत्थर दिल से कीना व नफ़ाक़ को दुर करके भाईचारे की फ़ज़ा पैदा करता है । यह पत्थर हर इन्सान के लिए अच्छा समझा जाता है । हकीम अफ़लातून कहता है कि सफ़ेद अक़ीक़ का पहनना इज़्ज़त व मरतबे मे इज़ाफ़ा करता है जब कि ज़र्द अक़ीक़ पहने से मुराद जल्द पूरी होती है ।

इस पत्थर का पहनना सफ़र में आफ़त और मुसीबतो से बचाता है और

Scanned by CamScanner

इन्सान की हिफ़ाज़त करता है । कहा जाता है कि जो शख़्स काफ़ुर और अंम्बर और अक़ीक़ को रगड़ कर माथे पर लगाए और फ़िर हाकिम के पास जाए तो हाकिम उस पर मेहरबान होगा ।

अक़ीक़ के तिब्बी ख़्वास

Medical Virtues of Agate

अक़ीक़ का ज़ाएक़ा फिका और मिज़ाज सर्द व ख़ुश्क होता है तिब्बी तरीक़े पर इस सुरगा अमराज़े चश्म में फ़ायदा देता है । बीनाई में इज़ाफ़ा करता है इस का सफ़ूफ़ दांतो पर मंजन की तरह मलने से पायरिया का मरज़ दूर होता है । दांतो से खून बहना बन्द हो जाता है दांत मज़बूत और सफ़ेद व शफ़्फ़ाफ़ हो जाते है इस का इस्तेमाल मुहं से खून आना और चोट से खून जारी होने को बन्द करता है । इस का कुश्ता ख़ुफ़क़ान को दूर करता है दिमाग़ के फ़ालिज में अक़ीक़ का इस्तेमाल फ़ायदा देता है । पुराने ज़मानो को मुन्दामिल करने के लिए अक़ीक़ का कुश्ता मरहम की हैसियत रखता है। ख़्वातीन के अन्दुरुनी पेंचिदा अमराज़ में यह मुफ़िद साबित होता है। हैज़ की कमी व ज्यादती को एतदाल पर लाता है । फेफड़ो से खून आने के मरज़ में फ़ायदा पहुँचाता है । मसाने और पेशाब की नालियों के निज़ाम को दुरुस्त करके पैशांब में कमी की शिकायत को रफ़ा करता है । पैशाब के साथ खून आने की शिकायत भी दूर हो जाती है ।

(आईना-ए-जवाहर मुसन्निफ़ अमर नाथ)

मुसन्निफ़ का मुन्दरजा बाला फ़वाइद से मुततफ़िक़ होना ज़रुरी नहीं ।

तलबीना और जदीद सांइस

Talbina & Modern Science

तलबीना या जौ का दलिया जिस में जौ कुट कर उसे दूध में और शहद से

मिठा करके इस्तेमाल करते है ।

हुज़ूरे अक़्दस (स0) के अहले खाना में से जब कोई बीमार होता था तो हुक्म होता था कि इस के लिए जौ का दलिया तैयार किया जाए फिर फ़रमाते थे कि बीमार के दिल से ग़म को उतार देता है और इस की कमज़ोरी को यूँ उतार देता है जैसे कि तुम में कोई अपने चेहरे को पानी से धो कर उससे गिलाज़त उतार देता है ।

(इब्ने माजा)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा (रज़ी0) बीमार के लिए तलबिया तैयार करने का हुक्म दिया करती थी और कहती थी कि अगरचें बिमार इस को ना पंसद करता है। लेकिन बीमार के लिये अज़हद मुफ़िद है ।

(बुख़ारी)

हज़रत आइशा सिद्दीक़ा की एक और रिवायत है कि जब कोई हुज़ूरे अक़्दस (स0) से भूक की कमी की शिकायत करता तो आप उसे तलबीना खाने का हुक्म देते और फ़रमाते कि खुदा की कसम जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है । यह तुम्हारे पित्तो से गिलाज़त को इस तरह उतार देता है जिस तरह कि तुम में से कोई अपने चेहरे को पानी से धो कर साफ़ कर लेता है ।

यह बात तजरिबात से साबित है कि तलबीना वाक़ई मुन्दरजा ज़ेल अमराज़ के लिए मुजर्रब और ला जवाब है ।

1 दिल की धड़कन और हाई बल्ड प्रेशर ।

2 खून में चरबी की ज़्यादती और गाढ़ापन ।

3 दिल के वालो की पैचिदगियां ।

4 मेदे की खुश्की और गरमी ।

5 मेदे की तीज़ाबीयत के लिए ।

6 निगाह की कमज़ोरी में मुफ़ीद है ।

Scanned by CamScanner

7 भूक की कमी के लिए मुजर्रब है ।

8 बीमारी के बाद की कमज़ोरी को रफ़ा करता है ।

9 दाइमी कब्ज़ को दूर करता है हामला औरत को फ़ायदेमन्द है ।

10 बच्चो के लिए बेहतरीन टानिक है

11 वसवसा और वहशते क़लब के लिए ला जवाब है

12 पेशाब के अमराज़, खास तौर पर इसकी जलन को मुफ़ीद है

13 गुर्दे के इन्फ़ेकशन हत्ता कि गुरदे फ़ेल हो गये, उस वक़्त इस्तेमाल करना बहुत मुफ़ीद पाया ।

जिन मरीज़ो को गुरदे की पथरी बार-बार बनती हो अगर वो इसे मूसतक़िल इस्तेमाल करें तो पथरी बनने की रफ़्तार कम हो जाती है ।

❖ बाज़ अमराज़ में गुर्दे से पीप पेशाब के रास्ते आती है ऐसी हालत में तलबीना मुफ़ीद और आज़मुदा है ।

❖ दिमाग़ी मेहनत करने वालों के लिये पयामे उम्मीद और राहत है ।

जौ का दलिया या तलबीना साइंसी निगाह में

दलिया एक नई मुजज़ा नुमा ग़िज़ा है । अमरीका के माहिरीन ग़िज़ाईयात ने दरयाफ़्त किया है कि यह खून में शक्कर और चर्बी की मिक़दार को मुतवाज़िन और मुनज़्ज़म रखता है लिहाज़ा अब जौ के दलिये को ज़याबतिस के इलाज और इससे तहफ़्फ़ुज़, दिल की बीमारी और बुलन्द फ़शार ख़ून में तजवीज़ किया जाने लगा है ।

जौ में चीपदार (समग़ी : गोंद जैसे) रेशे होते है और दलिया तैयार करते वक़्त नज़र आते है । दलिया ख़ून के कोलिस्ट्रोल को एक तिहाई कम कर देता

है और खून की शक्कर और चर्बीयों को भी घटा देता है जौ की भूसी में यह रेशा खसूसियत के साथ बहुत होता है और गेहूँ की भूसी में सम्मीयत बहुत कम होती है । इसलिये जौ की भूसी सेहत बख्श गिज़ा की हैसियत से गेहूँ की भूसी से बेहतर है ।

मीयज़ली एक अमरिकी खाना है जिसमें जौ के साथ खुश्क मेवा जात और मग़ज़ियात वग़ैरा को इस्तेमाल कराया जाता है, लेकिन अब से पहले इस अम्र की कोई साइंसी शहादत मौजूद नहीं थी ।

अब यह पहला मौक़ा है कि तहकीककारों ने इसका साइंसी मुतालिआ करके यह मालूम किया है कि यह एक ऐसी खास गिज़ा है जो खून के कोलीस्ट्रोल को कम करती है । लोग हस्पतालों में आम तौर पर 300 डिग्री का कोलस्ट्रोल लेकर आते है जो काफ़ी खतरनाक हद है । जब वापस होते है तो रखून का कोस्ट्रोल 195 होता है जो निसबतन महफूज़ हालत है ।

डाक्टर जेमस ऐन्डरसन ने पिछले दस साल इस बात को साबित करने में सर्फ़ किये है कि वह गिज़ा जो ज़याबतिस के मरीज़ों के लिये तजवीज़ की जाती है ग़लत है । आम तौर पर ज़याबतिस को मरीज़ों को यह मशविरा दिया जाता है वह मुरग्गन गिज़ा बहुत खायें और शक्कर व नशाई गिज़ा से परहेज़ करें लेकिन वह मशविरा देते हैं कि नशास्तेदार गिज़ा ज़्यादा खायें और शक्कर खायें

जब बरतानीया के माहिरीने गिज़ाईयात ने बहुत ज़्यादा रेशेदार गिज़ा बिलखसूस सबूस गंदुम का मशविरा देना शुरु किया तो ऐन्डरसन ने इसका अपने मरीज़ों पर तजरिबा किया । इनकी हालत संभलनी शुरु हो गई लेकिन ऐन्डरसन ने मालूम किया कि इसकी वजह सबूस गंदुम नहीं बल्कि फ़लीया है । फ़लीया बिलखसूस फराश बेन (सेम की किस्म की फली जो पाकिस्तान में भी मिलती है । इसका असल नाम फ्रंच बेन है हमारी ज़बान में बिगड़ कर है फ़रास बेन हो गया है) और सेम की आम फली है जिसके बीज गुर्दे की शक्ल के होते हैं इसमें मुरक्कब कारबो हाईडरेड होते है जो जौं के गुन्द जैसे माद्दे का सा अमल करते

Scanned by CamScanner

है । फिर उसने इतनी गिज़ाओं का तजरिबा करना शुरु किया जितनी गिज़ाओं का उसके इमकान में था और आख़िर इस नतीजे पर पहुँचा कि जो इन सब में बेहतर है । यह हुज़ूरे अक़्दस (स0) की ख़ास गिज़ा थी और वह इसको भुसी समेत तनावुल फ़रमाते थे जौ और जौ का पानी तिब्बे इस्लामी में मरीज़ों के लिये बेहतरीन गिज़ा तसव्वुर की जाती है।

एन्डर्सन ने अब एक किताब लिखी है जिसमें इसने जौ के इस्तेमाल के तरीक़े की वज़ाहत की है । वह कहता है कि इस खुरदरी और सख़्त गिज़ा से ज़याबतें के 60 फीसदी ला इलाज और 90 फीसद फरबा मरीज़ ऐसे थे जिनको इन्सोलीन या किसी और दवा के इस्तेमाल की ज़रुरत नहीं रही और इस गिज़ा को इस्तेमाल करने से ज़ियाबतिस से जो आम पेचीदगियाँ (ज़िम्नी बीमारियाँ) पैदा होती है इनका इमकान बहुत कम हो जाता है ।

एन्डर्सन का बयान है जौ का समग़ी (गोंद जैसा) रेशा कोलोन में पहुँचता है तो इसमें इन जरासीम के अमल से जौ लहमी तेज़ाबात पैदा करते हैं ख़मीर पैदा हो जाता है । यह तेज़ाबात खून में जज़्ब हो जाते हैं और जिस्म के नशास्तें से जौ शक्कर (गुलुकोज़) पैदा कराता है, शक्कर की पैदाइश को रोक देते है । इससे खून में शक्कर की मिक़्दार कम और मुस्तहकम हो जाती है और यह बात ज़ियाबतिस के मरीज़ों के लिये ख़ुसूसीयत के साथ मुफ़ीद होती है।

इस्कोर्टलैंड में दलिये का रिवाज बिल्कुल नहीं रहा था । वह अब मग़रीबी दुनिया का सबसे ज़्यादा ग़ैर सेहतमन्द मुल्क है और दिल के मरज़ में फनलैंड पर सबक़त ले जाना चाहता है । एन्डर्सन कहता है कि मेरे ख़ानदान ने अब फिर दलिये का इस्तेमाल शुरु कर दिया है । (गज़ट इंग्लैन्ड)

सुन्नते नबवी और जदीद साइंस 398

माँ का दूध और जदीद साइंस

Breast Milk & Modern Science

माहिरीने नफ़सियात के मुताबिक़ माँ जब बच्चे को दूध पिलाती है तो ग़ैर महसूस लहरें दूध के साथ-साथ मुंतकि़ल होती रहती है और यही लहरें बच्चे और माँ के दरमियान मुहब्बत, खुलूस और इहतेराम का बाइस बनती है ।

सोचने की बात है जिस बच्चे को माँ दूध न पिलाये बल्कि मसनुई दूध (सफ़ेद ज़हर) पिलाया जाये, ख़ादिमा और आया इस बच्चे को गोद में ले और बच्चे की परवरिश करे । हत्ता कि बच्चा बड़ा होकर जवान हो जाये तो जिस बच्चे ने माँ के दूध की शीरनी और मुहब्बत हासिल न की, माँ की गोद का उन्स और गरमाइश महसूस न की हो उस बच्चे से माँ की मुहब्बत और वालिदैन के एहतेराम की तवक़्क़ा कैसे की जा सकती है ?

यूरोपी बच्चे सुब्ह बस्ते लटकाये बाज़ार तोस और बरगर लेकर खाते जाते हैं और स्कूल के लिये दौड़ते जाते हैं आज बिल्कुल यही कैफ़ियत पाकिस्तानी ऊँचे घरानों की हो गई है । जो माँ बच्चे को अपने हाथ का पका हुआ नाश्ता न खिला सके (क्योंकि नाश्ते के ज़रीये मुहब्बत और मुरव्वत की लहरें बच्चे के अन्दर मुंतकि़ल होती हैं) वो माँ उस बच्चे से किस तरह एहतेराम, हमदर्दी और खि़दमत की तवक़्क़ा कर सकेगी ।

बहर हाल माँ का दूध बच्चे की तन्दरुस्ती और सेहत के लिये अज़ीम नेमत है । अब तो रेडियो, टी.वी, अख़बारात वग़ैरा भी चीख़-चीख़ कर कर खुश्क दूध की मुज़म्मत कर रहें है । याद रखिये माँ को कु़दरत ने दूध दिया होता है। हज़ारों में कम ऐसे केस होते हैं कि माँ का दूध कम होता है हालांकि वह भी इलाज के ज़रीये दुरुस्त हो सकता है । बाक़ी तमाम औरतें या तो मुआलिज के

Scanned by CamScanner

कहने पर दूध नहीं पिलातीं हालांकि यह बात भी ग़लत है इसके एलावा अक्सर औरतें सिर्फ़ हुस्ने निस्वां के ज़वाल के डर से दूध नहीं पीलातीं इसके रद्दे अमल में कुदरत ने उन्हें सीने के केन्सर में मुबतला कर दिया है।

सफ़ेद ज़हर का ख़तरनाक इस्तेमाल

Dangerous Use Of White Poison

माँ का दूध और माहिरीने सेहत व इक़्तेसादियात

शिकमे मादर और शीर ख़्वारगी में ही इन्सान की सेहत व तन्दरुस्ती कमज़ोरी या बीमारी की बुनयाद रखी जाती है । बच्चे की सेहत के क़याम के सिलसिले मे भी सब से ज़्यादा अहम मसला इस की गिज़ा का है । इस से ग़फ़लत उसकी सारी ज़िन्दगी पर असर अन्दाज़ होती है ।

बवक़्ते पैदाईश हशरातुलअर्ज़ और चन्द और जानदारों के सिवा इंसान का बच्चा सब से ज़्यादा कमज़ोर होता है । अलावा अजीं यह कमज़ोरी इतना लम्बा अरसा रहती है कि किसी और जानदार की पैदाईश के बाद इतनी लम्बी नहीं होती। इस अरसे में इसे ऐसी गिज़ा मिलनी चाहिए जो कुदरत ने खुद बच्चो की कमज़ोरी के मुनासिब हाल मुनासिब मिक़दार में तजवीज़ की हो। इस के साथ निहायत सहलुलहुसूल हो । बल्कि यह कहना चाहिए कि इस इनतेहाये ज़ोफ़ के पेशे नज़र इस के पहलु में ही मौजूद हो ।

दुनिया की गिज़ाओ में सबसे ज़्यादा मुफ़ीद, कमज़ोर व तवाना के लिए एक ऐसी ताक़त व सेहत बख़्श और ज़ूद हज़म गिज़ा अल्लाह तआला ने दूध पैदा किया है । इसमें ज़रा भी शक व शुबहा की गुंजाइश नहीं कि दूध पिलाने वाले हर जानदार के दूध में उसके बच्चों की नश्व व नुमा के लिए तमाम ज़रुरी और

Scanned by CamScanner

मुफ़ीद अज्ज़ा-ए-हयातीन वग़ैरह निहायत मुनासिब मिक़दार में पाए जाते है और इनकी शीर ख्वारगी के ज़माने में उन कि माँ के दूध से उन के लिए कोई और बेहतर और अनसब गिज़ा नहीं हो सकती। भेड़ बकरी के बच्चों के लिए गाय भैस का दूध वह मुनासिबत नहीं रखता जो उन की अपनी माँ का रखता है ।

इसी तरह इंसान के बच्चे के लिए उस की अपनी माँ के दूध में उस के मुनासिब हाल जो गिज़ाइयत, सलाहीयत, तासीर और ताक़त मौजूद होती है वो किसी और दूध में ख्वाह किसी और औरत का ही क्यों न हो नहीं पाई जाती। हज़ारो कोशिशो, तजरिबों और इल्मी व तिब्बी तहक़ीक़ व इनकशाफ़ की बिना पर यह कहना कि दूसरे जानदारों के दूध में पानी दवाओं वग़ैरह की आमेज़िश से वह दूध माँ के मानिन्द व मुवाफ़िक़ हो जाता है हरगिज़ क़ाबिले कुबूल नहीं है। अगर यह मुमकिन होता तो कुदरत माँ के पिस्तानो में दूध ही पैदा न करती बल्कि परिंदों की तरह जो अण्डे दिया करते है माँ के जिस्म से अलग किसी बैरुनी गिज़ा का इंसानी बच्चे को मोहताज कर देती । माँ के जिस्म से गिज़ा के मुतअल्लिक़ कर देना साफ़ तौर पर बता रहा है कि उससे बेहतर और अनसब दुनिया की कोई और गिज़ा बच्चे के लिये नहीं हो सकती ।

यह अम्र भी कि बच्चे मां के जिस्म और उस के गोश्त पोस्त और खून से बना होता है, साबित करता है कि दूध जो हकीक़तन माँ के जिस्म के अन्दर ही खून की कुदरती कीमयावी तबदीली व तरकीब से तैयार होता है इसके पैदा होने के बाद इसके इबतेदाई अय्यामे ज़ोफ़ में तिब्बी नुकता-ए-निगाह से निहायत ही मुफ़ीद और मौज़ूँ है और किसी दूसरे औरत के दूध से भी अगर माँ का दूध किसी बिमारी के बाईस ख़राब न हो गया हो बहर सूरत बेहतर है ।

दूध गिज़ा में जितनी मुफ़ीद गिज़ा है इतनी ही यह सब गिज़ाओं से ज़्यादा लतीफ़, नाज़ुक और गिर्द-व-पेश से फ़ौरी तौर पर असर क़बूल करने वाली है। खूश्बूदार या बदबूदार चीज़ उस के पास रखी हो तो दूध फ़ौरन मुतअस्सिर हो जाता है । तेज़ कुव्वते शाम्मह रखने वाले बाज़ लोग गाय भैस का दूध पीकर बता सकते है कि जानवर ने गुज़िश्ता रोज़ किया चारा खाया था।

Scanned by CamScanner

माहिरीने हिफ़ज़ाने सेहत बताते हैं दूध थनों से निकलते ही बैरुनी फ़िज़ा से मुताअस्सिर होना शुरु हो जाता है और थोड़ी देर के बाद एक मकअब इन्च में छः लाख जरासीम पैदा हो जाते हैं जो उसे उबालने से तलफ़ हो जाते हैं मगर इसके फिर ठंडा होते ही फिर पैदा होने शुरु हो जाते हैं ।

मुम्बई के बाज़ारी दूध का एक मर्तबा तज्ज़िया किया गया तो इसमें इतने ही जरासीम पाये गये जितने कि वहाँ की गंदी नाली के पानी में । यही हाल हर बड़े शहर के बाज़ारी दूध का होता है ।

कुरआने करीम मे दूध की लताफ़त और इसके खुश ज़ाएका और बेहतरीन ग़िज़ा होने की निसबत मुतअद्दिद आयात मौजूद हैं । शार-ए-इसलाम (स0) भी इसकी लिताफ़त और बैरुनी फ़िज़ा से मुतअस्सिर होने की निस्बत खूब समझते थे । चूनांचे एक मर्तबा आप (स0) ने फ़रमाया । दूध ढक कर लाया करो ख्वाह लकड़ी के एक टुकड़े से ही ढका हो ।

थनों से निकलते ही दूध पर बैरुनी फ़िज़ा का असर पड़ना शुरु हो जाता है थनो का दूध और ताज़ा निकला हुआ दूध आपस में ज़रुर फ़र्क़ रखते हैं। ख्वाह उनकी तासीर व ताज़गी और खालिस होने में लाखों हिस्सा का ही फ़र्क़ हो लिहाज़ा तिब्बी और हिफ़ज़ाने सेहत के उसूल के मुताबिक़ किसी जानवर का दूध अगर थनों से मुँह लगा कर पीया जाये तो वह बहर सूरत उसके निकाले हुये दूध से बैरुनी और फ़िज़ाई असरात जो जरासीम से महफ़ूज़ और बिल्कुल ताज़ा होने के बाइस ज़्यादा मुफ़ीद रहता है । पंजाब वग़ैरा के बाज़ इलाक़ों में गाय भैंस का दूध इसी तरीक़े से पीने का रिवाज है और इस तरह पीने वाले लोग बड़े तन्दरुस्त और मज़बूत हुआ करते हैं । आम जिस्मानी कमज़ोरी और अमराज़ का इलाज ही दिहाती इस तरीक़े से दूध पीना बताते हैं । तिब्बी कुतुब में सिल व दिक़ के इलाजों में से एक इलाज यह भी बयान किया गया है कि भैंस का दूध उसके थनों से मुँह लगा कर पीया जाये ।

इंसान के बच्चे के लिये इस तरह माँ की पिस्तानों से मुँह लगाकर दूध पीना दूसरे जानदारों के निकाले हुये और बैरुनी फ़िज़ा से मुतअस्सिर दूध के पीने से कहीं ज़्यादा मुफ़ीद और ताक़त बख्श होता है । इंसानी जिस्म से मिलता-जुलता

Scanned by CamScanner

दूध तिब्बी तहक़ीक़ से अगर कोई मालूम हुआ तो वह गधी का दूध है । लेकिन जब कुदरत ने बच्चे के पहलू में ही बेहतरीन और अनसब दूध का चश्मा बहा दिया हो तो किसी और जगह से बिला वजह व बिला ज़रुरत इससे अदना चीज़ तलाश करना कुदरत की अताकरदा नेमत के ठुकरा देने और इसका मुक़ाबला करने और बच्चों कि सेहत से बेइतनाई बरतने के मुतरादिफ़ है ।

आज कल बन्द डिब्बों का दूध बड़ी तेज़ी से पेश किया जा रहा है और यक़ीनन इसकी तह में तिजारती अग़राज होते हैं, कि बग़ैर हाथ लगाने के हिफ़ज़ाने सेहत के तमाम उसूल मद्दे नज़र रखते हुये शीर ख़्वार बच्चों के लिये खास तौर पर महफ़ूज़ और तैयार किया गया है । कुछ भी हो हम अपने हवासे खम्सा और कुदरती और जाहिरा हालत को कैसे झुटला और ठुकरा दें।

यूरोपीयन और उनका मआशरा इख़्तियार करने वाले एशियाई व अफ़रीक़ी आदमी इस दूध की बू को नापसन्द करते हैं और कहते हैं कि हमें तो ताज़ा दूध और बन्द डिब्बे के दूध में बय्यन फ़र्क़ मालूम होता है ।

इसी तरह बन्द डिब्बों की मछली और फलों की बड़ी तारीफ़ की जाती है लेकिन हमारे मुल्क में जहाँ ये चीज़ें ताज़ा मयस्सर आ जाती हैं । इन्हें बिलअमूम पसन्द नहीं किया जाता । इस क़िस्म की मछली या गोश्त दस्तरख़्वान पर आ जाये तो बाज़ लोगों का जी मतलाने लगता है । इन चीज़ों में एक बदबू सी होती है जिसे हम लोग बर्दाश्त नहीं कर सकते । लेकिन उन्हें महसूस नहीं होती । डेन्मार्क और होलैन्ड का डिब्बों का पनीर जब काटा जाता है तो इसमें बसा औक़ात कीड़े होते हैं । मगर वह लोग मज़े ले लेकर उसे खाते हैं ।

लेकिन अतिब्बा और डाक्टरों का वह तबक़ा जिसके पेशे नज़र तिजारती अग़राज नहीं होते यह राय रखता है कि डिब्बों में बन्द हर किस्म की खुराक दूध, मछली, गोश्त, फ़ल वग़ैरा के मुक़ाबले में ताज़ा चीज़ें बहुत ज़्यादा होती हैं और सेहत बख़्श होती है । बल्कि वह तो यह कहते हैं कि बन्द डिब्बों की गिज़ायें बहुत से अमराज़ खास कर सरतान पैदा करने का मौजब है ।

कुदरती गिज़ा के तर्क कर देने से नश-व-नुमा का क़वा पर बुरा असर

Scanned by CamScanner

पड़ता है और हम यहाँ तक कहने के लिये तैयार है कि माँ के दूध पर पलने वाले बच्चे अगर मयाना रवी की ज़िन्दगी बसर करते रहें तो दूसरे दूध पर पलने वाले बच्चों की निस्बत सिल व दिक वग़ैरा जैसे मुहलिक अमराज़ का बहुत कम शिकार होते है । इनके जिस्म में मुखतलिफ़ अमराज़ का मुक़ाबला करने की कुव्वत मौजूद होती है ।

बाअज़ तजरिबा कार माएं यह कहा करती हैं कि दूध तर्क कर देने के बाइस बच्चे की सेहत पर बुरा असर पड़ने के अलावा एक ये नुक्स भी इस में पैदा हो जाता है कि माँ से उसे कम लगाव होता है और वो माँ-बाप के अतवार से कम हिस्सा पाता है यही नुक्ता अकबर इलाहाबादी ने अपने एक शेर मे बयान किया है ।

तिफ़्ल में बू आये किया माँ-बाप के अतवार की
दूध तो डिब्बे का है तालीम है सरकार की

मां का दूध तर्क करने से एक बड़ा इक़तेसादी नुक़सान भी होता है और इसके साथ बच्चे की सेहत भी खतरे में पड़ जाती है ।

ऐसी सूरत में मुफ़लिस और मुतवस्सितुल्हाल घरानों में शीर ख्वार बच्चे के लिये हर हालतं उस्र व यस्र में हर क़ीमत पर अच्छा और उमदा दूध मुहय्या करना पड़ता है । गरम और मरतूब ममालिक में जहां दूध चन्द घंटे भी महफूज़ नहीं रह सकता यह मसला और ज़्यादा मुशकिलात पैदा करता है।

क़ुदरत ने जब मां की जिस्मानी बनावट ऐसी बनाई है कि वह खुद कोई भी ग़िज़ा अपने घराने के रिवाज और इस्तेताअत के मुताबिक़ भी खाये तो उसका एक हिस्सा उसकी जिस्मानी ताक़त के क़याम के लिये एक हिस्सा बचचे के लिये मुनासिब मिक़दार में दूध पैदा करने के काम आता है । तो क्या वजह है कि घर के इखराजात बढ़ाने और मान के लिये दूसरा दूध संभाल-संभाल कर रखने का दर्दे सर मोल लिया जाये और क़ुदरत के पैदा करदा सामानों से फ़ायदा न उठाया जाये । मां चने या सूखे टुकड़े खाकर भी दूध पैदा कर लेगी और बच्चा भूखा न मरने पायेगा । लेकिन दूसरा दूधके किसी वक़्त न मिलने खराब

Scanned by CamScanner

मिलने या खराब हो जाने के बाइस बच्चा भूखा मरेगा । या बीमार हो जायेगा । बड़े तो रोज़ा भी रख लेते है लेकिन बच्चा तो तीन चार घंटे भी सब्र नहीं कर सकता । बाज़ दफ़ा यह भी देखा गया है कि गरर्मी में दूध खराब हो जाता है और मां को इसका इल्म ही नहीं होता और वह इसी तरह ही पिला देती है जिससे बच्चा बीमार हो जाता है । सर्द मुल्कों में हर बार दूध थोड़ा गरम करके बच्चे को पीलाना पड़ता है ।

गरम इलाक़ों में दूध संभालने के लिये बाज़ दानिशमन्द डाक्टर और नौ तालीम याफ़्ता थरमस या रेफ़रीजेटर तजवीज़ करते हैं लेकिन यह लोग दुनिया की आबादी की अकसरीयत का आम मयारे ज़िन्दगी यह राये देते हुये बिल्कुल नज़र अन्दाज़ कर देते हैं । अमीर लोग तो इसका इन्तज़ाम कर सकते है लेकिन जिन्हें नाने शबीना भी नसीब न हो वह सैंकड़ों रुपये का थरमस कैसे खरीद करें और रेफ़रीजेटर तो हज़ारों रुपयों का आता है । फिर थरमस में दूध अगर गमर डाला जाये तो वह बहुत जल्द खराब हो जाता है । हां ठंडा करके बर्फ़ इसमें मिलाकर रखी जाये तो क़ाम आ सकता है ।

माँ का दूध न पीने से दांत भी कमज़ोर पैदा होते हैं और ऐसा इंसान बहुत से अमराज़ का शिकार होता है और दांतो की बीमारियाँ मज़ीद बीमारियों के पैदा करने का मोजब बनती हैं ।

रेहमे मादर मे नुतफ़े क़रार पाते ही बच्चे की गिज़ा शुरु हो जाती है । और आहिस्ता-आहिस्ता वह अन्दर ही अन्दर नौ माह तक नश व नुमा पाता है । यह गिज़ा जैसा कि हम बता चुके हैं माँ के जिस्म का एक हिस्सा होता है । बच्चे के पैदा होते ही उसे दूसरी गिज़ा देना यक़ीनन उसकी सेहत पर बुरा असर डालता है वह तो बहुत ही नाज़ुक व ज़ईफ़ होता है । एक मज़बूत व तवाना जवान की गिज़ा जिसका वह आदी हो यक दम बदल दी जाये तो वह बीमार हो जायेगा । 1943 ई0 के क़हते बंगाल में वहाँ के बाशीन्दों को जो सुब्ह व शाम चावल खाने कि आदी थे मज़बूरन गन्दुम की रोटी खानी पड़ी । जिसका नतीजा यह हुआ कि वहाँ पेचीश और दूसरे अमराज़ ने ख़तरनाक वबाइ सुरत इख़्तियार कर ली और लाखों लुक़्म-ए-अजल हुये ।

फिर यह ज़माना ऐसा है कि ज़रुरीयाते ज़िन्दगी में से किसी न किसी ज़रुरत का हर मुल्क किसी दूसरे मुल्क का मुहताज है । अगर एक अनाज और फ़ल पैदा करके दूसरे मुल्कों को मुहय्या करता है तो वो खुद गोश्त और दूध के लिये किसी दूसरे मुल्क के सामने हाथ फैलाता है । आज कल अमन व अमान क़ायम रहे तो दुनिया एक सिरे से दूसरे सिरे तक नक़ल व हमल के जराये में बड़ी तरक़्क़ी और सहूलत के बाइस खुराक व ज़रुरीयाते ज़िन्दगी जल्द अज़ जल्द पहुँचती रहती है । जंग छिड़ जाये तो शहरों का नहीं मुल्कों बल्कि बर्रेअज़मों का बिला क़ैद या मुहासिरा इतना वसीअ और ऐसा मुअस्सर हुआ करता है कि महसूर ममालिक तक किसी क़िस्म का ज़रा भर सामान भी बहर-व-बर या फ़िज़ा के ज़रीये पहुँच नहीं पाता ।

गुज़िश्ता दो आलमी जंगों में वह यूरोपीन ममालिक मसलन इंग्लिस्तान फ़रान्स वग़ैरा जो हाईलैन्ड, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया वग़ैरा से दूध गोश्त वग़ैरा बरआमद किया करते थे बवजहे मुअस्सर जर्मन मुहासिरा के सख़्त मुश्किलात में फंस गये । हज़ारहा मायें बेचारी भूखे बिलबिलाते शेरख्वार बच्चे गोदों में और बर्तन हाथों में लिये शदीद सर्दी, बारिश या बर्फ़ बारी में क़तारें बनाये दूध के डिप्पीओं के सामने रोज़ाना खड़ी नज़र आतीं । यह दर्दनाक नज़ारे देखे नहीं जा सकते थे ।

लेकिन यह मुसीबत ज़्यादा ख़तरनाक सूरत इख़्तियार कर लेती है जब मुल्क में नक़ल व हमल के ज़राये रेलवे, बस सर्विस, बहरी जहाज़ों, गोदियों वग़ैरा के मज़दूर आम हड़ताल कर देते हैं । दुश्मन के मुहासरा से तो ग़ैर मुल्की दरआमद बन्द हो जाती है । लेकिन मुल्क में किसी मुअस्सर हाड़ताल की सूरत में न सिर्फ़ दरआमद बन्द हो जाती है बल्कि अन्दरुने मुल्क में ज़रुरीयाते ज़िन्दगी का एक मक़ाम से दूसरे मक़ाम तक पहुँचाना ना मुमकिन हो जाता है ।

पहली आलमी जंग से लेकर अब तक तक़रीबन हर छोटे बड़े मुल्क को इस क़िस्म की हड़तालों से वास्ता पड़ चुका है । लंदन, पेरिस, न्यूयार्क वग़ैरा में ऐसे हालात में दूध की बहम रसानी रुक जाने के बाअस लाखों बच्चे भूख से बिल्बिलाने लगते हैं और दूध ऐसी ज़रुरीयाते ज़िन्दगी में शामिल होता है जिन्हें अव्वलीन और तरजीही हैसीयत हालिस होती है ।

Scanned by CamScanner

लेकिन अब तो इतने तबाह कुन और हिलाकत खेज़ जंगी हथियार इजाद हो चुके है और दिन-ब-दिन इसी जानिब दुनिया तरक्क़ी करती चली जा रही है कि गुज़श्ता आलमी जंगों डेनमार्क, हाईलैंड वग़ैरा जैसे छोटे-छोटे मुल्क अगर चन्द घंटों में मग़लूब हुये थे तो अब रुस और अमरिका जैसी ताक़तें एक झपक में बुन्यादों से हिल जायेंगी । इनका निज़ामे हुकूमत दरहम-बरहम हो जायेगा न खुराक व ज़रुरीयाते ज़िन्दगी के डिपो रहेंगे और न डिप्पीओं वाले और ज़िन्दा रह जाने वाले दूध पीते बच्चों की ज़िन्दगी रहने वाली मायें अपने जिगर गोशों को भूख से बिलक्ता और तड़पता देखकर बिल्कुल बेबस होंगी और बच्चे के लिये कुदरत के पैदा करदा चश्म-ए-शीरीं के सिरे बन्द कर देने की अलमनाक सज़ा भुगतेंगी ।

यूरोपीन तमद्दुन के दिलदादा अफ़रीकी और ऐशयाई लोगों ने भी मग़रिबी ममालिक के ताजिरों के बड़े वसीअ प्रोपेगन्डा से मुतअस्सिर होकर कुदरती गिज़ा तर्क करके दर आमद शुदा बन्द डिब्बों का दूध बच्चों को पीलाना शुरु कर दिया है और खवाह मख़वाह की दर्द सरी मोल ली गई है ।

बेशक गुज़िश्ता ज़मानों में ज़ी इस्तेताअत लोग थोड़ा अर्सा माँ का दूध पिला कर बच्चे के लिये कोई और औरत दूध पीलाई रख लिया करते थे और कम इस्तताअत लोग जो हमेशा माँ का दूध ही पीलाया करते जब बच्चे की माँ बीमार होती या मर जाती बजाये किसी दूसरी औरत का दूध पीलाने के किसी जानवर बकरी या गाय का दूध पीलाया करते थे । मगर हमेशा मां के दूध के बाद किसी दूसरी औरत के दूध ही को तरजीह दी जाती थी। अब तो रोज़े अव्वल से बिला वजह व बिला ज़रुरत डिब्बे का दूध शुरु कर दिया जाता है ।

बाज़ लोग यह भी कहा करते हैं कि दूध पीलाने से माँ की सेहत पर बुरा असर पड़ता है । क्या कुदरत को यह इल्म न था और उसने इसके बदन में यह नेज़ाम ख्वाह मख़वाह पैदा कर दिया था । इनसानी जिस्म में कोई अज़्व, कोई तरतीब व तरकीब बिला वजह और बेकार नहीं है और किसी के मुअत्तल होने से दूसरे आज़ा पर भी असर पड़ता है बाज़ हिन्दू जोगी एक अर्सा तक

Scanned by CamScanner

अपना बाज़ू खड़ा रखकर खुश्क करके उसे बिल्कुल बेकार कर देते हैं । इसका असर जिस्म की आम सेहत व ताक़त पर भी पड़ता है । इसी तरह क़ुदरत के पैदा करदा दूध के उन सिरों का बन्द कर देना सेहत पर असर अन्दाज़ हुये बग़ैर नहीं रहता । अगर किसी औरत की जवानी उसके तर्क कर देने से लम्बी होती है तो सिर्फ़ तीन चार साल । फिर वह ढलनी शुरु हो जाती है । जिन की औलाद ही पैदा नहीं होती वह भी आख़िर उसे खो ही बैठती है और मसनूई ज़राये से बांझपन इख़्तियार करने वाली औरतों की अधेड़ उम्र में सेहत बिलअमूम बर्बाद हो जाती है ।

यह आम मुशहिदा है कि मयाना रवी की ज़िन्दगी बसर करने वाली और बच्चों को अपना दूध पीलाने वाली माओं की उमरें लम्बी और सेहतमन्द होती है।

सान-ए-हक़ीक़ी जिस के इल्म में तमाम ज़माने हैं और जो नौए इनसान के हर ज़माने में मुश्किलात व मसाइब पेश आने वाले ख़ूब जानता है। अपनी किताबे हकीम कुरआने करीम में फ़रमाता है ''इनसान को उसकी मां तकलीफ़ से उठाये फ़िरी और तकलीफ़ से ही उसे जना और उसके इस तरह उठाये फिरने और दूध पीलाने का अर्सा तीस महीने का हुआ करता है''। यानी वह अर्सा जिसमें एक बच्चा मां के गोश्त पोस्त और ख़ून से परवरिश पाता रहता है । तीस माह या ढाई साल का हुआ करता है । हमल के आठ नौ माह निकाह का बाक़ी अर्सा तक़रीबन दो साल का होता है जैसा कि एक और जगह फ़रमाया ''मायें अपने बच्चों को दो साल दूध पीलाया करती हैं'' । इस अर्सा के दौरान में बच्चे किसी हद तक और इसके बाद कुल्लीयतन दूसरी गिज़ा खाना शुरु कर देते हैं ।

इस लिहाज़ से कुरआनी तालीम पर अगर अमल किया जाये तो बहुत से खांगी ज़िन्दगी से मुतअल्लिक इक़्तेसादी और दूसरी मुश्किलात हल हो सकती है और बच्चे कुदरती गिज़ा से परवरीश पाकर सेहत मन्द ज़िन्दगी हासिल कर सकते हैं ।

एक और अमर भी क़ाबिले ग़ौर है । शीरख़्वार बच्चे को मां का दूध छुड़ा

Scanned by CamScanner

कर जो दूसरा दूध पीलाया जाता है वही और इसी मिक्दार में अगर मां को पीलाया जाये तो मां की सेहत पर बहुत अच्छा असर पड़ेगा और बच्चा भी बैरुनी दूध के बदअसरात से महफूज़ रहेगा ।

नोट :- इस वक्त तमाम माहिरीन डिब्बे के दूध को सफ़ेद ज़ेहर के नाम से याद करते हैं ।

(इस्लामी तरज़े मआशरत और माहिरीन)

तिजारत और ताजिर का किरदार जदीद साइंस की नज़र में

The Role of the Business & Businessman in the Light of Modern Science

हज़रत मआद (रज़ि0) फ़रमाते हैं हुज़ूरे अक्दस (स0) ने फ़रमाया कि सबसे उम्दा पेशा इन सौदागरों का है कि जो बोलते हैं तो सच बोलते हैं और अगर उनके पास अमानत रखवाई जाये तो ख़यानत नहीं करते और जब वादा करते हैं तो इस वादे के ख़िलाफ़ कभी नहीं करते और जब कोई चीज़ फ़रोख़्त करते हैं तो इसकी बेहद तारीफ़ नहीं करते और और जब कोई चीज़ खरीदते हैं उनकी क़ीमत अदा करने में देर नहीं करते और अगर इनका क़र्ज़ किसी के ज़िम्मे हो तो मुक़रुज़ पर सख़्ती नहीं करते । (बहीक़ी) (उसव-ए रसूले अकरम (स0)

एक दोस्त M.B.A. करने के बाद वापीस लौटे तो मैं इनसे तिजारती राज़ व रमूज़ और अन्दाज़ पूछे कहने लगे ।

"अब तो तमाम यूरप इस बात पर ज़ोर दे रहा है कि गाहक को नफ़ा पहुँचावो और ख़रीदा हुआ माल वापीस ले लो । गाहक को अपने सामान का नुक्स बता दो गाहक से नर्मी और मुहब्बत की गुफ़तगू करो। उसे अपना दोस्त

Scanned by CamScanner

बनाओ और इसकी इज़्ज़त का ख़्याल रखो'' ।

क्या यह उसूल यूरपी साइंस के है या मेरे आप के नबी (स0) के हैं सोचने की बात है !!!

इसलिये आज वह लोग दुनिया की तरक्क़ी के चाँद पर पहुँच गये और हम इसी ज़वाल की गहराईयों में फंसे हुये हैं ।

उलमा-ए कराम और मुफ़स्सिरीन ने अहादीस के हवाले से यह बात लिखी है कि गुलाम और मुलाज़िम को माफ़ किया जाये । उसकी हर काम में रिआयत की जाये । उसके हर काम को टोकने की बजाये उसको तहसीन और दाद दी जाये ।

क्या हम ऐसा करते हैं ? हम अपने मुलाज़मीन को दाद या तहसीन के अल्फ़ाज़ से नवाज़ते हैं । हालांकि यूरप ने यह तरीक़ा इस्तेमाल किया ख़ूब आज़माया और कामयाब हो गये कुछ तवज्जुह फ़रमायें और गौर से आगे पढ़ें।

एक ग्राम सताइश और एक किलो सरज़निश

One gram Praise and one Kilo Reprimamd

एक कम्पनी जिसका नफ़ा तेज़ी से माल तैयार करने पर मौक़ूफ़ था, हैरान थी कि वह हस्बे ज़रुरत माल तैयार करने से आजिज़ थी हालांकि इसकी मशीनरी साज़ व समान बिल्कुल न्या था अफ़सर पर अफ़सर बदले जाते थे लेकिन माल की तैयारी में ख़ातिर ख़्वाह अज़ाफ़ा नहीं हो रहा था ।

हारकर कम्पनी के सदर ने काम के हाहिरीन इन्जिनीयर की ख़िदमात हासिल कीं ताकि वह सूरते हाल का जाइज़ा लेकर मुनासीब मशवरा दे । उसने बहुत जल्द मालूम कर लिया कि कम्पनी साज़ व सामान और बेहतर से बेहतर मशीनरी पर बहुत ज़ोर दे रही है इस बारे में मालूमात क़ौमी तिजारत के रिसालों से भी

हासिल की जा सकती है । इसकी तवज्जुह उन लोगों की तरफ़ नहीं थी जो मशीनरी को चलाते और साज़ व सामान को इस्तेमाल करते थे । डांट-डपट के बावजूद काम में तरक़्क़ी नहीं हो रही थी ।

माहिर कार करदगी ने सदर से कहा अमले को बढ़ाने या बदलने की ज़रुरत नहीं है । ज़रुरत सिर्फ़ इस बात की है कि आप कार कुनान की हिम्मत अफ़ज़ाई करें और इनके काम को सराहा करें । आप हर शुबे को इनचार्ज के साथ शुकरीया अदा करते रहें और वह अफ़सर आप के सलूक और रद्दे अमल से अपने अमले की तारीफ़ करे और इनके काम सराहता और फ़रदन-फ़रदन हर कारकुन की पीठ थपक्ता रहे तो मेरा ख़्याल है कि माल ज़्यादा तैयार होने लगेगा । "मज़दूर ख़ूश दिल कुनद कार बेश"। उसको हर कारकुन में ऐसी कोई न कोई बात तलाश करने की कोशिश करनी चाहिये कि कारकुन की हिम्मत बढ़ती रहे । उसने मुसकुराते हुये अपने बिरीफ़ केस से एक ख़ूबसूरत पोस्टर निकाला और इसको आगे बढ़ाते हुये कहा कि इसको हर शुबा के इंचार्ज की मेज़ पर लगा हुआ होना चाहिये ।

"एक ग्राम हिम्मत अफ़ज़ाई एक किलो सरज़निश से ज़्यादा वज़नदार होती है"।

सदर ने इस मशवरा पर अमल किया तो उसको यह देखकर हैरत अंगेज़ मुसर्रत हुई कि काम की मिक़दार रोज़-ब-रोज़ बढ़ने लगी है और यह हक़ीक़त वाज़िह हो गई कि हिम्मत अफ़ज़ाई तअन व तशनीअ और जब्र व बीखकुनी से ज़्यादा मुअस्सर होती है । इस नये तरज़े अमल से कारकुनान में भी तआउन को तरक़्क़ी हुई । हर कारकुन दूसरे पर सबक़त ले जाने की कोशिश करता था ताकि ज़्यादा से ज़्यादा सताइश का मुस्तहक़ ठहरे ।

क़द्र अफ़ज़ाई करना और हिम्मत बढ़ाना भी एक फ़न है । बाज़ लोगों में यह सलाहीयत दूसरों से ज़्यादा होती है । जैसे बाज़ लोग मौसीक़ी, शायरी और इनशापरदाज़ी वग़ैरा में दूसरों से ज़्यादा मुमताज़ होते हैं । मै ऐसे आदमीयों को जानता हूं जो सिर्फ़ तारीफ और क़दरदानी के भूखे होते हैं फिर तारीफ़ से कौन

Scanned by CamScanner

नहीं ख़ूश होता । मैंने एक इमाम साहिब को देखा उनकी आंखों में मेहरो राफ़्त की जो चमक है मैंने किसी की आंख में नहीं देखी उनकी मुस्कुराहट और मुसाफ़ा में भी वही गर्म जोशी होती है जो किसी के हाथों में दिखाई नहीं देती है । मुमकिन है कि बहुत से लोग उनकी मस्जिद में इसी ग़रज़ से आते हों कि वह उनकी ख़ूश इख़लाक़ी और हर शख़्स पर उनकी ज़ाती तवज्जह से मुतअस्सिर हों । ऐसी सूरत में भी वह मज़हबी इजतेमाअ से कुछ न कुछ बरकत ले कर ही लौटते हैं ।

एक मर्तबा इमाम साहिब ने मेरे मज़्मून की दिल खोल कर दाद दी । यह कोई रसमी तारीफ़ नही थी । हर शख़्स दूसरे की तारीफ़ व तोसीफ़ के ढ़ंग मे ,माहिर नही होता , लेकिन वह मश्क व मज़ाविलत से इस को हासिल कर सकता है लेकिन इस काम मे तरक्की के लिए खुलुस शर्त अव्वल है। ज़माना साज़ी और सुख़न तराज़ी का भांड़ा जल्द या ब देर फूट जाता है। खुलुस में जो तासीर होती है वो अदाकारी में नहीं होती । दूसरो की परेशानी को सिर्फ़ दिल सोज़ी और तवज्जुह से सुनने से भी दिलों को फ़तह किया जा सकता है । दुखे हुऐ दिलो को इससे बहुत सहारा मिलता है । अगर मुमकिन हो तो उन को मूफ़ीद मशवरा देना भी इख़लास व ख़ैर ख्वाही का तकाज़ा होता है ।

एक शुक्रगुज़ार और मेहरबान इंसान हैवानात तक को अपनी तरफ़ माइल कर लेता है । वह दिल आवेज़ मनाज़िर को देखकर भी शुक्रगुज़ारी के जज़्बे से वज्द में आ जाता हैं ।

मेरा एक उम्र रसीदा दौस्त कइ माह से अलील था । वह इस बात पर अनफ़सुदी था कि उस के अज़ीज़ उस की ख़बर नहीं लेते लेकिन कुछ अरसे के बाद उसके बेटे और दूसरे अज़ीज़ो ने जो परदेस में थे तोहफ़े भेजे क़ीमती लिबास भी इन तहाइफ़ में शामील था और माकूल रक़म भी भेजी जिस से वह असाईश के ज़राए को इख़्तियार कर सकता था । मै ने देखा कि वह हैरत अगेज़ तौर पर तन्दुरुस्त हो गया और खुश रहने लगा ।

रस्म व आदत के तौर पर भी मेहर व ताबुज़ के जो जुमले कहे जाते है वह भी तासीर से खाली नहीं होते । शुकिया, मेहरबानी, मिजाज़ शरीफ़ जैसे

Scanned by CamScanner

अलफ़ाज़ के अदा करने में कोई दिक्क़त नहीं होती और न कुछ खर्च होता है लेकिन इतनी सी बात का भी अच्छा असर होता है ।

बच्चो को भी अगर यह सीखाया जाये कि वह मिठाइ या खिलौने का तौहफ़ा मिलने पर शुकरिया के अलफ़ाज़ अदा करें तो वालिदैन को इस से भी मुर्सरत होती है । मुस्कुरा कर बात कर लेने से भी दूसरा भी खुश हो जाता है । बाज़ औक़ात खुश आइन्द अल्फ़ाज़ सुन कर एक अफ़सुरदा दिल इन्सान क़ा ग़म ग़लत हो जाता है । अल्फ़ाज़ मे अजीब जादू है जिस से बहुत से लोग नावाक़िफ़ है या उनके इस्तेमाल मे ग़फ़लत से काम लेते हैं।

(मैन एन्ड़ बिज़नैस)

तिजारत और ताजिर का किरदार

The Role Of Businessman and the Business

खुदा का अपनी मख़लूक़ के साथ यह वादा है कि वो ज़मीन पर चलने वाले हर जानदार के रिज़्क का कफ़ील है । रिज़्क़ सिर्फ़ माल ही नहीं है बल्कि हमारी हर सिफ़त रिज़्क़ है, हमारा खुदा ऐसा राज़िक़ है कि बच्चे के पैदा होने से पहले उसके रिज़्क़ का इन्तेज़ाम कर चूका होता है ।

हम अपने इस हिस्से को हासिल करने के लिये सफ़र, नौकरीयां, कारोबार और दीगर हज़ारों जतन करते हैं ।

आज के तरक्क़ी याफ़ता दौर में हम हर काम में अहले यूरप की तरक्क़ी के उसूलों को अपनाने की कोशिश करते हैं । उनके तरीक़ा कारोबार से हम ऐसे मुतअस्सिर हुये है कि पुराने बिज़्नस रिकार्ड मंगवाकर पढ़े और दर्सगाहों में पढ़ाये जाते हैं असातज़ा बिजनस ऐडमिनिस्ट्रेशन के तालिब इल्मों में फ़ख़्र से उनके कारोबार के अन्दाज़ पढ़ाते है और सिखाते हैं ।

लोग बच्चों को कारोबार करने के तरीक़े सिखाने के लिये अमरिका, बरतानीया

Scanned by CamScanner

भेजवाते है लेकिन कोई इतनी कोफ़त नहीं करता कि अपनी बुनयादी तालीम से इस्तफ़ादा कर ले । अगर सिर्फ़ सीरतुन नबी (स0) और कुरआन का मुतालिआ किया जाये तो वह तमाम तरीके कार हमारा मज़हब हमें कितनी वज़ाहत से सिखाता है, बा आसानी सामने आ जाये । (समझ आ जायें)

अहले यूरप के माहिरीन

European Expert

"Moore," अपनी किताब में कामयाब कारोबारी बनने के लिये वादे की पाबन्दी और इन्साफ़ के साथ फ़ैसले की अहमियत पर ज़ोर देता है ।

वह लिखता है कि कामयाब ताजिर के लिये ज़रुरी है कि वह अपने वादे की पाबन्दी करे इससे इसकी हैसियत और शख़्सीयत में पुरवक़ार अज़ाफ़ा होगा लोग ख़ूशी के साथ उसके साथ कारोबार करेंगे ।

अगर किसी सौदे में कोई तनाज़आ पैदा हो जाये तो इसका फ़ैसला इन्साफ़ से किया जाये । बेशक इन्साफ़ से किया गया फ़ैसला कारोबारी सौदों में आपके लिये सोने का सुतून साबित होगा । लोग आप पर इतमाद करेंगे ।

इस्लाम की रु से

नबीयें करीम (स0) ने फ़रमाया :-

"अपना माल बेचने के लिये कसरत से झूठी क़िस्में खाने से बचो यह चीज़ वक़्ती तौर पर तो फ़रोख़्त की मालूम हो जाती है । लेकिन आख़िर कार कारोबार में बरकत ख़त्म हो जाती है" ।

(मुस्लिम)

एक और जगह इरशाद है :-

"सच्चा और अमानतदार ताजिर क़यामत में नबीयों, सिद्दीक़ों और शहीदों के

Scanned by CamScanner

साथ होगा'' ।

(तिरमिज़ी)

यूरप के एक माहिर "Ross" ने अपनी किताब "Foundation Of Ethics" में लिखता है कि ''सौदे बाज़ी में सच को बुनयादी हैसियत हासिल है दूसरे को वही माल दीजिए जो आप के कार कुन को Job Satisfaction होगी तो आप की Production बढ़ेगी । इसमें मुलाज़िम की इज़्ज़त, उसकी उजरत वक्त पर अदा करना वग़ैरा शामिल है, यह बात एक तवील रिसर्च और सर्वे की कही गई है और यही बात हमारे मज़हब में ज़ोर दे कर कही गई है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) बयान करते हैं कि हुज़ूरे अक़दस (स0) ने फ़रमाया :-

''कि क़ब्ल इसके कि मज़दूर का पसीना खुश्क हो उसे उसकी मज़दूरी दे दो'' ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) बयान करते हैं कि रसूले ख़ुदा (स0) ने फ़रमायाः-

''क़यामत के दिन मै तीन आदमियों का वकील हूँगा और जिसका मैं दुशमन हूँगा उसपर मैं क़यामत के दिन ग़ालिब आऊँगा । एक वह शख़्स जिसने मेरा नाम लेकर अहद और इक़रार किया । फिर उसको तोड़ डाला। दूसरा वह शख़्स जिसने किसी आज़ाद शख़्स को गुलाम बनाकर बेच डाला और उसकी क़ीमत खाई और तीसरा वह जिसने किसी मज़दूर को काम पर लगाया । फिर उसने काम पूरा किया मगर उसको इसकी मज़दूरी न दी''।

(इबने माजा)

इन अहादीसे मुबारका में मज़दूरों की उजरत को इस क़दर जल्द अदा करने का हुक्म दिया गया कि उसका अभी पसीना भी खुश्क न हुआ हो और आप उसकी उजरत अदा कर दें । जब मज़दूरों को अपनी मेहनत का फल इतनी जल्दी और बिन मांगे मिल जाये तो वह क्यों न दिल लगा कर काम करेगा। उसे जब यह यक़ीन होगा कि मेरा मालिक मेरी ज़रुरत और मेरे बहते हुये पसीने को नज़र

Scanned by CamScanner

अन्दाज़ नहीं कर रहा और उसकी नज़र में मेरी मेहनत की क़दर है तो वह अपने काम को और ज़्यादा मेहनत और लगन से करेगा।

मज़दूरों और कार कुनों का रिज़्क़ उन के बाज़ूओं में है । जिस्मानी ताक़त जो कुदरत की अता है । ज़रीया रिज़्क़ भी है, हाथ चलते हैं और पेट पलते है । ''कासिब'' का रिज़्क़ कसब में है ''कासिब'' अमीर हो या ग़रीब वह अल्लाह का दोस्त है ।

कुछ ममालिक में जिन्सयात भी मआशयात का एक हिस्सा है जो गुमराही है गरचे रिज़्क़ से वाबस्ता है गुनाह तो है लेकिन रिज़्क़ का ज़रीया है ।

इस मक़ाम पर मज़हब इनसान की रहनुमाई करता है । मज़हब बताता है कि हलाल किया है, हराम क्या है ।. जाइज़ क्या है, नाजाइज़ क्या है । शवाब क्या है, अज़ाब क्या है । करम क्या है, सितम क्या है । सांस की आरी हस्ती का शजर काट रही है । सांस बन्द हो जाये तो रिज़्क़ की तमाम अफ़ादीयत हमारे लिये हमेशा के लिये ख़त्म हो जाती है । जाइज़ ज़रुरीयात को नाजाइज़ कमाई से पूरा करना हिमाक़त भी है और गुनाह भी। हराम की कमाई पर पलने वाली औलाद लाज़मी तौर पर बाग़ी होगी, बेअदब होगी, गुस्ताख़ होगी, दोहरा अज़ाब है आकिबत भी बर्बाद और औलाद भी बर्बाद।

वादे

Promise

वादे की हैसियत कारोबार में रीढ़ की हड्डी की सी है । ''तजारती इनसेराम का एक माहिर "Perry" अपनी किताब में वादे के मुतअल्लिक लिखता है कि नये बीज़नस मैन के वादे की पाबन्दी की आदत में उसे मुख़्तसर अर्सा में दूसरों से मुख़्तलिफ़ और बेहतर कर सकती है इस कुन्जी के ज़रीये वह कम वक़्त में अपने लिये ज़्यादा से ज़्यादा कामयाबी के दरवाज़े खोल सकता है''।

कुरआन मजीद में ईफ़ाये अहद की सख़्त ताकीद की गई है ।

Scanned by CamScanner

इर्शाद रब्बानी है कि :-

या अय्युहल लज़ी-न आमनू औफू बिलउक़ूद

ऐ इमान वालों अहदों को पूरा करो ।

व औफू बिल अेहदि इन्नल अहदि का-न उसर्ठला

और अहद को पूरा करो बेशक अहद की बाज़ परस होगी ।

जिस मज़हब में वादा के मुतअल्लिक़ इतने सख्स अहकाम हों । इसपर अमल करके ज़िन्दगी गुज़ोरने और कारोबार करने वाले किस तरह नुक़सान का मुंह देख सकते है । आम देखा गया है । कारोबारी ज़िन्दगी में वादा ख़िलाफ़ीयाँ अदालतों में अज़ीयत नाक मराहल तै कराती हैं क़ानून ने इस क़ानून ख़िलाफ़ी की अलग अन्दाज़ में सज़ा मुक़र्रर कर रखी है ।

अहादीसे मुबारका में मुनाफ़िक़ की जो निशानीयां बयान की गई हैं उनमें एक यह भी है कि वादा करे तो इसके खिलाफ़ करे ।

हुज़ूरे अक़दस (स0) ने अपनी ज़िन्दगी में वादे की हमेशा पासदारी की। इसका एक मालूली वाक़्या ग़जव-ए-बदर के मौक़ा पर देखने में आया ।

"ग़ज़वह बदर के मौक़ा पर जब मुसलमानों की तादादे दुशमन के मुक़ाबले में एक तिहाई से भी कम थी । दो सहाबी मक्का से मदीने आ रहे थे रास्ते में कुफ़्फ़ार ने उन्हें घेर लिया । और इस वादे पर छोड़ा कि जंग में हिस्सा नहीं लेंगे यह दोनों ख़िदमते अक़दस में हाज़िर हुये तो तमाम वाक़िया बयान किया गया, हुज़ूरे अक़दस (स0) ने फ़रमाया तुम वापीस जाओ हर हाल में हम वादा पूरा करेंगे हमको सिर्फ़ अल्लाह की मदद चाहिये" ।

क़र्ज़

Loan

बसा औक़ात इनसान को अपनी कारोबारी ज़रुरतों या तंग दस्ती के बाइस क़र्ज़ लेने की ज़रुरत पेश आ जाती है और इस तरह दो इनसानों के दरमियान

Scanned by CamScanner

एक ख़ास क़िस्म का तअल्लुक़ क़ायम हो जाता है । इस्लाम में क़र्ज़ दारों और क़र्ज़ ख्वाह दोनों के हुक़ूक़ का ख़्याल रखा है ।

एक तरफ़ क़र्ज़ खवाह को हिदायत की गई है कि अगर क़र्ज़ दार तंग इस्त है और वक़्त मुअय्यिना पर क़र्ज़ अदा नहीं कर सकता तो वह उसे मज़ीद मुहलत दे और अगर वह रज़ाये इलाही के ख़ातिर उसे क़र्ज़ा माफ़ कर दे तो यह फिर बहुत ज़्यादा फ़ज़ीलत की बात होगी । दूसरी तरफ़ क़र्ज़दार को भी ताकीद की गई है कि जब क़र्ज़ा ले तो इस नीयत से ले कि इसने इसे अदा करना है ।

क़ुरआन में इरशाद है कि :-

"और अगर (तुम्हारा क़र्ज़दार) तंग दस्त हो तो खुलने तक उसे मुहलत दो और अगर सदक़ा करो (यानी क़र्ज़ा माफ़ करो) तो यह तुम्हारे लिये ज़्यादा बेहतर है अगर तुम समझो" ।

(अलबक़रा)

हुज़ूरे अक़दस (स0) ने फ़रमाया :-

"जिस ने किसी तंग दस्त (क़र्ज़दार) को मुहलत दी या उसको क़र्ज़ा माफ़ कर दिया अल्लाह तआला उसे अपने साये में जगह देगा"।

(मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) बयान करते है कि रसूले खुदा (स0) ने फ़रमाया:-

"कि मालदार (क़र्ज़दार) का क़र्ज़ की अदाईगी में टाल मटोल करना जुल्म है" ।

(बुख़ारी)

(उसव-ए हुस्ना और इल्मे नफ़सीयात)

Scanned by CamScanner

बुरे असरात वाली दवाओं से मना और जदीद साइंस

-हुज़ूरे अक्दस (स0) ने बुरे असरात वाली दवाओं से मना फ़रमाया ।

(नसाई)

यह एक सीधी सी बात है कि जो भी इलाज करेगा वह शिफ़ा की नीयत ही से करेगा । लेकिन इस बात में बहुत सी अदवीया ऐसी भी जिनके ज़ैली और नाखूशगवार असरात होते हैं । एक मुस्तन्द मआलिज दवाओं के बुरे असरात से वाकिफ़ होता है और अगर वह किसी मरीज़ की हालत के पेशे नज़र कोई बुरे असरात वाली दवाई देने पर मजबूर हो जाये तो इसके साथ कैफ़ीयत की इसलाह करने वाली दवाइ भी शामिल कर देता है जिससे मरीज़ बुरे असरात से महफ़ूज़ हो जाता है लेकिन बाज़ अदवीया ऐसी हैं जो हरहाल में बुरी है जैसे चंबल के इलाज में **Methorexate** की गोलियां या दम्मा और इलर्जी में **Cortisone** के मुराक्किबात । बिल्कुल यही हालत शराब का अदवीया में इस्तेमाल है या उसे बतौर दवा इस्तेमाल करना नुक़सान देह है।

इसी तरह अब जदीद साइंस पेनसेलिन के इस्तेमाल को तर्क कर रही है क्योंकि इसके नुक़सान इसके फ़वायद से बढ़कर सामने आते हैं ।

हराम चीज़ों में शिफ़ा नहीं

इस्लाम ने हराम और हलाल की तक़सीम करके उम्मत को एक अज़ीम रहमत और आफ़ीयत से माला माल कर दिया है । मौजूदा साइंस अब इन हराम चीज़ों की तहक़ीक़ करके वापस हलाल की तरफ़ दौड़ रही है ।

यूरप शराब और सूद को जितना पसंद करे लेकिन मौजूदा तहक़ीक़ ने इस बात को तसलीम कर लिया है यह दोनो चिज़े इन्सान और इन्सानियत के लिए

Scanned by CamScanner

ज़हरे क़ातिल से कम नहीं है ।

आज दवाईयों में शिफ़ा क्यों नहीं । दरअसल यह दवाएं यूरप और मग़रिबी ममालिक से बन कर आती हैं और इनके अन्दर ऐसी हराम चीजें मौजूद हैं जिनमें अल्लाहतआला के यहाँ से शिफ़ा नहीं बल्कि वईद और अज़ाब है ।

दुनिया जहान की जो हराम, मकरुह और ग़लीज़ चीज़ एलोपैथी की अदवीयात में मौजूद है वह शायद किसी और चीज़ में न हो ।

अब हम हर रोज़ नई अदवीयात बदलते हैं लेकिन अफ़ाक़ा नदारद ।

एक साहिबे मारफ़त बुजुर्ग फ़रमाने लगे कि आज हम हराम माल से हराम दवाई ख़रीद कर सेहत मन्द होना चाहते हैं ऐसा नामुमकिन है । फिर फ़रमाने लगे लिबास हराम, बिस्तर, मकान और पानी हराम इन तमाम हरामों में सकून नहीं अब सकून के लिये हराम अदवीया का सहारा लेते हैं लेकिन इनमें भी सकून मयस्सर नहीं हालांकि सकून हलाल में है ।

हज़रत उम्मे दरदा (रज़ि0) बयान फ़रमाती हैं कि हुज़ूरे अकरम (स0) ने फ़रमाया :-

"अल्लाह तआला ने बीमारीयां नाज़िल फ़रमाते हुये उनका इलाज भी नाज़िल किया है । इसलिये इलाज करते रहना चाहिये । अल्बत्ता हराम चीज़ों से इलाज न किया जाये" ।

तारिक़ बिन सवीद और दूसरे इत्तबा ने इलाज के लिये अंगूर की शराब के बारे में दरयाफ़्त किया तो नबी (स0) ने फ़रमाया :-

ला शफ़आ फ़ीलहराम

"हराम चीज़ो मे शिफा नही होती"

हराम जानवरों के गोश्त, खून, शराब, मुनशियात और ज़हरीली अदविया मे शिफ़ा नही है । चन्द साल पहले तक डाक्टर नमुनिया के मरीज़ के लिये बरान्डी पीलाते थे । मगर अब यह बात साबित हो गई है बरान्डी जिस्म की कुव्वते मुदाफ़िअत को ख़त्म करके मरीज़ की हिलाकत का सबब बन जाती है।

Scanned by CamScanner

इसलिये अब गै़र मुस्लिम डाक्टर भी बरान्डी को तर्क कर चूके है । सूअर के लबलबा से बनने वाली इन्सूलिन ज़ियाबितिस के मरीज़ के लिये शिफ़ा का बाइस न बन सकी और अब मुतरुक हो गई है ।

हराम की साइंसी हैसियत

The Scientific Position of Haramm

मुरदार Carrion

कुरआन मजीद ने उस जानवर को जो अपने आप मर गया हो खाने के नाक़ाबिल क़रार दिया है । जब कोई जानवर बीमार हो कर मरता है तो ऐन मुमकिन है कि उसका गोश्त खाने वाले को भी वह बीमारी लग जाये । जानवरों की ज़्यादा तर बीमारियां जरासीमी या वाइ़रस की शोज़िश से होती हैं ।

सबसे पहला इमकान यह है कि मूर्दा जानवर के जिस्म से जरासीम खाने वाले के जिस्म में दाखिल होकर उसे बीमार कर दें । इस बीमारी के ख़तरनाक होने की ताज़ातरीन शहादत जानवर की मौत है । जानवरों की कई बीमारियों के जरासीम इनसानों के लिये खतरनाक नहीं होते लेकिन इनके गोश्त में सड़ान्द तो बहर हाल होगी जो कि किसी भी तन्दरुस्त फ़र्द को बीमार कर सकती है ।

मरने के बाद जानवर का पोस्ट मार्टम करके बाइस मौत का पता चलाया जा सकता है । बीमारि का पता चलने के बाद यह भी पता चल सकता है कि यह बीमारी खाने को मुतअस्सिर कर सकती है या नहीं । इसकी मिसाल मुर्गी से लीजिए । अगर आप की मुर्गी मर जाये तो उसे पहले जानवरों के किसी डाक्टर के पास ले जायें जो इसका पोस्ट मार्टम़ करे फिर जिस्म के कुछ हिस्सों का खूर्दबीनी मुआईना करजाइये । इन तमाम कामों के एखराजात और वक़्त को तवज्जह में रखने के बाद फ़ैसला आसान है कि जो जानवर किसी बीमारी से

Scanned by CamScanner

मर गया उसका गोश्त खाना किसी तन्दुरुस्त इनसान के लिये महफ़ूज़ नहीं ।

मुर्दा जानवर के गोश्त में एक और अहम मस्ला ख़ून का है । जानवर को जब ज़बह किया जाता है तो उसके जिस्म का सारा ख़ून निकल जाता है । मुर्दार के जिस्म में उसका सारा ख़ून अन्दर मौजूद होता है जिससे गोश्त जल्द खराब होता और गोश्त में कीमयावी तौर पर ऐसे ज़हरीले अनासुर पैदा होते हैं जिनका इस्तेमाल तन्दुरुस्ती के ख़िलाफ़ है ।

ख़ून

Blood

कुरआन मजीद ने ख़ून को हराम किया है एक जगह इसकी वज़ाहत यूँ फ़रमाई कि ख़ून से मुराद वह ख़ून है जो बहने की सलाहियत रखता हो ।

किसी ज़िन्दा जिस्म से निकलने के बाद ख़ून फ़ौरन जम जाता है । जम जाने के बाद जो लोथड़ा Clot बनता है इसमें मौजूद लहमियात को हज़्म करने वाले जौहर इनसानी मेदे में नहीं होते । बिल्ली, कुत्ता, शेर, चीता, भेड़िया, वग़ैरा ख़ूनख़्वार जानवरों के जिस्म में नहीं होती । इसलिये अगर कोई इनसान ख़ून पीयेगा तो ख़ून इसके मादे में जा कर जम कर वहाँ हज़्म करने वाले जौहरों को भी नाकारा कर देगा । इस तरह ख़ून न सिर्फ़ यह कि खुद हज़्म न होगा बल्कि अपने बाद आने वाली ग़िज़ा को भी नाक़ाबिल हज़्म बना देता है । निज़ामे इन्हज़ाम को कुछ अर्सा के लिये ख़राब करने के बाद जिस्म आख़िर कार ख़ून को बाहर निकाल देता है । ऐन मुमकिन है कि इस अमल के दौरान क़ोलंज की शिकायत भी पैदा हो जाये ।

माहिरीन को यह पता चले ज़्यादा अर्सा नहीं गुज़रा कि इनसानी जिस्म में ख़ून को हज़्म करने की इस्तअदाद नहीं होती । लेकिन हज़ारों साल पहले कुरआन मजीद ने ख़ून पीने को हराम क़रार दिया है । बल्कि इस ज़िम्न में फ़न्नी अहमीयत का मसला यह है कि जिस जानवर का ख़ून उसके जिस्म में मौजूद रहे उसका गोश्त जल्द खराब हो जाता है और इसमें कीमयावी ज़हरें पैदा हो

—

जाती है । क्योंकि ख़ून जरासीम एक ही दिन में करोड़ों की तादाद में बढ़ जाते हैं । जब इनकी तादाद ज़्यादा होती है तो इनकी न सिर्फ़ शनाख़्त आसान हो जाती है बल्कि इनपर मुख़्तलिफ़ दवाईयाँ डाल कर देखा जा सकता है कि वह किस से मरते हैं इस तरह बीमारी का बाइस पता चलने के साथ इलाज भी मालूम हो जाता है । इस अमल में पते की बात यह है कि जरासीम ख़ून पर फलते-फूलते हैं । इसलिये ख़ून का इस्तेमाल मुतअद्दिद ख़तरात का बाइस हो सकता है ।

सुअर का गोश्त

Bacon

कुरआने मजीद में वाज़ह और ग़ैर मुबहम अलफ़ाज़ में पाँच मक़ामात पर सुअर के गोश्त को हराम क़रार दिया है । हिन्दू अगर गाय का गोश्त नहीं खाते या सिख अगर मोर नहीं खाते तो वह उसे मुतबर्रक मानते है । इस्लाम ने सुअर के गोश्त को नजिस होने की वजह से हराम किया है । चूंकि इस्लाम का कोई हुक्म हिकमत से खाली नहीं होता इसलिये यक़ीन और इमान का तक़ाज़ा तो यह है कि इसपर मिन व अन यक़ीन कर लिया जाये लेकिन वह लोग जो वजूहात जानने का शोक़ रखते हैं या जो इस्लाम को नहीं मानते और वह हैरान है कि आज कल के पले हुये सुअर, जिनका गोश्त डाक्टर चेक करने के बाद खाने की इजाज़त देते हैं कैसे मुज़िर हो सकता है ?

सुअर को वह तमाम बीमारियाँ लाहक़ होती हैं जो इनसानों को हो सकती हैं । मसलन इसकी ख़ून की नालियों में चर्बी आती है । इसे दिल का दौरा पड़ता हे । इसे बलड प्रेशर होता है और जिस घर में सुअर मौजूद हो या जो उसे खायें उसका वजूद उनके लिये हमा वक़्त ख़तरे का बाअस यूं होगा कि वह अपने घूमने फिरने के दौरान बाहर से मुतअद्दिद बीमारियाँ ला सकता है और यह बीमारियां वह अपने घर वालों को मुनतक़िल करने की अहलीयत रखता है । जबकि गाय, भैंस, बकरी और मुर्गीयों की अकसर व बेशतर बीमारियां इनसानों

Scanned by CamScanner

पर असर अन्दाज़ नहीं होतीं । जैसे कि मेरी तमाम मुर्गीयां रानी खेत की मुतआद्दी बीमारी से मर सकती हैं लेकिन इसके बावजूद मेरे अहले खाना को कोई खतरा न होगा । जबकि अगर इस क़िस्म की कोड़ बीमारी सुअरों में फ़ैल जाये तो इनको रखने और खाने वाले महफूज़ न होंगे।

सुअर को हैज़ा होता है । चेचक निकलती है । जिल्दी बीमारियाँ होती हैं । इसकी आतों में मुतअद्दिद अक़साम के तूफ़ैली कीड़े परवरीश पाते हैं। जिनके अन्डे मखियों के ज़रीये क़रीब के लोगों तक चले जाते हैं । सुअर खुराक के लिहाज़ से हमा खोर है जिसे **Omnivorous** कहते हैं । यह सब्ज़ी भी खाता है और खूंख्वार भी है । यह अपना पाखाना भी खा सकता है और अपने बच्चे भी । जंगली सुअरों में बावला पन भी पाया जाता है । इसकी आदात क़रीब रहने वालों और इसका गोश्त खाने वालों के लिये मुस्तक़िल खतरे का बाइस रहती हैं ।

जानवरों के अजसाम पर परवरिश पाने वाले तुफ़ैली कीड़ों की एक क़िस्म **Teenia Solium** ज़्यादा तौर पर सुअर में मौजूद होती है । यह कीड़ा खुराक के साथ बलकि जिस्म में किसी भी सुराख के रास्ते दाखिल होकर आतों, गोश्त या जाड़ों में घर बना लेता है । अगर यह आतों में हो तो इसे मुतअद्दिद दवाओं की मदद से हिलाक किया जा सकता है । मगर जब गोश्त में जाकर अपने इर्द-गिर्द एक हिफ़ाज़ती दिवार बना लेता है तो फिर किसी दवाई का इसतक पहुंचना मुमकिन नहीं रहता । यही मुश्किल जोड़ों में बैठ जाने वाले कीड़ों से होती है । गोश्त या जोड़ में इस कीड़ें की मौजूदगी मुसलसल दर्द, वरम, अकड़न पैदा करते हैं । मसलन अगर यह टांग के गोश्त में कहीं जा गुज़रें हों तो वह जिस्म का बोझ बर्दाश्त नहीं करती और दर्द की वजह से नींद और चैन उड़ जाता है ।

इसी क़िस्म का एक और तुफ़ैली कीड़ा **Teenia Saginata** है । यह सुअर के अलावा गाय के गोश्त में भी मिलता है । लेकिन यह इनसानी जिस्म में ज़्यादा तर खाने के साथ दाखिल होता है । चूंकि गाय का गोश्त हमेशा पका कर इस्तेमाल होता है इसलिये गाय के गोश्त के ज़रीये जिस्म में इसका दाख़िला

मुमकिन नहीं रहता । रहबरे कामिल (स0) ने इस ख़तरा को भी महसूस फ़रमाया और गाय के दूध और मक्खन को पसन्द करने के बावजूद गाय के गोश्त को बीमारी का बाइस क़रार दिया ।

हज़रत अब्दुल्लाह मसूद (स0) रवायत फ़रमाते है कि नबी (स0) ने फ़रमाया :-

"तुम्हारे फ़ायदे के लिये गाय का दूध है । क्योंकि यह दूध और इसका मक्खन मुफ़ीद दरवायें हैं । अलबत्ता इसके गोश्त में बीमारी है इससे बचो"।

तक़रीबन यही अल्फ़ाज़ मुहम्मद अहमद ज़हबी ने हज़रत सुहैब (रज़ि0) से रवायत किये हैं जबकि हज़रत मलीकि बिन्नते उमर (रज़ि0) रिवायत फ़रमाती है कि रसूल (स0) न इरशाद फ़रमाया :-

"गाय के दूध में शिफ़ा है इसका मक्खन एक उम्दा दवाई है और इसका गोश्त बीमारी का बाइस होता है" ।

यहाँ गाय के गोश्त को हराम नहीं कहा गया । बल्कि मशवरा दिया गया है कि तुम बेशक खालो मगर ऐसा करने से तुम बीमार हो सकते हो ।

गाय के गोश्त के बारे में मुहद्देसीन ने मुतअद्दिद नागवार मुशाहिदात बयान किये हैं जिनकी तफ़सील गोश्त के फ़वायद के सिलसिला में अर्ज़ होगी । अलबत्ता इबने अलक़ीम ने इसे दाइलफ़ील और सरतान का बाइस क़रार दिया है । दाइलफ़ील का मतलब यह है कि जिस्म के बाज़ हिस्सों पर वरम नममूदार होगा यह वरम अलमफ़ाई निज़ाम में तफ़ीली कीड़ों की वजह से रुकावट से पैदा होती है । जिन में से मशहूर **Wucheria Bancrofti Guinea Worm** हैं । अफ़रीक़ा और मिस्र में बलहारज़या एक अहम मूज़ी कीड़ा है। गाय के गोश्त में पाये जाने यह और दूसरे तफ़ीली कीड़ें दूसरे जानवरों की निस्बत सुअर के गोश्त में ज़्यादा पाये जाते हैं ।

आतों और जिगर में पलने वाला एक खतरनाक कीड़ा **Fasciolopsis Buski** सुअर और कुत्ते के जिस्म में पाया जाता है । इसकी वजह से इसहाल पेट दर्द

Scanned by CamScanner

और मौत हो सकते है । यह कीड़ा कुत्तों और सुअरों के क़रीब रहने से इनसानी जिस्म में दाखिल होकर ज़िन्दगी भर की अज़ीयत का बाइस बनता है ।

यूरप में जानवर इतने नहीं होते कि वहां के लोगों की गिज़ाई ज़रुरीयात पूरी हो सकीं इसलिये इनकी रसद आस्ट्रेलीया, न्यूज़ीलैन्ड, चिल्ली, अर्जेंटाइन, केनिया वग़ैरा से दर आमद होता था । जंगे अज़ीम से पहले जर्मनी के लिये गोश्त अर्जेंटाइन से दरआमद होती है । जब यह देखा गया कि वहाँ के सुअर के गोश्त की वजह से लोगों में जोड़ों की बीमारियां पैदा हो रही हैं तो जर्मन हुकूमत ने चाहा कि गोश्त का हर टुकड़ा तरसील से पहले ख़ूर्दबीनी मुआईना से गुज़रे । अगर यह एक मंहगा काम था लेकिन इस ख़तरनाक बीमारी से बचाव की सिर्फ़ एक ही तरकीब मुमकिन थी । चूनांचे जर्मनी जाने वाले गोश्त की क़ीमत में अज़ाफ़ा हुआ और माहिरीन ने हर सपलाई के साथ सरटीफ़ीकेट दिया कि इसमें तुफ़ैली कीड़े नहीं । कुछ अर्सा के बाद देखा गया कि तमाम इहतयातों के बावजूद कीड़ों से पैदा होने वाली बीमारीयों की शरह बदस्तूर वही है जो इससे पहले थी । अब अकसर ममालिक में सुअर का गोश्त तवील तिब्बी मुआइनों के बाद बाज़ार में आता है ।

अगरचे यह सारी पेश बन्दीयां खूश फ़हमी से ज़्यादा कुछ नहीं और अगर हम मान भी लें कि इनकी कोशिशों के बाद गोश्त में अब कीड़े न हों के तो इसके गोश्त की साख़्त में शामिल चर्बी के दाने इस गोश्त को दिल की बीमारीयों में नामुनासिब गिज़ा बना देते हैं ।

कमज़ोर सुअर के गोश्त से भी हिद्दत 544 हरारे पैदा होते हैं जबकि बकरे के गोश्त में यह 245 होते हैं । बहुत से तरीक़े ऐसे है जिन की मदद से इस गोश्त की मज़रत कम की जा सकती हे । सवाल यह पैदा होता है कि जब यह गोश्त आम हालात में महफूज़ नहीं तो फिर ऐसी क्या तकलीफ़ है कि ज़रुर इसी को खाने के क़ाबिल बनाया जाये ? जबकि यह सारा तरद्दुद एक आम आदमी के बस की बात नहीं ।

सुअर का गोश्त खाने से दिल की बीमारियों और बलड प्रेशर का अन्देशा

Scanned by CamScanner

बढ़ जाता है इसे खाने वालों को जोड़ों की तकलीफ़ हमेशा रहती है और सबसे बड़ी चीज़ यह है कि इसे खाने वाला हमेशा बेग़ैरत होता है । इसलिये पूरा यूरप इज़्ज़त के जौहर से महरुम है । (अल्लामा डाक्टर खालिद महमूद का वाकि़या)

गला घोंट कर मारा हुआ

जिस जानवर को गला घोंट कर मारा गया हो इस के जिस्म का सारा ख़ून इसके अन्दर ही रह जायेगा । ख़ून अन्दर रहने की वजह से गोश्त जल्द ख़राब होगा और इस का रंग गहरा सुर्ख होगा । जिसकी वजह से वह बदनुमा और ज़ाइक़ा में खराब होगा ।

साँस की आमद व रफ़्त ज़बरदस्ती बन्द होने की वज से ख़ून में कुछ कीमयावी तबदीलीयां वाक़ेअ होती हैं । जिनकी वजह से गोश्त में ऐसी तबदीलीयां आती हैं लिहाज़ा इसे खाना मुज़िरे सेहत हो जाता है ।

चोट ख्वाह किसी क़िस्म की हो इसके नतीजा में हस्टामीन पैदा होती है। इसकी बदबू गोश्त में बस जाती है । हस्टामीन के असरात और इसके नुक़सानात अलग उनवान तले बयान किये जा रहे हैं ।

बुलन्दी से गिरा हुआ, लाठी से मारा हुआ और टक्कर खाया हुआ जानवर

जब किसी जानवर या इनसान के चोट लगती है तो इस चोट के दर्द और दहशत से जिस्म में कुछ तबदीलियां वाक़अ होती है । मिसाल के तौर पर जब एक शख़्स किसी मोटर से टकराता है तो इसके जिस्म पर कुछ चोटें आती हैं । ख्वाह इसकी कोई हड्डी भी न टूटे या जिस्म का कोई हिस्सा कुचला न जाये इसके बावजूद इस टकराव की दहशत और दर्द से इसका रंग उड़ जाता है ।

Scanned by CamScanner

नब्ज़ कमज़ोर और सुस्त पड़ जाती है ठंडे पसीने आते हैं मुंह खुश्क हो जाता है और सर्दी लगती है । मदहोशी तारी होती है । होटों पर पपड़ियाँ जमने लगती है । उसे तिब में **Surgical Shock** कहते है ।

मरीज़ का बलड प्रेशर गिरने के साथ आँखों की पुतलियाँ फैल जाती हैं। इसको इहसास होता है कि वह भरने वाला है । अगरचे चोट ख़तरनाक न भी हो तो भी इस कैफ़ियत से मौत हो सकती है । यह सूरते हाल, चोट की दहशत और जिस्म के आसाब के कुचले जाने से वाक़अ होती है । वर्ना हम ने फ़सादात और कश्मीर की जंगे आज़ादी में सैकड़ों ज़ख़्मी देखे हैं जिनको गोली लग जाने पर इहसास तक न हुआ । क्योंकि वह सुरअत से निकल जाती है । जबकि इसके मुक़ाबले में किसी का पैर । अगर गड़े के नीचे कुचला जाये तो अज़ीयत, दहशत और दर्द ज़्यादा होते हैं । लाठियों की मार चाकू से ज़्यादा तकलीफ़ देह होती है ।

चोट लगने के बाद हर हिस्सा पर पहले सूर्ख़ी आती है फिर वरम हो जाता है फिर यह जगह नीली पड़ जाती है । यह सब कुछ झिल्लीयों में ख़ून की नालियां फट जाने या इनके फ़ैल जाने से होता है । इसलिये ऐसी चोट लगने के बाद अगर गर्म पानी या ईट से सींकाई की जाये तो वरम ज़्यादा होगा । बल्कि पहले चौबीस घंटों के दरमयान जितना ज़्यादा सेंक किया जायेगा। वरम में इतना ही अज़ाफ़ा होगा क्योंकि गरमाने से खून का दौरा बढ़ता है इसके मुक़ाबले में इसी जगह पर अगर ठंडा पानी रखा जाये या बर्फ़ मिली जाये तो सूजन में हर लहज़ा कमी आती जायेगी । चौबीस घंटों के बाद सींक देने का मतलब यह है कि वहां पर जमा शुदा ख़ून वापस नालियों में चला जाये । कहते है कि चोट लगने के बारे में यह मुशाहिदात जदीद इलमुअमराज़ का एक शानदार कारनामा है ।

पुराने लोगों में चोट लगने के बाद गरम-गरम दूध पीलाने और सेंक देने का रिवाज था । चोट पर लगाने के लिये ऐसी लेप किये जाते हैं जिनसे दौराने ख़ून में इज़ाफ़ा था । इस के बरअक्स जंगे-ओहद के दौरान जब नबी (स0) को

Scanned by CamScanner

कन्द आलात और पत्थरो से ज़ख़्म आए उन के इलाज में सबसे पहला काम ज़ख़्मों को धोना और उन पर बार-बार ठन्ड़ा पानी ड़ालना हुआ। जिस का फ़ायदा यह हुआ कि वहा इनजेमोद ख़ून न हो सका । बेहतर पहली तिब्बी इमदाद की वजह से न तो ज़ख़्मों में सोज़िश हुई न ही वरम आया और न ही शाक की अलामात ज़ाहिर हुयें ।

चोट लगने के बाद और दहशत के बाइस जिस्मानी बाफ़तो में एक किमयावी असर पैदा होता है । सदमे से पैदा होने वाली तमाम अलामात हिस्टामिन के तिब्बी असरात हैं । हत्ता कि हस्सासीयत से पैदा होने वाली जिल्दी बिमारी में भी जिस्म पर पित्ती इस हिस्टामिन की वजह से होती हैं। जब कोई शख़्स जंगल में किसी दरिंदें को देख़ क़र दहशत का शिकार होता है । जब हिस्टामिन पैदा तो दरिंदें इसकी ख़ुश्बू एक फ़ासले से सूंघ सकते हैं । मसलन शेर को जब जंगल में किसी तरफ़ से हिस्टामिन कि ख़ुश्बू महसूस होती हैं तो वो जान लेता हैं कि करीब में कोई ऐसा जानवर मौजूद हैं । जो इस कि मौजूदगी से दहशत में मुबतेला हो गया । वो ख़ुश्बू कि सिम्त सफ़र करता हैं और शिकार को दबोच लेता हैं । हालांकि इब्तेदा में शिकार इस कि दाइर-ए-निंगाह में न था ।

जानवरो में चोट ख़ाने या ख़ास तौर पर कुन्द आला से मजरुह होने के बाद हिस्टामिन कि पैंदाईश की वजह से ख़ून कि नालिया फेल जाती हैं और बलड प्रेशर गिर जाता है गोश्त का रंग गहरा सुर्ख़ हो जाता हैं और इसमें हिस्टामिन कि बू बस जाती हैं । कुरआन मजीद ने बूलंदी से गिरे हुए लाठी से मारे हुऐ और टकराकर गिरे हुऐ ज़ख़मी जानवरो को ख़ाना हराम क़रार दिया हैं । इस्लाम है ।
कि यह पाबंदी ठोस सांइसी हकि़क़त पर बनी
इस्लाम ने इन तमाम कैफ़ीयत का अहाता कर दिया जिन में मजरुह होने के बाद हिस्टामिन पैंदा होती हैं । गोश्त को बद ज़ाइख़ा बद रंग और मुज़िरे सेहत बना देते हैं ।

कुरआन मजीद ने तिब्बी ज़बान में **Blunt Injuries** ज़ख़्म होने वाले जानवरो का गोंश्त हराम करार दे कर अपने मानने वालो के लिए बिमारियों से बचाव

का एक अहम मंसूबा पैशे किया है । हराम जानवरो कि फ़हरिस्त में उन कैफ़ियात को देख कर हम को बहुत पहले यह अहसास हो जाना चाहिए था कि उन तमाम हालात में एक ऐसी क़द्रे मुशतरक है जो इस तरह ज़ख्मी होने वाले जानवरों के गोश्त को खाने वालो के लिए मुज़िर सेहत बना देती है। उन जानवरों को इन्सानी इस्तेमाल के नाक़ाबिल क़रार देना इस्लाम का एक अहम सांइसी इहसान है ।

दरिंदों के खाए हुए जानवर

क़ुरआन मजीद ने हर उस जानवर के गोश्त को हराम करार दिया है जिस को किसी दरिंदे ने फाड़ खाया हो । इसके लिए ज़रुरी नहीं कि दरिंदे ने उस को हलाक भी किया हो । जैसे अगर किसी भैड़ को भैड़िया खाना शुरु करे और लोग आकर इसे बचाले । भैड़ अगरचें ज़िन्दा बचा ली गई लेकिन भैड़िये ने इसके जिस्म में अपने दाँत दाख़िल किए । इस भैड़ का गोश्त इस्लामी तालीमात के मुताबिक़ हराम है ।

जब किसी ज़िन्दा जानवर पर कोई दरिंदा हमला आवर होता है तो दरिंदे कि आमद और इस का हमला जानवर के जिस्म में दहशत के तमाम तिब्बी अफ़आल को अमल में ले आता है । हिस्टामिन की पैदाईश दहशत के साथ-साथ ज़ख्मों, उन कि तकलीफ़ से बढ़ जाती है । इस जानवर के जिस्म में हिस्टामिन कि मौजूदगी ऐसे इन्सानी इस्तेमाल के नाक़ाबिल बना देता है

दरिन्दों के मुँह में बावलापन के जरासीम होते है । शहरों में रहने वाले कुत्तों में भी बावलेपन के जरासीम जंगलो के दरिन्दों के ज़रिए दाख़िल होते है । जब कोई भैड़िया, लोमड़ी, गीदड़, जंगली बिल्ली, चीता, या शेर किसी जानवर को मुँह मारते है तो अपने दाँतो के साथ इस के जिस्म में बावलापन के जरासीम दाख़िल कर देते है । बावलेपन या (Rabiees) इन अफ़सोस नाक बीमारियों में से है जिस का कोई मरीज़ आज तक ज़िन्दा नहीं बचा । जिस शख़्स को बावलेपन का हमला हो जाए किसी भी इलाज से उसकी जान नहीं बच सकती

इस्लाम को इस उमर का इब्तेदा ही से अहसास था के दरिन्दों के ज़रीये फ़ेलने वाले बावलेपन का इलाज मुमकिन न होगा। इस लिए उसने अपने मानने वालो को बावलेपन से बचाव के तीन अहम तरीके बताए।

1-घरों में कुत्ते न रखे जायें। आवारह कुत्ते हलाक कर दिये जाएं।

2-जिस बर्तन में कुत्ता मुँह डाले उसे कम अज़ कम सात मरतबा धोया जाए जिनमें से एक मरतबा मिट्टी से हो।

3-जिस जानवर में कुत्ता और उसकी बेरादरी के किसी दरिन्दे का थूक दाख़िल हो जाए उसे न खाया जाए।

नबी (स०) ने एक हन्गामी हुक्म के तहत मदीना के तमाम कुत्ते हलाक करवा दिए। फिर फ़रमाया कि जिस घर में कुत्ता होगा उसमें रहमत का फ़रिश्ता दाख़ि न होगा। दूसरे अलफ़ाज़ में कुत्ते का वजूद एहले ख़ाने के लिए हमेशा ज़हमत का बाइस होगा।

लाहौर छवानी के एक मोर्डन घराने में "नशी" नामी एक मुख़्तसर सी रुसी नस्ल की कुतिया पली थी। यह घर के तमाम अफ़राद की दुलारी थी। बच्चे तमाम दिन उससे खलते रहते थे और उसे गुस्सा में आने की आदत न थी। इस घराने के एक बच्चा को तशन्नुजी दौरे पड़े। डाक्टरों में तशख़ीस मुशतबाह रही और बच्चा मर गया। चन्द दिनों बाद इसी क़िस्म की अलामात एक और बच्चे में पैदा हुयी। इस बच्चे को हस्पताल में दिखाया तो बावला पन तशख़ीस हुई। यह बच्चा भी फ़ौत हो गया।

कुतिया उनके घर की पली हुई थी, उसे मुतअद्दिद बीमारीयों और बावला पन से बचाव के टीके लगे हुये थे। यह कुतिया घर से बाहर नहीं जाती थी कि दूसरे कुत्तों से बीमारी हासिल कर लेती। उसने किसी बच्चे को नहीं काटा। हमने इस कुतिया का ज़ाती तौर पर मुआईना किया। इसके दांत बड़े छोटे इतने मज़बूत न थे कि किसी को नुक़सान पहुँचा सकें। लेकिन इस की कुर्बत दो बच्चों की मौत का बाइस बनी। मुशाहिदा से मालूम हुआ कि कुतिया के जिस्म में बावला पन के जरासीम मौजूद थे और वह दूसरों को इसमें मुबतला करने की

Scanned by CamScanner

इस्तेदाद रखती थी ।

माहिरीन इल्मे जरासीम में से अकसर का ख्याल रहा है कि यह बीमारी दरीन्दों से इस वक्त हो सकती है जब उनके अपने जिस्म में जरासीम किसी और ज़रीये से दाखिल हो चूके हों और जब जरासीम अन्दर दाखिल हो जायें तो इस दरिन्दा की मौत दस दिन के अन्दर वाक़अ हो जाती है । जरासीम जिस्म में मौजूद रहने के बाद इस दरिन्दा को बीमार न करें । ऐसा मुमकिन नहीं । लेकिन अमरीका में चमगाड़रों की एक क़िस्म दरयाफ़्त हुई है जो खूद मुबतला हुये बग़ैर बावला पन के जरासीम दूसरों तक मुन्तक़िल कर सकती है । माहिरीन को कुत्ते वग़ैरा ऐसा स्टूर होने का इतराफ़ नहीं लेकिन लाहौर छावनी की कुतया ही नहीं । हमारे ज़ाती मुशाहिदा में ऐसे दरजनों वाक़ियात मौजूद हैं जहाँ दरिन्दा खूद बीमार न था और न ही बाद में हुआ मगर दूसरों को बीमार किया । अमरिका में फ़लूरी नामी लड़की का एक शरमनाक वाक़ेआ तिब की किताबों में मज़कूर है । महज़ कुत्ते के कुर्ब की वजह से बावला पन हुआ और इसका कुत्ता बीमारियों से महफ़ूज़ कर लिया गया था और दूसरे कुत्तों से राबता भी न था।

यह मुशाहिदात इस अमर का सबूत हैं कि किसी भी दरिन्दे का थूक बावला पन ही नहीं बल्कि दूसरी कई बीमारियों का बाइस हो सकता है । इसलिये किसी ऐसे जानवर का गोश्त खाना जिसके जिस्म में दरिन्दा का थूक दाखिल हो गया हो, इन्सानी ज़िन्दगी के लिये खतरनाक हो सकता है । नबी (स0) ने इस उसूल को अम्ली शकल अता फ़रमाते हुये कुचली वाले हर दरिन्दे को खाना भी हराम क़रार दिया है । अहादिस में वज़ाहत के लिये लोमड़ी और भेड़िये का ज़िक्र भी मौजूद है ।

हराम चीज़ों की माहियत

इस्लाम ने सिर्फ़ वह चीज़ें हराम की है जिनको खाना इन्सानी सेहत के लिये नुक़सान देह हो सकता है । कुरआन ने उसूल बता दिये है । हुज़ूरे अक़दस (स0) ने इनको मज़ीद वाज़ेह फ़रमाया फ़िकहा जाफ़रीया की किताब ''अलअलूम'' में हराम चीज़ों की एक मुफ़ीद फ़िहरिस्त दी गई है । जिससे दूसरे मसालिक

Scanned by CamScanner

को मामूली इख़्तलाफ़ है वह यह हैं ।

कुत्ता, सुअर, बिल्ली, चूहा, गोह, जोंक, घून्स, कछुआ, शेर, चीता, गर्ग, गैडा, हाथी, रीछ, गीडर, चर्ख, लगड़ बगड़, लोमड़ी, बजू, चील, बाज़, शाहीन, चमगाड़र, बिच्छू, मैडक, घरीयाल, मकड़ी, छिपकिली, सांप, कीकड़ा, मच्छर, मक्खी खाने हराम हैं ।

गन्दगी खाने वाले तमाम जानवर हराम है । अगर हलाल जानवर गन्दगी खा रहे हों तो इनका खाना भी हराम है । इनको क़ाबिले खूराक बनाने के अमल को "अस्तबरा" कहते हैं, इसकी तरकीब यह है कि इन जानवरों को कुछ अर्सा के लिये ऐसे हालात में रखा जाये कि वह साफ़ चीज़ें खायें और अगर साबक़ा खूराक से इनको कोई बीमारी लाहक़ हुई है तो इसकी अलामत ज़ाहिर हो जायें। यह एक माकूल और फ़न्नी लिहाज़ से क़ाबिले यक़ीन तरीक़ा है जिसमें ऊँट को चालीस दिन, गाय को बीस दिन, भेड़ बकरी को दस दिन और घरेलू मुर्ग को तीन दिन ज़ेर मुशाहिदा रखा जाये । अगर जानवर यह अर्सा तन्दरुस्ती की हालत में गुज़ार ले तो उसका खाना दुरुस्त यानी जाइज़ है वर्ना तलफ़ कर दिया जाये क्योंकि वह इन्सानी इस्तेमाल के नाक़ाबिल हो गया है ।

ज़ब्ह

Slaughter According to Islamic Tenents

जानवरों को क़ाबिले खूराक बनाने के लिये यह ज़रुरी है कि वह पहले हिलाक किये जायें । ज़िन्दा जानवर के जिस्म से गोश्त का कोई टुकड़ा काटना बे रहमी और नुक़सान है क्योंकि टुकड़ा काटने के बाद ज़ख़्म से बहने वाला खून उसे हिलाक कर सकता है । खून बन्द कर लिया जाये तो बाद में इस ज़ख़्म का बाक़ायदा इलाज ज़रुरी है । आम हालात में इस जानवर को सेहत दुरुस्त न रहेगी और अगर वह मरने से बच गया तो आइन्दा किसी काम का ही नहीं बल्कि शायद इसका बक़ाया गोश्त भी बेकार हो जाये।

आसमानी किताबों में इस ज़िम्न में कोई वाज़ेह इरशाद नहीं मिलता ।

Scanned by CamScanner

अल्बत्ता इस्लाम वह पहला ज़ाबते हयात है जिसने गोश्त को इनसानी इस्तेमाल में आने का आसाान और क़ाबिले अमल तरीक़ा सिखाया ।

नबी (स0) जब मदीना मुनव्वरा जल्वा अफ़रोज़ हुये तो उनके एक मुशाहिदा के बारे में हज़रत अबू वाक़दुलशी (रज़ि0) बयान फ़रमाते है :-

"जब रसूलुल्लाह (स0) मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाये तो वहाँ के लोग ज़िन्दा बकरी के चूतड़ और ओंट के कोहान काट लिया करते थे । आप (स0) ने इसके मुतअल्लिक़ फ़रमाया । ज़िन्दा जानवर के जिस्म से अगर टुकड़ा काट लिया जाये तो वह गोश्त मुर्दार है" ।

(अहमद, तिरमिज़ी)

इस सिलसिला में एक वाज़ह हुक्म हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) से यूं मंकूल है ।

"नबी (स0) ने फ़रमाया जिस किसी ने ज़िन्दा जानवरके जिस्म से जो टुकड़ा काटा वह मुर्दार है" ।

(इब्ने माजा)

जानवर पर ज़ुल्म को रोकने और खुराक को एक अच्छी और नफ़ीस शकल देने में इस्लाम ने इस उसूल को जारी करके इख़लाक़ और तिब में अहम कारनामा सर अन्जाम दिया है ।

जानवरों को क़ाबिले खुराक बनाने के लिए ज़माना क़दीम से लेकर आज तक मुख़तलिफ़ सुरतें इस्तेमाल में रहीं हैं । इब्तेदाई दौर के इन्सान जानवरों को पत्थर मारकर कुचल कर हलाक कर थे । बड़े जानवरो को हलाक करते थे । बड़े जानवरों को करने का सिलसिला तवील भी हो सकता था और जानवरो के लिए तकलिफ़ दिह भी । इस अमल में तिब्बी एतराज़ यह था कि जानवर को मजरुह होने और कुचले जाने के अमल के दौरान सदमे की कैफ़ियत की वजह से इस के जिस्म में हिस्टामिन पैदा होती थी जो खून की नालियो को फैला देती है । ऐसे जानवरो के जिस्म से दहशत की वजह से पूरा खून ख़ारिज नहीं

होता और उस का गोश्त बदबू मज़ा और जिल्द ख़राब हो जाता है ।

ज़मीन पर इन्सानों की आबादकारी इबतेदाइ अय्याम ही में अल्लाह तआला की तरफ़ से बाक़ायदा हिदायत जारी हुई कि जानवरो को इस तरह अज़ीयत दे कर हलाक करने की बजाए बक़ायदा तौर पर ज़ब्ह किया जाए "और अबराहामने हाथ बढ़ाकर घुरी ली कि अपने बेटे को ज़ब्ह"

(पैदाइश 22:10)

तौरेत मुक़द्दस मे हज़रत इब्राहिम अलेहिस्सलाम से मनसूब है कि वह जब ज़िब्ह करने के लिए निकले तो उन्होने बकायदा छुरी ली इस बाब में हज़रत युसूफ़ (अ0) को खून को छुपाने के सिलसिले में बयान हुआ कि उन्होने एक बकरा ज़ब्ह किया और उन की क़बा को इस बकरे के खून में तर किया। अहबार में काहिन को हिदायत की गई कि वो सोख़तनी क़ुरबानी के जानवर को ज़ब्ह कर के पाक करे ।

कुरआन मजीद ने ज़ब्ह के लिए ,ज़ुक्कीत, का लफ़ज़ इस्तेमाल किया है जिस के मानी पाक करना हैं । क्योंकि जानवरो के गोश्त को ज़ब्ह करके आलाइशों से साफ़ करके इन्सानी इस्तेमाल के क़ाबिल बनाना इसे पाक करना है और यह अमल तौरेत मुक़द्दस से और कुरआन मजीद की तालीमात के मुताबिक़ हैं ।

बुख़ारी ने हज़रत अबदुल्लह (रज़ि0) से नबी (स0) की बेसत से पहले का एक वाक्या बयान किया है जिस में एक दावत में गोश्त पकाया गया। वहां किताबे मुक़द्दस के एक आलिम जनाब ज़ेद बिन उमर बिन नफ़ील भी मौजूद थे । उन्होने फ़रमाया कि मैं कोई गोश्त नहीं ख़ाता जो अल्लाह के नाम पर न ज़ब्ह किया हो । या वो किसी बुत के स्थान पर ज़ब्ह किया गया हो। इस वाक़िये से भी यह पता चलता है कि हज़रत ईसा (अ0) ने ज़ब्ह की वही सुरत मुक़र्रर की थी जिसे इस्लाम ने तरवीज दिया ।

,ज़ानवरो को लाठियों, पत्थरों, और छुरियो से ज़ख़्मी करने के बाद एक तरीक़ा

गर्दन मारने का इजाद हुआ ।

यहूदियो में जानवरों का ज़ीबहा

Animal Slaughtered for Fooding According to Jewes Laws

मुसलमानो के अलावा यहूद एक ऐसी कौम हैं जो अपनी इल्हामी किताब पर पुरी तरह इमान रख़ते हैं और हलाल हराम को हिदायत पर पुरी तरह अमल करती हैं । अगरचें तौरेत पर ईसाई भी ईमान रख़ते हैं लेकिन वह हराम चीज़ो को खाते हैं । हालांकि पुलोस रसूल और सेन्ट पाल ने हराम जानवरों की मफ़स्सल फ़िहरिस्त मुरत्तब कि थी मगर इसाईयों में उसको अमली ज़िन्दगी में कोई अहमीयत हासिल नहीं । यहूदी जानवर को उसी तरह ज़ब्ह करते हैं जिस तरह इस्लाम में किया जाता है । बल्कि यह इस मामले में यहां तक मुहतात है कि हराम चीज़ो और ज़ब्ह कि मय्यार पर निगरानी रखने के लिए हर इलाक़े में एक सैहुनी कोनसिल **Vaad ha kashruth** मुक़र्रर की जाती हैं। उनकी ज़बान में कशरुथ या कफ़रुथ के मानी खाने पीने की चीज़ों को शरीयते मुसा के मुताबिक़ मुनज़्ज़म करना हैं । यह कमीटी मुस्तनद और तरबियत याफ़्ता यहूदियों को तरबियत नामे जारी करती है जो सही तरीके से ज़ब्ह किए हुए जानवर फ़रोख़्त करते हैं । दुकानों पर हलाल गोश्त की फ़रोख़्त पर निगरानी रखने के लिए इन्सपेक्टर मुकर्रर किए जाते हैं जिनको **Mashgihim** कहते हैं।

क़ाबिले खुराक जानवर को तौरेत मुक़द्दस की तालीमात की रोशनी में ज़ब्ह करने के लिये मज़हबिहों पर यह शराइत आइद होती हैं ।

1. जानवर चौपाया हो । इसके खुर फटे हुये हों । वह जुगली कता हो।

Scanned by CamScanner

2. जानवर हराम जानवरों की इस फ़िहरिस्त में शामिल न हो जो तौरेत के अबवाब में की गयी, इस्तसना, अहबार, पैदाइश आफ़ खरोज में मज़कूर है ।

3. परिन्दों की फ़िहरिस्त हराम में शामिल न हो ।

4. ज़ब्ह करने वाला आलिमे दीन हो और उसने ज़ब्ह करने की बाक़ाइदा तरबीयत हासिल की हो । ऐसे आलिम को Sohet कहते हैं ।

5. ज़ब्ह करने वाली छुरी की धार उस्तरे की मानिन्द तेज़ हो । इसपर दनदाने न हों ।

6. जानवर को लिटा कर सर से नीचे गर्दन पर छुरी एक मर्तबा एक ही सिम्त चलाई जाये । इस अमल में न तो ज़्यादा ज़ोर लगाया जाये और न छुरी को बार-बार चलाया जाये । अगर जानवर की रगें एक ही हरकत से न कट सकेंगे तो गोश्त हराम हो जायेगा ।

7. ज़ब्ह करने वाला अपने अमल के दौरान खसूसी दुआ के कलमात इबरानी ज़बान में अदा करे ।

8. ज़ब्ह करने के बाद जानवर को नमक लगाया जाये ताकि जिस्म से सारा ख़ून बाहर निकल आये ।

9. जानवर को ज़ब्ह करने के बाद मुआईना करके देखा जाये कि वह सही तरीक़ा से ज़ब्ह किया गया है और उसकी टांग के साथ एक सरटीफ़ीकेट लगाया जाये जिस पर इबरानी ज़बान में लफ़्ज़ **Koscher Lapesach** (खाने के लिये पास कर दिया गया) के अलावा डराइगे की शक्ल में एक मार्का और ज़ब्ह करने वाले का नाम तारीख जगह मरक़ौम होती है ।

10. इस पाक गोश्त की पीछली टांगों से **Ischiatic Nerve** खींच कर निकाल दिया जाये कि वह हराम है ।

11. ऐसे पाक गोश्त को इन बर्तनों में न पकाया जाये जिन में कभी हराम चीज़ पकी हो या गोश्त पकाने में दूध शामिल न किया जाये ।

लन्दन के इलाक़े इस्ट एन्ड में अब्दुल्लाह नामी यहूदी क़साब का बड़ा

Scanned by CamScanner

वसीअ कारोबार था । यहूदीयों के इलावा मुसलमान भी इसी से गोश्त लेते थे । एक मर्तबा इसकी दुकान से मुर्गी खरीदी गई तो इसकी टांग के साथ ज़बीहा की अच्छाई और ज़ब्ह करने वाले की तसदीक़ का फ़ीता भी मुन्सलिक था ।

यहूदीयों के ज़ीबहा पर यूरप के नाम नेहाद इनसान दोस्त ईसाइयों को अकसर एतराज़ रहा है । इन्सदादे बेरहमी की अनजुमनों ने इस ज़ीबहा को ज़ुल्म क़रार दे कर कई मर्तबा इस पर पाबन्दीयाँ लगवाई । इंगलिस्तान में भी एक मर्तबा इसी क़िस्म की तहरीक चली और अखबारात में कई मज़मून शाइअ हुये । इस पर बरतानीयां में इल्मे तिब के मशहूर उस्ताद और मलिका बरतानीया के सरकारी मुआलिज लारड बारर्ड ने लिखा :-

"मैंने ज़ब्ह करने का सिहयूनी तरीक़ा देखा है । इसमें जानवर की मौत दर्द व अलम के बग़ैर इतने सकून से होती है कि खुदा से दुआ करता हूं कि वह ऐसी आसान मौत मुझे भी दे" ।

इसकी वजह यह है कि सुन्नते इब्राहीमी के मुताबिक़ ज़बह करने में ख़ून की अहम नालियां फ़ौरन कट जाती हैं और जानवर फ़ौरन बेहोश हो जाता है । मामूली तड़पना अगर हो भी तो वह होश की हालत में नहीं होता । इसलिये जानवर को क़ाबिले खुराक बनाने का तरीक़ा सबसे आसान और अज़ीयत के बग़ैर है ।

सिहयूनी ज़बीहा और इस्लाम

Animal Slaughtered for Fooding According to Charistinity & Islam

यहूदीयों का ज़ब्ह करने का तरीक़ा सुन्नते इब्राहीमी के ऐन मुताबिक़ है। वह सही जगह से ज़ब्ह करते और इस अमल के दौरान अल्लाह का नाम लेते है। क़ुरआन मजीद ने ज़ब्ह करने के जो शराइत मुक़र्रर की है इनके मुताबिक़ ।

"तुम इन चीज़ों को बे खटके खाव जिन पर अल्लाह का नाम लिया गया

हो और यह इस सूरत में है कि तुम इसकी निशानीयों पर इमान रखने वाले हो"।

(अल इनाम)

जहां तक ज़ब्ह करने और खुदा का नाम लेने का तअल्लुक़ है वह सही इस्लामी तरीक़े के मुताबिक़ है । चूंकि वह खुदा का नाम इबरानी में लेते है इसलिये बाज़ फुक़हा को इस पर इतराज़ रहा है । मसले की तहक़ीक़ के लिये हम ने एक मर्तबा इस ज़माना के जय्यद उलमा से दरयाफ़्त किया।

हज़रत मौलाना सय्यद अबुलआला मौदूदी ने अपनी "तफ़हीमुल कुरआन" में यहूदी और इसाई के ज़ब्ह को जाइज़ क़रार दिया है । मरहूम ने मुलाक़ात पर भी इसको दुरुस्त क़रार दिया । हज़रत मौलाना ओबैदुल्लाह अनवर की गरामी राय में न सिर्फ़ यह कि यहूदी का बलिक उनकी दानिस्त में इमाम अबू हनीफ़ा की ताआलीमात के मुताबिक इसाई और साबी का ज़बीहा भी जाइज़ था । शीया उलमा हज़रत मौलान आक़ाये सय्यद बाहरवी अलखबारी की राय में क़ौले इमाम के मुताबिक़ ग़ैर मुसलिम का ज़बीहा मुतलक़न हराम था । शीया अलिम अब्बास हैदर आबदी के नज़दीक अगर अल्लाह का नाम लिया जाये और इब्राहीमी तरीक़ा से ज़ब्ह किया जाये और ज़बह करने वाला बुत परस्त या मुशरीक़ न हो तो उसे खाना जाइज़ है, दूसरे शीया उलमा उसे हराम क़रार देते हैं ।

हज़रत मौलाना अताउल्लाह हनीफ़ (रह0) से जब पूछा गया तो उन्होंने जवाब में इमाम इबने तीमया की किताब "फ़तवा मिस्रया" निकाल ली । इबने तीमया इस्तेदलाल करते हैं कि कुरआन मजीद ने अहले किताब के घरों का खाना सुरत अल्माइदा में हलाल क़रार दिया है और इसकी तालीम में फ़तहे खैबर वाले दिन नबी (स0) ने एक यहूदी औरत सयास के घर की भुनी हुई बकरे की रान चूंकि कुबूल फ़रमाई और मआ सहाबा कराम (रज़ि0) तनावुल फ़रमाया और यह वाक़िया ग़ैर मुस्लीमों के ज़बीहा का जवाज़ है । अगरचे इस वाक़िअ में यहूदया ने गोश्त में ज़हर मिला दिया था और यह ज़हर एक सहाबी (रज़ि0) की शहादत का बाइस हुआ । बेशक यहूदीयों के घर के खाने से नाखुशगवार हादसात का इमकान मौजूद है लेकिन सरदारे काइनात (स0) ने इस बाब में मज़ीद कोई हुक्म सादिर न फ़रमाया ।

Scanned by CamScanner

इस मसले की मज़ीद तहक़ीक़ इन दिनों फिर से की गई ताकि अगर कोई पेश रफ़्त किसी जगह हो तो मालूम हो जाये । हज़रत मौलाना मुफ़ती मुहम्मद हुसैन नईमी इर्शाद फ़रमाते है कि अहले किताब का ज़बीहा हलाल है । बर्शते कि वह मुशरिक न हों और जानवर को हमारे तरीक़े के मुताबिक़ गले से ज़ब्ह करें और ऐसा करते वक़्त ख़ुदा का नाम लें । ख्वाह वह किसी ज़बान में हो । अल्लामा सय्यद रुहुल्लाह अलखुमीनी के फ़तवा "तौज़ीहुल मसाइल" हज़रत मौलाना सय्यद सफ़दर हुसैन नजफ़ी ने मुरत्तब किये है । इनकी राये में ज़ब्ह करने वाले के लिये मुसलमान होना ज़रुरी है । गर्दन की चार बड़ी रगें काटी जायें और अल्लाह का नाम लिया जाये ।

इस्लाम में ज़बीहा का तसव्वुर और अमल

Amigration and Act of Slaughter in Islam

ज़ब्ह करने का बुनयादी मक़सद यह है कि हलाल जानवर का गोश्त ऐसी सुरत में हासिल किया जाये कि वह खराब न हो । इस की रंगत और ज़ाइका खुशगवार रहे और वह गोश्त कुछ अर्सा क़ाबिले खुराक रहे । जानवर को अगर अज़ीयत दे कर ज़ब्ह किया जाये या उसके जिस्म से ख़ून न निकले तो हस्टामीन की पैदाइश और जिस्म में ख़ून का बक़ाया रह जाने के बाद ऐसा गोश्त इनसानी इस्तेमाल के लिये मुनासिब न रहेगा ।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर (रज़ि0) फ़रमाते हैं :-

"रसूलुल्लाह (स0) ने हुक्म दिया, छुरियां खूब तेज़ की जायें और उनको जानवरों से छुपा करले जायें और जब ज़ब्ह करो तो जल्द कर डालो" ।

(अहमद, इबने माजा)

इसी सिलसिले में हज़रत शद्दाद बिन अवस (रज़ि0) नबी (स0) का यह इर्शाद बयान फ़रमाते है :-

Scanned by CamScanner

"अल्लाहतआला ने हर चीज़ पर इहसान करने की हिदायत फ़रमाई अगर तुम किसी को क़त्ल भी करो तो उसे भी जल्द अज़ जल्द अन्जाम दो और अगर ज़ब्ह करने लगो तो भी चाबुक दस्ती से करो । छुरी को अच्छी तरह तेज़ करो ज़बीहा को आराम दो" ।

(अहमद, मुस्लिम, अलन्साई, इब्ने माजा)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) बयान फ़रमाते है :-

"रसूलुल्लाह (स0) ने बदील बिन वरक़ाअ अलखुज़आ (रज़ि0) को एक ख़ाकस्तरी ऊँट पर भेजा कि वह मिना की गलियों में इलान कर दे कि ज़कात (जानवर को पाक करना या ज़ब्ह करना) हलक़ और नहर पर है और जानवर की खाल उतारने में जल्द बाज़ी न करो । मिना का क़याम, खाने पीने और खेल कूद के लिये है" ।

(अल्दार कतनी)

यहाँ भी ज़ब्ह को जानवर का पाक करना क़रार दिया और ज़ब्ह करने वाले को हिदायत फ़रमाई गई कि जानवर जब तक ठंडा न हो जाये उसकी खाल न उतारी जाये ताकि उसकी जान आराम से निकले । ज़ब्ह करने की दूसरी सूरतों के बारे में इर्शादे गरामी इस तरह है ।

"मुहम्मद बिन सफ़वान बयान करते हैं कि मै नबी (स0) की तरफ़ से गुज़रा मै दो खरगोश लटकाये हुये था । पूछा कि या रसूलुल्लाह मैंने इन दोनों को पाया और लोहे की कोई चीज़ न मिली कि इनको ज़ब्ह करता फिर मैंने एक सफ़ेद तेज़ पत्थर से इनको ज़ब्ह किया मैं इनको खाउँ? आप (स0) ने फ़रमाया खालो"।

कअब बिन मालिक (रज़ि0) बयान करते हैं :-

"मेरा रेवड़ सला पहाड़ पर चरता था । मेरी लौन्डी ने देखा कि एक बकरी मर रही है । मैंने एक पत्थर तोड़ा और इससे ज़ब्ह कर दिया । इस बारे में नबी (स0) से पूछा गया । आप (स0) ने इसे खाने का हुक्म दिया"।

(बुखारी)

Scanned by CamScanner

अदी बिन हातिम (रज़ि0) रिवायत करते है कि मैंने पूछा कि ।

"ऐ रसूलुल्लाह ! फ़रमाईये कि अगर हम कोई शिकार पायें और हमारेपास छुरी न हो तो क्या हम पत्थर या लकड़ी के टुकड़े से ज़ब्ह कर लें । आप (स0) ने फ़रमाया कि जिसके साथ तेरा जी चाहे खून बहाले और अल्लाह का नाम ले ले" ।

(अबू दाऊद)

ज़ब्ह की साइंसी हैसियत

Scientific Status of Slaughtered

इस्लाम ने जानवरों को क़ाबिले खुराक बनाने की बुनयादी शर्त यह क़रार दी है कि इसके जिस्म से सारा खून बाहर निकल जाये आम हालात में इस ग़रज़ के लिये गर्दन के सामने की तरफ़ खून की चार नालियाँ **Jugur Veins Carotid Arteries** के साथ शह रग भी काट दी जाये । इस अमल की वजह से जानवर फ़ौरन बेहोश हो जाता है । दिल से सर को जाने वाली दोनों तरफ़ की बड़ी शिरयानें और दरीदें कट जाने से खून तेज़ी से निकलने लगता है । अब वह तड़पने लगता है । क्योंकि दिमाग़ का जिस्म के अज़्लात से तअल्लुक़ हराम मग़ज़ की मारफ़त क़ाइम रहता हे । जानवर के बाज़ू और टांगें ज़ोर से हलते हैं तो इनके आख़िरी किनारों में रुका हुआ खून भी वहाँ से निकल जाता है ।

बर्रेसग़ीर में सिर्फ़ सिख गोश्त खाते थे और वह जानवर को खड़ा करके उस की गर्दन पर तलवार का वार करके सर उतार देते थे । इसे वह अपनी ज़बान में झटका कहते थे ऐसा गोश्त महा परशाद कहलाता था । झटका करने में जानवर की रीढ़ की हड्डी कट जाने के बाइस दिमाग़ का जिस्म से तअल्लुक़ मुन्क़तआ हो जाता था और जानवर के अज़्लात बेहरकत हो जाते थे । ज़ख़्म से इतना ही खून निकलता है जितना कि आस पास मौजूद हो ऐसे जानवर के जिस्म में खून की काफ़ी मिक़दार बाक़ी रह जाती है । गोश्त बदरंग और बदज़ाइक़ा होता है । इसे पकाते वक़्त एक अजीब क़िस्म की बदबू और सडान्द

आती है ।

यूरपी ममालिक में मुद्दतों जानवरों का झटका किया जाता रहा । फिर उन्होंने जदीद शक्ल देते हुये **Guillotin** बना ली । जानवर को कटहरे पर खड़ा किया जाता है और ऊपर से एक भारी छुरा गिरा कर सर तन से जुदा कर देता है । तजरिबात से मालूम हुआ कि मशीन से इस तरह काटा हुआ गोश्त जल्द खराब हो जाता है । चूंकि ख़ून इसके अन्दर रह जाता है इसलिये पकाते वक़्त बदबू देता है ।

जानवरों को ज़ब्ह करने का जदीद माकज़ **Bbotaire** कहलाता है जानवर को अन्दर ले जाकर इसके सर में एक वज़नी हथोड़ा मारा जाता है या दिमाग़ पर बिजली का करंट लगाया जाता है । जानवर जब बेहोश हो जाता है तो इसे ज़ंजीरों से जकड़कर उलटा उठा लिया जाता है । इस जकड़े हुये मजरुह और बेहोश जानवर की गर्दन पर आरी की मानिन्द एक तेज़ छुरी मशीन से फ़ेर कर इस्लामी तरीक़े की भोन्डी नक़ल में निस्फ़ गर्दन काट देती है । जदीद मज़बह का उसूल यह है कि जानवर के जिस्म से ख़ून निकल जाये इस अमल में मशीनी मदद मयस्सर होने के बावजूद चार-पाँच मिनट लग जाते हैं । लाहौर के बुचड़ ख़ाने में हाथ से इस्लामी तरीक़े से ज़ब्ह करने का भेड़ बकरी पर एक मिनट लगता है और गाय भैंस पर तीन चार मिनट सर्फ़ होते हैं ।

जदीद तरीक़े से ज़ब्ह करने में जानवर को बेहोश करने के लिये जो **Stunning** दिमाग़ी चोट या बिजली के झटके से लगाई जाती है वह उसे जिस्मानी सदमा या **Surgical Shock** की कैफ़ियत में मुबतला करके हस्टामीन की पैदाइश का बाइस बनता है और इस तरह यह गोश्त क़ुरआन की ममनूआ फ़हरिस्त के लाठी से मारे हुये और टक्कर खाये हुये जानवरों में आ जाता है। इन तमाम जानवरों का गोश्त निहायत बदमज़ा होता है । यूरप में हिस्से ज़ाइक़ा रखने वाले कई दोस्तों को कोशिश के साथ एक रोज़ ताज़ा ज़ब्ह किया हुआ गोश्त और दूसरे रोज़ मशीन का मज़बूहा खिलाया गया । उन सब ने इत्तेफ़ाक़ किया कि ज़ब्ह किये हुये गोश्त में जो लज़्ज़त है वह दूसरे में नहीं ।

Scanned by CamScanner

ज़ब्ह करने का इस्लामी तरीक़ा जानवरों के लिये आराम देह और खाने वालों के लिये महफ़ूज़ तरीन है ।

(तिब्बे नबवी और जदीद साइंस)

मरीज़ की अयादत और जदीद साइंस

Visiting of the Sick & Modern Science

एक साहिब फ़रमाने लगे मैं बीमार था चूंकि दयारे ग़ैर में था इसलिये परेशान था लेकिन कुछ दिनों बाद दोस्त अहबाब को पता चला अयादत करने आये इस तरह दूसरे दोस्तों को पता चला वह भी आये । आहिस्ता-आहिस्ता मेरी सेहत अच्छी होती गई । मैं बहुत जल्द सेहतयाब हो गया ।

इस वक्त माहिरीने नफ़सीयात इस बात पर ज़ोर दे रहे हैं कि अपने मरीज़ों का इलाज अयादत के ज़रीये करें क्योंकि तुम्हारी अयादात मरीज़ को सेहत याब कर देती है ।

अमरिकन केनेडी हास्पीटल का तरीक़े कार

The method of American Kennedy Hospital

एक साहिब इलाज की ग़रज़ से वहाँ तशरीफ़ ले गये फ़रमाने लगे कि रोज़ाना दोबार हर मरीज़ के पास उनके पादरी, हंस मुख और माहिरे नफ़सीयात

आते हैं मरीज़ का अहवाल पूछते हैं तसल्ली देते हैं । सेहत की दुआ करते और फिर दूसरे मरीज़ के पास जाते है । मैंने जब यह हालत देखी तो हैरान हुआ और सोचने लगा कि इस्लाम किस तरह मुसलमानों को अयादत का हुक्म देता है ।

मैंने इस अमरीकन हस्पताल में मुशाहिदा किया तो अयादत करने वालों की वजह से हर मरीज़ की कोशिश यही होती थी कि मैं इसी हस्पताल में इलाज कराऊँ क्योंकि वहां के मरीज़ जल्द सेहतयाब होते थे ।

अजीब मुशाहिदा

Wonderful Observation

न्यूयार्क के हस्पतालों में एक अजीब मुशाहिदा किया गया । वह मरीज़ जो हस्पतालों में तन्हा पड़े रहते थे उनको बेहतरीन इलाज और निगहदाश्त के बावजूद पूरी तरह फ़ायदा नहीं हो रहा था । जिन मरीज़ों के मिलने वाले और बीमार पुरसी करने वाले आते रहते थे उन में तन्दरुस्ती की रफ़्तार दूसरों से बेहतर पाई गई ।

इन मुशाहिदात के बाद न्यूयार्क के पादरयों ने हस्पतालों में जाना शुरु कर दिया । वह मरीज़ों से मिलते उनकी बीमारियों के बारे में गफ़्तगू करते और आखिर में उनके साथ मिलकर उनकी सेहत याबी के लिये दुआ करते । पादरीयों से तवज्जुह पाने वाले अकसर लाइलाज मरीज़ भी शिफ़ायाब होने लगे। अमरीकी रिसाला **"Readers Digest"** ने इस मसला को रुहानियत से ताबीर किया और इनका कहना था कि दुआ करने से इनको फ़ायदा हुआ ।

हक़ीक़त यह है कि मरीज़ का ज़िहन परेशान होता है । वह अपनी बीमारी के तफ़क्करात की वजह से किसी भी तरकीब को आज़माने को तैयार होता है । अखबारों में रोज़ ऐसे वाक़ियात आते हैं जहां बे औलाद औरतें रात के अंधेरों में क़ब्रीस्तानों में जाकर मुर्दो की हड्डीयां निकाल कर इन पर गुसल करती बयान की जाती हैं या हमसाइयों के किसी कमसिन बच्चे को क़त्ल करके इसकी

Scanned by CamScanner

लाश पर बेहूदा अलफ़ाज़ के वज़ीफ़े पढ़ती है ।

अपनी बेऔलादी या बीमारी की अज़ीयत को ख़त्म करने के लिये वह हर बेहूदा और खिलाफ़े शरअ काम करने को तैयार होती है ।

इस्लाम ने मरीज़ की ज़ेहनी कैफ़ियत को सबसे पहले महसूस किया और इस बारे में ऐसे मुफ़ीद मशवरे दिये जिन से मरीज़ के ज़िहन को इतमिनान और सकून मयस्सर आ जाता है ।

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) रवायत फ़रमाते है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया ।

"मुसलमान के मुसलमान पर पांच हक़ूक़ है । सलाम का जवाब देना । मरीज़ की अयादत करना । जनाज़ों के साथ जाना । दावत का क़बूल करना। छींक लेने वाले का जवाब देना" ।

(बुखारी, मुस्लिम)

इमाम मुस्लिम ने इन्हीं से एक रिवायत में हक़ूक़ की तादाद छः गिनवाइ है। छटा हक़ अपने मुसलमान भाई की खैर ख्वाही करना है ।

हज़रत अबू मूसा (रज़ि0) रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया।

"भूखे को खाना खिलाव । मरीज़ की अदायत करो और क़ैदी को रिहाई दिलाओ" ।

(बुखारी)

इसी मसला में बराअ बिन आज़िब (रज़ि0) यूं रिवायत करते है ।

"हमें हुक्म दिया गया कि मरीज़ की अदायत करें और जनाज़े के साथ जायें" ।

(बुखारी, मुस्लिम)

अयादत के फ़वायद का तज़किरा करते हुये सोबान (रज़ि0) रिवायत फ़रमाते

Scanned by CamScanner

है कि नबी (स0) ने मुज़दह सुनाया ।

"जब कोई मुसलमान अपने किसी भाई मुसलमान की अयादत को जाता है तो वह लौटते वक़्त जन्नत के बाग़ात से मैवा खोरी में रहता है" । (मुस्लिम)

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) अयादत मरीज़ के अहम फ़र्ज़ की वज़ाहत में जनाब तबीबे आज़म (स0) से रिवायत करते है ।

"अल्लाहतआला क़यामत के दिन फ़रमायेगा कि ऐ इबने आदम मै बीमार हुआ । तो मेरी अयादत को न आया । वह कहेगा कि ऐ अल्लाह तु रब्बुल आलमीन है ।

अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि तुझे इल्म न था कि मेरा फ़लां बन्दा बीमार हुआ है । तुने उसकी अयादत न की । क्या तुझे इल्म न था कि अगर तू इसकी अयादत करता तो मुझको उसके नज़दीक पाता" । (मुस्लिम)

बीमार की अयादत को इतना अहम क़रार दिया गया कि रोज़े हशर नाम-ए-आमाल में इसके बारे में सवाल होंगे । अल्लाहतआला अदायत करने वालों की हौसला अफ़ज़ाई करते हुये वहीं पर अपनी मौजूदगी का इज़हार करता है।

हज़रत ज़ैद बिन अरकम (रज़ि0) को आशोब खशम की शिकायत हुई तो नबी (स0) इनकी अयादत के लिये गये । (इबने अबू दाऊद)

हज़रत जाबीर बिन अब्दुल्लाह रिवायत करते है कि रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया ।

"जब कोई शख़्स मरीज़ की अयादत के लिये जाता है तो वहाँ पर दरया-ए रहमत में इस वक़्त तक बैठा रहता है जब तक कि वह वहाँ रहा बल्कि वह उस दौरान दरया में डुबकियां लगाता है" । सुब्हानल्लाह

(मालिक, अहमद)

मरीज़ की अयादत एक लिहाज़ से इसको इतमिनान दिलाने और हौसला देने

Scanned by CamScanner

वाली बात है । बीमारी उस के गुनाहों को कम करती है । और उसकी दुआ को दूसरों की निस्बत ज़्यादा क़बूलीयत हासिल होती है ।

हज़रत उमर बिन खताब (रज़ि0) रिवायत करते हैं ।

"रसूलुल्लाह (स0) ने फ़रमाया कि जब तू मरीज़ की अयादत के लिये जाये तो इससे अपने लिये दुआ कराव । क्योंकि उसकी दुआ फ़रिश्तों की दुआ है"।

(इबने माजा)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास (रज़ि0) अयादत का अजीब वाक़िया बयान करते हैं ।

"नबी (स0) एक आराबी की अयादत को गये । आप का दस्तूर था कि जब किसी मरीज़ की अयादत के लिये जाते तो हमेशा फ़रमाते **लाबास तहूर** (कोई हर्ज नहीं । तुम इन्शाअल्लाह पाक हो जाओगे) उसने कहा कि हरगिज़ नही । बल्कि तब जोश मार रहा है और एक बुढे पर यह तप इसको क़बरों से मिला देगा । आपने फ़रमाया । हां ! इसी तरह होगा" ।

(बुखारी)

यह शख्स वफ़ात पा गया । उसने खुदा की रहमत से मायूसी का इज़हार किया और बिलवास्ता मौत की तमन्ना करते हुये रहमते आलम को मजबूर किया कि वह भी इसकी ख्वाहिश से इत्तेफ़ाक करें । (अच्छा अन्जाम न हो) मआज़ल्लाह

इस्लाम और उसूले सादगी

Islam & Principle Of Simplicity

इस्लाम सादगी और आसानी का मज़हब है । इसके हर एक पहलू में इन्सानीयत के लिये आसानी और राहत है । हुज़ूरे अक़दस (स0) ने अपनी ज़िन्दगी को सादा बना कर हमें सासदगी की तालीम दी है ।

❖ मिटटी और लकड़ी के बर्तन सादगी की अलामत है । चीन के शहर

Scanned by CamScanner

यान्ग में लोग फिर से मिटटी के बर्तन इस्तेमाल करने लगे है क्योंकि धात के हर बर्तन में मज़रत और नुक़सान मौजूदा है ।

❖ चक्की और कुवें से पानी भरना जब से छूटा है। उस वक़्त से औरतों में मुटापा, आसाबी कमज़ोरी, अज़लाती खिचाव (Muscle Strain) निसवानी अमराज़ (Gyanaecological Diseases), नफ़सीयाती दवाव Stress जैसी अमराज़ बढ़ गई हैं ।

❖ एक माहिर सर्जन अपनी गुफ़्तगू में कहा कि मै चैलेन्ज से कहता हूं कि आप गाइनी वार्ड में जाकर तहक़ीक़ करें रेहम के कैन्सर में ज़्यादा तर खवातीन मुबतला होंगी जो इस्क़ाते हमल करा चुकी हों ।

❖ इस्तक़ाते हमल से बेशुमार निस्वानी अमराज़ ज़हूर पज़ीर होते हैं ।

❖ इस्लामी उसूल है कि बच्चे जनने वाली औरतों से शादी करो लेकिन कम बच्चे खूशहाल घराने के नारे ने औरतों को गोना गों अमराज़ में मुबतला कर दिया है ।

❖ कपड़े धोना घरदारी का उसूल है और इससे बाज़ू, सीने और सीने की अज़लात की बेहतरीन वरज़िश होती है और औरतें बेशुमार निस्वानी तकालीफ़ से बच जाती हैं लेकिन अब इसकी जगह मशीन ने ले ली है ।

❖ गाईनी के माहिरीन का क़वी तजरिबा है कि जो औरतें अपने बच्चे को दूध पीलाती हैं इनमें बच्चो का वक़फ़ा खूद ब खूद हो जाता है । औरतों को बहबूदे आबादी के मशवरों और अवीयात की ज़रुरत नहीं पड़ती ।

❖ पहले औरतें सूती लिबास पहनती थीं । इनमें निस्वानी पोशीदा अमराज़ की कसरत नहीं थी खास तौर पर लीकोरिया की तकलीफ़ । यह मेरी बात नहीं बल्कि बेशुमार तजरिबात, मुशाहिदात के बाद माहिर साइंस दानों की बात है ।

❖ अब से क़ब्ल शादी जल्दी हो जाती थी चूंकि रस्म व रिवाज और नाक का मस्ला नहीं होता था । माहिरीन के मुताबिक़ देर की शादी में जहाँ मर्द को नुक़सान पहुंचाता है वहाँ औरतों में ब्रेस्ट कैन्सर के खतरात बढ़ जाते हैं ।

Scanned by CamScanner

❖ जब खातूने खाना खूद झाडू देना (हैरान कुन तहकीक है कि झाडू के अमल से खवातीन कितनी बेशुमार अमराज़ से नजात पाती है) पानी भरना, बच्चों को खिलाना, खाना पिरोना, सीना परवना करती थीं इन्हें दिल के अमराज़, मोटापा और निस्वानी तकलीफ़ कम होती थीं ।

❖ कैमिकल से मुरक्कब मैकअप का पता किसी भी हदीस की किताब में नहीं मिलता है । इस कौ़म की बेटियों ने जब से यह मैकअप शुरु किया है उस वक्त से अब तक यह चेहरे के अमराज़ और बदसूरती को दूर करने के मज़ीद नुस्खा जात इस्तेमाल करने के चक्कर में पड़ गई है ।

एक खातून के दाढी के घने बाल निकलना शुरु हो गये । बहुत इलाज, क्रीमें इस्तेमाल कीं । लेकिन अफ़ाक़ा नदारद । बनदा के पास आये, तशख़ीस के बाद इन्हें मशवरा दिया कि वह उनाब इस्तेमाल करें तमाम क्रीमें, टियबें छोड़ दीं कुछ अर्सा बाद मरीज़ा ने काफ़ी अफ़ाक़ा महसूस किया ।

❖ खुले कपड़े और लिबास सेहत और तन्दरुस्ती के लिये मुहाफ़िज़ और ताक़तवर ग़िज़ाओं से बढ़ कर है । इस लिबास को छोड़ कर वाकई हम परेशान है ।

❖ इस्लामी ज़िन्दगी सादा मगर आराम देह है । मग़रिबी ज़िन्दगी पेचीदा मगर अज़ाब है । सादगी ज़िन्दगी को गुज़ारने वाले ज़्यादा अमराज़, बेचैनी, बेख्वाबी, खुद कशी, तलाक़ जैसे मसाइल का कम शिकार होते है ।

❖ सुर्खी या लीपीस्टिक यह बात इतनी वाज़ह है कि पहले पहल सुर्खी में ऐसी चर्बी इस्तेमाल की जाती थी जो बहुत जल्द पघीलने न पाये तहकीक़ के बाद पता चला कि सुअर की चर्बी जल्द नहीं पिघलती तो सुर्खी या लीपिस्टिक में सुअर की चर्बी मिलाई जाने लगी जो बहुत क़ीमती और बढ़िया सुर्खीयों में अब भी मिलाई जाती है ।

लेकिन सुर्खी में आम तौर पर रंगदार मटेरीयल और चबीदार सख्त वीज़लीन वग़ैरा क्योंकि रंग से खून के बेशुमार अमराज़ पैदा होते है जिसमें जिस्म का

खतरनाक मरज़ कैन्सर भी हो सकता है ।

वल बहरिल मसजूर के अजाइबात

Coriositios Seas on Boiling Fire

सूरह तूर की आयत वल बहरिल मसजूर है । मुफ़स्सिरीन ने इसके मानी यह किये हैं हमने समुद्र को उबलती हुई अगा पर रखा है ।

फ़रान्स की तहक़ीक़ाती कम्पनीयों ने इस लफ़्ज़ की तहक़ीक़ की । उन्होंने समुद्र में 30 हज़ार मीटर गहराई तक डराइंग की । नीचे से उबलता हुआ पानी और कीचड़ निकला जब मज़ीद खुदाई की तो बरमा पीघल गया ।

साइंसदानों का ख़्याल है कि समुंद्र के नीचे आग ही आग है और वह इतनी तेज़ और सख़्त है कि ज़मीन की अगा इस का मुक़ाबला नहीं कर सकती। ग़ौर फ़रमाईये । कुरआन ने नेक रुहों का ठिकाना इल्लीईन बताया है । जो आसमानों पर है ।

कुरआन ने बदरुहों का ठिकाना सिज्जीन बताया है तो क्या यही सिज्जीन है। इस ज़िम्न में उलमा ने बेशुमार अक़वाल दिये हैं लेकिन सबका मजमूई खुलासा यह है कि यह आग वाक़ई दुनिया की आग नहीं ।

(अल्बर्ट रिपोर्ट)

Scanned by CamScanner

सहाबा-ए कराम (रज़ि०) के छः वीटामीन और जदीद साइंस

Six Vitamins of Sahaba-e-karam & Modern Science

सहाबा-ए कराम (रज़ि0) की ताक़त, कुव्वत और बहादुरी के तज़किरे सदीयों से हैं और अबद तक रहेंगे । पूरी दुनिया तहक़ीक़ में कोशां है कि इन की ताक़त का राज़ क्या था । बहुत से माहिरीन ने इस तहक़ीक़ को आगे बढ़ाया ज़ेरे नज़र एक सर्जरी के डाक्टर की तहक़ीक़ और आजिज़ की वज़ाहत है । वाज़ह रहे कि सहाबा कराम (रज़ि0) बहुत कम बीमार होते थे । उनकी बीवीयां भी ज़्यादा होती थीं और बच्चे भी बकसरता इसका राज़ क्या था ज़ेरे नज़र सतूर में मुलाहिज़ा फ़रमायें ।

1. दाढ़ी बढाना
2. मूछें तरशवाना
3. सर के बाल बराबर रखना ।
4. मूये ज़ेर नाफ़ साफ़ करना ।
5. खुला लिबास पहन्ना ।
6. घोड़े की पीठों पर सफ़र करके अल्लाहतआला के दीन को फ़ैलाना

1. दाढ़ी के बारे में वज़ाहत पहले गुज़र चूकी है ।

2. मूछों के बारे में भी वज़ाहत पहले गुज़र चूकी है ।

Scanned by CamScanner

3. सर के बाल ज़ुल्फ़ों की शक्ल में कि मुडे हुये हों दोनों शक्ल में बराबर हों ऐसा क्यों हो ? इस ज़िम्न में एक फ़ीज़यो थरापीस्ट रिपोर्ट मुलाहिज़ा हो ।

चिल्ली अर्जेंटाइना के डाक्टरों के एक टीम ने सरवे के बाद इस बात को तस्लीम किया है जिन लोगों के सर के बाल बिल्कुल बराबर होते हैं या गंज होता है ऐसे लोग लू की बीमारियों, दिमाग़ी दबाव और गर्दनों की बराइट डिज़ीज़ से बच जायेंगे ।

माहिर डाक्टर की टीम के मुताबिक़ चूंकि बाल सयाह होते हैं । सूरज की रोशनी और इसमें मौजूद तेज़ शुआए जब सर पर पड़ती हैं तो एक कीमयावी अमल शुरु होता है । अगर बाल नाहमरवार और उभरे हुये हों तो इस रोशनी की वहां गर्दिश ज़्यादा होकर इस जगह पर बुरे असरात ड़ालती है । इसलिये इस्लाम ने कंघा और बाल संवारने की हिदायत की है ।

4. मुये ज़ेरे नाफ़ साफ़ करना :- बाज़ मज़हब में ऐसा अमल मना है लेकिन इस के नुक़सानात कितने है इसका अन्दाज़ा नहीं किया जा सकता ।

❖ मुये ज़ेरे नाफ़ साफ़ न करने से बेशुमार बीमारियों के जरासीम इनमें अटक कर खतरनाक हैसियत इख़्तियार कर लेते हैं ।

❖ इस के ज़्यादा तर असरात मक़ामी जिल्दी गलैन्डज़ पर पड़ते हैं और इनमें नक़स पड़ जाता है ।

❖ अगर यह बाल बढे रहे तो परास्टीट गलैंड मुतवर्रम हो जाते हैं । जिनका ज़्यादा नुक़सान देह असर कुव्वते मर्दान्गी पर पड़ता है ।

❖ इसके बरअक्स इस्लामी उसूलों के मुताबिक़ इनको साफ़ करना बेशुमार फ़वायद का हामिल है ।

5. खुला लिबास इस्तेमाल करना :- इसका मुफ़स्सल तज़करा साबक़ा लिबास के बाब में गुज़र चूका है ।

Scanned by CamScanner

6. दीन की दावत और मेहनत :- इसके समझने के लिये सिर्फ़ एक वाक़िया काफ़ी है । डाक्टर कोस्टो वह इसाई साइंस दान है जिसने समुद्रों पर रिर्सच के बाद इस्लाम क़बूल किया । इसका कहना है ।

कि नेकी का फैलाना और इसकी दावत देना जिस्म और तन्दरुस्ती के लिहाज़ से किसी ताक़त वर मशवरे और दवाइ से कम नहीं क्योंकि अल्फ़ाज़ की ताक़त जिस्म में रद्दे अमल के तौर पर मुन्तक़िल होती है और जितने अल्फ़ाज़ ज़्यादा बोलते जायें गे इतनी यह ताक़त बढ़ती जायेगी ।

(ब-हवाला वह जिनका ज़रीया हिदायत कुरआन हुआ)

सहाबा कराम (रज़ि0) की छः खुराकें और जदीद साइंस

Six Feeds of Sahaba and Modern Science

सहावा कराम (रज़ि0) छः खास खुराकें भी थीं जो मुन्दरजा ज़ेल हैं ।

1. ऊँट का गोश्त :-

यह गोश्त की इस क़िस्म में से है जिसमें चर्बीले माद्दे कम होते है । जिसकी वजह से खून में कोलीस्ट्रोल और लस्सी थीन नहीं बनती और इसके इस्तेमाल से जिस्म नहीं फूलता बल्कि जिस्म स्मार्ट और ताक़तें बहाल रहती हैं ।

2. ऊँटनी का दूध :-

जिगर के तमाम अमराज़ के लिये मुफ़ीद तर है । इस्तेमाल करने वाला कभी यरक़ान में मुबतला नहीं हो सकता । इसके पीने वाले के खून में चर्बीले माद्दे नहीं बन सकते । गिज़ा को बेहतर तरीक़े से हज़्म करता है जिस्म को मोटापे के खतरे से क़वी अमान देता है ।

Scanned by CamScanner

3. जौ की रोटी :-

इस का तज़करा जौ या तलबीना के ज़िम्न में गुज़र चूका है ।

4. खजूर :-

इसका तज़किरा भी इसी किताब में मौजूद है ।

5. शहद :-

शहद की ताक़त और इस्तेमाल से कौन इन्कार कर सकता है । सिर्फ़ इतनी बात इसके बारे में क़ारेईन से गरज़ है कि यह आला दर्जा की मक़वी आसाव है, दिल और दिमाग़ के तक़वीयत के लिये बहुत मुफ़ीद है । इसके कुछ तरीक़े पेशेखिदमत हैं जो सालहा साल से आज़मूदा हैं ।

अर्क़े गुलाब एक कप शहद दो चम्चा घोल कर पी लें दिन में तीन बार खाने से क़ब्ल कुछ अर्सा तक मुसतक़िल इस्तेमाल करें ।

दिल के तमाम अमराज़ मसलन हाइ बलड प्रेशर, दिल की धड़कन की ज़्यादती, दिल की कमज़ोरी और डूबना, मेदे की तेज़ाबीयत, जिगर की हरारत, बदन की आम कमज़ोरी के लिये बहुत अकसीर चीज़ है । लेकिन मौसम गरमा में इस्तेमाल करें । बाज़ मरीज़ों के लिये मौसम सर्मा में भी मुफ़ीद है ।

शहद गरम दूध या गरम पानी में घोल कर इस्तेमाल करें । यह तमाम आसाबी, अज़लाती और कमज़ोरी के बअमराज़ में बहुत फ़ायदा मन्द है ।

गाय का गोश्त और जदीद साइंस

Cows Meat & Modern Science

हाकिम और अबू नईम से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस (स0) ने फ़रमाया

लाज़िम पकड़ो गाय का दूध पीना क्योंकि वह शिफ़ा है और इसमें दवा है और गाय का घी इस लिये कि वह शिफ़ा है और इसके गोश्त से बचो क्योंकि इस में बीमारी है ।

(हाशया मुसनद इमामे आज़म, रहबरे ज़िन्दगी)

उलमाये कराम फ़रमाते हैं कि यह तहक़ीक़ की जाये यानी बीमार आदमी इस्तेमाल न करे या बीमार जानवर का गोश्त इस्तेमाल न किया जोय वर्ना गाय एक हलाल जानवर है ।

उसूले मेडिकल के मुताबिक़ गाय के गोश्त में एक खास बैक्टेरीया होता है जो कि टी बी और जिगर की मुहलिक अमराज़ का बाइस बन जाता है। माहिरीने तिब्बे जदीद ने इस ज़िम्न में मज़ीद तहक़ीक़ की तो इस बात का इन्कशाफ़ हुआ कि गाय का गोश्त जहाँ जिगर के फोड़े का बाइस बनता है वहाँ इससे दिमाग़ी तौर पर पूर एक खतरनाक मरज़ होती है जिसे मेड काऊ डीज़ीज़ कहते हैं ।

इंग्लैन्ड के वज़ीरे सेहत स्टीफ़न डवराल ने अपने हालिया बयान में इस बात की तसदीक़ की है कि गायों के ज़रीये एक ऐसी बीमारी वजूद में आई है जिसका नाम सी.जे.डी है इस मरज़ में मरीज़ दीवाना और पागल हो जाता है अपनी याददाश्त खो बैठता है हत्ता कि बाज़ मरीज़ खुदकशी की तरफ़ माइल होते है ।

यह मरज़ इंग्लैन्ड, इंडिया, कनाडा, ताइवान और अफ़्रीका के ममालिक की गायों में बकसरत पाया जाता है ।

इस से क़ब्ल यह बात पाये तकमील को पहंच चूकी है कि गाय के गोश्त से दिल के अमराज़ में काफ़ी अज़ाफ़ा होता है । हत्ता कि दिल के अज़लात ढीले होकर दिल की ढड़कन में कमी का बाइस बन जाते हैं ।

सवीडन में टी बी फैल गई । तहक़ीक़ात पर पता चला कि इसका सबब गाय का गोश्त है । फिर जब गाय का इलाज कराया गया तो हैरान कुन तरीक़े से तबदीली हुई और नये मरीज़ आना बन्द हो गये ।

Scanned by CamScanner

आस्ट्रेलिया में गायों के फ़ारम में बक़ायदा हर माह मुकम्मल चैकअप होता है और मुनासिब इलाज रोज़ना किया जाता है और इस बात पर ज़ोर दिया जाता है कि गायें अगर सेहत मन्द रहेंगी तो लोग भी सेहत मन्द रहेंगे ।

बकरी का दूध और जदीद साइंस

Goats Milk and Modern Science

हुज़ूरे अक़दस (स0) की सात बकरीयां दूध देने वाली थीं । जिन्हें हज़रत उम्मेयमन (रज़ि0) चराती थीं और उनका दूध लेकर हुज़ूरे अक़दस (स0) की खिदमत में पेश करतीं ।

(मदारिजुन्नबुवत)

हुज़ूरे अक़दस (स0) एक सहाबी के घर तशरीफ़ ले गये उसने हुज़ूरे अक़दस (स0) की खिदमत में बकरी का दूध पेश किया । आप (स0) ने नोश फ़रमाया ।

(बुखारी)

बकरी का दूध मरगूब मशरुब और गिज़ा है इसके फ़वायद उस वक़्त और बढ़ जाते हैं जब चरने वाली बकरी हो चूंकि चरने वाली बकरी अन्वाअ व अक़साम की जड़ी बूटियां खाती है और यह जड़ी बूटियां जिस्म में हज़्म होकर अपने असरात दूध के ज़रीये इनसान तक पहुँचाती है ।

गांधी जी खदर का लिबास और बकरी का दूध पीते थे । बल्कि गांधी जी का मकूला था कि नीम के दरख्त के नीचे बन्धी हुई बकरी हो इसका दूध पीते हुये मुझे काइनात की सरदारी नहीं चाहिये ।

अता तुर्क बकरी के दूध को सुब्ह नहार मुंह पीया करते थे । उसकी तमाम ज़िन्दगी बकरी के दूध में गुज़री ।

Scanned by CamScanner

मौलाना मुहम्मद अली जौहर और क़ायदें आज़म और अल्लामा इक़बाल बकरी का दूध बहुत पसन्द करते थे । इनकी पसन्द की दास्तानें तारिख़ और सवानेह की कुतुब में मौजूद हैं ।

क्योंकि बकरी के दूध में टी बी और कैंसर के अमराज़ को खत्म करने वाले माद्दे और असरात कुदरती तौर पर मौजूद होते हैं । जदीद तहक़ीक़ ने बकरी के दूध को इन्सानीयत के लिये शिफ़ा क़रार दिया है ।

बकरी का दूध गाय भैंस के दूध से क्यों ज़्यादा मुफ़ीद है

बकरी का दूध गाय और भैंस के दूध की निस्बत ज़्यादा मुफ़ीद, जिस्म को परवरिश करने वाला और मुहाफ़िज़े सेहत है । अमरीका कि मशहूर माहिरे गिज़ाईयात डाक्टर डोगस थामिस ने तजरिबात की बिना पर साबित किया है कि "बकरी का दूध दूसरी तमाम पीने वाली चीज़ों के मुक़ाबले में अफ़ज़ल और फ़ायदा मन्द है" । इसकी बर्तरी के दो खास सबब यह हैं कि एक तो बकरीयों में सिल का मरज़ नहीं होता जो गायों में आम है । दूसरे यह निस्बतन ज़ूद हज़्म होता है ।

डाक्टर मेरीट का बयान है कि "बच्चों की गिज़ा के तौर पर बकरी का दूध इस सूरत में बहुत ही ज़रुरी और मुफ़ीद है जब गाय का दूध बच्चे को रास न आये और इससे बदहज़्मी वग़ैरा की शिकायात लाहक़ हो जाती हों। ऐसे बच्चे बकरी का दूध आसानी से हज़्म कर लेते हैं ।

डाक्टर ऐन एन बीक ने मुक़ाबले के लिये बकरी और गाय के दूध का तजरिबा किया है । वह बकरी के दूध की इस सिफ़त पर बहुत ज़ोर देते हैं कि वह ज़ूद हज़्म होता है और इन बच्चों के लिये जिन के जिस्म की नश व नुमा रुक जगई हो उन मरीज़ों के लिये जिन का हाज़्मा खराब हो या इसके इस्तेमाल पर पुरज़ोर शिफ़ारिश करते है ।

Scanned by CamScanner

बकरी के दूध के ज़ूद हज़म होने के खास असबाब है । एक तो यह कि इसकी चर्बी के कीसों की दीवारें बहुत ही पतली होती हैं । दूसरे इसके दूध की चर्बी लतीफ़ तरीन होती है और मेदे की रतूबत बाआसानी दूध पर अपना असर कर सकती है । तीसरे इसके कीरीन के दाने भी नन्हें-नन्हें होते और बाआसानी हज़म हो जाते है । चौथे इनमें असीमन की मिक़दार ज़्यादा होती है ।

बकरी के दूध में चीकनाई और नमकीयात के अजज़ा बहुत काफ़ी होते है । नमकों में से एक नमक कलशियम (चूना) का भी होता है । यह कलशियम का नमक बकरी के दूध का जुज्वे आज़म है । कलशियम जिस्मानी परवरिश के लिये बहुत ज़रुरी है जिस्म में इसकी कमी से तपेदिक़ व आरज़ा हो सकता है ।

अगर बकरी और गाय के दूध का मुक़ाबला करें तो बहुत से दिलचस्प फ़र्क़ मालूम होते हैं । गाय के दूध की कैफ़ियत तेज़ाबी होती है । ज़ोफ़े मेदा के मरीज़ों के लिये यह फ़र्क़ मौत और ज़िन्दगी का सवाल बन सकता है । गाय के दूध को हज़म करने के लिये दो घन्टे दरकार होते हैं और बकरी का दूध सिर्फ़ निस्फ़ घंटे में हज़म हो जाता है । गाय, बकरी और इनसान के दूध में जो नमकीयात मिलते हैं वह बारह मुख़्तलिफ़ अक़साम के हैं । इनमें से नौ क़िस्म के बकरी के दूध हैं । छः क़िस्म के गाय का दूध और पाँच क़िस्म की इन्सानी दूध में होते हैं । गाय के दूध में फ़ौलाद का जुज़्व तो गोया होता ही नहीं । बकरी के दूध में यह सात से ले कर दस गुना तक होता है । इसी तरह पोटाशियम से ज़्यादा कोई चीज़ ऑक्सीजन को जज़्ब नहीं करती । ऑक्सीजन कहीं भी हो पोटाशियम उसे जज़्ब कर लेता है अब इसके साथ फ़ौलाद का जुज़्व मिलाकर देखिये तो मालूम होगा कि बकरी के दूध के सिवा किसी दूसरे में ऑक्सीजन को जज़्ब करने की इतनी सलाहियत नहीं होती ।

बकरी के दूध में फ़लोरीन बकसरत होती है । यह हड्डीयों की नश व नुमा दांतों की मज़बूती और आँखों की परवरिश के लिये बहुत ज़रुरी है । हमारी

सेहत की उमदगी का दार व मुदार रीढ की हड्डी की मजबूती पर होता है मैगनेशीयम रीढ के ज़हरीले मवाद को तहलील करके गुरदा और मसाना के रास्ते खारिज करने के लिये नमक सोडियम खास चीज़ है, अगर सोडियम यह काम न करे तो लाइम और मैग्नेशियम सख्त हो कर गुरदे और मसाने की पत्थरी पैदा करते है । बकरी के दूध में सोडीयम की कसीर मिक्दार होती है । इन अजज़ा के अलावा इसमें विटामीन्ज़ भी होते हैं ।

बकरी का दूध सर्द व तर और लतीफ़ होता है । जंगलों में चरने वाली बकरीयों का दूध फ़वाायद के एतबार से बेहतरीन ख्याल किया जाता है । यह खांसी, संगरहनी, पेचिश, तपेदिक़, सिल, तिल्ली, जिगर; पुराना बुखार, यरक़ान,बवासीर, दिमाग और खून की बीमारीयों में मुफ़ीद है । बकरी के दूध में अल्तमास और कथा मलिाकर ग़रारे करने से मुंह के छाले दूर हो जाते है । बकरी के दूध में रुई भगूकर रात के वक्त आंखों पर रख कर पटटी बांधने से दर्द चश्म को आराम हो जाता है ।

हामला औरतों के लिये खजूर की शक्ल में आयरन कैप्सूल

हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि0) से मरवी है कि हुज़ूरे अक्दस (स0) ने फ़रमाया मेरे नज़दीक नफ़ास वाली औरत के लिये खजूर के बराबर कोई शिफ़ा नहीं और न ही शहद के बरावर मरीज़ के लिये कोई शै ।

हुज़ूर (स0) ने फ़रमाया अपनी औरतों को हालते नफ़ास में खजूर खिलाया करो क्योंकि जब हज़रत मरयम (अ0) के हां हज़रत इसा (अ0) पैदा हुये तो हज़रम मरयम (अ0) की यह गिज़ा थी अगर इल्मे खुदावीन्द में इससे आला कोई दूसरी गिज़ा होती तो इनको वह ज़रुर खाने को मिलती ।

आप (स0) ने फ़रमाया नफ़ास में जब औरत की गिज़ा (खजूर या छुवारे) होती है इसका बच्चा बुर्दवार होता है ।

Scanned by CamScanner

सुन्नते नबवी और जदीद साइंस 460

(नुज़हतुल मजालिस जुज्व सानी, रहबर ज़िन्दगी)

फ़िलहाल वीट कैप्सूल हामला खवातीन दौराने हमल फौलाद की कमी को पूरा करने के लिये इस्तेमाल कराये जाते हैं । बरलन यूनीवरसीटी के शोब-ए-फार्मा कालोजी के डाक्टर निक्स कलोर ने खजूर पर तवील तहक़ीक़ के बाद यह नतीजा अखज़ किया है कि अगर रोज़ाना एक खजूर हामला खवातीन को इस्तेमाल कराई जाये तो इसका असर हामला के तमाम आज़ा पर मुस्बत पड़ता है और साथ ही बच्चा को बहुत तक़वीयत पहुँचती है । जो खवातीन खजूर का इस्तोमल करेंगी इनके हमल की पेचीदगीयां ख़त्म हो जायेंगी और वज़ए हमल के ख़तरात कम हो जायेंगे ।

(साइंस और वर्ल्ड)

खजूर चूंकि आयरन यानी फ़ौलाद से पुर है और इसकी ज़रुरीयात जिस्म के लिये अहम है मगर चूंकि हामला औरतों में फ़ौलाद की ज़रुरत और अहमीयत बढ जाती है इसलिये इसका खजूर का इस्तेमाल कराना बहुत ज़रुरी है ।

वज़ए हमल के वक़्त माहिरीन खजूर का इस्तेमाल ज़रुरी बताते हैं क्योंकि इससे वज़ए हमल यानी डिलेवरी केस की पेंचीदगीयां और इसके बाद मुख़तलिफ़ अमराज़ से खवातीन बच जाती हैं ।

एक खातून का डिलेवरी केस हमेशा मुश्किल और बहुत परेशान होता था बहुत इलाज कराये लेकिन अफ़ाक़ा न हुआ मशवरा दिया कि इसको रोज़ाना एक दो या इससे ज़ाइद खजूर इस्तेमाल करायें और वज़ए ह़मल से क़ब्ल तक खजूर इस्तेमाल करायें । जब से मरीज़ा हैरत अंगेज़ तरीक़े से सेहत याब हो गई ।

Scanned by CamScanner

ऐफ़.आर.सी.एस डाक्टरों को ख़ास ताकीद

Special Insist for F.R.C.S. Doctors

एक प्रोफेसर सर्जन कहने लगे जब हम बैरुनी ममालिक स्पेशलाईज़ीशन करने जाते हैं तो हमें आपरेशन से क़ब्ल "वाश अप" होने के लिये एक तरीक़ा बतलाया जाता है जो वज़ू के क़रीब तर है ।

इसमें इस बात की खास हिदायत की जाती है कि मरीज़ को आपरेशसन के लिये नशतर लगाने से पहले अपने को साफ़ और मतहहर करो । अगर सर्जन जरासीम आलूदा हाथों के साथ मरीज़ का आपरेशन करेगा तो यही जरासीम मरीज़ को लग जायेंगे ।

इस तरीक़-ए-कार में यहां तक वज़ाहत की गई है कि आपरेशन से पहले हाथों को कहनीयों तक धोयें और पानी हाथों तक बहायें । जिसमें हाथ ऊपर और कंहनीयां नीचे हों । कंहनीयों से बहता हुआ पानी हाथों पर आयेगा तो वह जरासीम धुल कर हाथों को लग जायेंगे और अगर हाथों का पानी बहता हुआ कंहनीयों तक जायेगा तो अगर कोई जरासीम कंहनी पर रह गया तो आपरेशन में नुक़सान का बाइस नहीं बनेगा ।

बिल्कुल हाथों को कंहनीयों तक धोने में भी यही कैफ़ियत है वाक़िइ अस्लामी अमल का एक-एक हिस्सा सेहत और तन्दरुस्ती की बक़ा का ज़ामिन है ।

गुस्सा की तबाही और जदीद साइंस

Damage from Anger and Modern Science

हुज़ूरे अक़दस (स0) का इर्शाद है कि रज़ाये इलाही के लिये गुस्सा के घोंट को पी जाने से बढकर कोई दूसरा घोंट नहीं ।

(उसव-ए रसूले अकरम (स0)

वह आदमी ताक़तवर नहीं जो लोगों को दबाता और मग़लूब करता हो बल्कि वह अदमी ताक़तवर है जो अपने नफ़्स को दबा सकता और मग़बूल कर सकता हो ।

(मआरिफुलअहादीस)

हुज़ूरे अक़दस (स0) का इर्शाद है कि मुसलमानो अगर तुम में से किसी को गुस्सा आये तो उसको लाज़िम है कि वह खामोश हो जाये ।

(अन इबने अब्बास मआरिफुलहदीस, उसव-ए रसूले अकरम (स0)

फ़राइड और गुस्सा

Friad and Anger

माहिरे नफ़सीयात ने गुस्से के ज़िम्न में जो तहक़ीक़ की है इसका खुलासा पेशे क़ारेईन है ।

"गुस्सा मआशरे की उन बड़ी बुराईयों में से है जिससे इन्सान की शख्सी और तामीरी बुलन्दी को ज़वाल आता है । इन्सान हमेशा इन हालात से दो चार रहता है जिसकी वजह से उसके आसाब और हवास खींचे रहते हैं। इसकी याद्दाश्त भी इंससे मुतअस्सिर हुये बग़ैर नहीं रहती ।

गुस्सा दरअस्ल हवास और आसाब का तरजुमान है और इस बात को ज़ाहिर करता है कि इस आदमी में कुवते बर्दाश्त कम और कूवत फ़ैसला में उजलत है हत्ता कि यह आदमी नादिम और पशेमानी के हालात से हर वक़्त दो चार रहात है" ।

Scanned by CamScanner

गुस्सा........ ग़ारत गर हयात

Anger Plunderer of Life

गुस्सा ग़ारत गर हयात है । मुसलमानों को हुक्म है कि गुस्सा आ जाये और खड़े हो तो बैठ जाओ, बैठे हो तो लेट जाओ और अगर फिर भी ठंडा न हो तो पानी पी लो । योगा के माहिरीन के मुताबिक़ करोध (गुस्सा) और ओझ (लालच) से जीवन शकती (कुव्वते हयात) भस्म हो जाती है । बड़ी बुढ़ियां दूध पीलाती माओं को गुस्से और गम की हालत में बच्चे को अपना दूध पीलाने से मना करती हैं, क्योंकि इससे बच्चे की ज़िन्दगी खतरे में रहती है ।

डीवक यूनीवरसीटी अमरीका के एक सांइसदान डाक्टर रीड फोरडबी दीमज़ी के मुताबिक़ गुस्से और बाज़ कीना रखने वाले अफ़राद जल्द मर जाते है । इनके मुताबिक़ इससे इनसानी क़लब को वही नुक़सान पहुंचाता है जो तम्बाकू नोशी और हाइ बलड प्रेशर से पहुंचता है । अमरीकन हाट एवसी ऐशन की जानिब से साइंसी अदबीयों के सिमीनार में तक़रीर करते हुये उन्होंने बताया कि बहुत से लोग वक़्त से पहले महज़ बाज़ और कमने के जज़्बात की शिद्दत की वजह से चल बस्ते हैं । गुस्सा और बाज़ क़लबी दर्दो के अहम असबाब में से एक है । इसी तरह हरस व तमा में मुबतला बेचैन व बेसर अफ़राद भी हद से ज़्यादा बढती हुई तमन्नाओं आरज़ूओं के हाथों अपनी शमा ज़िन्दगी को गुल कर लेते हैं ।

इनके बरखिलाफ़ जो लोग अपने आसाब को क़ाबू में रखते है और इनके मिज़ाज में बर्दाश्त, शगूफ़्ती, क़नाअत और सब्र व शुकर का मादा होता है, ज़िन्दगी के हालात का मुक़ाबला बेहतर तौर पर करते है ।

माहिरीन ने गुस्सीले, आसाबी ज़दा, बेचैन और ज़रुरत से ज़्यादा आज़ू मन्द अफ़राद को ज़मरा ''अलीफ़'' और बरबाद, हलीम और सबर व शाकिर लोगों को ज़मरा ''ब'' में तक़सीम किया है । वह अब इस नतीजे पर पहुंचे है कि

ज़मरा अलीफ़ से तअल्लुक़ रखने वाले अफ़राद बिल्उमूम अमराज़ क़लब की ज़द में रहते हैं और इन्हें को लीस्ट्रोल को ज़्याती, सिगरेट नोशी और बीश तनावी (हाई बलड प्रेशर) ही की तरह दौरा क़लब का खतरा लाहक़ रहता है ।

डाक्टर वलीज़ के ख़्याल में अमरीका की नसफ़ आबादी का तअल्लुक़ ज़मरा अलीफ़ से है । इस क़िस्म के लोगों को जो खतरात लाहक़ हैं इनका तदारक नफ़सीयाती तदाबीर से ज़्यादा मुमकिन और आसान होगा ।

शुमाली कीवलेना की डियूक यूनीरवरसीटी के इन 335 माहिरीन क़लब ने जिन्होंने 25 साल क़ब्ल मेडिकलों के तबाअ की हैसियत से जो मेडिकल टेस्ट लिये थे दरयाफ़्त किया कि बाज़ व अनाद रखने वाले अफ़राद में तीन फीसद की मौत वाक़अ हुई । यह वह लोग थे जिनमें यह जज़्बा औरों के मुक़ाबले में पचास फ़ीसद कम था जब कि दिगर असबाब के इलावा ऐसे शदीद जज़्बात वालों में मौत की शरह 15 फ़ीसद रिकार्ड की गई ।

इस यूनीवरसीटी के मेडिकल सैन्टर में होने वाली सात साला तहक़ीक़ के मुताबिक़ और कीना रखने वालों की मौत शीरयानों की खराबीयों की वजह से वाक़अ हुई । इन में मौत के दीगर असबा शामिल नहीं हैं ।

अगरचे डाक्टर वलीमर बाज़ और कीने की वजह से बलाकतों के बिल्कुल ठीक शरह के ताइन से क़ासिर हैं ताहम इनके मुताबिक़ इसमें दूसरे लोगों पर अदम इतदाद, गुस्सा, मामूली बातों पर बुराफ़रोख़्ता होना और बात-बात पर नाम भौं चिढाना जैसी आदात का बड़ा दखल है । ऐसे लोग जब भी इन कैफ़ियत में मुबतला होते हैं इनके अरामज़ क़लब में मुबतला होने के इमकानात भी बढ़ जाते हैं इनमें हारमोनी तवाज़िन तेज़ी से बिगड़ने लगता है जब कि ग्रोप "ब" से मुतअल्लिक़ रखने वाले अफ़राद में यह बात नहीं होती । मज़ीद तहक़ीक़ और क़तइ नताइज की निशान देही तक माहिरीन के मशवरे के मुताबिक़ यही मुनासिब है कि अमराज़े कल्ब से बचाव की देगर तदाबीर के साथ खूद को कुंबे, हस्द, बुग़ज़, दुशमनी और गुस्से जैसी मन्फ़ी व मुज़िर आदाद से दूर रखा जाये ।

(साईकालोजी इन मेडिकल)

तेल और कंघी का इस्तेमाल साइंस की रोशनी में

Use of Oil and Comb in the Light of Science

हज़रत अनस (रज़ि0) ने फ़रमाया कि हुज़ूरे अक़दस (स0) सरेअनवार को कसरत से तेल लगाते थे और अपनी दाढी शरीफ़ को कंघी फ़रमाया करते थे । आप (स0) अपने सरेमुबारक पर (अमामा के नीचे) एक कपड़ा रखते वह कपड़ा ज़्यादा तेल लगाने की वजह से तेल का कपड़ा मालूम होता था।

(मिश्कात, शमाइले, तिरमज़ी, रहबरे ज़िन्दगी)

अब से कुछ अर्सा क़ब्ल और बाज़ डाक्टर अब तक इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सर में तेल लगाना और सर का मसाज करना कतई कुछ फ़ायदा नहीं देता लेकिन क़तअ नज़र इसके दूसरी तरफ़ हुज़ूर (स0) का अमल तेल लगाने के बारे में मौजूद है ।

इस ज़िम्न में जब मज़ीद रिर्सच की गई तो यह बात सामने आई कि सर में तेल लगाना वाक़इ मुफ़ीद है ।

सर जेम्ज़ सागम के मुशाहिदात

सर जेम्स सागम कनाडा के अज़ीम फ़ीज़योथरापीस्ट है सर में तेल लगाने के बारे में उनके तजरिबात शाइअ हुये जो नज़रे क़ारईन हैं ।

''मैंने सर पर तेल लगाना जहां वक़्त को ज़ाइय करना गरददानता था वहां सरमाया की क़िल्लत का भी खतराथा लेकिन एक वाक़िया मेरे लिये निशाने राह बन गया ।

मै कयूटर (एक दहात का नाम) के रोड पर मोटर दौड़ाये जा रहा था। एक जगह एक साहिब को देखा कि वह दूसरे बैठे हुये बुढे आदमी के सर पर मसाज कर रहे थे । मैने समझा शायद यह कोई तशवीश नाक केस है। मैंने मोटर रोकी उनसे अहवाल पूछा कहने लगा मेरा बाप पागल हो गया था घर से दूर तक निकल जाता था । बहुत इलाज किये हत्ता कि डाक्टर मोर के पास भी गये लेकिन अफ़ाक़ा न हुआ तो मुझे किसी ने बताया कि तुम अपने वालिद के सर पर आइल की मालिश करो तो मैंने ऐसा करना शुरु कर दिया मुझे 27 हो गये ऐसा यौम करते हुये मेरा वालिद अब बिल्कुल तन्दरुस्त है ।

उस की बात सुनकर मै हैरा हुआ मैंने मरीज़ का बगौर तज्ज़िया किया वाक़इ मरीज़ तन्तरुस्त था । उसकी साबक़ा रिपोर्टो के मुताबिक़ वह शख़्स वाक़इ ज़ेहनी मरीज़ था ।

उसके बाद में उस जैसे और उसके इलावा दूसरी अमराज़ में मुबतला कई मरीज़ों को यह तरीक़ा इस्तेमाल कराया तो उसके फ़वायद मेरी तवक़्क़ा से बढ कर हासिल हुये ।

क्योंकि मैंने इसे ज़ेहनी दबाव, आसाबी खिचाव, दर्दे सर के पुराने मरीज़, गर्दन पटठों के दर्द, शानों के दर्द और खिचाव, निगाह की कमज़ोरी, चेरे की सर्जरी के लिये बहुत मुफ़ीद पाया'' ।

(साइंस और इनसान)

कंघी करने से एक हरारत और अलर्जी पैदा होती है जो बालों के ज़रीये जिस्म के आसावी निज़ाम को जानदार और क़वी करती है । हत्ता कि मुसलसल कंघी करना बालों को बढाता है और इन्हें घना करता है ।

कंघी की एक हिकमत यह भी है कि अगर बालों में कंघी न की जाये तो इनमें जरासीम अटक जाते है जो अन्दर ही अन्दर बढते रहते है एक वक़्त में खतरनाक कैफ़ियत इख़्तियार कर लेते हैं ।

कंघी न करना जूओं के खतरात को बढ़ा देता है ।

बर्तन नबवी (स०) और जदीद साइंस

Utensils of Prophet and Modern Science

आप (स0) के पास एक लकड़ी का प्याला था ।

(उसवए रसूले अकरम (स0)

आप (स0) के पास एक शीशे का प्याला भी था ।

(उसवए रसूले अकरम)

हुज़ूरे अक्दस (स0) मिटटी के बर्तन भी इस्तेमाल फ़रमाते थे । (मामूलाते नबवी (स0)

पलास्टिक के बर्तन

Plastic Vessels

पलास्टिक के बर्तन फ़ैशन के दौर की मशहूरे आलम सौग़ात है इस क़िस्म की बर्तनों में खाने पीने की अशया रखना और इन में खाना पीना सख्त मुज़िर है खाने पीने के लिये सबसे बेहतर और महफूज़ मिटटी, चीनी और शीशे के बर्तन है ।

अब पलास्टिक और मसनूई रेशे के बर्तन इस्तेमाल हो रहे है इसके क्या नुक़सानात है ।

Scanned by CamScanner

कोलीकटी यूनीवरसीटी की तहक़ीक़

Risearch of Calicut University

कोलीकटी कट यूनीवरसीटी साइंसी मरकज़ के डाक्टर माइक फलप ने बताया कि ऐसे (पलास्टिक) के बर्तनों में गर्म एशया खास तौर पर चाय और कॉफी का पीना बहुत मुज़िर है। यह मुज़िर असरात इस वक्त और भी बढ जाते है जब चाय में लीमू का रस डाल कर पीया जाये क्योंकि इस तरह पलास्टिक बर्तन की अन्दरुनी सतह गरमी और तेज़ाबीयत के असर से पीघल कर हल होने लगती है। ऐसी सूरत में इन बर्तनों में चाय पीने से जो पोलीस्टरीयन जिस्म में जायेगी वह सरतान पैदा करने का बाइस बनेगी।

चूहों पर तजरिबा गाहों में तजरिबे किये गये जिनसे पता चला कि पूलीस्टरीन के बर्तनों से पीघले और हल होने वाला माद्दा पेट में जाकर सरतान का सबब बनता है। डाक्टर फलप ने लोगों को मशवरा दिया है कि वह अब तक के आम मरविजा बर्तनों को ही खाने पीने में इस्तेमाल करें।

(माहनामा मेडिकल)

एक अखबारी अत्तलाअ के मुताबिक़ चीन के सूबा यान्ग में लोगों ने मिटटी के बर्तन इस्तेमाल करना शुरु कर दिये है। वहां के तहक़ीक़ी मरकज़ ने इस बात की तसदीक़ की है कि मिटटी के बर्तन में जरासीम चले जायें वह उसे जज़्ब करके दूसरी तरफ़ निकाल देता है।

अगर इसी बात को बग़ौर देखें तो वाक़ई यह वाक़िया बीमारी साबका ज़िन्दगी की आसूदगी और अमराज़ की कमी पर दलालत करता है। जब इन बर्तनों के इस्तेमाल का रिवाज इन्सानी तारिख जितना है तो इन में अमराज का खातमा भी बहुत हद तक हो जाता है।

मिटटी के बर्तन में पानी पीने का मज़ा और धात के बर्तन में पानी पीने का

Scanned by CamScanner

मज़ा मुखतलिफ़ है । तजरिबा शाहिद है ।

क्योंकि हमने फ़ितरत से बग़ावत की है इसलिये फ़ितरत ने बगावत के सिले हमें परेशान कर दिया है । आख़िर आज पोलेथीन के बर्तन इस्तेमाल करके हम ने अपने आप को हिलाकत में डाल दिया है ।

कभी आप ने ग़ोर किया है कि हम फिर से अस्ल ज़िन्दगी की तरफ़ लौट रहे हैं हमारे रोज़ मर्रा इस्तेमाल के बर्तनों में शीशी, चीनी और पत्थर के बर्तनों का इस्तेमाल बकसरत हो रहा है । जब्कि हुज़ूरे अक़दस (स0) के पास शीशे का एक प्याला था ।

एक फ़ाज़िल यूरपी डाक्टर ने लिखा है कि "बाज़ औक़ात मेदे में गिज़ा में शामिल शुदा कुदरती ज़हर रह जाता है लेकिन मज़बूत परदों पर उसका काफ़ी असर नहीं पड़ता । वह पूरी मुस्तइदी से ज़हर के असर का मुक़ाबला करते हैं और कुछ नुकसान नहीं पहुचंता । लेकिन जब एलूमीनीयम के मुरक्किबात इन परदों को कमज़ोर कर देते हैं तो इस ज़हर के वही असरात जो खूर्दबीन से भी मालूम न हो सकते थे । नुमायां हो जाते हैं" ।

एलूमीनियम के मेदे में पहुंचकर अपने असरात दिखाने के बाद मुन्दरजा ज़ेल हालातें पैदा हुआ करती है :-

बाज़ मर्ताबा पेचीश और क़ै शुरु हो जाती है जी मतलाने लगता है, भूख कम हो जाती है, खून बिगड़ जाता है और बदहज़मी की शिकायत रहने लगती है ।

1. मशी गन यूनीवरसीटी के डाक्टर वक्टोरन का फ़ैसला है कि एलूमिनीयम के तमाम साल्ट इनसानी सेहत के लिये मुज़िर हैं ।

2. शकागो यूनीवरसीटी के डाक्टर वील्ज़ ने लिखा है कि, एलूमीनीयम के मुरक्किबात मेदे में पहुंचकर मुहलिक असरात दिखाये बग़ैर नहीं रहते । अन्दरुनी आज़ा के तमाम पुरज़े कमज़ोर हो जाते हैं । इनके मसामों में एलूमीनीयम के मुरक्किबात जम कर नुक़सान पहुंचाते हैं ।

Scanned by CamScanner

3. डाक्टर एच ए शीमगन लिखते हैं कि अलमूनियम के मुरक्किबात मेदे में पहुंचकर भूख कम कर देते हैं और बाज़ औक़ात दर्द की सी कैफ़ियत पैदा हो जाती है । जिसका नतीजा इन मुरक्किबात की वजह से पेंचीश, कै और जी का मतलाना होता हे ।

4. रियासत हाये मुत्तहिदा अमरिका हैल्थ लीग के सदर डाक्टर हेल्ड का फ़ैसला है कि यह मुरक्किबात मेदे की ताक़त बर्बाद करते हैं ।

5. डाक्टर जे वीस्ट नाइट ऐफ सी एस ने लिखा है कि अलमूनियम के बर्तनों का इस्तेमाल तिब्बी तौर पर मुज़िर है । इसमें कलाम नहीं कि यह चमकती हुई धात औरतों का दिल मोह लेती है और बहुत से खाने इसी धात के बर्तन में पकते हैं । लेकिन इन्हें चाहिये कि वह इन बर्तनों के इस्तेमाल से परहेज़ रखें और इन में ऐसी चीज़ें हरगिज़ न पकायें । जिनमें तेज़ाबी माद्दे या खारी अजज़ा शामिल हों ।

अलमूनियम के बर्तन मुज़िरे सेहत हैं

Almunium Vessels are Hermful of Health

हम में ऐसे लोग बहुत कम हैं जो खाने पीने में इस क़द्र मुहताज हों कि तिब्बी उसूलों को मद्दे नज़र रखें । मगरिबी ममालिक में क़ाबिल डाक्टर और माहिरीन गिज़ा के मुतअल्लिक़ अहम मालूमात अखज़ करके लोगों को सेहत क़ायम रखने और गिज़ा को ज़्यादा से ज़्यादा मुफ़ीद बनाने की बेहतरीन हिदायतें करते रहते हैं । लेकिन बदक़िस्मती से हमारे हां किसी ने कभी भूल कर भी इन ज़रुरी बातों की तरफ़ तवज्जह नहीं की । हम मगरिब की तक़लीद तो करते हैं और इसमें कुछ शक नहीं कि जहाँ हमने वज़ा क़ता, बूद व बाश और लिबास में मग़रिबी ममालिक की तक़लीद की है वहां तांबे और पीतल के बर्तन भी मौकूफ़ करके इनकी जगह चीनी ओर एलूमिनीयम के बर्तन इस्तेमाल करने

Scanned by CamScanner

लगे हैं । तांबे और पीतल की धातों पर एलूमीनीयम की धात को इस लिये तरजीह दी गई है कि ज़ंग आलूद नहीं होती, हलकी और चमकीली होती है और खूबसूरत होने के अलावा सस्ती भी है । लेकिन यह किसी को मालूम नहीं कि इस धात के बर्तनों में खाना पकाने से इस के अन्दर ऐसे-ऐसे मुरक्किबात शामिल हो जाते हैं जो इन्सानी सेहत के लिये निहायत मुज़िर और मुहलिक होते हैं ।

जदीद तहक़ीक़ से मालूम हुआ है कि एलूमीनीयम के बर्तनों में खाना पकाना सेहत के लिये बहुत मुज़िर है । हाल ही में इस सिलसिले में डाक्टर जार्ज डोनिलसन ने तजरिबात के बाद साहिब किया है कि एलूमीनीयम के बर्तनों में खाना पकाने से इसके बाज़ अजज़ा मुखतलिफ़ क़िस्म के ज़हर पले मुरक्किबात में तबदील होकर खाने में मिल जाते हैं और मुखतलिफ़ तबआ पर मुखतलिफ़ क़िस्म के मुहलिक असरात का बाइस होते हैं । बाज़ तबीयतें खसूसीयत के साथ इन सम्मी असरात को क़बूल कर लेती हैं । यह असरात पहले पहल निहायत मामूली और ग़ैर महसूस होते हैं । लेकिन सबब के ज़ाइल न होने की वजह से बढ़ते जाते हैं । हत्ता कि इनसान को अच्छा ख़ासा मरीज़ बना देते हैं । एक दूसरे मुहाक़्क़क़ का बयान है कि "एक मर्तबा जब सोडे का पानी एलूमीनीयम के बर्तन में डाला गया तो इस में झाग पैदा होने लगा । हालांकि जब इसी पानी को शिशे के गिलास में डाला गया तो ज़रा झाग पैदा न हुआ । यक़ीनन खाने पकाने के दौरान में एलूमीनीयम के अजज़ा हल होकर खाने की चीज़ों में मिल जाते हैं और मुखतलिफ़ अमराज़ का बाइस होते हैं एलूमीनीयम के बर्तन में निस्फ़ घंटे तक पानी को जोश देने से इसमें एलूमीनीयम हाईडरो ऑक्साइड (एक ज़हरीली क़िस्म का मुरक्कब) शामिल हो जाता है जो सेहत के लिये निहायत मुज़िर है" ।

अगर आप इस धात के किसी बर्तन को चाकू से खुरच कर ज़बान से चमकती हुई सतह का ज़ायक़ा चखें तो फिटकड़ी का सा ज़ाइक़ा मालूम होगा। दरअस्ल फिटकड़ी को अंग्रेज़ी में एलम इस लिये कहते हैं कि वह एलूमीनीयम का एक साल्ट है । एलूमीनीयम के ताम कीमायावी मुरक्किबात मुज़िर होते हैं

Scanned by CamScanner

बाज़ में ज़हरीला माद्दा ज़्यादा होता है । बाज़ में कम और जब वह मुरक्किबात गिज़ा के साथ मेदे में पहुंचते है तो अपना अमल शुरु कर देते है । इनका असर मेदे में पहुंचकर किया होता है यह बाद में बयान किया जायेगा । पहले चन्द मुशाहिदात व तजरिबात मुलाहिज़ा हों ।

चार मुखतलिफ़ सब्ज़ीयों को मिला कर चार हिस्सों में तक़सीम किया गया। एक हिस्सा चीनी के बर्तन में पकाया गया । बाक़ी तीन हिस्से एलूमीनीयम के बर्तनों में पकाये गये । चीनी के बर्तन वाली तरकारी में एलूमीनीयम का कोई मुरक्कब न निकला लेकिन बाक़ी हर हिस्सा में एलूमीनीयम के साल्ट का काफ़ी हिस्सा मौजूद था ।

एलूमीनीयम के बर्तन में चाय तैयार करके इस की छलनी में छानने से चाय में इसका काफ़ी हिस्सा शामिल हो जाता हे ।

गाजर, अजवाइन और दिगर कइ सब्ज़ीयों में खारी शोरबा एलूमीनीयम के बर्तनों में 30 मिनट तक रहने से इसके मुरक्किबात से महफ़ूज़ नहीं रहता ।

अगर एलूमीनीयम के मुरक्किबात मेदे में पहुंचकर अन्तड़ीयों को कमज़ोर कर देते और मेदे के नाज़ुक परदों पर छोटे-छोटे ज़ख़्म पैदा हो जाते हैं ।

यह मुरक्किबात गिज़ा के साथ मिलकर गगिज़ाइयत को ज़ाइल कर देते हैं और गिज़ा के मुखतलिफ़ अजज़ा इनसान के मुखतलिफ़ क़वा को ताक़त पहुंचाने के क़ाबिल नहीं रहते ।

गिज़ा हज़म हो जाने के बाद मेदे में एलूमीनीयम के मुरक्किबात रह जाते हैं जिन का रगों और मेदे के नाज़ुक परदों पर असर पड़ता है ।

वाज़ेह रहे कि एलूमीनीयम के बाज़ मुरक्किबात इन्सानी सेहत और बक़ा के लिये मुसलसल इस्तेमाल भी हो रहे हैं ।

Scanned by CamScanner

दूध की लस्सी और जदीद साइंस

Diluted Milk & Modern Science

आप (स0) कभी खलिस दूध नोश फ़रमाते और कभी सर्द पानी मिलाकर यानी लस्सी ।

(मदारिजुन नबूवत)

हज़रत जाबिर से मरवी है कि हुज़ूरे अक़दस (स0) अपने एक सहाबी (रज़ि0) के हमराह एक अन्सारी के बाग़ में तशरीफ़ ले गये वह अन्सारी सहाबी अपने बाग़ को पानी दे रहे थे । हुज़ूरे अक़दस (स0) ने उन्हें फ़रमाया अगर तुम्हारे पास रात का बाक़ी पानी मुशकीज़ा में हो तो लाओ वर्ना हम मुंह लगाकर पानी नोश फ़रमा लेते हैं । उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे पास रात का बासी पानी मुश्क में है । वह अपने झोंपडे में गये प्याले में पानी डाला और इसमें बकरी का दूध दूहा उसे हुज़ूर (स0) ने नोश फ़रमाया उन्होंने दोबारह ऐसे ही किया तो उस सहाबी (रज़ि0) ने भी नोश किया जो आप (स0) के साथ थे ।

(बुखारी)

विल्लियम कीयूर और दूध की लस्सी

William Cure & Diluted Milk

विल्लियम कयूर के मुताबिक़ अगर हम दूध के फ़वायद को बढ़ाना चाहते हैं तो हम इसमें पानी मिलाकर इसे इस्तेमाल करें तो इसके फ़वायद बढ़ जायेंगे। डाक्टर कयूर ने इस में पानी मिलाने के दरजात बताये हैं ।

एक्स वन **(X-1)** : दूध एक लीटर और पानी एक लीटर मिलाकर पीयें।

एक्स टू **(X-2)** : दूध एक लीटर पानी ढेड़ लीटर मिलाकर पीयें ।

एक्स थ्री (X-3) : दूध एक लीटर पानी 4 लीटर मिलाकर पीयें ।

एक्स थ्री सबसे ज़्यादा ताक़तवर और फ़वायद से लबरीज़ है । लस्सी ऐसे मरीज़ों को दीं जिन में टाइफ़ाइड के ज़रासीम ज़्यादा हों । जिनके मेदे में तीज़ाबीयत बहुत ज़्यादा हो । हत्ता कि अल्सर के मरीज़ों में मेरे तजरिबात लस्सी के ज़िम्न में बहुत ज़्यादा हैं ।

तजरिबात से यह बात रोशन है कि पेशाब की जलन, रुकावट और पत्थरी की अलामात में दूध की लस्सी बहुत मुफ़ीद है ।

जहां गरमी में कोइ मशरुब प्यास न बुझा सके वहां दूध की लस्सी आला मशरुब है क्योंकि बाक़ी तमाम मशरुब मशरिक़ या मग़रिब हैं और यह मशरुबे नबवी (स0) है ।

लस्सी

Diluted Milk

लस्सी में ऐसे जरासीम हैं । जिनकी तबई ख़ासीयत यह है कि पेट में जाते ही अमराज़ पैदा करने वाले जरासीम से जंग करके उन्हें मग़लूब कर लेते हैं। इसलिये अमराज़ का मुक़ाबला करने के लिये लस्सी बेहतरीन चीज़ है ।

आर्युवेदिक में इसे मरज़ सिंगरहनी का क़ातिल बयान किया गया है। यानी जिस तरह आग ख़स व खाशाक के अम्बार को खाकस्तर कर देती है इसी तरह लस्सी मरज़ सगंरहनी को बीख़ व बन से उखाड़ देती है। संगरहनी का मरज़ क़ीमती अदवीया के इस्तेमाल से भी लस्सी के बग़ैर अच्छा नहीं होता। सिर्फ़ लस्सी ही बहुत से अमराज़ का तीरयाक़ और अकसर दवाओं से अफ़ज़ल है। संगरहनी के मरीज़ों को हमेशा बकरी के दूध की लस्सी पीनी चाहिये ।

लस्सी में लेकटिक ऐसिड (Lactic Acid) । की मौजूदगी के बाइस पेट में गैस पैदा करने वाले जरासीम पर इस का असर निहायत उमदा होता है। इस में गोश्त पैदा करने वाले प्रोटीन के निहायत लतीफ़ ज़र्रात होते हैं। इस लिए

Scanned by CamScanner

यह दिगर अशया की तरह हज़्म होने में सकील नहीं होती । यह प्रोटीन बहुत जल्द हज़्म हो जाता है और दुसरी अशया को भी हज़्म करता है । इस के इस्तेमाल से सक़ील और नाकाबिले हज़्म गिज़ाओ के हज़्म होने में मदद मिलती है । जिनको मेदा लस्सी की इमदाद के बग़ैर हज़्म करने से आजिज़ होता है । लस्सी में कैल्शियम मैगिनेशियम, प्रोटीन, सौडियम, फ़ासफ़ोरस, क्लोरिन, सल्फ़र वग़ैरह नमक होते हैं और यह सब गोश्त और हड्डी की परवरिश करने वाले है ।

बेकायदा तोर पर बार-बार कइ चीज़ो के ख़ाने से वह अच्छी तरह हज़्म नहीं होती और उन का ग़ैर मुनहज़िम हिस्सा अन्तड़ियो में सड़ने लगता हैं । लेकिन लस्सी पिने से अन्तड़ियो में ख़ून का दौरा बड़ी तेज़ी से होने लगता हैं । और वो तमाम ग़लीज़ और मुज़िर माद्दों से साफ़ हो जाती हैं ।

लस्सी से रतूबते हाज़मा ज़्यादा पैदा होती हैं । इस लिए क़ुव्वते हाज़मा बढ़ जाती हैं और इस के इस्तेमाल से बदन क़वी और मज़बूत हो जाता हैं लस्सी से अलात बोल व बराज़ के अफ़आल को ताक़त मिलती हैं । गिज़ा बर वक्त हज़्म होती हैं और फुज़लात बाकायदा ख़ारिज होती हैं । फ्रांस के यसटुरिट अन्सटियुट के डाक्टर सचिन ने तजरबियात से साबित किया हैं कि लस्सी के इस्तेमाल से बुड़ापा जल्द नहीं आता । जिस्म की परवरिश करने के लिए लस्सी आला दरजा की गिज़ा हैं । ताज़ा और मिठी लस्सी पिने से अन्तड़ियो में ज़हर पैदा करने वाले जरासीम फ़ौरन, हलाक हो जाते हैं और क़ुव्वते हाज़मे में इज़ाफ़ा हो जाता हैं ।

मोटा आटा और जदीद सांइस

Thick Flour & Modern Science

सुहेल बिन साद (रज़ि0) से किसी ने पुछा कि हुजूर अक़दस (स0) ने कभी सफ़ेद मैदा की रोटी भी खाई हैं । उन्होंने जवाब दिया कि हुजूर अक़दस (स0) के सामने अख़ीर उमर तक कभी मैदा आया भी नहीं फ़िर साइल ने पुछा कि हुजूर (स0) के ज़माने में तुम लोगो के यहां छलनियाँ थी उन्होंने फ़रमाया कि

Scanned by CamScanner

इस आटे में फूक मार लिया करते जो मोटे-मोटे तिनके होते थे वह उड़ जाते थे बाकि़ गुंघ लेते थे ।

(शमाइले तिरमीज़ी)

आज की सांइस ख़ुराक पर बहुत ज़ोर दे रही है माहिरिन के मुताबिक हमारी दवाएं उस वक़्त नाकाम हो जाती हैं जब हमारा मरीज़ नाकि़स गिज़ा खाकर जिस्म को तन्दुरुस्त रखने की अबस कोशिश करता है । गिज़ा में सब से पहला मसला आटे का है क्योंकि बाज़ारी आटा बिलकुल मैदे की तरह है और जो लोग घर का आटा पिसवाते हैं तो वो भी बिलकुल बारीक आटा पीसते है । जिस में चोकर, बुरह या छान बिलकुल नहीं होता आटे में से ताकत वर चीज़ छान ही है ।

दिल के अमराज़ से बचाव

Protection of Heart Diseases

कार्डयालोजिस्टि दिल के मरीज़ों बगै़र छनी रोटी खिलाते है । मरीज़ों को ख़ास हिदायात होती हैं कि वह ऐसे आटे की रोटी खायें जो मोटे और छानदार आटे से तैयार शुदा हो ।

क्योंकि छान खून में कोलीस्ट्रोल और लेसीथीन के बढने को रोकता है। इससे खून गाड़ा नहीं होता है । छान में ऐसे अजज़ा मौजूद हैं जो दिल की नालियों के सुकराव के अमल को कम करते हैं हत्ता कि दिल की नालियां छान के बकसरत इस्तेमाल से ज़्यादा से ज़्यादा खून लेनें का इस्तेदाद हासिल कर लेती है ।

दाइमी क़ब्ज़ से बचाव

Protection of Permanent Constipation

छान और मोटे आटे की कमी की वजह से इस वक्त हर शख़्स मैदे का

Scanned by CamScanner

मरीज़ है । गैस, तबख़ीर, दाइमी कब्ज़, एजाबत का ग़ैर तसल्ली बख़्श आना यह तमाम अमराज़ दरअस्ल हमारी ग़िज़ा से पैदा होती हैं इनकी बुनयादी वजह आटा है ।

क्योंकि मोटा आटा और छान आंतों की हरकात को जिस्मानी ज़रुरत के मुताबिक़ बढ़ा देता है । जिससे आंतों की खुश्की और इनकी हरकात की कमी ख़त्म होकर दाइमी क़ब्ज़ ख़त्म हो जाती है ।

दाइमी दम्मा के मरीज़ों को जब छान वाली रोटी दी गई तो हैरत अंगेज़ तरीक़े से सेहत की तरफ़ माइल हुये । अगर छान को उबाल कर उसका जोशान्दा चाय और क़हवा की मानिन्द पीया जाये तो यह खांसी, दाइमी नज़ला, ज़ुकाम, दम्मा और मेदे की तबख़ीर गैस के लिये बहुत मुफ़ीद और आज़मूदा है।

नाख़ून काटना सुन्नते नबवी (स0) भी इलाज भी

हुज़ूरे अक़दस (स0) का मामूल बाज़ रिवायत के मुताबिक़ जुमे के दिन और बाज़ रिवायत में जुमअरात के दिन नाखून हाथे मुबारक तराशने का था।

(उसवए रसूले अकरम (स0)

आप (स0) पन्द्रवहे दिन नाखून काटते थे ।

(उसवए रसूले अकरम (स0)

मेडिकल के उसूल और क़ानून के मुताबिक़ पेट के किड़ो के अंण्डे इन्सानी नाखून में पोशिदा होते हैं और इन्सान जब खाना ख़ाता है तो यह अंण्डे खाने में शामिल हो कर पेट में चले जाते हैं और अन्दर ही अन्दर फलते फूलते रहते है ।

मेडिकल के क़ानून के मुताबिक़ आतों के कीड़ों की गोली हाथ से न उठाइ जाये बल्कि किसी खुश्क कागज़ से उठाकर मुंह में डाली जाये गोली खाने से

क़ब्ल गुस्ल करें धूप में खुश्क किये हुये कपड़े पहनें । बिस्तर को ६
ाएं बिस्तर की चादर को धोकर धूप में खुश्क करें और फिर इस्तरी करके बिछायें रात को गोली खायें फिर सुबह उठें तो इसी तरह गुस्ल करें, बिस्तर बदलें, चादर बदलें, लिबास बदलें और नीम गरम पानी से नहायें क्योंकि बाज़ औक़ात कीड़ों के अन्डे हाथों, बदन और कपड़ों पर लगने की वजह से जिस्म के अन्दर चले जाते हैं और अगर इस लिबास को साफ़ करेंगे और नाखुन काटेंगे तो अन्डे दफ़ा होकर सेहत और तन्दरुस्ती का बाइस बनेंगे ।

तहक़ीक़ के मुताबिक़ जो खवातीन नाखुन बढाती है वह खून की कमी का शिकार हो जाती है । ऐसी खवातीन नफ़सीयाती अमराज़ का ज़्यादा शिकार होंगी । हत्ता कि एक माहिरे नफ़सीयात के बक़ौल नाखुन बढाना इतना खतरनाक है कि इनसान को इतना नफ़सीयाती मरीज़ बना देता है कि इनसान खुदकशी की तरफ़ माइल हो जाता है ।

सुन्नते नबवी (स0) और फ़ैम्ली पलानिंग

Family Plaining and Sunnati Nabvi

आप (स0) ने फ़रमाया निकाह करो क्योंकि मैं तुम्हारे ज़रीये दूसरी उम्मतों पर तुम्हारी कसरत दिखाऊँगा । (ज़ादूलमआद)

हज़रत इबने अब्बास (रज़ि0) ने फ़रमाया इस उम्मत में वह शख्स बहुत अच्छा है जो कसीरुल्अयाल हो । (ज़ादूलमआद)

आप (स0) ने ज़्यादा बच्चे जनने वाली औरत से निकाह की उम्मत को तरग़ीब दी है ।

(मामूलाते नबवी (स0)

हज़रत अक़दस (स0) ने कसरते उम्मत को पसन्द फ़रमाया और कुरआन

मजीद में अल्लाइतआला ने वाज़ेह फ़रमाया कि "अपनी औलाद को भूक के डर से क़त्ल न करो मैं तुम्हें रिज़्क़ देता हूं और उन्हें रिज़्क़ देता हूँ"।

जब्कि हमारी तमाम ताक़तें इस बात के लिये इस्तेमाल हो रही है कि किसी तरह हम (कम बच्चे खुशहाल घराना) का मिसदाक़ बन जायें । हालांकि यह मुसलिम दुनिया के खिलाफ़ साज़िश है कि इनकी नस्लों को बांझ किया जाये, इनकी नस्लों को कम किया जाये हत्ता कि यह सफ़हये हस्ती से मिट जायें ।

मुशाहिदात और तजरिबात के मुताबिक़ जो खवातीन बच्चों को कम करने के लिये अदवीयात इस्तेमाल करती हैं इनकी सूरते हाल कुछ यूँ होती है ।

एक खातून को बेहोशी के दौरे पड़ते थे ।. इलाज मुआलजे के लिये बहुत इलाज कराये हत्ता कि पीरों फ़क़ीरों के चक्कर लगाये लेकिन अफ़ाक़ा नदारद बन्दा के पास इलाज के लिये लाया गया इस खातून ने दौरान गुफ़्तगू खुद ही बताया कि मैंने अन्दर छला रखा हुआ है और जब से वह रखा है इस वक़्त से दौरे शुरु हुये हैं । अब मुझे खुद ही इहसास हुआ है कि यह रखना मेरे हक़ में नामवाफ़िक़ है । जब मरीज़ा का छला निकलवाया गया तो मुनासिब इलाज के बाद सेहत मन्द हो गई ।

एक खातून पागल हो गई तश्खीस पर पता चला कि मरीज़ा ने बहबूदे आबादी की गोलियां 3 माह मुस्तक़िल इस्तेमाल की हैं । इस तरह बाज़ खवातीन का इस अदरवीयात से पेट बढ जाता है बाज़ का बदन फूल जाता है बाज़ के जिस्म में मुस्तक़िल नक़्स होकर अन्दरुनी पेचीदा बीमारियां शुरु हो जाती हैं ।

दरअस्ल जब भी हम क़ानूने फ़ितरत को तोड़ने की कोशिश करेंगे उस वक़्त खुदाई कोड़ा बरसेगा और चाहिये तो यह कि यह फिर से अल्लाहतआला की क़वानीन की तरफ़ लौट आयें लेकिन हम इसके बरअक्स इस अज़ाब के इलाज की कोशिश करना शुरु कर देते हैं ।

Scanned by CamScanner

गाइना कोलोजिस्ट की वारनिंग

Warning of Gynochologist

एक मशहूर गाईना कोलोजिस्ट मेडी कयून (मेकसीको अमरिका यूनीवरसीटी की चीफ़) ने ख़वातीन को इन्तबाह किया है कि ख़बरदार अगर बच्चे कम करने के लिये अदवीयात का सहारा लिया तो बेशुमार अमराज़ तुम्हारा दामन थाम लेंगे। फिर यही नहीं कि तुम मुसलसल बीमार हो जाओगी बल्कि कैन्सर का ख़तरा तुम्हारे सर पर मन्डलाता रहेगा ।

W.H.O. की हिदायात

आलमी इदारा-ए-सेहत ने खवातीन के ब्रीस्ट और वीजाइना कैन्सर के अस्बाब में इन अदवीयात के इस्तेमाल से मना किया है ।

रिपोर्ट के मुताबिक़ जो खवातीन ऐसी अदवीयात मुसलसल इस्तेमाल करती रहेंगी वह किसी न किसी वक्त कैनसर में मुबतला हो सकती हैं ।

बुख़ार, पानी और जदीद साइंस

Fever, Water & Modern Science

हज़रत नाफ़ें (रज़ि0) से साबित है कि इन्हें हज़रत इबने उमर (रज़ि0) से रवायत पहुंची कि नबी-ए करीम (स0) ने फ़रमाया ।

"बुख़ार या शिद्दते बुख़ार जहन्नम की फटकार है इसलिये इसे पानी से ठंडा करो"।

(ज़ादूल मआद)

हज़रत अबू हमीरत इमरान संई से मरवी है कि मैं मक्का में हज़रत इबने अब्बास (रज़ि0) के पास बैठा था मुझे बुख़ार हो गया उन्होंने फ़रमाया उसे (ज़मज़म के) पानी से ठंडा करो क्योंकि रसूले करीम (स0) ने फ़रमाया कि बुख़ार जहन्नम की लपेट में से है उसे पानी से ठंडा करो।

हज़रत हसन (रज़ि0) से रवायत है कि बुखार आग का हिस्सा है इस लिये इसे ठंडे पानी से ठंडा करो।

हुज़ूरे करीम (स0) को जब बुखार हो जाता तो आप (स0) पानी का एक मुशकीज़ा मंगवाते और इसे सर पर उँडेल लेते और गुस्ल फ़रमाते।

(ज़ादूल मआद)

इस वक्त साइंस का बुखार के ज़िम्न में यही उसूल है कि बुखार के मरीज़ को पानी से नहाओ इस के माथे पर पानी की ठंडी पट्टियां रखो। मरीज़ को पानी ज़्यादा पीलाओ। मेडिकल की किताबों में उसूले इलाज बुख़ार में बिलकुल इस तरह है जिस तरह डाक्टर लोही कोनी आफ़ जर्मन ने हाइड्रो पैथी में मरव्विज किया है।

हाइडरो पैथी का उसूल

Principle of Hydro Pathy

लोही कोनी ने हाईडरो पैथी के उसूल में तहरीर किया है कि "पानी चूंकि अनासुरे अरबा में से है इसलिये इसकी इनसान से बहुत करीब की निस्बत है मेरे तजरिबात में तमाम बुखार के मरीज़, ताऊन के मरीज़, गुर्दे और आसाब के मरीज़ों का इलाज पानी ही है ऐसे मरीज़ों को पानी में नहलाया। इनपर पानी उंडेला जाये। इन्हें पानी पीलाया जाये।

Scanned by CamScanner

मेरे तजरिबात में बाज़ मरीज़ सिर्फ़ मेदे की मरज़ में मुबतला होते है अगर यही लोग पानी बकसरत इस्तेमाल करें और पानी से नहाते रहें तो बहुत जल्द इस मरज़ से छुटकारा पा सकते हैं ।

अमराज़ मुत्तअद्दिया और जदीद साइंस

हज़रत जाबिर (रज़ि0) से मरवी है कि वफ़द सक़ीफ़ में एक शख़्स जुज़ाम के मरज़ में मुबतला था । नबी करीम(स०) ने उससे कहला भेजा कि तुम वापस जाओ हमने तुम्हें बैअत कर लिया है ।

(मुस्लिम)

आप(स०)ने फ़रमाया जज़ामी से इस तरह भागो जेसे शैर से भागते हो (बुख़ारी)

हज़रत इब्ने अब्बास (रज़ी) से मरवी है कि नबी करीम (स०) ने फ़रमाया जुज़ाम की तरफ़ ज़्यादा देर तक मत देखो । (इब्ने माजा)

नबी करीम (स०)ने फ़रमाया कि जुज़ामी से इस तरह काम कराओ कि उसके और तुम्हारे दरमियान एक या दो नेज़ो का फ़ासला हो । (ज़ादुलमआद)

इस तरह ताऊँन या वबा छुटने के बारे में हुक्म है कि जब वबा किसी शहर में वाक़े हो और तुम उस में रिहाइश पज़ीर हो तो वहां से न निकलो और अगर किसी शहर में पहले से मौजूद हो तो उस में दाख़िल न हो । (ज़ादुलमआद)

मौजूदा सांइस अमराज़े मुत्तअद्दिया की दरयाफ़्त में मुसलसल कोशाँ व सर गरदाँ है हालाँ कि बे शुमार ऐसी अमराज़ दरयाफ़्त हुये हैं जो कि मुत्तअद्दिया यानी छूती बीमारीयां है । लेकिन माहिरीन का कहना है कि अभी ऐसी बीमारीयां भी मौजूद हैं जिन का हमें इल्म नहीं हालांकि वो मुत्तअद्दिया है ।

Scanned by CamScanner

जदीद सांइस का एतराफ़

डाक्टर साइमन माहिरे पैथालोजिस्ट (केमरिज सेन्टर ऑफ़ शिकांगो अमेरिका) ने एतराफ़ किया हैं कि मग़रिब को छूती अमराज़ के बारे में आगाही और नेशाने राहे इस्लाम और इस्लामी तालीमात ने दिया हैं ।

में ने जब भी इस्लाम का मुतालिआ किया है मुझे उस वक्त इस बात का शिद्दत से एहसास हुआ कि वाक़ई दीने इस्लाम एक मुकम्मल और जामे दीन हैं ।

(हमराजे़ सेहत)

इस वक्त पूरा आलम मुतअद्दि अमराज़ की लपेट में हैं और इस की गुनांगों इहतयातें बरती जा रही हैं । लेकिन हुजूर (स0) ने पहले ही से इस एहतियात के बारे में अगाहा कर दिया और हिफ़ज़ाने सेहत हर आदमी के लिए आम कर दिया ।

इस्लाम में पानी की सफ़ाई और जदीद सांइस

अल्लाह तआला ने हैवानात व नबातात की ज़िन्दगी का इंहेसार हवा के अलावा पानी पर भी रखा हैं इस में कमी बेशी न सिर्फ़ हैवानात की सेहत पर बराहेरास्त असर अन्दाज़ होती हैं बल्कि उन की खूराक की पैदावार पर भी असर डालती हैं । किसी मक़ाम पर इस का फुक़दान बाअलफ़ाज़े दिगर क़हतसाली हैवानात की हलाकत और नबातात की तबाही का मोजिब होती हैं।

कुरआने करीम में पानी की बक़ा हयात के लिए अहमियत निहायत मुख़्तसर मगर बड़े मानी खे़ज़ अलफ़ाज़ में यूँ बयान होती हैं, ''व जअलना मिनल माइ कुल-ल शैइन इय'' यानी पानी से हमने हर चीज़ को ज़िन्दगी बख़्शी है । हवा

Scanned by CamScanner

जिसके बग़ैर चन्द लमहात ज़िन्दा रहना मुहाल है अगर रतुबत या मुनासिब मिक़दार में पानी के बोख़ारात मौजूद न हो तो वो भी मसमूम होकर तबाही लाती है ।

हवा और रोशनी (या धूप) ऐसी चीज़ के पाक साफ़ करने या निजासत व ग़िलाज़त के दुर और ख़त्म करने में बड़ी मदद देती है लेकिन उन का असर निहायत आहिस्ता-आहिस्ता होता है और यह अंमल बहुत वक़्त चाहता है । लेकिन पानी अपना असर फ़ौरी तौर पर दिखाता है । और चन्द लमहात में वो पाकिज़गी पैदा करता है कि जो हवा और धूप महिनो में नहीं कर पाते । गोया इस लिहाज़ से उन की एक चाल हुआ करती है और पानी की ज़माना मौजूदा के मसनुई सय्यारों की ज़मीन और दिगर अजरामे फ़लकी की गिर्द घुमने की रफ़तार ।

आग तो पानी से भी जल्द सफ़ाई व पाकिज़गी कर देती है लेकिन वो पाक की जाने वाली चिज़ो को या तो नाकाबिले तलाफ़ी नुक़सान पहुँचाती है या उसे फूककर राख़ का ढेर कर देती है ।

सफ़ाई और पाकीज़गी के लिये दुनिया की कोई चीज़ पानी की मानिन्द सहलुल हुसूल ज़ूद असर और बे ज़रर नहीं है । यह ताहिर व मुतहिहर यानी खूद पाक और दूसरी चीज़ों को पाक करने वाली अल्लाहतआला की पैदा करदा नैमत है लेकिन पानी सेहत व सफ़ाई के लिये जितना नागुज़ीर है अगर खूद ही ग़लीज़ और गन्दा हो तो उतना ही ज़्यादा मुज़िर और नुक़सान देह होता है । पस क़यामे सेहत हसूले पाकीज़गी और सफ़ाई के लिये इसका पाक व साफ़ होना अज़बस ज़रुरी है और इनसानी सेहत का मसला ज़्यादा तर पाकीज़गी पर मुनहसर है ।

कुरआने करीम में बीसों मक़ामात पर पाकीज़ा शीरीं और तय्यिब पानी की नहरों और चशमों का निहायत लतीफ़ पैराये में ज़िक्र आता है । इस तरह इसमें गलीज़, नापाक और बदमज़ा पानी की बुराईयां बयान की गई है । मगर इस किताब में उस पानी की सबसे ज़्यादा तारीफ़ की गई है जो बारिश की शक्ल

में तमाम आमीज़शों और हर क़िस्म की मिलावट से पाक आसमान से उतरता है । मुर्दा ज़मीन, बस्तीयों और नबातात पर गिरकर इन्हें ज़िन्दगी बख़्शता है ।

जैसा कि हिफ़ज़ाने सेहत के उसूल व क़वायद का तक़ाज़ा है । इस्लामी तालीम में तहारत, पाकीज़गी और सफ़ाई की निस्बत हिदायात व अहकाम का तअल्लुक़ ज़्यादा तर पानी से है । इसलिये इस तालीम में अगर पानी के अपने पाक व साफ़ होने की निस्बत तफ़सीलात न पाइ जायें तो हिदायत बिल्कुल नामुमकिन और नाक़िस रहती हैं । लेकिन इस्लाम इस लिहाज़ से मुमताज़ नज़र आता है ।

पानी की पाकीज़गी और गंदगी की निस्बत हदीस और फ़िक्ह की किताबों में बड़ी तफ़सीली बहसें मौजूद हैं । लेकिन इसका यहां बयान करना तूले अमल होगा । इन कुतुब में पानी के नापाक और नाक़ाबिले इस्तेमाल होने की ज़ाहिर अलामतें वाज़ह करके उसके पाक या पलीद होने का फ़ैसला मौक़अ व महल के मुताबिक़ इसके इस्तेमाल करने वाले की अक़्ल व समझ पर छोड़ा गया है । आम उसूल तो यह है कि जिस पानी में किसी ग़िलाज़त के पड़ने से उसका रंग, बू या ज़ाइक़ा तबदील हो जायें वह नापाक हो जाता है ।

फ़िक्हे इस्लामी में इस क़िस्म की बहसें भी की गई हैं कि इतनी मिक़दार में पानी इतनी मिक़दार ग़िलाज़त से पलीद और नाक़ाबिले इस्तेमाल हो जाता है । मसलन दस हाथ चौड़ा, दस हाथ गहरा दूसरे लफ़्ज़ों में एक हज़ार मकअब हाथ पानी किसी मामूली ग़िलाज़त के पड़ने से जिससे उसका रंग बू या ज़ाइक़ा न बदले नापाक नहीं होता ।

इन बहसों में फ़ुक़हा के छोटे-छोटे इख़्तिलाफ़ात बताते है कि इस्लामी तालीम में पानी की पाकीज़गी और सफ़ाई कितनी बड़ी अहमीयत रखती है । दर हक़ीक़त पानी का मसला हिफ़ज़ाने सेहत का बुनयादी मसला है ।

हिफ़ज़ाने सेहत के मसाइल पर बहस के सिलसिले में यह अमर मलहूज़ रखना चाहिये कि दुनिया के मुख़्तलिफ़ ख़ित्तों में पानी की कमी बेशी, मय्यार सफ़ाई व पाकीज़गी पर असर अन्दाज़ होती है मगर तरक़्क़ी याफ़्ता ममालिक

Scanned by CamScanner

और बड़े-बड़े शहरों और महल्लात में रहने वाले लोगों के हां जिन्हें हर क़िस्म की सहूलीयतें हासिल होती है बिलअमूम पानी की क़िल्लत का सवाल पैदा नहीं होता । और वह दुनिया के बेशतर हिस्सा आबादी की जो पचहत्तर फ़ीसद से भी ज़्यादा पर मुशतमिल है और जो जंगलों, सहराओं और पसमान्दा गाँव में आबाद है, मुश्किलात नज़र अन्दाज़ करके इसे भी अपने ही पैमाना से नापने की कोशिश करते हैं । और इनके क़यामे सेहत के लिये पानी की वही मिक़दार और वही पाकीज़गी और सफ़ाई ज़रुरी ख़्याल करते हैं जितनी कि वह अपने लिये चाहते है हालांकि दुनिया के बेशतर इलाक़े ऐसे है जहां पीने का पानी मीलों से सर पर रखकर या बारबर्दारी के जानवरों पर लाना पड़ता है और बाज़ दफ़ा वहां के रहने वालों को खाने पीने के लिये कुछ नसीब ही नहीं होता । इन से यह उम्मीद रखना कि वह रोज़ाना टब में कई मन पानी भर कर नहाया करें या इतनी मिक़दार में इस क़िस्म का पाक व साफ़ पानी इस्तेमाल किया करें ताकि अपनी सेहत क़ायम रख सकें हमाक़त होगी।

हिफ़ज़ाने सेहत से मुतअल्लिक़ इस्लामी तालीम के उसूल नौए इन्सानी के हर तबक़ा की ज़रुरीयात व मुश्किलात और पानी की कसरत व क़िल्लत के पेशे नज़र आलिमुल ग़ैब ने तजवीज़ किये है और इनमें एक ऐसी लचक रखी है कि किसी इन्सान को कोई दिक़्क़त पेश नहीं आती और इनसे हिफ़ज़ाने सेहत के तमाम तक़ाज़े भी पूरे होते हैं ।

साफ़ सुथरे पानी की ज़रुरीयाते ज़िन्दगी में काम लाने के मुतअल्लिक हिदायात व अहकाम हम इन्शाअल्लाह आगे चलकर बयान करेंगे इसके पाकीज़ा रखने की निस्बत सिर्फ़ एक हुक्म यहां बयान कर दिया जाता है हुज़ूर (स0) ने इस बात से बड़ी सख़्ती से मना फ़रमाया कि किसी खुले खड़े पानी में जो नहाने धोने या पीने के काम में लाया जाता हो कोई ग़िलाज़त फैंकी जाये या इसमें पेशाब पाखाना किया जाये ।

इस क़िस्म की कुओं से पानी पीने और इस्तेमाल करने से मना फ़रमाया जो खंडारात में सदीयों से वीरान और बेकार पड़े हों । ऐसे कुओं से ज़ेहरीले

Scanned by CamScanner

बुखारात या गैस निकलती रहती है इस क़िस्म के कुओं में उतरने से मना फ़रमाया ।

बर्तन ढांप कर रखना

अहादीस में हुज़ूरे अक़दस (स0) ने बर्तन (खाने पीने की चीज़ों के) को ढांक कर रखने की हिदायत की ।

अगर इस बात को सामने रख कर देखा जाये तो हिफ़ज़ाने सेहत के उसूलों के मुताबिक़ कितनी बड़ी इहतयात है । क्योंकि अगर बर्तन ढांप कर न रखे जायें तो मुन्दरजा ज़ेल नुक़सानात का मुस्तक़िल खतरा है ।

कोई ज़हरीला जानवर मसलन सांप छीपकली वग़ैरा इसमें मुंह डालकर अपनी ज़हर डाल दे । बेशुमार वाक़ियात कुतुबे तारीख में और आम मआशरती ज़िन्दगी में मिलते हैं ।

अगर खुले बर्तन में कोई खाने पीने की चीज़ मौजूद हो और इसमें कुत्ता मुंह डाल जाये तो इस कुत्ते के खतरनाक जरासीम **(Germs)** जिस्म में चले जाने का ख़तरा है ।

गर्द व फ़िज़ा में आलूदगी की वजह से बेशुमार जरासीम होते हैं अगर बर्तन खुला हो और खाली हो तो यह जरासीम और गर्द व गुबार इसमें पडेंगे और अगर इस बर्तन में कोई गिज़ा खुराक और मशरुब हो तो जरासीम इनमें पडेंगे और यह गिज़ा जिस्म के लिये ज़हर बन जायेगी ।

अगर बर्तन खुला हुआ और कोई ऐसा आदमी जो साहिबे नज़रे बद है और इसकी निगाह पड़ेगी तो इसकी मन्फ़ी लहरें **(Nagitive Rays)** इसमें पड़ जायेंगी और खाना मरज़ बन जायेगा ।

मज़हबी लोगों के अमराज़

मज़हब अमन सलामती और सकून का नाम है जिस तरह गिज़ा जिस्म की तवानाई और ज़रुरत है इसको ज़्यादा खा लिया जाये तो यही गिज़ा मरज़ बन जाती है बिल्कुल इसी तरह जब दीनदार आदमी अपने मामूल से ज़्यादा और तरीक़े कार से हट कर दीनी ज़िन्दगी गुज़ारेगा तो इसे तरह-तरह की बीमारियां लगेंगी ।

Scanned by CamScanner

हुज़ूरे अक्दस (स0) ने रमज़ानुल मुकारक के अलावा ज़्यादा रोज़ों से मना फ़रमाया अब अगर एक शख्स ज़्यादा रोज़े रखेगा तो वह कमज़ोरी, आसाबी खिचाव, दिमाग़ी परदों की खुश्की की वजह से पागलपन में मुबतला होगा।

शरीयत का हुक्म है कि खाना कम खाओ अब एक शख्स फ़ौरी खाना कम कर दे तो अमराज़ में मुबतलन होगा ।

दीन हर वक्त ज़िक्रे इलाहि का हुक्म देता है लेकिन अगर इसी ज़िक्र को अपने जिस्म की ताक़त से बढकर किया जाये तो दिमाग़ी ख़ुशकी की वजह से कई लोग दीवाने और पागल हो जाते हैं ।

अलग़रज़ दीन इहतयात और मयाना रवी का नाम है और दीन में आसानीयां है जितना दीन आसानी दे ज़रुर ली जाये ।

हां यह और बात है कि एक आसानी के साथ हम मज़ीद आसानीयाँ पैदा न कर लें क्योंकि यह फिर दीन नहीं रहेगा ।

इबादत में लिहाज़े सेहस व सबात

तक़रीबन तमाम मज़ाहिब में मुकती, निजात और कुरबे इलाही के हसूल की ग़र्ज़ से जान पर तरह-तरह की सख्तियाँ करना । रियज़त और इबादात शाक्क़ह करना पसन्द किया जाता है ।

तजर्रुद और रुहबानीयत भी इसमें बहुत बड़ी नेकी ख़्याल की जाती है । और यह भी नफ़्स पर एक क़िस्म का तशद्दूद ही होता है ।

बाज़ लोग तो इबादत के नाम से अपनी जान पर ऐसी सख़्तियाँ करते हैं कि देखकर हैरत होती है । शिद्दत की गर्मी या सर्दी खुले मैदा में हो या लू है कि चादर पर बैठकर बाज़ इबादत किया करते हैं । मैंने खूद हिन्दू योगी को अजीब-अजीब क़िस्म की पूजा पाट करते हुये देखे है । बाज़ हर वक्त खड़े रहते हैं बाज़ हर वक्त उल्टे रहते हैं । बाज़ सिर्फ़ एक लंगूटी बांध ाकर लोहे की सीखों पर बैठे लैटते और हर काम करते हैं । और सब इसी हालत में सालहा साल गुज़ार देते हैं एक योगी हमारे शहर में आया। वह वस्ता

जून की कड़कती दोपहर की धूप में खुली जगह एक चटाई पर नंगा धडर नंगा सिर्फ़ छोटी सी लंगोटी बांधे हुये बैठ जाता मुंह पर कपड़े की चन्दया भगो कर बंधा लेता और अपने चारों तरफ़ कई मन लकड़ीयों का ढ़ेर लगाकर और उन्हें आग दे कर बैठा रहता और कई घंटे इसी तरह आग के दरमियान बैठकर तपता रहता और उस वक्त उठता जब आग बुझने लगती कई दिन तक मुसलसल वह ऐसा ही करता रहा ।

गीबटन ने अपनी तारिखे ज़वाल व इन्हेताते सलतन्ते रोमा में एक वाक़िया लिखा है इस्लाम से क़ब्ल मुल्के शाम में एक नौजवान ईसाई ने खुले मैदान में एक लम्बा बांस गाड़ कर उसके सर पर अपने आप को बांध दिया और हाथों से अपने सीना पर सलीब का निशान बना कर भूखा प्यासा एक अर्सा तक लटका रहा हत्ता कि वह हिलाक हो गया । और उस ज़माना के इसाईयों ने उसे ख़ुदा रसीदा और वली क़रार दिया ।

लेकिन इस्लाम इस क़िस्म की इबादत से सख़्त मना करता है । पहले यह बयान किया जा चूका है कि रसूले पाक (स0) को अपनी बेसत के इबतदा में ही रात भर बेदार रह कर इबादत करने से रोका गया और मुनासिब आराम करने की सख्त ताकीद की गई थी । जब बानी-ए-इस्लाम के लिये यह हुक्म है तो हर मुस्लिम पर लाज़िम है कि वह इस क़िस्म की रियाज़तों से किनारा कशी इख़्तियार करे और हमेशा अपनी सेहत व सबात को मलहूज़ रखे इस्लामी तालीम की रु से इस क़िस्म की इबादत हरगिज़ पसन्दीदा नहीं और न इसका कोई अज्र मिलता है ।

कुरआने करीम में साफ़ तौर पर आता है कि अपने आप को हिलाकत में मत डालो ।

एक मर्तबा रसूले करीम (स0) ने अपनी एक बीवी के घर में रस्सी लटकती हुई देखी । फ़रमाया यह रस्सी कैसी है? अर्ज़ की गई । रात जब इबादत करते हुये नींद आने लगती है । तो इसे सर के बालों से बांध लिया जाता है जब ज़रा ओंघ आती है, तो झटका लगने से आंख खुल जाती है। फ़रमाया इस क़िस्म की इबादत नाजाइज़ है एक अमल उतना ही करना चाहिये जितना बर्दाश्त हो सके और बसहूलत किया जा सके ।

कुरआने करीम में ब-हालते नशा नमाज़ पढ़ना मना है तमाम मुफ़स्सेरीने कुरआन और बुज़ुर्गाने इस्लाम इस पर मुत्तफ़िक़ हैं कि नींद भी एक नशा ही होता है जब इस का ग़लबा हो तो उस वक़्त नमाज़ नहीं पढ़नी चाहिये (बाज़ की राये के मुताबिक़) ।

इस्लाम में सेहत व सबात की अहमीयत और इसका लिहाज़ रखने का अन्दाज़ा इस हुक्म से लग सकता है कि जब नमाज़ खड़ी हो और किसी नमाज़ी को पेशाब या पाख़ाना की हाजत हो तो वह नमाज़ छोड़कर पहले इससे फ़राग़त हासिल करे । वर्ना इसकी नमाज़ ही न होगी । क्योंकि पेशाब पाखाना रोके रखने से अव्वल तो इबादत में तवज्जोह और यकसूई पैदा नहीं होती उससे सेहत के खराब होने और बाज़ अमराज़ के पैदा होने का इहतमाल होता है ।

लम्बी उक्ता देने वाली नमाज़ पढ़ने से मना फ़रमाया । इसी तरह इमाम के लिये लम्बी नमाज़ पढ़ाना सख़्त मना है ।

फिर इबादात से बसूरते माकूल उज़्र मसलन बीमारी थकान सफ़र वग़ैरा हर तरह की सहूलत इस्लाम देता है । मरज़ या तकान वग़ैरा के बाइस नमाज़ खड़े होकर न पढ़ी जा सके तो बैठकर, लेट कर, या इशारों से बढ़ी जा सकती है रोज़ा सफ़र व बीमारी में तर्क किया जा सकता है । निस्वानी तबई अवारिज़ में जब कि तहारत वज़ू वग़ैरा नहीं किया जा सकता बहुत सी इबादात औरतों को माफ़ होती हैं । ऐसे तमाम हालात में इबादत में मुक़र्ररह व मुअय्यनह तरीक़ पर इसरार करना सेहते इन्सानी के तबाह व बर्बाद करने के मुतरादिफ़ है ।

हुज़ूर (स0) ने सेहत व सबात के पेशे नज़र एक आम उसूल तजवीज़ फ़रमाया कि आमाल इबादत में मयाना र-वी इख़्तियार करो । नीज़ यह फ़रमाया कि अल्लाहतआला को वह अमल ज़्यादा पसन्द है जिस पर इन्सान हमेशा अमल कर सके । यानी जिसे वह अपनी सेहत व सबात का लिहाज़ रखकर निभा सके। इबादत के लिये धूप में खड़े रहने और खामोश रहने से मना फ़रमाया (रयाजुस्सालिहीन स 91)

हवाला जात :-

तजरीद हदीस नम्बर 884, 883, 232, 160

मिशकात हिस्सा अव्वल हदीस नम्बर 304

(इस्लामी उसूले मआशरत)

Scanned by CamScanner

ज़मीमा

दाढ़ी की फ़रज़ीयत

बन्दा ने साबका़ औराक़ में दाढ़ी को सुन्नत लिखा है यह दरअस्लम एक अमूमी कलाम, पुकार और पहचान के तौर पर लिखा है वर्ना मत्तफ़िका़ शरई मसला है कि दाढ़ी फ़र्ज़ है ।

गाय एक हलाल जानवर

साबका़ औराक़ में गाय के बारे में एक हदीस दरज है उलमा-ए कराम और मुफ़तियाने अज़ाम की वज़ाहत के मुताबिक़ दरअस्ल यह उस गाय के बारे में है जो कि ग़ैर सेहत मन्द, बीमार या किसी छूती मरज़ में मुबतला हो क्योंकि मौजूदा दौर में गायों में बेशुमार अमराज़ दरयाफ़्त हो रहे हैं जो कि तमाम गायों में हरगिज़ नहीं ।

वैसे भी हर वह खुराक जो ग़ैर सेहतमन्द और ग़ैर तसल्ली बख़्श हो इसके इस्तेमाल से मना किया गया है । बिल्कुल इसी तरह गाय के गोश्त से हदीस में मना सिर्फ़ इस नौयीअत का है अगर गाय किसी मरज़ में मुबतला हो वर्ना यह एक हलाल जानवर है ।

नमाज़ और भूख

Namaz & Hunger

यानी अगर भूख ज़्यादा हो तो तक़्तवा इसी में है कि भूख को बर्दाश्त करके नामज़ पढ़े । उलमा-ए कराम के मुताबिक़ अगर किसी की भूख इतनी ज़्यादा हो कि उसका नमाज़ पढ़ते हुये नमाज़ में धयान न बल्कि भूख और खाने की तरफ़ हो तो ऐसी सूरत में कुछ खाकर नमाज़ पढ़ ली जाये ।

<u>खत्म शुद</u>

Scanned by CamScanner

सुन्नते नबवी का लुग़त

आ

आब	पानी	असबाब	सामान
आतशक़	गर्मी रोग	इसहाल	दस्त
आसार	अलामत	इशाअत	तबलीग़
आख़िरत	दूसरी दुनिया	इशकाल	मुश्किल
आदाब	क़ाइदे	इसरार	आग्रह
आराइश	सजावट	उसूल	नियम
आसाइश	चैन	इज़ाफ़ा	बढ़ोतरी
आशोबे चश्म	नेत्राभिष्यंद	इज़्मेहलाल	पज़मुर्दी
आलूदगी	भीगा पन	इताअत	बन्दगी
आलूदह	दूषित	इत्तिलाअ	सूचना
आमेज़िश	मिलावट	एआनत	सहयोग
अ (अलिफ़)		इतराफ़	स्वीकृती
अवद	अंतकाल	आज़म	बहुत बड़ा
अबरस़	श्वेत कुष्ठी	अग़लब	यक़ीनन
असर	प्रभाव	इफ़ादा	लाभ
अजर	बदला	इफ़ादियत	फ़ायदामन्दी
अजल	वक़्त	इफ़ाक़ा	रोग के कमी के साथ स्वास्थ की वृधी
अहया	जिवित करना		
अख़ज़	लेना		
अख़लाक़	सदाचार	इफ़रात	कसरत
अराज़ी	भूमी	अफ़ज़ाइश	ज़्यादती
अर्ज़	पृथ्वी	इफ़लास	मुफ़लिसी
अर्फ़ा	बहुत ऊँचा	अक़ारिब	रिश्तेदार
अज़ल	अनादिकार	इक़तिसादियात	मालियात
असास	बुनयाद	अक़दस	पवित्र

Scanned by CamScanner

अक़रब	बहुत नज़दीक
इक़्तेसाब	कमाई
अकसीर	रसायन
अम-र	आज्ञा, विषय
अम्बार	ढ़ेर
इमबिसात	खुशी
इमतिबाह	चेतावनी
इनतिसाब	संबंध
इन्हिसार	सहारा
इन्हितात	गिराव
अन्दाम	जिस्म
अनसब	बहुत मुनासिब
इनकेशाफ़	ज़ाहिर होना
इजाद	अविष्कार
इमान	धर्म

ब

बाब	दरवाज़ा
बसिरा	नज़र
बातिन	अन्तरआत्मा
बालीदगी	तरक़्क़ी
बाह	काम शक्ती
बाहमी	आपस का
बह--र	समुद्र
बदबू	दूर्गन्ध
बदहज़मी	हाज़मे की खराबी
बरस	कोढ़
बरअक्स	बरखिलाफ़
बरक़	बिजली
बरकत	बढ़ोतरी
बरहम	तितर-बितर
बसाऔक़ात	अक्सर
बस्ता	बंधा हुआ
बश्शाश	खुश
बसारत	नज़र
बेसत	अवतार लेना
बक़ा	अस्तित्व
बला	आपत्ती
बलूग़	जवानी
बवासीर	बवासीर रोग
बौल	पेशाब
बेदार	जागरुक
बेरुनी	बाहरी
बेनयाज़	बेपरवाह

प (पे)

पाकिज़ा	पाक
पायदार	मज़बूत
परहेज़	बीमार के खाने पीने की चीज़ों में बचाव
पज़मुर्दगी	उदासी
पस	फ़िर
पुश्त	पीठ
पेचीदा	मुश्किल
पेशा	धंधा
पयमाना	नाप

Scanned by CamScanner

त (ता)

तासीर	प्रभाव	तआऊन	मदद
ताजिर	व्यापारी	तअज्जुब	अचम्भा
तारीक	अंधेरा	तअफ्फुन	दुर्गन्ध
तासीस	बुनयाद	तअय्युन	नियोजन
तबखीर	भाप	तग़ज़ीया	ग़िज़ा देना
तबलीग़	पहुँचाना	तफ़रीक़	अलाहदगी
तहत	नीचे	तफ़सीर	व्यख्या
तहरीर	लिखावट	तकाजा	ख्वाहिश
तहरीक	प्रेरणा	तक़वा	पारसांई
तहक़ीक़	जाँच-प्रताल	तक़वियत	ढारस
तखलीक़	पैदा करना	तकमील	पूरा करना
तजकिरा	ज़िक्र	तल्ख़	कड़वा
तरतीब	सिलसिला	तम्बीह	चेतावनी
तरजुमान	अनुवादक	तन्दुरुस्त	भला चंगा
तरग़ीब	प्रलोभन	तनज्जुल	जवाल
तीरयाक	विषनाशक	तनफ़्फ़ुस	साँस
तज़ईन	सजावट	तनव्वो	नवीनता
तसबीह	खुदा का नाम रटना	तवाजुन	एतदाल
		तवाजुअ	आव भगत
तशखीस	मरज़ की जाँच	तौहीद	खुदा को एक मानना
तशरीह	वज़ाहत	तवस्सुत	माध्यम
तशन्नुज	संकोच	तौजीह	वजाहत
तसनीफ़	किताब लिखना	तव्वको	आसरा
तसव्वुर	कल्पना	कवक्कुल	कनाअत
ततहीर	पाक करना	तहज़ीब	संस्कृती
तआरुफ़	जान-पहचान		

स (सा)

साबित	अस्थाई
सबात	मज़बूती
सक़ील	भारी
समर	मेवा

ज (जीम)

जाज़िब	खीचने वाला
जांगुदाज़	दुःख दाई
जाइज़	मुनासिब
जदीद	नया
जुज़ाम	कोढ़
जज़्ब	आकर्षण
जज़्बा	जोश
जुरअत	हिम्मत
जरासीम	कीटाणू
जरयान	बहाव
जुज़	टुकड़ा
जज़ा	अच्छा बदला
जुज़्व	टुकड़ा
जिगर	कलेजा
जुल्लाब	दस्त की दवा
जिल्द	चर्म
जवाहर	जवाहिरात
जहन्नम	दोज़ख़
जैयिद	उत्तम

च

चश्म	आँख

ह (हा)

हाजत	ज़रुरत
हाज़िक़	माहिर
हब	गोली
हत्ता	जहाँ तक
हतमी	पक्का
हदीस	हुज़ूर के परवचन
हरारत	गर्मी
हराम	जिसका खाना मज़हब में मना हो
हिर्स	लालच
हरिस	लालची
हसबे ज़ैल	नीचे लिखा हुआ
हसरातुल अर्ज़	ज़मीन के कीड़े-मकोड़े
हलाल	जिसे खाना मज़बह में दुरुस्त हो
हल्क़	गला
हमल	बोझ
हवास	होश
हैज़	माहवारी
हैवान	जानवर

Scanned by CamScanner

ख़ (ख़ा)

ख़ातिमा	अख़िर
ख़ारिश	खुजली
ख़ास्सा	आदत
ख़ालिस	बेमेल
ख़बीस	नीच
ख़तना	ख़तना करना
ख़ुदा न ख़ास्ता	ख़ुदा ऐसा न करे
ख़स	घास
ख़ुश्क	सूखा
ख़ुशूअ	नम्रता
ख़ुसूसन	ख़ास कर
ख़ुज़ुअ	गिड़गिड़ाना
ख़ता	दोष
ख़ित्ता	इलाक़ा
ख़ुफ़िया	छिपा हुआ
ख़िलाल	दाँत खुरेदने का तिनका
ख़ुलूस	सादगी
ख़िन्ज़ीर	सुअर
ख़्वाब	सपना
ख़्वातीन	औरतें
ख़्वास	गुन
ख़्वाह	या
ख़्वाहिश	तालिब
ख़ुर्शीद	सूरज
ख़ुशबू	सुगंध
ख़ैर	भलाई

द (दाल)

दाफ़े	हटाने वाला
दाइमी	हमेशगी
दराज़	लम्बा
दर्ज	लिखा हुआ
दरिन्दा	फ़ाड़ खाने वाला जानवर
दिरहम	चाँदी का सिक्का
दुआ	ख़ुदा से मांगना
दफ़अ	हटाना
दिक़	तपे दिक़
दिक़्क़त	दुश्वारी
दलील	सुबूत
दम्मा	साँस की बीमारी
दौराने ख़ून	ख़ून की गर्दीश
दहशत	डर
देरीना	पुराना

ज़ (ज़ाल)

ज़ाकिर	ज़िक्र करने वाला
ज़ाइक़ा	मज़ा
ज़ाइक़ा दार	मज़े दार
ज़ब्ह	गला काटना
ज़ख़ीरा	थोक
ज़ीरुह	जान रखने वाला
ज़ैल	नीचे

Scanned by CamScanner

र (रा)

राबिता	मेल जोल
राग़िब	मुतवज्जिह
रुजहान	झुकाव
रह-म	दया
रहिम	गर्भशय
रहमत	दया
रुतूबत	शरीर का एक रस
रग़बत	ख्वाहिश
रुक्न	मिम्बर
रुकूअ	झुकना
रौ	बहाव
रू	मुख
र-वा	बजा
र-वाँ	बहता हुआ
रुह	जान
रोज़ा	उपवास
रौग़न	तेल

ज़े

ज़ाइद	बहुत
ज़ुकाम	नज़ला
ज़िना	हराम कारी
ज़ीना	सिढ़ी

स (सीन)

साबिक़	पहले ज़माने का
साबिक़ा	पहले का
साख़्त	बनाना
सादगी	भोलापन
सताइश	तारीफ़
सजदा	सर को ज़मीन पर रखकर ख़ुदा की इबादत करना
	असर करना
सरतान	कैन्सर
सरगरदाँ	हैरान
सलफ़	पुराने बुज़ुर्ग
सुन्नत	जिस पर रसूल और उनके सहाबी चले
सोज़िश	जलन
सहलूल हुसूल	जो आसानी के साथ हासिल हो
सय्याह	सैर करने वाला
सैइद	सरदार

श (शीन)

शारे	मज़हबी कानून बनाने वाला
शाम्मा	सूंघने की ताक़त
शाए	छपा हुआ
शुबहा	शक
शिद्दत	ज़ोर
शर्त	क़रार
शरअ	क़ानून

Scanned by CamScanner

शरअन	मज़हब की रू से
शिर्यान	वह रग जिसमें जान दौड़ती है
शरियत	मज़हबी क़ानून
शुआअ	किरन
शिफ़ा	तन्दुरुस्ती
शुक्र	शुक्रिया
शय	चीज़
शीरीं	मीठा

स (साद)

साहिब	मालिक
सानें	बनानें वाला
संहत	तन्दुरुस्ती
सहराई	जंगली
सदक़ा	ख़ैरात
सदमा	चोट
सिफ़त	गुण
सलाहियत	योगयता
सिन्फ़	जिन्स
सौम	रोज़ा

ज़ (ज़ाद)

ज़ाबिता	क़ानून
ज़रर	तकलीफ़
ज़ौफ़	कमज़ोरी
ज़ईफ़	बुढ़ा
ज़िम्न	अंतर्गत
ज़मीर	हृदय
ज़मीमा	ततिम्मा
ज़ीक़ुन्ननफ़स	दमा

त (ता)

तारी	छाया हुआ
ताअत	फ़रमाबरदारी
ताऊन	महामारी
तिब	तिबाबत
तबाअत	छपाई
तबीब	हकीम
तिहाल	तिल्ली
तरीक़	क़ायदा
तलाक़	औरत को निकाह से बाहर कर देना
तिलीस्म	माया
तूल	लंबाई
तहारत	पाकी
तय्युलअर्ज़	ज़मीन को तैय करना

ज़ (ज़ा)

ज़ाहिर	खुला हुआ

अ (ऐन)

आजिज़	कमज़ोर
आरिज़ा	बीमारी
आफ़ियत	ख़ैरियत
आलम	दुनिया
आलिम	जानकार
आलिमुलग़ैब	ग़ैब का जानने वला

Scanned by CamScanner

इबादत	प्रसतीश
अज़ाब	तकलीफ़
उरयाँ	ज़ाहिर
अस्र	सिहपहर
अज़्व	अंग
अज़ीमुश्शन	बड़ा भारी
अक़ीदत	एतक़ाद
अमल	काम
अमली	व्यवहारिक
उंसूर	जड़
अहद	ज़माना

ग़ (ग़ैन)

ग़ारत गर	लूटेरा
ग़ालिब	जबरदस्त
गुदूद	गलैन्ड
ग़िलाज़त	गाढ़ापन
ग़लबा	तसल्लुत
ग़लीज़	गाढा
ग़ैब	ग़ैर मौजूदगी
ग़ैरत	आत्म सम्मान

फ़ (फ़े)

फ़ालिज	एक मरज़ जिसमें आधा जिस्म बेकार हो जाता है
फ़र्ज़	जिनको कामों का हुक्म खुदा की तरफ़ से हो

फ़रोख़्त	बेचना
फ़ज़ा	माहौल
फ़ुज़ला	मल
फ़ितरत	नेचर
फ़ितरी	नेचरल
फ़ेल	काम
फ़ुक़दान	अभाव
फ़लसफ़ा	फ़िलासफ़ी
फ़वाइद	फ़ाइदे
फ़ौरी	जल्दी
फ़ेहरिस्त	सूची पत्र

क़ (क़ाफ़)

क़ाबिज़	क़ब्ज़ करने वाली दवा
क़ब्ज़	क़ब्ज़ीयत
क़िबला	बुज़ुर्ग
क़बीह	ख़राब
क़हत	अकाल
क़ुदरत	ताक़त
क़ुर्ब	नज़दीकी
क़र्ज़	उधार
क़ज़ा	खुदा का हुक्म
क़ता	काट
क़तई	आख़िरी
क़ल्ब	दिल
क़वा	हाथ-पाँव
क़ुव्वतेशाम्मा	सुंघाने की क़ुव्वत
क़ुलन्ज	आंतों का दर्द

क़वी	मज़बूत

क (काफ़)

काफ़ूर	काफ़ूर हो जाना
काविश	फ़िक्र
काहिश	लाग़री
काइनात	दुनिया
कसरत	ज़्यादती
कसीफ़	मैला

ग (गाफ़)

गिरफ़्त	पकड़
गुज़श्ता	गुज़रा हुआ
गोनागो	रंगा-रंग

ल (लाम)

लाग़र	कमज़ोर
लताफ़त	नज़ाकत
लुत्फ़	मज़ा
लतीफ़	पाकीज़ा
लुआब	राग
लकवा	मुंह टेढ़ा हो जाने का रोग
लिहाज़ा	इस कारण

म (मीम)

माद्दा	अस्ल
माद्दी	प्राकृतिक
माहिर	मश्शाक़
मायूसी	नाउम्मीदी
मुतअस्सिर	प्रभावीत
मुतहर्रिक	हिलता हुआ
मुतरादिफ़	हम्माना
मुतअद्दि	छूत वाला रोग
मुतअफ़्फ़िन	बदबू दार
मुतअइयन	निश्चित
मुतमव्वील	दौलत मन्द
मुतनफ़्फ़ीस	जीवधारी
मुतवर्रीम	वरम किया हुआ
मज़रुह	ज़ख़्मी
मुहाफ़िज़	हिफ़ाज़त करने वाला
मुहक़्क़िक़	तहक़ीक़ करने वाला
मुख़लिस	जिसमें ख़ुलूस हो
मख़लूत	गडमड
मख़लूक़	जानदार
मज़बह	गुचरखाना
मुराक़बा	सब तरफ़ से हटकर ख़ुदा से ध्यान लगाना
मुरब्बा	स्क्वाइर
मुरत्तब	तरतीब दी हुई किताब
मुरतकिब	करने वाला
मरग़ूब	पसन्दीदा
मुरक्कब	मिला हुआ
मरकज़	सैन्टर
मज़ीद	ज़्यादा
मुज़ैयन	सजाया हुआ

Scanned by CamScanner

मसास	मलना
मसाइल	समसयाएं
मुस्तकि़ल	मज़बूत
मुस्तनद	सनद याफ़्ता
मुशाहदा	ग़ौर से देखना
मिस्दाक़	चस्पां
मुसन्निफ़	किताब लिखने वाला
मुज़िर	नुक़सान देह
मुज़र्रत	नुक़सान
मुतालआ	ग़ौर से पढ़ना
मतब	तबीब का कमरा
मतलूब	चाहा हुआ
मअन	फ़ौरन
मुआशरत	आपस में मिलजुल कर ज़िन्दगी गुज़ारना
मुआलजा	इलाज
मुआविन	मददगार
मुआयना	इंस्पेकशन
मुतदिल	न बहुत गर्म न बहुत ठंडा
मेदा	पेट
मेयार	कसौटी
मईयत	साथ
मग़रिबी	पश्चिम का
मफ़ाद	भलाई
मफ़तून	फ़रेफ़्ता
मफ़स्सिल	तफ़सीली
मुक़द्दस	पाक
मुक़द्दम	अगला
मुक़र्रब	करीबी
मक़सूद	उद्देश्य
मक़वी	ताक़त बढ़ाने वाली दवा
मकअब	लंबाई, चौड़ाई और ऊँचाई या चौड़ाई के जरब से हासिल रकबा
मलका	बादशाह की बेग़म
मुमानअत	मनाही
मुनजमिद	जमा हुआ
मुन्दरज	दर्ज किया हुआ
मुन्फ़रिद	अकेला
मुअस्सिर	नफ़ा करने वाला
मुजिब	सबब
मौरुसी	बाप दादा वाला
मौज़ूं	मुनासिब
मौज़ूअ	मसला
मौक़ूफ़	साकिन
मुहलिक	मार डालने वाला

न (नून)

नातवान	कमज़ोर
नागवार	नापसन्द
नवातार	घास-पास
नब्बाज़	नब्ज़ का माहिर

Scanned by CamScanner

नजासत	गंदगी
नदामत	शर्म
नज़अ	जाँकनी
निसवां	औरतें
निस्वानीयत	जनानापन
नस-व-नुमा	तरक्क़ी
निस्फ़	आधा
नैमत	मजे़दार चीजें
निफ़ास	वह ख़ून जो बच्चा जन्ने के बाद चालीस रोज़ तक निक़लता है
नुक़ता	आलोचक

व (वाव)

वाजिब	क़ाबिले अदा
वाज़ेह	ज़ाहिर
वाज़े	बनाने वाला
वाक़िअ	रु नुमा
वालिदैन	माँ-बाप
वबा	छूत वाली बीमारी
वजूद	हस्ती
वरम	आमास
वस्वास	बुरा ख़्याल
वजाहत	तशरीह
वज़-ए-हमल	बच्चा पैदा होना
वज़ू	नमाज़ के लिये उसूल के मुताबिक़ हाथ पाँव और मुंह धोना

ह (हे)

हाज़िम	हज़्म करने वाला
हश्शाश-बश्शाश	खुश व खुर्रम
हलाक	क़त्ल
हमा	सब
हवस	लालच

य (ये)

याफ़्त	आम्दनी
यख	बहुत ही ठंडा
यरकान	एक बीमारी जिसमें जिस्म पीला पड़ जाता है
यकसुई	मन लगना
यौम	दिन
यहूदी	हज़रत मूसा का उम्मती

हमारी इस्लामी उर्दू किताबें

इस्लाम और जदीद साइंस (जिन्सी ज़िन्दगी) — हकीम तारीक़ महमूद चुग़ताई — Rs. 80/=	दिल की बीमारियाँ और इलाजे नबवी (स.) — डॉ. ख़ालिद ग़ज़नवी — Rs. 90/=	सुन्नते नबवी (स.) और जदीद साइंस — हकीम तारीक़ महमूद चुग़ताई — Vol. I,II,III, Rs. 250/=
तिब्बे नबवी (स.) खजूर और शहद से इलाज — मुअज़्ज़म जावेद — Rs. 60/=	मुजर्रबाते इमाम सुयूती — इमाम जलालुद्दीन सुयूती — Rs. 100/=	कुरआन मजीद और पाँच इंसानी कुव्वतें — अली असग़र चौधरी — Rs. 50/=
सरवरे आलम — मौलाना गुलाम रसूल महर — Rs. 25/=	सेहत और हिफ़्ज़ाने सेहत तालीमाते नबवी (स.) की रोशनी में — डॉ. नबसिलुत्तबील सबीही — Rs. 15/=	अल्लाह मुश्किल कुशा — मौ. इलियास आदिल — Rs. 35/=
नमाज़े कामिल — ख़लीलुर्रहमान नुमानी — Rs. 15/=	कुरआनी दुआऐं — हाजी मौ. मुनीर कुरैशी — Rs. 08/=	हज और उमरा — शैख़ मौ. अतीक़ — Rs. 20/=

एजाज़ पब्लिशिंग हाउस

2861 कूचा चीलान, दरिया गंज, नई दिल्ली-110002

Scanned by CamScanner